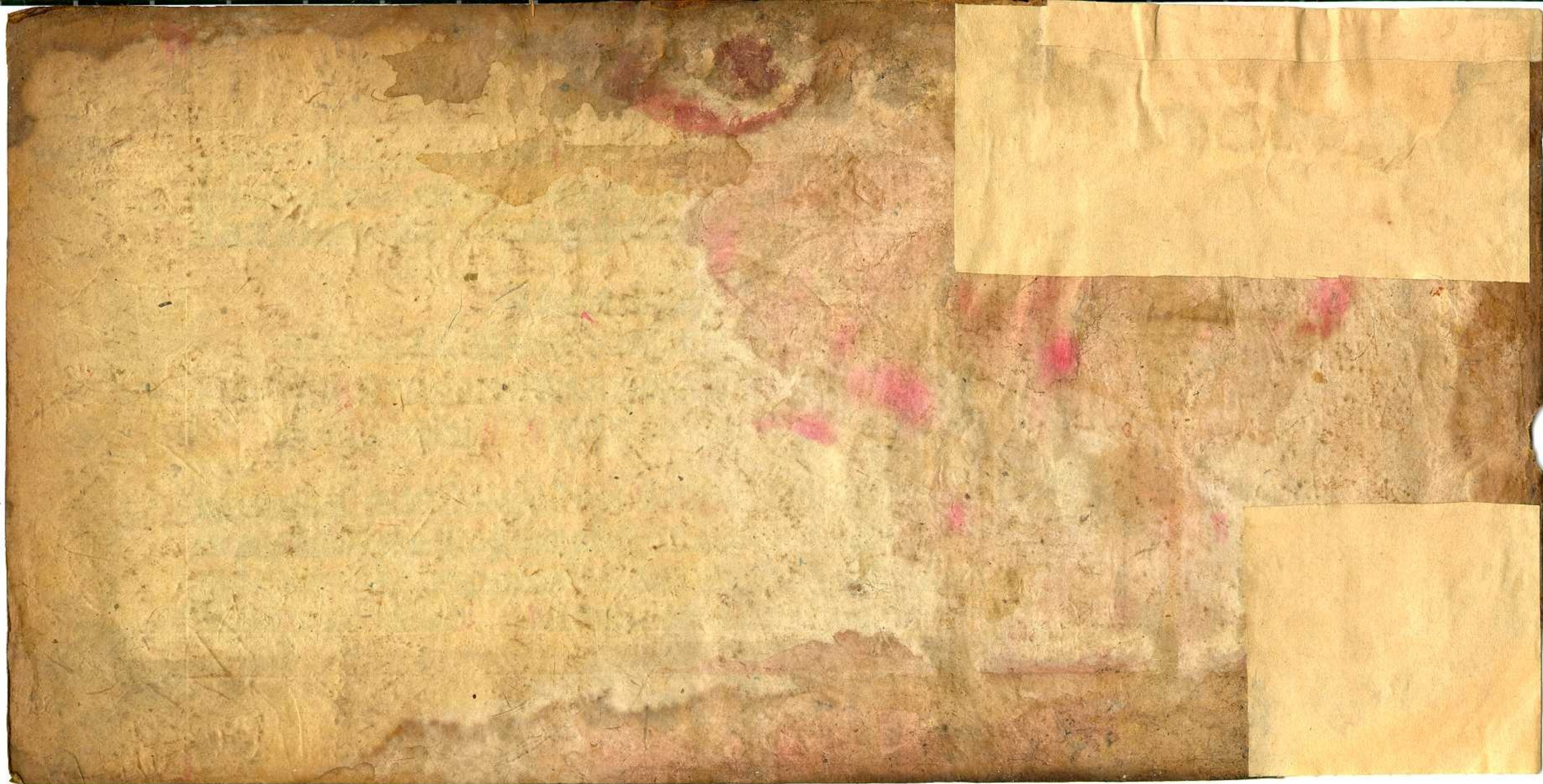








॥ भा. स. ॥
॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ शुक्रदेवजो ह्यनुराजापरीक्षितकनआज्ञागर्दह्यन् हेमहाराजपरी
क्षितयडवंसिहेरुलेसहितभयाकावलभइलेसहितभयाकासला श्रीकृष्णलेअतिचोदेहिंसाकर्महु
न्याकलहगराईकनदैत्यहेरुकोवधकनगयार ॥ एथिवीकोभारकनहरागर्दभया १ ॥ सोहिदि
स्मारकनसुनकपटजुवाषेलनुभयो ॥ दुशासनलेद्वौपतिकाकेसमापेकिसभामालाउनुभयो ॥ वि

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीवादरायणिरुवाच कृत्वादैत्यवधंकृष्णसरामोयडुभि
र्दत्त ॥ भुवोऽवतारयज्ञारंजविष्टंजनयनकलिम् १ येकोपितासुबहुपाण्डुसु
ताःसपत्नेर्दुर्धूतहेलनकचग्रहणादिभिस्त्वन कृत्वानिमित्तमितरेद्वैतःसमेता
नृहत्वानृपान्निरहरन्क्षितिभारमीशः २

॥ राम ॥

षष्ठाउनुभयोलाहाकाघरमाहालिपोलनुभयो ससैघटियाकरावारंवारगर्नाभिदुर्योधनहेरुलेअ
तिऊछगराईयाका ॥ पाण्डवहेरुलाईनिमित्तवनाईकनदुर्योधनकारपाण्डवका ॥ क्षत्रैचात्रैक्षिणादे
षिआईकुरुक्षत्रमावटुलियोका ॥ राजाहेरुकनमारिकृष्णलेएथिवीकोभारकनहरागर्दभया २

अरुपनिष्ठथीविकोभारभयाकाराजाहेरुकासेनाकन आकुलेरक्ष्यागरियाकायडुवंसिहेरुलाईसंचा
रकनमायार। भगवान् श्रीरुद्रजोछन्मनमाचिंतनागर्दाभया हेमहाराजकहाचिंतनाभया नहाभा
रतकायुद्धमा सवैराजाहेरुकोसंहारहुनालेलोकलेदेघतायथिवीकोभारजोछहदि याकोछ तैपनि
मजोछुसहिनसकनु योवडोयादवकोकुलजोछछंदैछभन्या अरुपनिष्ठथीकोभारछदेछ उ
याकोछैनभनिमान्दछ भन्यासमेचिन्तागर्दाभया ॥ ३ ॥ यडुवंसिहेरुकनपनि जसैभीमसेनअ

भूभारराजयुतनायडुभिर्निरस्यगुप्तेः स्वबाहुभिरचिंतयदप्रमेयः मन्त्रेवनेर्ननुगतो
 प्यगतं हि भारं ॥ यथादवंकुलमहोअविषह्यमास्ते ॥ ३ ॥ नैवान्यतः परिभवोऽस्य भवेत्क
 थंचिन्मत्संश्रयस्य विभवो न्नहनस्य नित्यम् ॥ अंतःकलियदुकुलस्य विधाय देवास्तं वस्य

जुन हेरु लाई लगाई डुर्योधनादि हेरु को संहार गया ॥ वहि मि वशाति सुपै मि धाम ॥ ४ ॥
तसै अरु लाई लगाई कन संहार गर्ग हो भनौ लात सुन ॥ मेरो आश्रय भया काहाति घोडा आदि ग
या काहे भव्य ले गरि मत्त भयो का ॥ रसा पाद वहेरु को संहार जो छु देवता हेरु लेपनि गरि सकुछे
न अरु कागर्न न भन्ना चित्ता गयार ॥ जसै वन भावांस का घना मावा पुचल दाल आगे उठि सव वन क
न उठ्ठाई आफु भागे जो छु आफै शान्त हुंछ ॥ यसै यदुकुल मा आपसा रुगग राई अ

॥ भा. २ ॥
॥ २ ॥

रामारग राई संहार गरुं लार शान्त भयाको मजो छु वैकुण्ठ धाम माजा लाभ निमन मा निश्चय गर्दा भया ॥ ३ ॥
हे महाराज यड कुलको संहार गर्ना करामा र सो निश्चय भया का सत्य संकल्प भया का श्री कृष्ण ले बाहरा
हेरूको सराप पयो र यड वंशको संहार भयो भंन्या छल ले गरिय ड कुलको संहार कन गर्दा भया ॥ ४ ॥
सै प्रकार ले गरि ज्ञानि मित्र सस लोक मा अवतार लीना को प्रयोजन हो सो सिद्ध गयार वैकुण्ठ मा गया
क सो गरि भन्या सुन जो कृष्ण मूर्ति को सुन्दरता अरु लोक मा कतै छैन उमा अति सुन्दर मूर्ति ले प्राणि हेरू
काने त्रकन छिनि ले गया तस अर्थ कृष्णको मूर्ति दे प्रन्या प्राणि हेरू का अरु विषय मा हेर्ना को व्यापार पनि

एवं व्यवसितो राजन् सत्य संकल्प ईश्वरः ॥ शपद्या जेन विप्राणां संज हेरू कुलं विभु ॥ ५ ॥
स्वमूर्त्या लोक लावरापनि मुक्ता लोचन नृणां म ॥ गीर्भिस्ताः स्मरतां चित्रं पदे स्तानी क्षतां क्रि
या ॥ ६ ॥ आछि य कीर्ति भु श्लोक वितत्य ह्यजमानु को तमेन यातरिष्यं त्रितय गा त्वपदमीश्वरः ॥ ७ ॥

हुदो भयेन ॥ जो कृष्ण का अति सुन्दर वाणि छन तनै वाणि कन समरुन्या प्राणि हेरू का चित्र कन छिनि
ले गया ॥ सै प्रकार अरु कुरा समरुदै नन् ॥ जो कृष्ण ले हि शा का जगा मा चर रा क मल को छाया लाग्ना
को हेर्ना प्राणि हेरू का अरु ठा उमा जाना का निमित्र का गमेना टि क्रिया कन छिनि ले गया सै प्रकार
ले ते सै काल मा प्राणि हेरू लाई ॥ आकु सव प्रकार ले भजन गर्ना बनायार भासा ड प्रान्त का प्राणि हेरू पनि मे
रो कीर्तन गरि संसार कने तरुन् भन्ना निमित्र ॥ पृथिवी मण्डल मा वडो पुराण कन दिन्या कीर्ति को विस्तार

॥ राम
॥ २

नगग्यार॥ आऊईश्वरजोछन्वेकुराठमाजांदाभया॥ ७ ॥ गजाकनसन्देहभयोरसोछन्हेभुकदेवजोगी
श्वर॥ ब्राह्मणकनमान्ना॥ वडियावोलनजान्ना॥ वडहेरुकोसेवागर्नी॥ सत्तायडुवंसिहेरुलाई॥ ब्राह्मण
कोसरापजोछ॥ कसोगरिभयो॥ सरापभयोतपनि॥ कसकावडाभक्तभयाकायडुवंसिहेरुकोनाशगर्नी
लाईसमर्थकसोगरिभयो॥ सुव्यसरापपनिब्राह्मणकोहुन्याहोइन॥ दानपूजागर्नीवडायडुवंसिहुन
॥ ८ ॥ तसर्थहेभुकदेवयडुवंसिहेरुले॥ ब्राह्मणकोकउनअपराधगणोरब्राह्मणलेसरापगया॥ तोस

राजोवाच॥ ब्राह्मणानांवदानानांनित्यंरुद्रोपसेविनाम्॥ विप्रशापकंथमभूद्दृष्टीनांक
ह्मचेतसाम्॥ ८ ॥ पन्निमित्रःसवैशापोयादृशोद्विजसत्तम॥ कथमेकात्मनांभेदस्तत्स
र्ववदस्वमे॥ ९ ॥ श्रीसुकउवाच॥ विभ्रद्वपुःसकलसुन्दरसन्निवेशंकर्माचरनभविसमं

प॥ पनिकसोगयाभन॥ दोस्त्राकुराएकैचित्रभयाकाआपस्माअतिमिलाप ॥ गलमाप्रकामः॥ ९
भयाकायडुवंसिहेरुकोरुगराकसोगरिहुदोभयोमित्याकाहेरुकोरुगराहुन्याहोइन॥ सत्तैमेरामन
मासंदेहछ॥ मेटिन्नागरिआजागर्नुहवसुभनिराजापरीक्षितलेसोछाभयार॥ भुकदेवजोछन्आजाग
छन्॥ १० ॥ हेमहाराजपरीक्षितसुन॥ यडुवंसिहेरुलाई॥ ब्राह्मणहेरुकोसरापपर्नाको॥ अरुकारणके
हिछैन॥ पृथिवीमाभारभयाकासवैकोसंहारगर्नि॥ वैकुण्ठजान्नाभगवान्कोइछैकारणछ॥ अतिसु

॥ भा. ए ॥
॥ ३ ॥

नरसूत्रिकनधारणगर्भभयाका ॥ एथिवीमाअतिमंगलकर्मगर्भभयाका ॥ छारकाविषेसहरमावसिःमैले
गृहस्थाश्रमकोधर्मचलाईदिया ॥ अरुदुनिजाहेरूपनिगर्नभनि ॥ दुनिजाकासिक्षानिमित्त ॥ गृहस्थिहेरू
काकर्मकनगर्भभयाका ॥ वडोदुलोकीर्त्तिभयाका ॥ सखाभगवानलेमहाभारतादिगण्याकायुद्धहेरूविषे ॥
छेरैसेनाकोसंहारगर्नाले ॥ एथिवीकोभारउतारियाकोथियो ॥ तपनिछपन्नकोटियदुवंसिहेरूरहनाले
अरुपनिभाररहेकोछभनिमनमाविचारगरिवात्सराकोसरापलाग्योभन्याछलगरि ॥ पाशदेवहेरूकोसं
हारकनइछागर्दभया ॥ १० ॥ हेमहाराजपरीक्षित ॥ इश्वरकाइछालेउत्पन्नभयाकावात्सराकोसराप

आस्थायधामरममाराउदारकीर्त्तिःसंहर्तुमैछतकुलंस्थितकृत्यशेषः १० ॥
कर्मणिपुण्यनिवहानिसुमंगलानिगायज्जगत्कलिमलाग्रहराणिकृत्वा कालात्म
नानिवसतायदुदेवगेहे ॥ पिणारकंसमगमन्मुनयोनिरुष्ट ॥ ११ ॥ छ ॥

कोकारणकनमभंछुसुन ॥ कीर्त्तनकनगर्भहेरूलाईपुण्यकनदिन्या ॥ कलिकालकापापकोनासकनग
र्भ ॥ अतिमंगलभयाकाकर्मकनगरिकन ॥ वसुदेवकाघरविषेकालस्वरूपभैरवस्याका ॥ आफ्नाकुल
कोसंहारकोईछागर्भभयाकाभगवानकृष्णले ॥ यज्ञादिकर्मकानिमित्तबोलायाकाउनिहेरूजोथिया
कर्मगरिसकाउप्राप्तविदागरियाकाछंदापिणारकनामातीर्थविषेजादाभया ॥ ११ ॥ छ ॥

॥ राम ॥
॥ ३ ॥

कति मुनि हेरु गया भया हे महाराज सुन ॥ विश्वामित्र असित कसव दुर्वासा भृगु अंगिरा कश्यप वामदेव अत्रि
वसिष्ठ नारद इत्यादि मुनि हेरु गया का थिया ॥ १२ ॥ तनै मुनि हेरु कानगी चमार खेलिकन यडुवंसि हेरु का
कुमार हेरु जो थिया गयार मन माव डो धुने पना भया का ॥ १३ ॥ वाहिर चेष्टा अति नम्र गरिकन शाम्बलाई
स्त्री को भेसवनाइ कन ॥ प्रहम गर्ना कनला गदा भया ॥ हे मुनि हो मुनि मि हेरु संग साक्षात् प्रहम गर्ना कनला

विश्वामित्रो सितकरावो दुर्वासा भृगुरंगिरा ॥ कश्यपो वामदेवो त्रिवं सित्यो नारदादयः ॥ १२ ॥
क्रीडंत स्नानुपव्रज्य कुमाराय दुनन्दनाः ॥ उपसंगृह्य पप्रच्छ रविनिता विनीतवत् ॥ १३ ॥
ते वेषयित्वा स्त्रिवेषैः सामंजस्यवती सुतम् ॥ येषां पृच्छति वो विप्रा अंतर्वत्स्य सितेक्षणा ॥ १४ ॥
प्रष्टुं विलज्जतिः साक्षात् प्रव्रता मोघदर्शनाम् ॥ प्रशोष्यंति पुत्रकामा किं स्त्रितुं जनयिष्यति ॥ १५ ॥
एवं प्रलब्धा मुनयः स्नान् च कपितान् प ॥ जनयिष्यंति वो मन्दा मुशलं कुलनाशनम् ॥ १६ ॥

जमान्या भया कि ॥ गर्भपेट भया की सुन्दर नेत्र भया को जन्मा उन्मावेला पनि भया की पुत्र जन्मो सुभ
निश्छाग दी ॥ हामि हेरु लाई सो धिदे उभन छे ॥ तस अर्थ हे मुनि हो छोरो पाउलि कि छोरी पाउलि ॥ सबै
का अन्न को वात जान्या ति मि हेरु छे ॥ यो कुरा व्यक्त गरि भने भनि ठहा गरि सो धूदा भया ॥ १४ ॥ १५ ॥

॥ भा. रु ॥
॥ ४ ॥

हेमहाराजपरीक्षित ॥ समेत रहले यडुकुमार हेरुले नेत्रतारणागरियाका सुनिहेरु जो थिया कुमार हेरु क
ने सत्यगरिके हि भन्दा भयाका भन्दा भनोलात मुन ॥ हे छोटी बुद्धि भयाका बालक हो ॥ ति मि हेरु का कुलनाश
कनगर्भा ॥ सम्राट् सुसलकन जन्मा उलि भनि सरायगया को सुनिय डुवं सिका बालक हेरु जो थिया ॥ वडा हेरु
को ठढो गर्जना मुन भनित छि ॥ अति चोंडै शम्भको बाधा को पेट फोई हेर्दा ॥ शम्भका पेटमा लोहाका सुसलकन
देष्टा भया ॥ १६ ॥ ७ ॥ ताहा प्रात भाग्यहीन भयाका हा मि हेरु लेका रु लोकराग सु ॥ हा मिलाई दु निजा

तछुत्वा तेति संत्रला विमुच्य सहसोदरम् ॥ शम्भस्य ददृशुस्तस्मिन् मुशलखल्वयस्मयन् ॥
॥ ७ ॥ किं कृतं मन्दभागेर्न किं वेदिष्यति नो जना ॥ इति विह्वलिता गेहानाशय मुशलं ययु ॥ १८ ॥
तच्चोपनियमदसि परिम्लानमुखश्रिय ॥ राज्ञा आवेदयाम्बकुसर्वयादवसंनिधौ ॥ १९ ॥
श्रुत्वामोघं विप्रशायं दृष्ट्वा च मुशलं नृप ॥ विस्मिता भयसंत्रजा वभुवुर्द्यौरकौकसः ॥ २० ॥

कसो भन्ला भनि ॥ आकुलवा कुल भया को यडुकुमार हेरु जो थिया मुशलकनलि पिडारक तीर्थ देषिन्घ
रमाजादा भया ॥ १८ ॥ सुख कि सोभा हरई गया का तिय डुकुमार हेरु जो थिया ॥ राजा उग्रसेन का सभा विषे स
वैजादव कानजी कविषे मुशलकन ल्याई ॥ शम्भलाई स्त्रीको भेस देनाई ॥ सुनि हेरुको ठढागयाको सवै विला
रकरा विंति गर्दा भया ॥ १९ ॥ रामाय ॥ द्वारका वासि जन हेरु जो थिया ॥ ति एनि बाल्यराको व्यर्थ नहुन्य सराप भ

॥ राम ॥
॥ ४ ॥

याको सुनि सुशल करण पनि देषि आश्चर्य ले युक्त भया का छदा वहुनै भय ले गरिचा सकन मान्दा भया ॥ २० ॥
ताहो प्रात हे महाराज परीक्षित त्यो लोहा का सुशल कन नुर्म चूर्ण गरि कुटि धुलो वनाइ ते सधुला कन ऊठता मा
वा किशोर हाका फलाम का टुकुरा कन पनि राजा उग्र से नले रुझलाई नशो धिकन समुद्र को जेल मा फेकि दि
दा भया ॥ २१ ॥ हे राजन् ते सलोहा का टुकुरा कन कोटि मा छाले निल दो भया छ चूर्ण कन भया समुद्र काल
हरिले रता उतिवहाई तिर माल गाये छ ॥ तीर माला गाको छ तरवार काधार रू पैत्र भया को सरका भया

त चूर्ण पित्वा सुशलं यदुराज सभा दुकः ॥ समुद्र सलिले प्राप्य लोहं चास्यावशेषितम् ॥ २१ ॥
कश्चित् मत्स्यो ग्रसितो हं चूर्णानि तरले मतः ॥ उद्यमाना निवेलायां लग्न्या सन् किलैरका ॥ २२ ॥
मत्स्यो गृहीतो मत्स्ये जाले नान्यैः सहार्णवे ॥ तस्योदरगतं लोहं सराले लुब्धको करात् ॥ २३ ॥ भग
वान् ज्ञाते सर्वार्थ ईश्वरो पित दन्यथा ॥ कर्तुं नैच्छदि प्रशापं काल रूपं च मोदतः ॥ २४ ॥ छ ॥

कोको हिजार भै तिर मा दोड भयो ॥ २२ ॥ ते सलोहा का टुकुरा कन जौन मा छाले निल्या को थियो ॥ उसे मा
छा कन अरु मा छा का साथ मा जल हारि हे रुले जाल मा पाया छन ॥ ते सै मा छा का पेट का लोहा का टुकुरा
ले को हि व्याधाले वारा का अग्र भाग कन वनाये छ ॥ २३ ॥ ई स वै टुकुरा भगवान् लाई षवर थियो त पनि
अन्यथा गरुं भया सक्ता थिया त पनि काल रूपी भगवानले वासु रा हेरु का सप कन अन्यथा गर्ना कोइ

॥ भा. २ ॥
॥ ५ ॥

छागरेननु परंतु सरापपयाकाकरामाहे राजन वही ये मान्दा भया ॥ २४ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे सका
दशस्कन्धे भाषाटीकाया प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ भुकदेव जो छन राजा परीक्षित कन आसा गर्छन हे महाराज क
ह्मकावाहुले रक्षागरिया का द्वार का विषे जातु हवस भनि प्रस्थान गरिया का पनि नारद ऋषि जो थिया ॥ क
ह्मकारेण कमल को उपासना गर्ना को उत्कटा भया का हुनाले ठेरै काल सम्भवता भया ॥ १ ॥ हे महा

इति श्रीभागवते महापुराणे सकादशस्कन्धे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ भुक उवाच ॥ गो
विन्द भुजगुन्नायां चारवत्यां कुरुद्वह ॥ अवाप्सीन् नारदो भीक्ष्णं कृत्वा पासनलालसः ॥ १ ॥
कोरमु राजनिन्द्रियवान्मुकुन्दचरणाम्बुजं ॥ न भजेत्सर्वतो मृत्युरूपास्पममरोत्तमैः ॥ २ ॥
तमेकदा तु देवर्षि वसुदेवो गृहागतम् ॥ अचिंतं सुखमासीनं मभिवाद्येदमवव्रीत् ॥ ३ ॥

राजपरीक्षित मुक्तस्वरूप भयाका सत्ता नारद हे रूले पनि ॥ जउनु परमेश्वर का चरण कमल को भज
न गर्द विषे वडा इछा गर्छन भया ॥ इन्द्रिय हुन् प्राणि हेरु जो छन ॥ कोनै लोक मा पनि अवश्य मृत्यु छ
भनि चिह्ना भया का छंदा ॥ वडा वडा देव ताले उपासना गरिया का सत्ता भगवान का चरण कमल कन ॥ कोन
प्राणि भजन गरैन सवै लोक भजन गले ॥ २ ॥ ताहा पछि एक कोहि काल मा आका घर मा आया का
तनै नारद ऋषि श्वर कन वडा सन्मान पूजा गरि सुख पूर्व कन आसने मावसाई शिर लेन मस्कार गरि

॥ राम ॥
॥ ५ ॥

वसुदेवजो थिया ॥ केहि कुरो विंति गर्ना कन लागा ॥ ३ ॥ हे भगवन् हे नारद जसै वा वास सहनारि हेरु को पौवास दे
धिनु घरमा आउनु जो छ ॥ छोरा छोरी को कल्याण गन लाई हुन्छ तसै नारायण लाई भेताई दिना सत्त उप
देस गर्ना ले मान्य स्वरूप भयाका ॥ सत्ता वडा जन हेरु का भोउनु जो छ ॥ सकर्म माधन को खर्च गर्न नसक
न्यास्त्री हेरु मा अतिलुख भै वाधिया का पुरुष हेरु का मंगल गर्ना निमित्त हुन्छ तसै साक्षाद् भगवत् स्वरूप
पभयाका तपाजि हेरु को गृहस्थिका घरमा आउनु जो छ ॥ सबै प्राणि हेरु को कल्याण गर्ना निमित्त हुन्छ

वसुदेव उवाच ॥ भगवन् भवतो यात्रा स्वस्तये सर्वदेहिनाम् ॥ रूपगानां यथा पित्रोरु
त्तमश्लोकवत्सनां ॥ ४ ॥ भूतानां देवचरितं दुःखाय च सुखाय च ॥ सुखायैव हि साधु
नात्वा दृशामच्युतात्मनाम् ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥ हे नारद अतिवृष्टि भयो अथवा वृष्टि नहुनु भयो वृष्टि नचाहिन्या वलामा हुनु भयो ॥ तस्कारण दे
वताका चरित्र ले दुःख पनि हुन्छ सुख पनि हुन्छ ॥ भगवान् का चरण कमल मा चित्र लगाउनु तपा
जि हेरु जसमा साधु सत्त जन हेरु को चरित्र जो छ ॥ सो तसै प्राणि हेरु का सुखै निमित्त हुन्छ ॥ केहे प
नि दुःख गराउनु दैन तस्कारण साधु जन हेरु लाई देवता वरी वर पनि भक्त हुदै न देवता भं
दा श्री हेरु ॥ ५ ॥

॥ भा. स. ॥
॥ ६ ॥

देवताहेरुभन्या. मनुष्यहेरुलेजलो भजनगया जलो कर्मगया भजनकार कर्मका अनुसारले गरि कपा
गछन् ॥ साधुहेरुभन्या. कोने प्राणिले भजनगया पनि नगया पनि दीन दुःखि हेरुलाई श्रीति पूर्वक क
षै गछन् ॥ ६ ॥ सत्ता साधुजनले घरमा आउने ले कृतार्थ भयाको छ ॥ तै पनि हेनारद जो न भगवान् कन
अछा पूर्वक सुनिकन मनुष्य जो छ संसार देवि नु मुक्त होइ जाछ ॥ सत्ता भगवद्धर्म कन सो धुइ छु भासा

भजन्तिये यथा देवान् देवा अपि तथैव तान् ॥ छाये व कर्म स चिवाः साधवो दीन वत्सला ॥ ६ ॥
ब्रह्मं तथा पिष्टु छा मो धर्मं न भागवतांस्तव ॥ या श्रुत्वा श्रद्धया मर्त्यो मुच्यते सर्वतो भयात् ॥ ७ ॥
अहं किल पुरा न तं प्रजापते भुवि मुक्तिदम् ॥ अपूजयन् मोक्षाय मोहितो देवमायया ॥ ८ ॥
यथा विचित्रव्यसना द्रवद्भिर्विश्वतो भयात् ॥ मुच्यमहं जसैवाद्यातथानः शशिसुवत ॥ ९ ॥

गर्नुहवस् ॥ ७ ॥ तिमि भन्दा को न दोस्त्रो प्राणि भगवानले प्रसंसागर्ना कन योग्य छ भन्नु होला त सुन ॥ हे
नारद भगवान् की माया ले मोहित भयाका. मैले पूर्व जन्म विषे मोक्ष कन दिन्ना भगवान् कन मोक्ष दि
उनु भन्ना निमित्त पूजा गरिकन ॥ परंतु पृथिवी विषे तबो त्रिजला पुत्र कन पाउ भन्ना निमित्त पूजा क
न गर्दी भन्ना ॥ ८ ॥ तस्कारण हे नारद. सब कुरा देवि भय कन हुन्ना ॥ नाना प्रकारका व्यसन ले युक्त भया

॥ रा. प. ॥
॥ ६ ॥

कासंसारदेविनाशात्सुखपूर्वकं मे जसोगरितपोंजिहेरुका उपदेशले होई जां तस्तोसिद्धाकृतमलाई गर्ज
हवसभनि ॥ वसुदेवले नारदसंग प्रह्मकनगर्दाभयाभनि शुकदेव जो छन राजा परीक्षित वदना आता
गछन ॥ हे महाराज परीक्षित वडा बुद्धिमान वसुदेवले सत्सोय प्रह्मगरिया काना नारद भविजो छन हरि
का गुण समजाइया काहुना लेवहु ते प्रसन्न भै वसुदेव कन आता गर्न लाग्या ८ १० हे वसुदेव

श्रीशुक उवाच ॥ राजन्नेवंकृतः प्रह्मो वसुदेवेन धीमता प्रीतस्तमहदेवर्षिर्हरैः सं
स्मारितो गुरौः ॥ १० ॥ नारद उवाच ॥ सम्यगेतच्छवसितं भवता सात्वतर्षभ पत्न्य
छसे भागवतान् धर्मान्स्त्वविश्वभावनाम् ॥ ११ ॥ श्रुतो नुपठितो ध्यात आदृशो वा
नुमोदितः ॥ सद्यपुनाति सद्धर्मो देवविश्वदुहोपि हि १२

निमिले यो कुरो वे स चिताया छो ॥ जौतिमि संसार कन ॥ शुद्धगण उन्मा भगवद्धर्म कन सो छ छो ॥ ११
सुनिया को पहिया को ध्यान गरि हि या को आदर गरिया को धन्य रहे छ भनि मानिया को सत्सोयो
भगवद्धर्म जो छ हे वसुदेव ॥ देवता अरु सबै प्राणि को दोह गन्या लाई पनि उसै क्षणमा पवित्र कनग

॥ भा. ए ॥
॥ ७ ॥

हेवसुदेव भर्कोकरोपनिति मिलेवडो उपकारगयौ ॥ काभन्या वडो कल्याणस्वरूप ॥ पुण्यदिन्या छ अवरण
कीर्त्तनजस्को ॥ एस्मानारायण भगवानको मेरामनमा आजस्मरणगगयौ ॥ तस्कारण वडो उपकारगयौ ॥ १३ ॥
हेवसुदेव तिमिले सोध्याका भगवद्धर्मका निर्णयविषेपनि त्रयभयोगीका छोरा नो दोगी हेरुको ॥ जनक
नो माराजाको संवाद भयाको इतिहास कन जान्या हेरु कहंछन् ॥ ४ ॥ मपनिति मिलाई कहला भयार पहिले

त्वया परमकल्याण पुण्यश्रवण कीर्त्तन ॥ स्मारितो भगवानश्रदेवो नारायणो मम ॥ १३ ॥ अत्राप्यु
दाहरंती ममितिहासं पुरातनम् ॥ आर्षभारणं च संवादं विदेहस्य महात्मनः ॥ १४ ॥ प्रियव्रतना
मसुतो मनोः स्वायं भुवस्पच ॥ तस्या श्रीध्वस्तो नाभि त्रयभभक्तसुतः स्मृतः ॥ १५ ॥ तमाहुर्वसु
देवांशं मोक्षधर्मविवक्षया ॥ अवतीर्ण सुतशतं तस्यासीद्वत्सपारगम् ॥ १६ ॥

त्रयभयोगीका छोरा हेरुका वंस कहि इतिहास कन कहन लाग्या हेवसुदेव स्वायं भुवमनुका छोरा
प्रियव्रतना माराजा हुदा भया ॥ तनै प्रियव्रतराजाका छोरा आश्रीध्वना माराजा भया आश्रीध्वका छोरा
नाभिनामाजा भया ॥ नाभिका छोरा त्रयभयोगी भया ॥ जौ न त्रयभयोगी कन मोक्षकन दिन्या परम
हंस हेरुका धर्मको लोकमा प्रवृत्ति हवस्मभन्नानि मित्र ॥ केवल साक्षादा सुदेवका अंश वतार भयाका हु
नुभनिकहंछन् ॥ जौ न त्रयभयोगीका वत्सकन चित्वा भयाका शय १०० छोरा हुदा भया ॥ १७ ॥ ॥

॥ राम ॥
॥ ७ ॥

तनैशयछोरामा नारायणकाचरणकोआश्रयभयाका जेठभरतनामाभया ॥ जौनभरतलेराज्यगयाकोहुना
लेअजनाभनामायोस्वराउजोछु ॥ भरतरखराउभयोनिकहलाउंदोभया ॥ ७ ॥ उमागजाभरतलेनानातर
हको पृथिवीमाभोगगयार ॥ पृथिवीकनछोडीवनमागै तपस्यालेगरिहरिकोसेवाकनगदीमा ती
नजन्ममाहरीकापदवीकनपाउदाभया ॥ भनिभरतकीगतीकनकहंदाभया ॥ ८ ॥ जषभयोगीका

तेषांतुभरतो ज्येष्ठो नारायण परायणः ॥ विश्वातं वर्षमेतद्यन्माभारतमद्वतम् ॥ ७ ॥
समुक्तभोगांत्यक्तेमां निर्गतस्तवसा हरिम् ॥ उपासीनस्तत्पदवीलेभेवैजन्मभिस्त्रिभिः ॥ ८ ॥
॥ ९८ ॥ तेषां नवनवद्वीपपतयोस्पसंमंततः ॥ कर्मतन्त्रप्रणीतारसकाशीतिर्दिजातयः ॥ ९ ॥
॥ ९९ ॥ नवाभवन्महाभागास्तु यो ह्यर्थशंसिनः ॥ श्रमणावातरसना आत्मविद्याविशा ॥ १० ॥

नौछोराहेरुजोथिया ॥ एसभरतरखराका वस्त्रावर्त्तआदिगयाका नौखराका अधिपतिहुदाभया
सकाशीछोराजोथिया ॥ कर्ममार्गकोप्रदन्निमार्गगराउयाभयाका वास्त्राहुदाभया ॥ १० ॥ नौछोरा
जोथिया परमार्थकोनिरूपनगर्नी ॥ आत्मविषयकअभ्यासकर्मकनगर्नी ॥ दिगंबरभयाका आत्मवि
द्याविषयपारंगतभयाका सत्ताहुदाभया ॥ कौनछोराभन्या हेवसुदेवसुन ॥ कदिनामाहरिनामा अंतरि

॥ भा. ८ ॥
॥ ८ ॥

क्षनामा प्रबुधनामा पिप्पलायननामा आविर्होत्रनामा दुमिलनामा चमसनामा करभाजननामा एति
नौजना जो छन सा जु दुलो यो सवै विश्व संसार कन आत्मा देधि न भिन्न कन न देष्म्या भयाका एते प्रका
र रे परम हंस का धर्म माला गा का छंदा ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ एति वी विषे
किन घुम्दा भया भनौ लात हेव सु देव सुन ॥ कतै धुति या को छैन आऊले इछा गरिया को गति जन्

कविर्हरि रत्न रिक्तः प्रबुधः पिप्पलायनः ॥ आविर्होत्रो थद्रमिलश्चमसः करभाजनः ॥
॥ २१ ॥ तस्य ते भगवद् रूपं विश्वं सदसदात्मकम् ॥ आत्मनो व्यतिरेकेन पश्यन्तो व्य
चरन्महीम् ॥ २२ ॥ अद्याह तेष्टु गतयः सुरसिद्धसाध्यः गंधर्वयक्षनरकिन्नरनागलो
कान् ॥ मुक्ताश्चरन्ति मुनिचारणभूतनाथविद्याधरदिजगवां भुवनानिकामम् ॥ २३ ॥

का सत्ता को नै जगा मा प नि आ स क्त न भै फि र ता भ या का व डा यो गी ह रु जो छ न सु र लो क मा सि द्ध
लो क मा म ध्य लो क मा गं ध र्व लो क मा य क्ष लो क मा न र लो क मा कि न्न र लो क मा ना ग लो क मा मु नि
हे रु का लो क मा चा र लो क आ दि ग या का लो क हे रु मा आ क्कै इ छाले गरि व डा सु ख पूर्व क घु म्द छ ॥ २३ ॥

॥ राम ॥
॥ ८ ॥

हेवसुदेवः एककोटिसमयमाः कविआदिगयाकातनै नौ योगी हेरुजो थियाः आक्रे इछाले गरि ससै भरत खण्ड वि
षे वडा अषि हेरुले गरियाका ॥ वडा महात्म्य निमिनामाराजाको ॥ यज्ञविषे आउंदा भया ॥ २४ ॥ सूर्यकाज जोकांति
भयाका वडा भगवानका भक्त भयाका ॥ सत्ता योगी हेरुलाई देषिकन यज्ञगर्ना यज्ञगराउन्ना योकोहि थिया
यज्ञमान परोहित अग्नि तिसवै जनाले उठिसत्कार सन्मान कनगर्दा भया ॥ २५ ॥ निमिनामाराजाले पनि नाराय

त एकदानीमेशत्रसुपजगुर्गृह्यथा ॥ विनायमानमृषिभिरजनाभेर्महात्मन ॥ २४ ॥ तान्दृष्ट्वा स
र्षसंकाशान् महाभागवतान् नृप ॥ यजमानोऽग्रयोविप्राः सर्वस्वोपतत्स्थिरे ॥ २५ ॥ विदेहस्तानभि
प्रेत्य नारायणपरायणान् ॥ प्रीतः स पूजयां चक्र आसनस्थान् यथार्हत ॥ २६ ॥ तान् रोचमानान् च
रुचान् ब्रह्मपुत्रोऽपमान् च ॥ पप्रच्छ परमः प्रीतः प्रश्रया वनतो नृप ॥ २७ ॥ विदेह उवाच ॥ मन्ये
भगवतः साक्षात्पार्षदानो मधु द्विषः ॥ विहो भूतानि लोकानां पावनाय चरंति हि ॥ २८ ॥

राका वडा भक्त रह्या छन् निबुझि आसनमावसाई वहनै प्रसन्न भै यथा योग्य गरि पूजा कनगर्दा भया ॥ २६ ॥
ताहां पान्त्र हेवसुदेवः आक्रे देहका कांतिले अति सुन्दर भयाका ब्रह्माका छोरा सनकोरा सनकादि गयाका
योगी जस्ता भयाका ॥ सत्ता नि नौ योगी हेरुसंग वडा प्रीति पूर्वक वहनै नम्र भै निमिनामाराजा कहि सोधना
कनलाग्दा भया ॥ भनि नारद नामा अषि जो थियो वसुदेवलाई रुसकुरा कन आतागर्न लाग्ना ॥ हेवसुदेव
निमिनामाराजाले जो नकुरो नौ योगी हेरुसंग सोध्याथा सोहि कुरो भै छु सुन ॥ ३ ॥ हे योगी श्वर हो वैकु

॥ भा. २॥
॥ ६॥

राठमा श्रीभगवान्कासभामारहर्षभक्तहेरुहौलाभनि. मंतपात्रिहेरुलान्दु. वैकुण्ठमावस्थाकसोगरिजाहाभा
उत्ताभनौलात. विष्णुकाभक्तहेरुजोछन्. सर्वेशाशिलाईपवित्रगर्नाकनसवजगामाआउंदछन्. तस्कारणानपा
त्रिहेरुसाक्षात्भगवान्काभक्तहोभनिमान्दुभनि. निमिनामाराजालेभन्यार. कसैलेनपाइसकुकुरोमैलेपाना
तसअर्थवडोभाग्यमेराहेछहेयोगीश्वरहो. उत्पन्नभयो. नष्टहोइजान्माएसोपनिमनुष्यदेहजोछयाउनुवडो
उर्लभछ. वडाकठिनलेमनुष्यदेहमित्यो. तपनिभगवान्काभक्तहेरुकोदर्शनकनपाउनुतवडैउर्लभछ

उर्लभोमानुषोदेहोदेहिनांक्षराभंगुर. तत्रापिउर्लभंमन्येवैकुण्ठप्रियदर्शनम्. २८. अतआत्यंति
कंक्षेमंयच्छामोभवतो नया. संसारेस्मिन्क्षराक्षीपिसतसंगःशिवधिर्नृणाम्. २९. धर्मान्भाग
वतान्ब्रूतयदिनःश्रतयेक्षमम्. यैःप्रसन्नःप्रपन्नायदास्यत्पात्मानमप्यजः. ३१.

तसर्थतपात्रिहेरुकोदर्शनमलाइभयोतवडैभाग्यरहेछमेराभन्यार. हेवसुदेवनिमिनामाराजाकेहिप्रश्न
गर्नाकनलाग्ना. २८. हेयोगीश्वरहोएसकुडासंसारविषेससंगजोछ. एकक्षराकोआधाकालसम्मभयाको
पनि. वडुतैआनन्दकनगर्दछ. तस्कारणतपात्रीहेरुसितअत्यंतकल्याणकुरासोचछुभनिसोधनलाग्दाभ
या. २९. तिनिमिनामाराजाले. हेवसुदेवकोनकुरोसोधाभन्यासुन. हेयोगीश्वरहोहामिहेरुलेसुन्नाकनयोग्य
छभन्या. भगवद्धर्मकनवताउनुहवस्. जौनभगवद्धर्मलेगरिप्रसन्नभयाकाभगवान्जोछन्. भक्तहेरु
लाईआत्माकनदिन्छन्. एसाधर्मकनवताउनुहवस्भनि. निमिनामाराजालेविंतिगरियाकायोगीहेरुले.

॥ रा. ॥
॥ ८॥

पनि राजाका प्रह्वकनवढीया प्रह्वगर्नुभयो ॥ हे महाराज निमिना माराजा भनि प्रह्वको सलाषाग्यारे तनै नौयो
गीकावीचमा कविनामा योगी जो थिया आशा गर्नु लाग्ना ॥ ३१ ॥ हे महाराज निमिना माराजा सुन ॥ एस् संसार वि
षे अतिकह्याण कुरो जो छ ॥ हरिकाचरणा कमलको चार भजन गर्नु कहिन्छ ॥ जो हरिकाचरणा कमलको भजन
गर्दा भय पनि कौनै कुरा छैन तस् अर्थ हरिकाचरणा कमलको भजन गर्नु जो छ ॥ अत्यंत कह्याण कुरो भनिमा

नारद उवाच ॥ एवं ते निमिना एवमुदेवमहन्नमाः ॥ प्रतिपूजां कृत्वा स्मृतं सप्तर्षिर्जन्तुपम् ॥ ३२ ॥
कविस्त्वाच ॥ मत्प्रेकुतश्चिद्रयमच्युतस्य पादो वुजो यासनमत्र नित्यम् ॥ उद्धितुद्धेरसदात्मभावा
द्विश्वात्मना यत्र निवर्तते भीः ॥ ३३ ॥ यवै भगवता प्रोक्ता उपायाः स्यात्तल्लब्धये ॥ अंजः पुंसां मविदुषां
विद्धि भागवतानुहिताम् ॥ ३४ ॥

नरदु ॥ जो नर हरिचरणाको उपासना गर्दा विषे ॥ एस् संसारमा देहादि विषे आत्म बुद्धि गर्ना ले विचार बुद्धि भ
याका प्राणि हेरुको सब भय हरउछ भन्ना र भगवद्धर्म कन कहने लाग्ना ॥ हे महाराज निमिना माराजा सुखैले
मूर्ख प्राणि हेरुलाई पनि आत्मा ज्ञान हुवस् भन्ना निमित्त साक्षात् भगवान् ले कह्याका उपाय जो छन ॥ भगवद्धर्म भ
निकहिछन जानु हवस् ॥ ३४ ॥

॥ भा. ८ ॥

॥ १० ॥

हे निमिनामाराजा जौ न भगवद्धर्मको जो कमगर्नाले मउष्य जो छु कैले भ्रष्ट हुदै न ॥ सदा सर्वदा सावधान रहंछ ॥ ओं
स्वाचिलि हि उल्लपनिलतारिदै त ॥ भगवद्धर्मको जो फल देषि न पनि भ्रष्ट हुदै न भनि भन्दा ॥ तेनाति भगवद्ध
र्मको नहु न भनि राजाले सो धारक विनामा योगी जो छु न आज्ञा गर्ना लाग्यो ॥ ३५ ॥ हे निमिनामाराजा सुन ॥ का
यले ॥ वचनले ॥ मनले ॥ इन्द्रियले ॥ बुद्धिले ॥ अहंकारले ॥ आक्रास्य भावले ॥ जो कोहि गम्या कालौ किकर्म ॥ वैदिक क
र्म ॥ तिसवै कर्म कन ॥ नारायण लाइ अर्पण गर्ना कात्तो सवै कर्म जो छु ॥ भगवद्धर्म हुंछ ॥ ३६ ॥ किन ईश्वरको

याना स्थायन रोग जन्म प्रमाद्येत कर्हि चित् ॥ धावन्निमील्यवाने त्रेन सखले न पते दिह ॥ ३५ ॥ काये
नवाचा मनसेन्द्रियैर्वबुद्ध्यात्मना वा नुसृत स्वभावात् ॥ करोति यद्यसकलं परस्मै नो गयणा येति स
मर्पयेत्तत् ॥ ३६ ॥ भयं द्वितियाभिनिवेशात् ॥ स्याद्दीशादपे तस्य विपर्ययोऽस्मृतिः ॥ तन्मायया तो बुध्वा
भजेत्तिभक्त्यैक्येशं गुरुदेवतात्मा ॥ ३७ ॥

(भजन गर्नु भजानले गरिकल्पना गरिको संसार जो छु ॥ ज्ञा
नले गरि हरि रई जा भनौ लात सुन ॥ हे निमिनामाराजा ते सो ज्ञान जो छु ॥ भगवान्को भजन न गरि हुदै न भनि आज्ञा
गर्ना लाग्यो ॥ जस देषि न भय जो छु ॥ जस्कि मायाले गरि हुंछ ॥ तस्कारणान्ना बुद्धिमान् जो छु ॥ तनै परमेश्वर क
न भजन गर्छ ॥ भयत ॥ देह मा मेरो भन्ना असत् आयु हले गरि हुंछ ॥ परमेश्वर कि मायाले कागछे ॥ भनौ लात सुन

॥ राम ॥
॥ १० ॥

ईश्वरको भजन नगर्ना प्राणिका ॥ परमेश्वर की मायाले भगवत्स्वरूप कन विर्सई दिंछे ॥ ताहा प्राज्ञ मदेह हुं भुन्या
उत्तरो बुद्धि हुंछ ॥ ताहा प्राज्ञ दोशो छ भुन्या बुद्धिले गरि भय हुंछ ॥ तस्कारण वडा भक्तिले गरि गुविषे छ देवउ
द्धिर आत्मा बुद्धि जस्का ॥ एसा प्राणिले ति भगवान् का भजन कन अवश्य गर्न योग्य छ ॥ ३१ ॥ विषय माला ग्या
का प्राणिका ईश्वर का भजन मा भक्तिका हा लागला ॥ भक्ति न लाग्या अभय जो छ कसो गरि होला भनौला न ॥ हेम
हाराज यो विषय जो छ छ दे छैन ॥ छैन भन्या कसो गरी देषिन्छ भन्या ॥ मन ले कल्पना मात्र गरि उत्पन्न भयाको
छ ॥ तस्कारण मन को निरोध गरि हरिका भजना को भजन गर्नाले गरि विषय जो छ हराई जांछ ॥ ताहा प्रा

अविद्यमानो प्यवभाति हि द्वयो ध्यातु र्धि पा स्वप्न मनोरथौ यथा ॥ तत्कर्म संकल्प विकल्प कं मनो
बुधो निरुंध्यादभयं ततः स्मृत ॥ ३२ ॥ भृशवन्तु भद्राणि रथाङ्गपाशोर्जन्मानि कर्माणि वयानिलो
के ॥ गीतानि नामानि तदर्थकानि गायन्ति लज्जाविचरेदसकः ॥ ३३ ॥

प्राज्ञ भयपनि हराउंछ भनिक विनामा सिद्ध जो थिया ॥ निमिनामा राजा सित आज्ञा गर्न लाग्या ॥ हेम हाराज
ध्यान गर्ना पुरुष का बुद्धि मा रुठो पनि स्वप्न जे प्रकाश हुंछ ॥ तसै न भयाको पनियो छैन त प्रपंच जो छ ॥ अकस्मा
त् मन ले कल्पना गर्ने मात्र प्रश हुंछ ॥ तस्कारण ए समन कन जिति निरोध गर्नु र मन ले कल्पना ग्याको वि
षय हराउंछ भयपनि हराउंछ ॥ ३४ ॥ हेम हाराज मन कन निरोध गर्नु भन्नु कुरो वडा गाहोरहे छ भन्नु हो

॥८०॥
॥११॥

लात ॥ सजिलो उपाय भंछु सुन ॥ भक्ति कल्याण स्वरूप भयाका वडावडा योगी हेरु लेगा इयाका ॥ श्री भगवान् का जन्म
कर्म कन सुन्दो जन्म कर्म को वर्णन कन गर्ना श्लोक कन पदो ॥ लज्जा छोडिकन संग कसै को नगरि इछा कौनै कुरा
को नगरि फिर ताहुना काम गर्नु ॥ ३८ ॥ हे महाराज एतै प्रकार ले गरि वडो प्रेम पूर्व क परमेश्वर का ॥ वरणा मा
भक्तियोग गर्ना प्राणिका संसारि धर्म ले रहित भयाका स्वरूप कन भंछु सुन ॥ हे महाराज निमिना मारा जा
एसो आचरण भयाको भगवान् को भक्त जो छ भगवान् को नाम कीर्तन गदी विषे वडो प्रेम हुना ले गरि कै हे वडो हा

एवं वतः स्वप्रियनामकीर्त्ता जातानुरागोऽतचित्तु उच्चैः ॥ हसत्यथोरोदिनि रौति गायत्युन्मादवन्तृत्य
निलोकवाद्यः ॥ ४० ॥ एवं वायुमग्नीसलिलं महीच ज्योतीषिसत्त्वानि दिशोऽनुमादीन ॥ सरित्समुद्रांश्च
हरेशरीरं ये किंच भूतं प्रणमेदनमः ॥ ४१ ॥

॥ सो गरि हां छ ॥ कैले संछ ॥ कैले विद्या उंछ ॥ कैले
गांछ ॥ कैले नाच कन गछ ॥ एतै तरह सिन पिशाच ले पन्ना का प्राणि जै भयाको छंदा लोक देषि न बाहि छे छं
छ ॥ ४० ॥ हे महाराज योग मा सिद्ध भयाका लाई पनि वहुनै जन्म मा पनि ब्रह्म गतिकन पाउनु वडो गा हो छ
एकै जन्म मा नाम कीर्तन मा वगर्ना ले गरि कसो गरि ब्रह्म गति हुंछ भनु होला त सुन ॥ हरिको भजन गर्ना पुरु
ष काः श्री निस्वरूप भक्ति लाग छे ॥ ताहा प्राप्ति भगवत् स्वरूप जो छ मन मा प्रकाश हुंछ ॥ ताहा प्राप्ति अरु विषय
मा वैराग्य हुंछ ॥ एति तीन कुरा जो छ न ए कै काल मा हुंछ न ॥ जसै भोजन गर्ना प्राणिकन जति जति गा संघादै

॥ राम ॥
॥ ११ ॥

गयो॥ तन्नितन्नितुष्टिः पुष्टी भोक्तुको निवृत्तिरुंछ॥ तस्मै भजनं गर्मा लाई भक्ति विरक्ति भगवद्विषय कज्ञान ईस वै
कुराहुंछन्॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ताहा प्रातः सस्मै प्रकार ले हरिका चरणा कमल को वडो भक्ति गर्मा प्राप्ति जो छ वडा शां
निकन प्राप्नुहुंछ॥ हे महाराज निमिना माराजा भनि कविना मायोगी ले आज्ञा गर्दा भया॥ ४३ ॥ ताहा प्रातः स
लो कुरो सुन्धार तिमिना माराजा जो थिया प्रह्न गर्ना कनला ग्या॥ हे योगी श्वर हो भागवत भनिक ला लाई भंनु

भक्तिः परेशानुभवो विरक्तिरन्यत्र वैषट्ठिकस्य कालः॥ प्रपद्यमानस्य यथाश्रुतः सुपुष्टिः सु
ष्टिः क्षदपायो नुद्या सम॥ ४२ ॥ इत्युच्यतां धिं भजतो नुवृत्त्या भक्ति विरक्ति भगवत्प्रबोधः॥ भवन्ति
वै भागवतस्य राजंस्ततः परां शांतिमुपैति साक्षात्॥ ४३ ॥ श्रीराजोवाच॥ अथ भागवतं व्रूतय
द्धर्मो यादृशो नृणाम्॥ यथा चरन्ति यद्भूते ये त्विंमैः भगवत्प्रियः॥ ४४ ॥ हरिरुवाच॥ सर्वभूतेषु
यः पश्येद्भगवच्छावमात्मानः॥ भूतो निभगवत्पात्मन्येष भागवतो नमः॥ ४५ ॥

भागवत भन्ना को को न हो भन॥ फेरियो भगवान को भक्त भागवत जो छ क सो हुंछ॥ कौ न धर्म भया को हुंछ
कौ न आचर न गछ कौ न कुरा वो लछ॥ कौ न भे स गर्ना ले भगवान को पियो रो हुंछ॥ मलाई आज्ञा गर भनि गि
मिना माराजाले सो धार हे व सु देव ति योगी हे रू मा हरिना मा योगी हे रू मा हरिना मा योगी जो थिया आज्ञा गर्त

॥ भा. ॥
॥ ९२ ॥

हेनिमिनामाराजा. सुन ॥ सवै प्राणि हेरु विषे वल्ल रूप ले गरि मरहा को छु भनि जो देषु छ ॥ अथवा वल्ल रूप
भयाका सवै वल्लुका आधार भयाका सला आत्मा विषे सवै प्राणि हेरु लाई रहा को जो देषु छ ॥ अथवा कीट प
तंग आदि गयाका सव प्राणि हेरु विषे ॥ आत्मा कन आकु रे श्वर्य को हीन न गरि अन्न र्या मिरु पले गरि र
हाका कन जो देषु छ. सलो भक्त जो छ. उत्तम भागवत भनिकहि छ ॥ ४५ ॥ ईश्वर विषे ईश्वर का अधीन मार
हाका प्राणी विषे ॥ विषयी मूर्ख प्राणी विषे. शत्रु विषे सत्तिकु रा विषे ॥ प्रेम मैत्री कृपा त्याग. इकरा को भावना

ईश्वरे तदधीनेषु बालिशेषु द्विषत्सु च ॥ प्रेम मैत्री कृपा पेशायः करोति समध्यमः ॥ ४६ ॥
अर्चयामेव हरये पूजायः श्रद्धये हते ॥ नत इत्तेषु चान्येषु सभक्तः प्राकृतः स्मृतः ॥ ४७ ॥
गृहीत्वा पीडियै रथान् यो न दृष्टि न हृषति ॥ विष्णोर्माया मिदं पश्यन् स वै भागवतोत्तमः ॥ ४८ ॥

गर्ना भगवान् को भक्त जो छ ॥ मध्यम भागवत भनिकहि छ ॥ ४६ ॥ जो न भक्त जो छ. प्रतिमा विषे हरिको पूजा
गर्नी को श्रद्धा ले गरि इच्छा गर्छ ॥ हरिका भक्त को पूजा गर्नी को इच्छा गर्दै न ॥ उसो भन्ना. हरिका भक्त न भया
का प्राणी को पूजा गर्नी को. इच्छा कसो गरि गर्लै गर्दै न ॥ तेसा भक्त लाई आज कालै भक्ति गर्न लगाया को रहे
छ भनि जानु ॥ पेछि परंतु विचार ले गरि उत्तम भागवत पनिकहिये लाभ निजानु ॥ ४७ ॥

॥ राम ॥
॥ ९२ ॥

वासुदेवमाभत्यंतचित्रलगाउन्माभक्तजोइन्दीयहेरुले॥घटियावढीयाविषयकोग्रहराग्यामापनि॥योऊ
रोघटियाभनिदेषपनिपदैँनवढीयारहेछभनिगदैँन॥योसवैविश्वसंसारकनविस्तुकोमायाहोभनि
देष्टुछ॥त्योभक्तजोछउन्नमभागवतकहिंछ॥४८॥जौनभक्तजोछजन्मनुमर्नुतिर्षाभोकभयतृष्णाश्र
मइत्यादिगयाकादेह॥इन्द्रियप्राणमनबुद्धिहेरुकाएसासंसारिधर्मरोगरि॥हरिस्मरणगर्नाकाकारण
लेमोहकनपाउँदैँनएस्तोभक्तछ॥त्योभगवान्काभक्तहेरुमामुख्यभागवतभनिकहिंछ॥४९॥जौनभक्त

देहेन्द्रियप्राणमनोधियावोजन्माप्ययक्षुद्रयतर्षकछैः॥संसारधर्मैरविमुखमानःस्मृताहरेर्भाग
वतःप्रधानः॥४९॥नकामकर्मवीजानांयस्यचेतसिसंभवः॥वासुदेवैकनिलयसवैभागवतोन्नमः
॥५०॥नयस्यजन्मकर्मभ्यांनवर्णाश्रमजातिभिः॥सज्जतेस्मिन्नहंभावोदेहेवैसहरेऽपियः॥५१॥

काचित्रमाकामभयोःकर्मकासनाभयाएतिकुरारखाकाछैन॥परंतुवासुदेवैकोमात्रशरणाभयाकोछ॥एस्तोभ
क्तलाईउन्नमभागवतभनिजांनु॥५०॥जौनभक्तकासकुलमाजन्मभयो॥नयस्यादिगयाकाकर्मभयो॥वा
सुदेवादिगयाकोवर्णभयो॥ब्रह्मचारीगृहस्थआदिगयाकोआमभयो॥अनुलोमविलोमआदिगयाकाव
र्णशंकरजातिभयो॥ईसवैकुरालेगरिजोदेहमामएस्तोवडोडुं॥मएस्तोछोडोडुं॥भंन्याएस्तोअहंकारलेगरि
वडुडुदैँन॥त्योभक्तहरिकोपियारोडुंछ॥५१॥

॥ भा ८ ॥
॥ १३ ॥

जो न भक्त का आकाधन मा वराई का धन मा ॥ आका देह मा यो मेरो यो पराई को भन्या भद बुद्धि छैन ॥ सब प्राणि मा
वरोवर बुद्धि जो गछ ॥ शांत स्वभाव भया को छ ॥ एला लई उन्नम भागवत भनु ॥ हे महाराज निमिना माराजा ॥
एस संसार मा भगवान् को चरण कमल दे बिन्दो सो सरवस्तु को हि छैन ॥ भन्या ए सो निश्चय भया को भक्त
जो छ ॥ हरि माला ग्या को छ मन ज स्को ॥ एला कन देवता हेरु ले पनि भज नृगर्ना कन एक पल क को आधा का
ल सम्म छोडि देउ ॥ निरु लोक को राज्य गर्ना कन तो लाइ मिल्छ भन्या पनि ॥ हरिकाचरन् को भक्ति गर्न छोडि रा

नय स्पस्व पर इति विनेष्टात्मनि वा मिदाः ॥ सर्वभूते समः शो नः स वै भागवतो नमः ॥ ५२ ॥ त्रिभु
वन विभव हेतवे प्य कुराठ स्मृतिर जितात्मसुरादिभिर्विमुग्धात् ॥ न चलति भगवत्पदारविन्द्या
ह्वनिमिषा ईमपि स वै ह्यवाप् ॥ ५३ ॥ भगवत उरु विक्रमाधिशारवानखमणिचन्द्रिकयानिर
मताये ॥ हृदिकथमुपसीदता पुनः स प्रभवति चन्द्र इवोदिते कताप ॥ ५४ ॥ छ ॥

ज्य कालो भया जो फ सिंदैन ॥ तो वै ह्य मा अग्रगर्णा कहिंछ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ जसै चन्द्रोदय भया पछि सूर्य ले दि
न मा गन्या को ताप जो छ ॥ हरई जां छ रहै न ॥ तसै भगवान् का चरण कमल को भक्ति गर्ना प्राणिका पनि भग
वान् का चरण कमल का ॥ अगुला कानख रूपी मणिका ॥ शीतल कान्ति लें गरि हर गन्या को छ ॥ काम को धा दिले ग
रि भया को संताप जस्का ॥ एला भक्त का हृदय विषे फेरि काम को धहेरु ले गरि संताप रुदै न ॥ ५४ ॥

॥ रामः ॥
॥ १३ ॥

रोगादिहेरुलेऽऽखितभयाकाशाशिले नोर्तलियामापनि॥ वडापापसमूहकोनाशगर्भाभयाका॥ श्रीतिरूपीजेरीले
वोंधियाकाछन्चरणकमलजन्काः सत्तामाशातहरिजोछन्॥ जस्काहृदयमावसुदछन्छोडदैनन्॥ तेसो
त्योभक्तजोछभागवतहेरुमासुखभागवतकहिछभनि॥ हरिनामायोगीश्वरले॥ निमिनामाराजाकेनआज्ञाग
या॥ सोहिकथाकननारदनामाअपिलेवसुदेवकनआज्ञागयासोहिकथाकनभुकदेवलेराजापरीक्षितकन
आज्ञागया॥ सोहिकथाकनसूतपौराणिकले॥ शौनकादिगयाकाअपिहेरुकन॥ नैमिषारणक्षेत्रविषेआ

विसृजतिहृदयंनयस्यसाक्षाद्विरवशाभिहितोप्यद्यौद्यनाशः॥ प्रणायरसनयाधृतांघ्रिपद्मः स
भवतिभागवतःप्रधानउक्तः॥ ५५ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोष्कादशस्कन्धेद्वितीयोऽध्यायः
॥ २ ॥ राजोवाच॥ परस्यविहोरीशस्यमायिनामपिमोहिनीम्॥ मायांवेदितुमिच्छामोभगवतो
(कवन्तुनः॥ १ ॥

ज्ञागर्दाभया॥ ५५ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोष्कादशस्कन्धेश्रीधरकृतायां
भाषाटीकायांद्वितीयोऽध्यायः॥ २ ॥ योविश्वसंसारकनविह्वुकोमायामात्रहोभनिचिंछाउत्तमभक्तक
हिंछभन्यकोसुनि॥ निमिनामाराजाजोथियात्योमायाकनसोधनलाग्वा॥ हेयोगीश्वरहोवडीमायाकनजा
न्याप्राणिहेरुकनपनिमोहकनगर्भाभयाकी॥ भगवान्विह्वुकीमायाकनजान्नाकोइछालागीरहेछ॥ हामि
लाइवताउतुहवसभनि॥ निमिनामाराजासोछाभया॥ १ ॥

॥ भाट ॥

॥ १४ ॥

मैले दो आ अध्याय मावताया का भगवद्धर्म को आचरण गर्न हवसर कृतार्थ होइ जानु होला ॥ किन ठेरै प्रह्वगर्नुहुं छु भ
नौला त हे योगीश्वर हो सुन ॥ संसार का नाना तरह का ताप लेता त्या को सं मनुष्य जो छु ॥ संसार का ताप को औषध भया
को तपां निहेरु ले कहिया को नपां निहेरु ले कहिया को हरिकथा रूपी अमृत कन पिउ दो छु दो ना लितु निहु दैन
तस्कार रा हरिकथा विषे ठेरै प्रह्वगर्द छु भनि ॥ निमिना मारा जाले सखा प्रह्वगयार ॥ अंतरिक्ष नामा योगी जो थि
या आजा गर्न लाग्ना ॥ १ ॥ हे महाराज निमिना मारा जा सुन ॥ यो माया कन सखै हो सहि हो भनि स्वरूप ले गरिवता उन

नाउ तप्ये जुषन युष्मद्वो हरिकथा मृतं ॥ संसार ताप निष्ट प्रो मत्पं सन्नाप भेषजम् ॥ २ ॥ अंतरि
क्ष उवाच ॥ सभिर्भूतानि भूतात्मा महाभूतै महाभुजः ॥ ससर्ज्जोच्चावचान्यायः स्वमात्रात्मप्रसिद्धये ॥

नसकिन्नाहुनाले ॥ सृष्टि जादि गया का माया का कार्य को दार गरि माया कन वताउं छु सुन ॥ पृथिवी आदि
गया का महाभूत को कारण भया का आश पुराण पुरुष नारायण जो छु ॥ जौ न शक्तिले गरी कन आ फुले
सृष्टि गरिया का पृथिवी आप तेज आदि गया का महाभूत ले राखि ॥ साना दुला ॥ कीट पतंग आदि गया का
शरीर कन ॥ जीव को मिद्ध हवसर भन्नानि मित्र ॥ अथवा आत्मा अंश रूप भया का जीव लाई विषय भोग हवसर
भन्नानि मित्र ॥ अथवा जीव को मोक्ष हवसर भन्नानि मित्र वनाउं दछु ॥ सोहि भगवान् की माया हो जानु हवसर

॥ एष ॥
॥ १४ ॥

एतै प्रकारले पंच महाभूतले सृष्टि गरिया का शरीर मा अंतर्गामी रूपले प्रवेश गरिकन मन रूप इन्द्रियले गरि
एक विभाग गरि ॥ दश वाहेन्द्रियले गरि दश विभाग गरि ॥ एतै रितिले आत्माको विभाग गरि ॥ तैति विषयक
न तेति इन्द्रियलाई भोग गराउछन् ॥ हेमहाराज निमिनामा राजा एतिका राजसूत्रले गरि भगवान् का हंछन् मो
हि भगवान् की माया जान ॥ ४ ॥ हेमहाराज सो जीव जो छ ॥ अंतर्गामी रूप भगवान् ले प्रकाश गरिया का इन्द्रिय
ले गरि ॥ तैति विषयक न भोग गर्दै ॥ यो सृष्टि गरिया का शरीर कन मै हुं भनि आत्म भावना गर्नाले शरीर मा व

एवं सृष्टानि भूतानि प्रविष्टः पंचधा तुभिः ॥ एकधा दशधा त्वानं विभजन्नुषते गुणान् ॥ ४ ॥ गु
णैर्गुणान्संभुजान् आत्मप्रद्योतिनैः प्रभुः ॥ मन्यमान इदं सृष्टमात्मानमिह सज्जते ॥ ५ ॥ कर्मणि
कर्मभिः कुर्वन्स निमित्तानि देहभूत ॥ तत्र तत्कर्मफलं गृह्णन् भ्रमसि ह सुखेतरम् ॥ ६ ॥ इत्थं कर्म
गती गच्छेद्बहु भद्रवहा पुमान् ॥ अभूत संस्रवा त्मर्ग प्रलयावश्रुते वशः ॥ ७ ॥ ८ ॥

छ हुं छ ॥ एतिका राजसूत्रले हंछन् जीवलाई सो हि भगवान् की माया हो भनि जान ॥ ५ ॥ हेमहाराज कर्मफलको भो
ग गर्ना जीव जो छ कसो गरि वदछ होला ॥ कर्मफलको भोग गरि सका प्रात मुक्त किन हवैन भनौला त मुन ॥ कर्म
इन्द्रिय हेरुले पूर्व जन्मका कर्मका वासनान छुट्या का हुनाले ॥ सो हि वासनाका अनुसारले गरि कर्मकन गर्दै
जीव जो छ तनै आफुले गमाका कर्मका मुख उः ख आदि गमाका फलको भोग गर्दै गरि ॥ स्वर्ग नरक पृथिवी मा छ
मूदै रहन्छ मुक्त हुदै न ॥ ६ ॥

॥ भा. २ ॥
॥ १५ ॥

कन्निकालसम्मधुमदैरहंछु। तौजीवभनौलातसुन॥ हेनिमिनामाराजा। एलैप्रकारलेकर्मकावसमापयाकोजीवजो
छु॥ मोक्षनहुंज्यालसम्म। वहुनैअकह्याणकनगर्न्याभयाका॥ कर्मकागतिमाजांदोजन्मजुमजुं। वारंवारहुदैर
हंछु॥ ७ ॥ एलैतरहलेमायास्वरूपभयाकीसृष्टिकनवतायार॥ मायास्वरूपभयाकाप्रलयकनपनिदेवाउं
छेन॥ हेनिमिनामाराजासुनमहाभूतहेरुकोनाशकोहेतुनजीकमाआयाविषे॥ ठुलोसाजुजोकोहिजगत्कन
चादिश्वंतलेरहितभयाकोकालजोछु॥ कारणमालीनगराउंदछु॥ ८ ॥ हेराजनमहाभूतहेरुकोनाशकोहे

धातुपल्लवआसनेवक्तंदव्यगुणात्मकम्॥ अनादिनिधनकालोद्यव्यक्तायापकर्षति॥ ८ ॥ रा
नवर्षाखनावृष्टिर्भविष्यत्युत्तराभुवि॥ तत्कालोपचितोस्त्राकोलोकांस्त्रीम्रतपिष्यति॥ ९ ॥
पातालतलमारभ्यसंकर्षणमुखानलः॥ दहन्नुर्द्धशिखोविश्वकवर्द्धतेवायुनेरितः॥ १० ॥ सव
र्त्तकोमेघगणोवर्षतिस्मशतंससाः॥ धाराभिहंसिहस्ताभिलीयतेसलिलेविराट्॥ ११ ॥

जुकनभंछुसुन॥ वडोभयकनगर्न्याभयाकोशयवर्षसम्मठुलोअनादृष्टिदृथिवीविषेहोला॥ तेसैकालविषेअ
तितप्रभयाकासूर्यजोछुन॥ तिनैलोककनसुकाउंछुन॥ ९ ॥ ताहोंप्रांतवायुलेसहितभयाकोउभोज्जालाभया
कोरुस्तेसकर्षणकासुखदेषिनिस्काकोआगोजोछु॥ पाताललोकसमेतव्याघ्रगारि॥ चारोंतरपसोंरालिवढी॥ तिनै
ककनउठाउला॥ १० ॥ तेसैआगालाईनिभाउनानिमित्त॥ प्रलयकालसंवंधिमेघमरातलजोछु॥ हातिकासुंठ

॥ राम ॥
॥ १५ ॥

जनाधारागरिशयवर्षसम्पत्तिहोला ॥ तांहीं प्रांतविराटको देह भयाको विश्वसंसार जो छ जलमा डवीहराउला
॥ ११ ॥ ताहा प्रांत वैराज पुरुष वस्त्रा जो छ ॥ विराट देह कनछोडिकारणा स्वरूप भयाकी ॥ प्रकृतिमालीन हुंछ
वडा भक्त भयाका वस्त्राको मोक्ष हुनु योग्य हो ॥ अरु कार्य रूकारणामात्र लीन हुन्या होई न भनु होला तहे म

ततो विराज सुत्त ज्य वैराज पुरुषोत्तम ॥ अव्यक्त विशते सूक्ष्म निरिभ्वन इवानलः ॥ १२ ॥ वायुना
हृतगंधाभूः सलिलत्वाय कल्पते ॥ सलिलं तद्धृतर संजोति दृष्टा योपकल्पते ॥ १३ ॥

हाराज सुन ॥ भक्त छैन न भन्ना अश्वमेधादिय जगति ॥ सत्यलोक सम्म गया का प्राणि हेरु ले पनि फेरि नाहा आ
उनु पर्छ ॥ तस्कारणा भक्ति न भया वस्त्राको पनि ॥ प्रकृतिमालय हुंछ ॥ फेरि उत्पत्ति पनि हुन्छ मोक्ष भन्ना व
स्त्रालाई पनि डल भन्छ भनि सूचन गर्ना लाई सत्ता भन्ना को हो ॥ विरोध न देषु अथवा वस्त्रा जो छन ॥ वि
राट देह छोडिकन वस्त्रमालीन हुंछन भन्ना सत्ता अर्थ गन्ना मोक्ष वस्त्रको हुंछ भनि जानु ॥ १२ ॥ सत्तै त
रहलै विराट देह को लय हुंछ भनि वतायार ॥ विराट देह का कारण भयाका महत्त्व आदि गन्ना का यथि
वीपर्यय नका ॥ महाभूत का सृष्टिका उत्पत्ति मले गरिलय भु सुन ॥ हे निमिना माराजा वायुले हरियाको
छ गंध गुण जस्को ॥ सति पृथिवी जो छ जल स्वरूप हुंछ ॥ पृथिवी हरार जो छ ॥ ते सै प्रलय काल का वायुले हरिया

॥ भा. ॥
॥ १६ ॥

कोछः रसगुणजसको. एतोजलजोछ ज्योतिस्वरूपहोई जांछ ॥ १३ ॥ प्रलयकालका अंधकारलेहयाकोछ रूपगु
णजसको ॥ एतोज्योतिजोछ वायुस्वरूपहुंछ ॥ ज्योतिहराउंछ ॥ आकाशलेहयाकोछ स्पर्शगुणजसको एतोज्योति
जोछ आकाशमालीनहुंछ ॥ १४ ॥ कालस्वरूपईश्वरलेहयाकोछ शब्दगुणजसको ॥ एतोज्योतिजोछ तामस
अहंकारमालीनहुंछ ॥ इन्द्रियभया बुद्धिभैराजसअहंकारमालीनहुंछन ॥ मनभयो इन्द्रियका अधिपतादे
वताहेरुभया ॥ सात्त्विकअहंकारमालीनहुंछन ॥ १५ ॥ हेमहाराज ॥ एतै प्रकारले आकाशकार्यले सहि

हत रूपं तु तमसा वा योज्योतिः प्रलीयते ॥ हतस्पर्शौ वकासेन वायुर्न भसिलीयते ॥ १४ ॥ काला
त्मना हतगुणान् भस्मात्मनि लीयते ॥ इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सह वै कारिकैर्नृप ॥ १५ ॥ प्रविशं
ति हंकारं स्वगुरौ रहमात्मनि ॥ एषा माया भगवतः सर्गस्थितं तकारिणी ॥ १६ ॥ त्रिवर्णा
वर्णितास्माभिः किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ १६ ॥ राजोवाच ॥ यथैतामैश्वरीं मायां दुर्जयामकृतात्म
भिः ॥ तस्य जः स्थूलधियो महर्षि इदमुच्यतां ॥ १७ ॥

॥ तभयाको ॥ सात्त्विक राजस तामस
तीन प्रकारको अहंकार जोछ ॥ आकाशकारण भया कामहनत्वमालीनहुंछ ॥ महत्त्वजोछ प्रकृतिमालीनहुंछ
एतिकुरागर्भा माया हो जान् ॥ १६ ॥ हेमहाराज स्थितिप्रलयकनगर्भा भयाकी ॥ सत्वरज तमोगुणले
सहित भयाकी ॥ एतियो भगवान्की माया कन हा मिलेवता ॥ अवउ प्राज्ञ फेरिकुन कुरो सुनाकोइछाछ

॥
भनभनियो गिहेरुले भयार ॥ १७ ॥

॥ राम ॥
॥ १६ ॥

हेवसुदेव. तिमिनामाराजा जो थियो प्रह्वगर्नाकनलाग्पा हे योगीश्वर हो. भगवान्की माया कनवता डनु भयो सुभा
भगवान्का चरणा कमलमा भक्तिगया मायाहरा उंछे भन्ना करोपनि सुभा ॥ अव भक्तिले मात्र माया तरी नछकी
॥ असुपनि माया तनु लाई केहि उपाय छ भनि सो छु भन ॥ मन कन जितना कन नसकन्या प्राणि हे सले ॥ वडा डः ख
लेपनि तन सक्का भयागनु लाई केहि उपाय छ भनि सो छु भुकी इ स्वकी माया कन ससुल देहमा अहंताम
मता भयाका प्राणि हे रूपनि ॥ सुखेले गरिजो नु उपाय लेत दछन् ॥ सो उपाय कन भन भनि सो धारा जालेर प्रवुद्ध

प्रवुद्ध उवाच ॥ कर्माण्यारभमाणाना डः ख हन्ते सुखाय च ॥ पश्येत्पाक विपर्यासं मिथुनिवारि
णानुरागम् ॥ १८ ॥ नित्यार्तिदेन विनेन दुर्लभेनात्ममृत्युना ॥ गृहापत्याप्तपशुभिः का प्रीतिः साधि
॥ तैश्चलैः ॥ १९

नामा जोगी जो थिया कहनलाग्पा हे महाराज. माया कन तर्पा उपाय जो छ. भक्ति छ. दोस्रो
छैन ॥ सुखमिलो सुख जाउन् भन्ना निमित्त नाना कर्म कन स्त्री पुरुष संग भै रहन्या प्राणि हे रुक्या सुख मि
लनु काहा छ अर्घालो डः ख भयाको हे नुर. वैराग्य गर्नु ॥ १८ ॥ हे निमिनामाराजा. कर्मले गरिउ तन्त्रगया काध
न हे रूपनि डः ख का कारण छन भनि जान ॥ वडा डः ख लेपनि नपा त्रिन्या कमाउदा. धन थाग्दा हराउदा. सदा ड
डः ख कन दिन्या साक्षात् आकु मृत्यु स्वरूप भयाका. धन को कौन काम छ. केहि छैन ॥ घर. छोरा. आपस जन
पशु. इपनि अति चंचल भयाका. स्थिर नहुन्या ॥ इन्संग को पनि क्या प्रीति छ केहि छैन ॥ १९ ॥ ॐ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १७ ॥

जसै ससलोकमासवै वसुजो छ. श्रीतिगर्नयोग्य छैन ॥ तसै नाना प्रकारका कर्मले गरि भयाको हुनाले अनित्य छ. नाशि
न्या छ. नाना प्रकारका सुख दुःखले पयुक्त भयाको छ ॥ भनि स्वर्गलोक कन पनि जानु ॥ जसै आपसमा राजा हेरुका
उस्को उसलाई भयउ सको जसलाई भयहुं छ. तसै स्वर्गमा परसर भय छ ॥ तस्कारण स्वर्ग पनि वैराग्य गनी कन
योग्य छ ॥ २० ॥ तसर्थ उन्नम श्रेय कन जान्नाको इच्छा गर्नाले वेद वेदार्थमा पारंगत भयाका वसुतत्त्व कन पनि
साक्षात्कार गर्ना भयाका शातस्वभाव भयाका. सत्ता गुरुकानजीकमा जाउ ॥ २१ ॥ ताहाप्रान्त गुरुकानजीक

एवं लोकं परं विद्यान् श्वरं कर्म निर्मितम् ॥ स तु ल्यादिशय ध्वंसं यथा मणालवर्तिनाम् ॥ २० ॥
तस्माद्गुरुप्रपयेत्ततिज्ञासुः त्रेय उन्नमम् ॥ शाब्दे परे च निह्नातं वसुतत्त्वपुपसमाश्रयम् ॥ २१ ॥
तत्र भागवतान्धर्मान् शिक्षेत्तुर्वात्मदैवतः ॥ अमायया तु वृत्तायै सुष्येदात्मात्मदोहरिः ॥ २२ ॥
सर्वतो मनसो संगमादौ संगं वसाधुषु ॥ दयां मैत्रीं प्रश्रयं च भूतेष्वद्या यथोचितम् ॥ २३ ॥ शौचं त
पतितिक्षां च मौनं स्वाध्यायमार्जवम् ॥ ब्रह्मचर्यं महीं सावममत्वं दंदं संजयोः ॥ २४ ॥

मावसि ॥ कयटनगरि गुरुको वडो भक्ति गरि जो न भगवद्धर्म गर्नाले ॥ साक्षात् मुक्ति दिन्या भगवान् जो छन सन्नो
ष कन प्राप्त हुन्छन ॥ सत्ता साक्षात् भगवान् ले वनायाका भगवद्धर्म कन सिधु ॥ २२ ॥ श्रीकृष्ण परमात्मायै ॥ सव वि
षयमा मनको संग न गर्नु भनि पहिले सिधु ॥ ताहां पछि साधुको संग गर्नु भनि सिधु ॥ गरीपका उपरमा दयाग
र्नु आफु वरोवरका संग वडो मैत्री गर्नु आफु भन्दा दुला संग न भै रहनु ॥ २३ ॥ राग द्वेष हेरुको त्याग गर्नाले र

॥ राग ॥
॥ १७ ॥

माद्योजलले गरि वाहिह मित्र सौच गर्नु ॥ आक्राधर्मको आवरण गर्नु ॥ क्षमाधारि हुनु विना प्रजन वचन नबोल
आक्राकर्ममा फिककी वेद पाठ गर्नु कपटिन हुनु ॥ सवै संग सो जो भै रहनु वल चर्य मार हुनु ॥ प्राणिका उपर
क्रोहन गर्नु विमोता तो सहनु हर्ष विस्मात के हिन गर्नु ॥ २४ ॥ जाहा ताहा सव सुमा सत्तारूप ले चित रूप ले र
ह्याका आत्मा लाई देखु ॥ नियन्ता रूप ले गरि र ह्याका ईश्वर लाई देखु ॥ एकांतमा वस्तु घरमा वस्तुको अभि
मान नगर्नु ॥ प्राणिन भयाका ठाउँमा घस्याका भुद्ध भयाका वस्त्र कारवरा देखु ॥ अथवा वोका पै हुनु जति मि
ल्यो ठेरै थोरै निकोन निको उ सै वस्तुमा संतोष गर्नु ॥ २५ ॥ श्रीमद्भागवत शास्त्रमा श्रद्धा गर्नु ॥ अरु शास्त्रको

सर्वत्रात्मे श्वरानीक्ष्यं कैवल्यमनिकेतनाम् ॥ विविक्तचरवसनं संतोषयन केनचित् ॥ २५ ॥ श्रद्धाभा
गवतेशास्त्रे निन्दामन्यत्र चापि हि ॥ मनोवाक्कर्मदरांश्च सत्यं समदमावपि ॥ २६ ॥ श्रवणकीर्त्तनं ध्यान
हरेरद्भुतकर्मणाः ॥ जन्मकर्मगुणानां च तदर्थं खिलचेष्टितम् ॥ २७ ॥ इष्टं दत्तं तपो जपं व्रतं यच्चात्मनः
प्रियम् ॥ दारान्मुतान् गृहान् प्राणान् यत्परस्मै निवेदनम् ॥ २८ ॥

॥ निन्दानगर्नु ॥ प्राणायाम ले गरि म
नकन नियम नगर्नु ॥ मोन भै रहनु कर्म निमित्त चेष्टानगर्नु ॥ साचो बोलनु मनर वाहेन्द्रिय कजित्तु ॥ २६ ॥ ह
रिको श्रवण कीर्त्तन ध्यान गर्नु ॥ यज्ञ आदि ग्याका जो कोहि कर्म छन तिसवै हरि निमित्त छन भनि अर्थ गर्नु
॥ २७ ॥ यज्ञ दान तपस्या जप सदाचार ॥ आफु ले पिया का जो कोहि चन्दन पुष्पादि छन तिसवै हरिका चरणा

॥ भा. ए. ॥
॥ १८ ॥

माअर्पणगारियाकासफलहंछन् भनिगुरुदेविसिकुनस्त्री ॥ छोराघरप्राणाईसवैपरमेश्वरकासेवानारहुन् भनि
अर्पणगर्तुभन्याकुरोपनिगुरुवाटसिषुनु ॥ २८ ॥ हेमहाराजसुसैप्रकारले ॥ कह्यछन् आत्मापनिनाथपनिजनकास
लामनुष्य ॥ हेरुविषेप्रीतिगर्तु ॥ स्थावरजंगमसवैजनाकोपूजागर्तु ॥ विशेषलेगरिमनुष्यकोपूजागर्तु ॥ मनुष्यमा
पनिआक्राधर्ममारहन्ना ॥ सत्तासाधुजनकोपूजाजोछ ॥ विशेषलेगरिगर्तु ॥ ताहाभन्दापनिभगवान्काभक्तको
पूजागर्तु ॥ भन्याकुरोपनिगुरुदेविसिकुनु ॥ २९ ॥ आपत्ताआफुआफुवसि ॥ अतिपवित्रभयाकाभगवान्का

एवंकृष्णात्मनाथेषुमनुष्येषुचसौहृदम् ॥ परिचर्योसोभयन्नमहत्सुनृषसाधुषु ॥ २९ ॥ पर
स्परानुकथनंपावनंभगवज्यशः ॥ मिथोरतिमिथुसुष्टिर्निवृत्तिमिथआत्मनः ॥ ३० ॥ स्मर
न्तस्मारयन्तश्चमिथोशौघहरंहरिम् ॥ भक्त्यासंजातयाभक्त्याविभ्रत्युत्तुलकांतनुम् ॥ ३१ ॥

जसकोकथागर्तु ॥ भन्याभुनाउनालेआफुआफुमाश्रडागरिस्पर्द्धानगरिकथामाघीतीगर्तु ॥ संतोषगर्तुसंतो
षगर्तु ॥ कौनैकुराकोडःखनैनगर्तु ॥ इकरासवैगुरुछेउवाटसिषुनु ॥ ३० ॥ पापसमुदायकोहरणगर्तुहरि
कोचरणसमूहसमुदायगारिभक्तिगर्तु ॥ सुसैतरहसितभक्तिगयाप्राप्त ॥ भगवान्काचरणकमल
मा ॥ वडिप्रेमरूपभक्तिलागछेर ॥ रोमांचपनिभयाकादेहकन ॥ भक्तजोछुधार्दछ ॥ ३१ ॥ ॥ ॥

॥ राम ॥
॥ १८ ॥

ससै प्रकार ले कै हू कता गयो भगवान् भनि । भगवान् का चित्रा ले रुन्छ । कै हू भक स्मात् भगवान् संग भेट भया रुजि
गरि कै हू हा सो गर्छ । कै हू हर्ष गर्छ । कै हू वोल्छ । ससै लोक मा वाहि ठो भै नृत्य गर्छ गाउँछन् । भगवान् ले जमोली
लागदी भया थ्या । उसै लीला गर्छ । ससै प्रकार सित भगवान् कनया उंदछ । अति आनन्द कनया प्रभया कोछ दोउ
पुला गिर हन्छ ॥ ३२ ॥ ससै रित ले गुरु छेउ वाट भगवद्धर्म कनसिकन्या । भक्त का उत्पन्न भया की भक्तिले गरि । अ

कचिदुदंत्युत चिंतया कचिद्ध संति नन्दंति वदन्त्यलौकिकाः ॥ नृत्यन्निगायन्त्यनुशीलयन्त्यजंभवन्ति ॥
तूष्णीपरमेत्यनिवृत्ताः ॥ ३२ ॥ इति भागवता धर्मान् शिष्यभक्त्या तदुत्थया ॥ नारायणपरोमायामंजल
रतिदुस्तराम् ॥ ३३ ॥ राजोवाच ॥ नारायणमिधानस्य ब्रह्मणः परमात्मनः ॥ निश्चमर्हथ नो वक्तुं यूयं हि ब्रह्म ॥

त्यन्न नारायण को आश्रय भया हराउँछे ते स्ता भक्त जो छ माया कनत र्दछ ॥ ३३ ॥ नारायण को भक्त जो छ माया
कनत र्द भनी आज्ञा गर्नु भयो ॥ तसर्थ हे योगीश्वर ही नारायण ब्रह्म परमात्मा ॥ सति नाउ भया का भगवान् को
स्वरूप सके छ कि भिन्न स्वरूप छ ॥ मलाई स्वरूप जो छ वताउनु हवस् ॥ तिमि हे ब्रह्म कन चिह्या पुरुष माटे
रै श्रेष्ठ हुनुहुन्छ भनि राजाले सोधार ॥ तिनै योगी हे रुमा पिप्पलायण नामा जो गी जो थिया आज्ञा गर्नु कन लाग्पा ॥ ३४

॥ भा. ८ ॥
॥ १९ ॥

हेमहाराज निमिनामाराजो सुन ॥ नारायण वल्लभ परमात्मा भनिरूप कै स्वरूप हो भिन्न छैन ॥ इस वैना उलेस कै वल्लभ कन
कहन्छ भिन्न छैन ॥ भगवान् भनिसोहि वल्लभ कहिन्छ ॥ विशेष ले गरिपनि भन्छु सुन ॥ आफु भन्या कारणाले रहित भ
याको यो जगत को भन्या ॥ स्थिति स्थिति प्रलय गर्दा माकारण भयाको सोहि नारायण हो ॥ सोहि परमत तत्व हो जा
नुहवस ॥ जागरण अवस्थामा स्वप्नावस्थामा सुषुप्ति अवस्थामा जो स्वरूप ले गरि रक्षा को जो छ ॥ तेहि परम

श्रीपिप्पलायण उवाच ॥ स्थितुद्रवप्रलय हेतुरहेतुरस्य यत्स्वप्न जागर सुषुप्तिषु सद्विद्वि ॥ देहेन्द्रि
या सुहृदयानि चरन्ति येन संजीवितानि तदवै हि परमं नरेन्द्र ॥ ३५ ॥ नैतन्मनो विशति वा गुणं च
क्षुरात्मा प्राणोन्द्रियाणि च यथानलमर्चिषः स्वा ॥ शब्दोपिवोधक निषेधतयात्ममूलमर्थोक्त
माह यद्वतेन निषेधमिद्धिः ॥ ३६ ॥

तत्त्व हो ॥ समाधि गर्दा विषे जो सत्वरूप छ सोहि परमत तत्व वल्लभ हो जड भयाका पनि ॥ देह इन्द्रिय मन प्राण हेरु
जो छन ॥ जस ले जीयाया का छंदा आफु आफु को ममा प्रवृत्त हुन्छन् ॥ परमात्मा भनिके हियाको परमत तत्व ते
हि हो जान ॥ एतै प्रकार ले नारायण वल्लभ परमात्मा इत्यादि शब्द ले कहियाको पनि परमत तत्व एकै हो ॥ हेमहा
राज ॥ ३५ ॥ जसै अग्नि देवि उत्पन्न भयाको ॥ जसना हेरु अग्निकन प्रकार गर्न सकतैनन् ॥ तसै मन भयो वच
न भयो नेत्र भयो बुद्धि प्राण इन्द्रिय ॥ इस वै जस कन जान्दैनन् ॥ तस कन परमत तत्व भनि जान ॥ वेद ले पनि एतै हो

॥ राम ॥
॥ १९ ॥

ये हो वस्त्र भनि साक्षात् कहन न सकिया को छंदा जगत् लाई वस्त्र होई न भनि निषेध गर्दा ॥ जस लाई यो होई न भनि निषेध गर्न स
किंदैन ॥ सोहि वस्त्र हो भनि जान जो न वस्त्र न भै जगत् को निषेध पनि होई सत्तेन ॥ सोहि वस्त्र हो भनि जान ॥ ३६ ॥ वस्त्र छ
भन्ना प्रमाण न हुनाले वस्त्र लाई छ भनिक सो गरि मानु होला त हे महाराज सुन ॥ कार्य कारणा जो कोहि देखिछ स
वै तो वस्त्र हो भनि जानु ॥ कार्य कारणा को पनि कारणा छ भनि जानु ॥ एकै वस्त्र जो छ नाना तरह का जगत् को कारणा क
सो गरि देखि भनौला त ॥ पहिले एकै वस्त्र भनिक हिया को पनि जो छ ॥ सत्वरज तम ईतीन गुणाले युक्त भया की
प्रकृति पनि कहिछ महत्त्व पनि सोहि कहिछ ॥ जीव भयो जीव क को उपाधि भया को अहंकार पनि कहिछ
इन्द्रिय भया इन्द्रिय का अधिष्ठाता देवता भया विषय भया इन्द्रिय को रविषय को संबंध हुदा कोहि सुख भयो

सत्वरज तम इति त्रिवृदेकमादौ सूत्रं महानहमिति प्रवदन्ति जीवम् ॥ जान क्रियार्थ फल रूपत
यो रुशक्ति वस्त्रैव भाति सदसच्चतयो परयत ॥ ३७ ॥ नात्मा ज जान न मरिष्यति नैव ते सो न क्षीय
यते सवन विद्य विचारिणां हि ॥

॥ त्यो सवै एतै रूपले प्रकाश भया को जो छ वस्त्रै हो भनि जानु ॥ ना
ना तरह की मायाले गरि नाना रूप प्रकाश छ ॥ नाना तरह का जगत् को कारणा पनि छ भनि जानु ॥ ३८ ॥ सर्वस्व
रूप वस्त्र छ भन्ना सवै जगत् को जन्म देखिछ ॥ वस्त्र को पनि जन्म होला भनौला त सुन ॥ हे निमिना मारा जा जन्मो
भनु कुरा वस्त्र माछैन ॥ जन्म छैन भया जन्म भया पछि छ भन्ना विकार पनि वस्त्र माछैन ॥ वढन ला गिरहे छ
भन्ना विकार पनि वस्त्र माछैन ॥ वढनु छैन भन्ना बुद्धादि अवस्था प्राप्ति हुनु पनि वस्त्र माछैन ॥ क्षीणा अति दुर्ब
ल भयो भनु विकार पनि वस्त्र माछैन ॥ मृत्युदशा कन प्राप्ति भयो भनु विकार पनि वस्त्र माछैन ॥ तस अर्थ ज

॥ भा. ॥
॥ २० ॥

मेछ. वछ. दछ. वृद्ध भयो. घटन लाग्यो. मयो भन्या ॥ एताई छै विकार जो छन देह काहन. आत्मा का होई नन ॥ वाल पु
वा. वृद्ध इत्यादि धर्म पनि देह का हुन ॥ ब्रह्म का होई नन ॥ आत्मा ब्रह्म जो छ. निमि देह का अवस्था कन देषु न्या मात्र
हो ॥ देषु न्या जो छ. देषि न्या देह आदि गया का दृश्य वस्तु का ॥ जन्म नु. मर्तु. वाल वृद्ध आदि गया का. देह का धर्म क
न पाउंदैन ॥ वाल वृद्धादि को हि अविद्या न भया को एता ब्रह्म जो छ. को न हो भनौ लात सुन ॥ हे महाराज तौ ब्रह्म
जो छ ज्ञान स्वरूप मात्र छ ॥ उत्पन्न भै विनाश हुं नाले ज्ञान स्वरूप ब्रह्म हो भन्या ॥ ब्रह्म साक्षरी कत्व प्राप्त होला
भनौ लात सुन ॥ सर्व देश मा सर्व दाना शन भै रह्यो को छ. क्षणिक छैन ॥ ज्ञान का विषय को नाश भया मा ज्ञान
को नाश हुंदैन ॥ तस अर्थ. नित्य स्वरूप छ ब्रह्म भनि जानु ॥ सत् स्वरूप भया को ज्ञान पनि इन्द्रिमावल ले गरि. नाना

सर्वत्र शब्द न पापु पल विमात्रं प्राणो यथेन्द्रिय बलेन विकल्पितं सत् ॥ ३८ ॥ अणेषु पे शिषु तरू
ष्वविनिश्चितेषु प्राणो हि जीवमुपधावति तत्र तत्र ॥

॥ तरह कानील पीत आदि गया का वृत्ति रू
प आकार कन पाउंदछ ॥ वृत्ति उत्पन्न हुं छन. वृत्ति नाशिं छन ॥ ज्ञान जो छ. नाशिंदैन ॥ जसै देह हेरुन छु
दामा प्राण नाशिंदैन. तसै जानु ॥ ३८ ॥ दृष्टान्त कन विस्तार गन्यार योगी जो छन ॥ इन्द्रिय हेरु को लय भया प
छि ॥ कोहि विकार न भया का आत्मा को ज्ञान हुं छ भनि ॥ निमि नामा राजा कन देषाउं छन ॥ हे महाराज सुन. जरायु
ज भन्या का. साल मा वेहिकन. जन्म न्या मनुष्य. पशु हेरु भया ॥ अणु ज भन्या का फल पुटि जन्म न्या पक्षि हेरु भ
या ॥ उद्भिज भन्या का रथी वी फोरि उग्र न्या. वृक्ष लता हेरु भया स्वेद ज भन्या का. पसिना दे विहुन्या जु आदि ग
या का जंतु हेरु भया ॥ अरु जो कोहि एतै प्रकार ले उत्पन्न भया का हुन भनि जानि न सकि न्या जंतु हेरु भया ॥ इत्या

॥ राम ॥
॥ २० ॥

दिग्गणकानानाविकारलेयुक्तभयाकादेहहेरुविषेप्राणजोछ॥ताहाताहाजीवकापछिलागछन्॥एतैप्रकारसित
अनेकविकारलेयुक्तभयाकादेहहेरुविषे॥विकारकेहिनभयाकोआत्मादेपिन्धुभनिदेवायारभन्छन्॥कसोग
रिविकारिऊजिदेपिन्धु॥तवआत्माभनुहोलातसुन॥जाग्रतअवस्थामातोआत्माजोछ॥विकारिऊजिदेपिन्धु॥
स्वप्नावस्थामाजाग्रतअवस्थाकाविषयकावासनाकोअहंकारछंदामापनिविकारिऊजिदेपिन्धु॥जव
सुषुप्तिअवस्थाभयो॥तैलेसवैइन्द्रियहेरुहराउछन्॥स्वप्नावस्थाकोवासनापनिहराउछन्॥तससमयमाविकारको
हेतुभयाकोलिंगशरीरपनिहराउनाले॥कूटस्थनिर्विकारमात्रआत्मारहन्छ॥इन्द्रियादिअहंकारसम्मकोललयभ

सन्नेयदीन्द्रियगरोहमिवप्रसुप्ते॥कूटस्थआसयमृतेतदउस्मृतिर्नः॥ ३८ ॥यसंप्रज्ञाभवराण्यो
रुभक्त्या॥चेतोमलानिविधमेकुराकर्मजानिः॥

यापछि॥भूयमात्ररहन्नाहो॥कसोगरिविकारतभयाको॥कूटस्थआत्मारहन्छभनौलातसुन॥विशेषज्ञानन
भयाकोसुषुप्तिअवस्थाकोसाक्षीभयाको॥सुखस्वरूपआत्माको॥सुषुप्तिअवस्थाकापछि॥जाग्रतअवस्था
काआरंभमासमूहनारहन्छ॥भूयस्वरूपमात्ररहन्नाहोभन्ना॥सुखस्वरूपआत्माकोसमूहनारहेन॥एतिका
सम्मवडासुखआनन्दपूर्वकसुत्पाछ्छ॥केहिपनिथाहापाइनछभन्ना॥एतौअर्थभयाकोसुखमहमखाप्रसन्न
किंचिदवेदिषं॥भन्नाएतौवेदविरोधहोला॥तसअर्थसुषुप्तिअवस्थामाविकारनभयाको॥कूटस्थआत्मार
हन्छभनिअवस्थमानु॥ ३९ ॥सुषुप्तिमानस्थआत्माकोअनुभवहुन्छभन्ना॥कसोगरिसंसारहुन्छभन्नाआश

॥ भा. ८ ॥
॥ २९ ॥

कागैरौलातमुन ॥ अविचार अविद्या संस्कार हेरु को नाशन हुनाल संसार फेरिहु छ ॥ उ सो भर्मा कै हे संसार को निव
निहुं छ सुषुप्ति अवस्था का सुख स्वरूप आत्मा का अनुभव ले गरि संसार हराउ दोर हेन छ ॥ संसार को निव नि
हुना आत्मा को अनुभव जो छ ॥ कै हे हुं छ भनौलातमुन ॥ धन स्त्री पुत्र आदि गमा का विषय को इछा गर्न छो
डि ॥ केवल भगवान का चरण कमल विषे वडा प्रेम सित भक्ति गर्न ले गरि ॥ द्वेष आदि गमा का कर्म ले गरि भ
या कामन कामल कन जो प्राणि पषालिकन फाई छ ॥ ते स प्राणि का शुद्ध भया कामन विषे ॥ निर्मल नेत्र विषे स
र्य को कान्ति प्रकाश रुजि गरि ॥ चाडै आत्म तत्व साक्षात्कार हं छ ॥ तौ हो प्राण संसार जो छ ॥ ते स प्राणि का हराउं

तस्मिन्नि शुद्ध उपलभ्यत आत्म तत्वं साक्षाद्यथा मलदृशो सवितृ प्रकाश ॥ ४० ॥ श्री राजोवाच ॥
कर्मयोग वदत नः पुरुषोत्तम संस्कृतः ॥ विधूयेह शुभ कर्माणि नैक कर्म विंदते परम् ॥ ४१ ॥ एवं प्र
ह्न मृषीं पूर्वममृच्छ पितरं तु के ॥ नाक्व नृवल्लराः पुत्रास्तत्र कारणमुच्यताम् ॥ ४२ ॥

छ भनि पिप्पलाय गाना मा योगी ले आजा गमा को मुनि ॥ निमिना मारा जा विंति गर्न लाग्ण ॥ ४० ॥ हे योगी श्वर हो
कर्म योग कन मलाई आजा गर ॥ कर्म योग न गरि ईश्वर का चरण मा भक्ति लागे दोर हेन छ भक्ति न लाग्ण संसार
त दोर हेन छ ॥ तसर्थ जो न कर्म योग गर्न ले शुद्ध चित्त भया को पुरुष जो छ ॥ ए सै देह विषे सवै कर्म कन पषा
लि फालिकन ॥ कर्म को निव निगर्न ले गरि भया का परम ज्ञान पाउं द छ ॥ ए लोक कर्म योग कन आजा गर भनि प्रह्न
गमार ॥ फेरि निमिना मारा जा जो छ नृ अ को प्रह्न गर्न कन लाग्ण ॥ ४१ ॥ हे योगी श्वर हो त पात्रि हेरु संग गमा का

॥ राम ॥
॥ २९ ॥

ससैप्रसक्तन॥ पहिले हा आवावा इक्ष्वाकु नामा राजा का अधि ति र॥ मैले सनकादि गगना का अधि हे रुसंग सोध्यां
थ्यां॥ परं तु वत्सा का पुत्र भया का सनका दि वडा जान्या हे रुले प नि म लाई उत्तर कन गदा भयान था॥ उत्तर न
गर्ना को कारणा का हो॥ तो कुरो प नि आजा गर भ नि राजा ले सोधार ॥ ४२ ॥ आ वि हे त्र ना मा योगी जो छ न॥ क
र्म जो छ वडा डः ख ले प नि बुझि न सकु छ भ नि॥ राजा लाई बुझा उ ना नि मि ज प हे दो स्त्रा प्र सक्त को उत्तर ग र्म ला
गा॥ हे महाराज गर्नु भ नि क हिया को कर्म जो छ विहित कर्म क हिं छ न गर्नु भ नि या को कर्म जो छ निषिद्ध क
र्म क हिं छ गर्नु भ नि क हिया का कर्म क न न गर्नु जो छ विकर्म क हिं छ॥ इति नै कुरा जो छ न वेद ले गरि जा निं छ न
॥ लोक व्यवहार ल जा नि दै न न॥ वेद जो छ ईश्वर दे षि नू उ त्त न्न भ या को हो त स अर्थ वेद ले भ न्या को अव श प मा

श्री आ वि हे त्र उ वा च॥ क र्मा क र्म वि क र्मे ति वेद वा दो न लौ किक॥ वेद स्य चेश्वरा त्म त्वा त्र त्र मु ह्यं ति

॥ सूर यः ॥ ४३ ॥

नु प छ॥ आज काल का पु रु ष ले भ न्या का व च न को भ न्या॥ वो ल न्या पु रु ष का भ भि प्रा॥
य ले अर्थ ज्ञान गर्न सकिं छ॥ ईश्वर का व च न को त केवल पूर्वा पर व च न को अर्थ विचार गरि तात्पर्य विषय
भूत अर्थ को ज्ञान हुं छ तो कुरा भ न्या व डो गा हो गरि प नि न सकु छ॥ त स अर्थ स स्तो क र्म हो॥ स स्तो वि क र्म भ
नि ठ हा र्ना नि श्च य ज्ञान गर्ना कुरा मा जान्या प रा ती त हे रु प नि मो ह क न प्रा प्त हुं छ न॥ स स्तो हो भ नि नि श्च य ज्ञा
ग र्नु स त्ते न न अ रु मूर्ख हे रु क्का जा न्न न॥ त स अर्थ हे नि मि ना मा रा जा॥ ति मि वा ल क थि यो र॥ प्र सक्त ग यो त प नि
क र्म को कुरा का जा न्ना भ नि॥ ति मि ले ग या का प्र सक्त को उत्तर क न स न का दि अ धि हे रु ले ग दा भ या न न॥ प्र सक्त को उ
त्तर न ग या को कार ण स स्तो हो व रु भ नि आ जा ग या र ॥ ४३ ॥

वेदको तात्पर्य अर्थ जो छ ॥ वडा गा हो सित पनि उरि न स कनु भनियो गी जो छ न आजा गर्न लाग्या ॥ अर्कै प्रकार सित रखा का अर्थ क
न गुप्त गरि कहना निमित्त भर्कै प्रकार ले कहनु जो छ ॥ परोक्षवाद कहिं छ सलो परोक्षवाद स्वभाव भया का वेद ले स्वर्ग
दिफल भोग हव स भन्ना निमित्त ॥ कर्म कन गर्नु भंछ भन्ना कुरा भन्ना ॥ बाल कलाई शिक्षा गर्नु जसो मात्र हो ॥ जसो
बाल कलाई वा बुजो छ ॥ औषध पियाउना निमित्त चिनिल उहेरु तोलाई दिउं ला भनिलो भ्याई औषध कन पिजाउं
छ ॥ चिनिल उपनि दिछ परंतु चिनिल उपाउनु औषध पिउना को प्रयोजन होई न ॥ क्या हो भन्ना रोग निवृत्ति प्रयोज
न हो ॥ तसै वेद जो छ सो पनि विषय मावद्ध भया का प्राप्ति हेरु लाई छोटा स्वर्ग दिफल भोग मा लो भ्याई ॥ कर्महरा

परोक्षवादो वेदोयं बालानामनुशासनम् ॥ कर्ममोक्षाय कर्माणि विधत्ते ह्यगदयथा ॥ ४४ ॥ नाच
रेशु वेदोक्तं स्वयमज्ञो जितेन्द्रियः ॥ विकर्मणा ह्यधर्मेण मृत्यो मृत्युमुपैतिसः ॥ ४५ ॥

उन् भन्ना निमित्त कर्म गर्नु भंछ ॥ वेदको मुख्य अर्थ ससै हो ॥ कर्म गर्नु र स्वर्ग मिल्छ भन्नु कुरा भन्ना कर्म
रूप सिद्धि मावढाई ॥ ताहा देखि पनि निष्कामना तिर लगार्ई ॥ इश्वरको आराधना निमित्त का कर्म माल गाई
विषयी लाई पनि मोक्ष गराउं भन्ना ॥ ससै वेदको मुख्य तात्पर्य अर्थ हो ॥ स्वर्गरूप फल जो छ अवश्य होई न ॥ ४४
कर्महरा उनु जो छ सोहि मुख्य पुरुषार्थ हो भन्ना ॥ पहिले कर्म त्याग गरि हालनु कर्म न गर्नु भन्नु होला ननु न ॥ इंदि
य कन जित न स कन्या भजानि पुरुषले ॥ वेद मावता या को कर्म कन गरेन भन्ना ॥ त्यो प्राप्ति जो छ ससै अधर्म ले ग
रि मृत्यु कन वार वार पाउं दछ ॥ आज्ञा कर्म ले उर कन पाउं दछ दो मरि कन फेरि पनि मर्दछ भनि वेद मा पनि भ

तसर्थ हे महाराज निमिनामाराज ॥ वेदमावताया को कर्म अवस्य गर्जु ॥ तिषिष्ठ कर्मन गर्जु ॥ कर्मगरि कर्मको फल लागू दछ
भनि वेद छ भनि वेद मा भन्या को छ ॥ तस्कारण कर्म गन्या विषे ॥ कर्ममा आसक्ति अवस्य होला ॥ कर्म गन्या पछि कर्म
को फल पनि होला ॥ कर्मगरि ज्ञान रूप फल सिद्धि हुवैन भनौला त सुन ॥ फलको आसान गरि ईश्वर नारायण गन्या
निमित्त का कर्मले ॥ अवस्य ज्ञान रूप फल सिद्धि हुन्छ ॥ कर्मगरि फल लागू भनु कुरा त ॥ विषयीलाई कर्ममा प्रीति ग
राई ॥ वेदका अर्थ को विचार गराउना निमित्त हो ॥ तसर्थ वेदमा भन्या को छ ॥ का भन्या हे गार्गि ॥ ब्रह्मलाई न चिहि
सुख लोक देवि न जो प्राप्ति जाछ ॥ नो प्राप्ति रूप ग्राहो भनि ॥ आत्मा धर्मको आचरण गर्नाले भयो ॥ तपस्याले भयो ॥

वेदोक्तमेव कुर्वाणो निः ॥ संगोर्पितमीश्वरे ॥ नैकस्यालभते सिद्धिं रोचनार्थाफलश्रुतिः ॥ ४८ ॥ यज्ञा
भृद्दयं ग्रंथिं निर्जिहीर्षुः परात्मनः ॥ विधिनोपचरे देवं तच्चाक्तेन च केशवम् ॥ ४९ ॥

ज्ञागर्नाले भयो ॥ निराहार गर्नाले भयो ॥ एतिसवै कुरा गरि ब्रह्मण हेरु जो छन ॥ परमेश्वर जान्ना को इच्छा गर्छन
भन्या सुखा वेदको अन्य विचार गर्नाले गरियज्ञादिकर्म गर्नु जो छ ॥ ज्ञानको उपकार गर्ना रहेछ भनि उक्ति ॥ निष्का
कामना का कर्म माला गदछ ॥ ताहा प्राप्ति स्वर्गको कामना हुनाले ॥ अभ्यमेधयज्ञ गर्नु भन्या वाक्यले ॥ कामना गर्ना
लाई स्वर्गादि फल हुन्छ ॥ कामना न गरि कर्म गर्नालाई स्वर्गादि फल हुदैन भनि ॥ एतौ अर्थ बुझाउनाले ॥ निष्कामना
का कर्मको ज्ञान रूप फल सिद्धि अवस्य हुन्छ भनि ॥ वेदार्थको विचार जान्दछ ॥ ४८ ॥ एतै प्रकारले वेदमा वताया
का कर्म योग कन भन्यार ॥ तत्र मावताया का कर्म योग कन भन्नु लाग्या ॥ जीवात्माका अहंकार रूपी बंधन कन काटना

॥ भा. स. ॥

॥ २३ ॥

कोइछागर्भाले ॥ परमेश्वरकोतत्रमावतायाकाविधानलेगरि पूजागर्भ ॥ वेदमावतायाकाविधानलेपनि पूजागर्भ ॥ ४७ ॥
गुरुलेकपागरि देवायाका पूजाकाविधानलेगरि ॥ सूर्य. अग्नि. हृदय. वायु. जल. वासु. रागा. ई. सवै भगवान्का मूर्ति हुन्
एति मूर्तिमा जो न मूर्तिमा आहु चित्तलागे. उ सै मा भगवान्को ध्यान गरि पूजागर्भ ॥ ४८ ॥ कस्तोगरि पूजागरि गर्भ
न्या. अरु भै मूर्तिको संमुखमावसि. प्राणायाम रागरि. भूतभुक्तिगरि. न्यासगरि. देहशुद्धगरि पूजागर्भ ॥ ४९ ॥ फलप

लधानुग्रहमाचार्यानेन संदर्शिता गमः ॥ महापुरुषमभ्यर्च्य न मूर्त्या भिमतयात्मनः ॥ ४८ ॥ अचिः
समुख आसीनः प्राणसंयमनादिभिः ॥ पिण्डविमोक्षसंन्यासकृतरक्षोर्चयेद्धरिन् ॥ ४९ ॥ अर्चदौह
दयेवापियथा लब्धोपचारकैः ॥ द्रवक्षित्यात्मलिंगानि निष्पाद्य प्रोक्ष्य चासनम् ॥ ५० ॥ पाशादिनुप
कल्प्याथ संनिधाय समाहितः ॥ हृदादिभिः कृतन्यासो मूलमंत्रेण चार्चयेत् ॥ ५१ ॥ सांगोपांगो सपा
र्यदांतांतां मूर्तिस्त्वमंत्रतः ॥ पाशाद्याचमनीयाद्यैः स्नानवासो विभूषणैः ॥ ५२ ॥ गंधमाल्याक्षतस्तग्नि
धूपदीपोपकारकैः ॥ सांगं स पूज्य विधिवत्सर्वैस्तु त्वानमेद्धरिम् ॥ ५३ ॥

गर्भाठां उंवढारि. पोतिभुद्धरारि ॥ अनेकतरंगचित्रमाछाडि आसनकनपवित्रगरि ॥ ५० ॥ सवसराजामजोरिज
तिमिल्याका सराजामराषि ॥ सकाग्रचित्तगरि हृदादिन्यासगरि मूलमंत्रले पूजागर्भ ॥ ५१ ॥ हृदय आदिगयाका
अंगभया ॥ उपांगभयाका. सुदर्शन आदि गयाका आयुधभया ॥ सुनन्दनन्द आदि गयाका. चारो तर परहना भ
क्तभया ॥ ईसवै परिवारले सहित भयाका ॥ भगवान्का मूर्तिकन. मंत्रले गरि ॥ पा. अ. अ. मधुपर्क आचमनीय

॥ गम ॥

॥ २३ ॥

स्नानः वस्त्रावस्त्रः पुष्पः धूपः दीपः नैवेद्यः भूषणः भेटिः चन्दनः मालाः भक्षतश्चादि गयाका ॥ नानातरह कासरजामलेग
गरि ॥ वडा विधि पूर्वक पूजा गर्तुर ॥ अनेक स्तोत्र पाठ गरि लुतिन मस्कार गर्तुर ॥ ५३ ॥ आ फुकन पनि परमेश्वर का
स्वरूप देषिन् भिन्न नठ हरार्इ ॥ जन्म यधान गरि हरिको पूजा गर्तुर ॥ ताहा प्रात पूजा गया पछि निर्माल्य शिरमाल
गाउनु ॥ वडा सत्कार पूर्वक संपूट मा परमेश्वर कनराषतुर ॥ पूजा विधिकोर माप्ति गर्तुर ॥ ५४ ॥ एत्तै प्रकार सि
त भग्नी विषेः सूर्य विषेः जल विषेः पाहुना विषे हृदय विषे ॥ परमेश्वर को ध्यान गरि जो पूजा गर्छ ॥ तो प्राप्ति

आत्मानं तन्मयं ध्यायन् मूर्त्तिं संपूजयेद्धरिम् ॥ शेषामाधाय शिरसा स्वधाम्मुद्रास्य साकृतम् ॥
॥ ५४ ॥ स्वमग्न्यर्कतोयादावतिथौ हृदये च यः ॥ यजतीश्वरमात्मानमचिरान्मुच्यते हि सः ॥
॥ ५५ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे तृतीयोऽध्यायः ॥ १ ॥ राजोवाच ॥ योनिया
नीह कर्माणि येयैः स्वच्छन्दजन्मभिः ॥ चक्रे करेति कर्त्ता वा हरिस्मानिध्रुवतुनः ॥ १ ॥

जो छ संसार देषि चां डै मुक्त हुंछ ॥ भनि पिप्पलाय रा योगी ले निमिना मारा जा संग कल्या ॥ सो हि नारद ले व
सु देव कनक कल्या ॥ सो हि भुक देव ले राजा परीक्षीत कल्या ॥ सो हि कथा सूत ले नैमिषारण्य मा शौनकादि न
धि हेरु कनक हंदा भया ॥ ५५ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्रीधर कृत भाषा टीका यात
तीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ गयाका ते स्ना अध्यायमा ॥ जो न मूर्त्ति मा आ फु चित्त ला गर्छ ॥ उसै को पूजा गर्तु भन्ना ले ॥ अ

॥ भा. ८ ॥

॥ २४ ॥

वतारमूर्तिको पूजा गर्ना लाइ इच्छा गर्ना भयाकारा जा जो छन ॥ अवतार कन योगी हेरु संग सो छन ॥ हे योगी भवर हो जौ न जौ न
अवतार लिकन भगवान् ले अधिज लोक मर्ग गर्हा भया पछि ॥ ज लोक मर्ग गर्हा छन ॥ आज काल ज लोक मर्ग गर्हा छन ॥ न्यो स वै भ
न भ निरा जाले सो धार ॥ नौ योगी मा दु विलना मा योगी जो छन ॥ आज गछन ॥ १ ॥ हे निमिना मारा जा सुन ॥ अनन्त भगवा
न का अनन्त गुण को गणना गरि ॥ ए तिहु न भन्ना को इच्छा गर्ना जा छ ॥ वाल बुद्धि भया को प्राणि हो ॥ ठे रै काल सम्म गरा
ना गर्दा ॥ वडो बुद्धि मान भया देषि ॥ पृथिवी का धूला कन ॥ वरु गणना गर्न सकनान ॥ तै पनि भगवान् का गुण कन वर्णन
गर्नु सकछेन ॥ २ ॥ तै पनि आका बुद्धि का अनुसार ले गरि भन्दु भन्यार ॥ पै हे पुरुष अवतार कन वता उन लाग्ना ॥ हे महा

श्री दु विल उवाच ॥ यो वा अनन्त स्य गुणाननं ताननुक्तमिष्यन्स तुवाल बुद्धिः ॥ रजां सिभू मे गरायेत्कथंचित्
कालेन नैवाखिल शक्ति धाम्नः ॥ २ ॥ भूतैर्यदा पंच भिरात्मसृष्टैः पुरं विराजं विरचय्यत स्मिन् ॥ स्वां शेन वि
ष्टः पुरुषाभिधानः स वाप नारायण आदि देवः ॥ ३ ॥ यत्कायस्य भुवनत्रयसं निवेशो यस्येन्द्रियैस्तु
भूता सुभयेन्द्रियाणि ॥ ज्ञानं स्वतः श्वसनतो वलमोजईहा सत्त्वादिभि स्थितिलयोद्भव आदिकर्ता ॥ ४ ॥

राज सुन ॥ आदि देव नारायण जो छन ॥ भा फले सृष्टि गरिया काय पृथिवी आदि गया काय पंच महा भूत ले गरि ॥ विराट् रूपी व
त्सारा कन पुर वना इ कन ॥ लीलाले गरि ॥ उ सै मा प्रवेश गरि वस्त्राले ॥ पुरुष भन्ना ना उ कन पा उ दा भया ॥ ३ ॥ पुरुषा वता
र कन वता यार ॥ पुरुषा वतार का गुण कर्म कन वता उ छन ॥ हे निमिना मारा जा ॥ जौ न पुरुषा वतार को देह जो छ ॥ यो स वै ति
नै लोक भुवन तल कहि छं ॥ जौ न पुरुषा वतारि ॥ जीव हेरु का ज्ञानेन्द्रिय ॥ कर्मेन्द्रिय ॥ इन्द्रिय इन्द्रिय हुं छन ॥ जौ न पुरुषा
वतारि का ज्ञान शक्ति ले सहि छं ॥ जौ न पुरुषा वतारि ॥ जीव हेरु का ज्ञानेन्द्रिय हित भया काम हनत्व देषि न जीव हेरु का ज्ञा

॥ राम ॥

॥ २४ ॥

नहुंछ॥आफुपुरुषवतारिविषेभन्याआफैसिद्धज्ञानछ॥जस्काप्राणदेविन्अरूकादेहमासामर्थ्यशक्तिहुछ॥इन्द्रियश
क्तिहुंछ॥क्रियाशक्तिहुंछजो॥परमेश्वरजोछन्सत्वगुणालेजोगुणानमोगुणालेगरि॥सृष्टिस्थितिप्रलयकनगछन्॥४
इनैपुरुषवतारिकारजोगुणालेगरिजगत्कोसृष्टिगर्माबुद्धाहुदाभया॥सत्वगुणालेगरिपालनागर्माविष्णुभया
तमोगुणालेगरिसंहारकनगर्माशिवहुंदाभया॥एसैप्रकारलेबुद्धाविष्णुशिवलेगरिप्रजाहेरुविषे॥वारंवारसृ
ष्टिस्थितिप्रलयहुंछन्॥आफुपुरुषवतारिजोछआद्यअवतारकहिंछभनिआज्ञागयार॥अवनरनारायणअवतार
कहुंछन्॥५॥दक्षप्रजापतिकीछोरीधर्मकीभार्यामूर्तिनाउगयाकीविषे॥वडाश्रेष्ठशान्तस्वरूपभयाका॥नारायणोनर

आदावभून्छतधृतीरजसास्पसर्गेविष्णुःस्थितौन्ननुपतीर्षिजधर्मसेजु॥रुद्रोप्यपायतमसापुरुषःसआशुः३
तुङ्गवस्थितिलयासततंप्रजासु॥५॥धर्मस्यदक्षदुहितर्यजनिष्टमूर्त्यानारायणोनरःशशिप्रवलःप्रशान्तः
नेष्टुर्म्यलक्षणमुवाचउत्तारकर्मयोथापिचास्तत्रववर्षनिषेवितांघिः॥६॥इन्द्रोविशंक्यममधामजिघृ
क्षतीति॥कामंन्ययुक्तसगणंसवदर्युपाख्याम्॥गत्वापुनरोगणवसन्सुमंदवातैःस्त्रीप्रेक्षणेपुधिरविधद

भन्याइन्द्रमूर्तिलेगरिनरनारायणअवतारहुदोभयो॥जोनरनारायणअवतारिले॥आत्मस्वरूपजसुलेजानिंछ
सत्ताकर्मयोगकननारदआदिगयाकायोगीहेरुलाईवताउदाभयाथा॥आफुपनिकर्मकनगदाछंदा॥आजकालप
निवदरिकाश्रमविषेवस्थाकाछन्॥जस्काचरणकमलकनशशिश्रेष्ठहेरुसेवागछन्॥६॥भगवान्कोअवतार
होभनिजनाउन्याभयाका॥नरनारायणकावडाशान्तस्वभावकनदेष्टाउनानिमित्त॥कोहिइतिहासकहनलाग्ना॥हे
महाराजसुन॥नरनारायणलेतपस्यागर्दविषे॥तपस्याकावललेगरिमेरोइन्द्रासनपनिलिनन्भन्याआकाशका॥३

॥ भा. ८ ॥
॥ २५ ॥

न्द्रकनभयेछरतपस्याभंगगर्ननिमित्तवदरिकाश्रमविषे ॥ अपसरागराभयावसंतअनुभयो ॥ मंदशीतलवायुभयो ॥ ईसवै
जनालेसहितभयाका ॥ कामदेवकनपठाउदाभया ॥ कामदेववसंतअनुअपसरा ॥ मंदवायुहेरूपनिनरनारायणकानजी
कविषेगैकनवस्थाप्राप्त ॥ नरनारायणकोमहिमानजान्याभयाका ॥ कामदेवलेअपसराहेरुले ॥ हेनुंरूपीवारालेवेडोभयो
॥ ७ ॥ आदिदेवनारायणलेपनिइन्द्रकोयोअपराधहोभनिजान्यार ॥ होंसिकनवडाकाउपरअपराधगर्न्या ॥ हामिलाईश्रा
पगरिभस्मगर्छन्भन्नानिमित्त ॥ थर्थकामृदा ॥ कामदेववसंतअनुअपसरा ॥ मंदवायुकन ॥ आज्ञागर्नलाग्ना ॥ हेकामदे
व ॥ हेमंदवासु ॥ हेवसंतअनु ॥ हेअपसराहो ॥ तिमिहेरुलेसरापगरिभस्मगर्नन्भनिडरमानुपदेन ॥ परंतुहाम्राआसन

देन
विज्ञायशक्तकृतपक्रमममादिदेवः प्राहप्रहस्यगतविस्मयएजमानान् ॥ माभैद्यभोमदनमारुतदेव
वधो ॥ गृहीतनोवलिमभूत्यमिमंकुरुध्वम् ॥ ८ ॥ इत्थबुवत्यभयदेवदेवाः सवीडनमशिरसः स
घृणांतमूचुः ॥ नैतदिभोत्वयिपरेऽविकृतेविवित्रंस्वामधीरनिकरांतनपादपद्मे ॥ ९ ॥

मा ॥ आयौतःहामिदेषिपूजालेउ ॥ तिमिहेरुलाईअतिथिवनाइपूजागर्छौ ॥ हाम्रोआश्रमकनभूत्यनगरिदेउ ॥ तिमि
हेरुकोपूजागर्नरागपाया ॥ आश्रमजोछे ॥ भूत्यभयोतसअर्थपूजालेउ ॥ ८ ॥ हेमहाराजनिमिनामाराजाअभयकन
दिन्याभयाका ॥ नरनारायणले ॥ ससैआज्ञागर्दाविषे ॥ लज्जालेनमशिरभयाकामदेवहेरुजोथिया ॥ नारायणकाचित्र
मादयाजगाईविंतिगर्नलाग्ना ॥ हेविभो ॥ हेसमर्थ ॥ मायादेषिन्फरकरहाकाविकारलेहीनभयाकायोगीश्वरहेरु
लेनमस्कारगयाकाछन् ॥ चरणकमलजनेका ॥ सज्ञातपात्रिविषे ॥ हामिहेरुलेदसगर्नसकिंभुनभनि ॥ सलोडुलोतमे
सामर्थ्यरहेछभन्याकुरामा ॥ आश्वर्यकेहिछैन ॥ ९ ॥

॥ राम ॥
॥ २५ ॥

परंतु हे परमेश्वर तपाजिलाई वसनानिमित्त नानाचेष्टागारि अपराधगुंहास्रावसमापरितपस्याकनछोडनुभयेन
हामि अपराधिहेरुलाइ सरापगारि भस्मपनिगर्तुभयन ॥ कृपागर्तुभयो ईडवैकुरातपाजिविषे आश्चर्य्यछैन ॥ ए
जातपाजिविषे अपराधगर्त्याभया ॥ हास्रोपनि अपराधगर्त्या स्वभावहुनाले आश्चर्य्यछैन भनि विंतिगर्तलाग्या
॥ हे परमेश्वर स्वर्गलोककन जन्मिकन अतिश्रेष्ठभयाका तपाजिका पदवीमाजानानिमित्त ॥ तपाजिको सेवाग
र्त्या प्राणिहेरुका ॥ इन्द्र आदिगत्याका देवताहेरुले गत्याका विघ्नहेरुठेरै हुंछुन ॥ परंतु तपाजिको सेवानगर्त्या
यज्ञहेरुविषे देवताहेरुलाई भागनदिन्या प्राणिहेरुकात ॥ वडाराजालाई करतिर्त्या जिमिदारहेरुलाई जले

त्यां सेवतां सुरकृता वहवोंतरायाः स्तोको विलंघ्य परमबुजतां पदन्ते ॥ तान्यस्पवर्हिषिवलीन्दद
तः स्वभागाश्च ते पदं त्वमविनायदिविघ्नमूर्द्धि ॥ १० ॥

विघ्नहुदै नन् तलेतं मोसेवागर्त्यालाई विघ्नहुंछतापनि तपाजिका भक्तहेरुजोछुन रक्षागर्त्या निमिहुनाले विघ्न
काशिरमापाउदीकन वडापदवीमापुछुन ॥ तसर्थ हे परमेश्वर साक्षात्तपाजिविषे अरुले गरिविघ्नहोला भ
निका भंनुपर्छ ॥ जोको हितं आश्रमभक्तहेरु तपस्यागर्छुन ॥ तनकाडुई प्रकारको गतिछु अस्मराकामदेवकावसमा
पर्छुन ॥ अथवा क्रोधकावसमापर्छुन ॥ तस्माहास्रावसमापर्त्या हेरुजोछुन कामोपभोगकनपाठंदछुन ॥ क्रोध
कावसमापर्त्या हेरुभन्या अतिवडासूर्खहुन भनिकहंछुन ॥ १० ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ २६ ॥

जो प्राणि को धकावसमापछेन. क्षुधा. तिषा. शीत. उष्ण. वर्साद. प्राणवायुभयो एते अपारसमुद्रस्वरूपभयाका ॥ हामि हेरुला
ईनाधिकनपनि ॥ साजुगाईका. पाईलावरोवरकाजलमाडुवुदछेन ॥ जसैजलमाडुवाकोप्राणिजोछ ॥ जलकावसमापया
कोहुनाले. शिरमाचहाईवोकाकाभारकनछोडिदिन्छ ॥ तसैवडाडुखलेगयाकातपस्याकन. कोधलेअर्कालाईसरा
पगर्नालेगरिभंगकनगछेन ॥ मोक्षपनिहुदैन. भोगपनिहुदैन. तसअर्थमूर्खहुन ॥ ११ ॥ एतेविंतिगर्नाकामदे

क्षुत्तृत्रिकालगुणमारूतजैहृशैश्चा. नस्यानपारजलधिनतितीर्यकेचित्. कोधस्यातिवि
फलस्पवसंपदेगोर्मज्जति दुश्चरतपञ्चवथोत्सृजति ॥ ११ ॥ इतिप्रगणतातेषांस्त्रीयोत्प
द्भुतदर्शनादर्शयामासभुश्रूषांस्वर्चिता. कुर्वतीर्विभुः ॥ १२ ॥ तेदेवार्जुनचराट्टास्त्रियः श्रीरिव
रूपिणी ॥ गंधेनमुमुहुस्तासांरूपौदार्यहतश्रियः ॥ १३ ॥ तानाहदेवदेवेशः प्रणतासहसनि ॥

अप्सराहेरुकन. देवुतेमाअतिरात्राभयाका ॥ नानातरहकागहनालगायाका. सुसारकनगर्नाएतास्त्रीहेरुकनः
नारायणालेदेवाउंदाभया ॥ तिकामदेवअप्सराहेरुलेपनि. साक्षात्सूर्तिधारिलक्ष्मीकनऊँदेव्यार. सुखकोका
तिहरायाकाछंदा. नारायणालेदेवायाकास्त्रीहेरुकासुगंधलेगरि. मोहकनप्राप्तहुंदाभया ॥ १२ ॥ १३ ॥
नरनारायणजोछन्सोपनिनम्रभैरवाका. कामदेवअप्सराहेरुकन ॥ हासिकनभाजागर्नलाग्या ॥ हेकामदेव

॥ राम ॥
॥ २६ ॥

हेअपराहो. एतिस्त्रीहेरुमा जौनमनपछउसैकनलेउ॥ एसावडाइन्लाईकसोगरिलिउं॥ कौनहासोस्वरूपछभनौला
त. आफुवरावरिभयाकाजैजाउ॥ श्रेष्टेकनलैजाछोभन्यापनिश्रेष्टेकनलैजाई॥ एसावडाइन्लाईकसोगरिलिउं
कौनहासोस्वरूपछभनौलात॥ स्वर्गमाउज्यालोगयासह=नाजस्ताछन्॥ १४ ॥ कामदेवअपराहेरुपनि. वढी
याआज्ञाशिरउपरछभनि॥ एसैकुरालि. अपरामाश्रेष्टेभयाकीउर्वशीकन. अगाडिलगाई॥ नरनारायणाला

आसासेकतरांवृध्वंसवर्णास्वर्गभूषणाम्॥ १४ ॥ ओमित्यादेशमादायनत्वातंसुरवन्दिनः॥ उर्वशी
मपारश्रेष्टांपुरस्कृत्यदिव्ययुः॥ १५ ॥ इन्द्रायानमसदसिभृशवतांविदिवौकसां॥ दुर्चर्नारायणवलं
शक्रस्तत्रासविस्मितः॥ १६ ॥ हंसस्वरूपावददच्युतआत्मयोगंदत्तकुमारः॥ ऋषभोभगवान्पितानः
विष्णुःशिवायजगतांकलयावतीर्णस्तेनादृतामधुभिदाश्रमयोहयास्ये॥ ७ ॥

ईनमस्कारगरिस्वर्गमाजांदाभया॥ १५ ॥ स्वर्गमागैइन्द्रलाइनमस्कारगरि॥ स्वर्गमासवैदेताहेरुलेसुन्देकासम
यमा॥ कामदेवअपराहेरुलेनरनारायणकातपस्याकासामर्थ्यकनसुउंदाभया॥ इन्द्रलेपनिआश्चर्यलेयुक्तभै
मनमाअपराधगयाछुभन्यात्रासगर्दाभया॥ १६ ॥ नरनारायनकोचरित्रसैवर्णनगया॥ हेराजन् हंसावतारलि
भगवान्लेआत्मज्ञानकननताया॥ एसैदत्तात्रेयकोभवतारभयो॥ सनकादिहेरुकोभवतारभयो॥ हासावावाऋषभयो

॥ भा. ८ ॥
॥ ३ ॥

गी. साक्षाद्विष्णुका कलाले गरिभयाको अवतार हो ॥ जसले आत्मयोग कनक हंदा भयो ॥ हयग्रीव अवतार लि. मधुनामा
दैत्य कमाया ॥ पाताल देवि न वेद कन ल्याउदा भया ॥ मत्स्य अवतार लियार प्रलय विषे. मनुष्य कन पृथिवी कन औषधि
कन रक्षा गया ॥ वराह अवतार लि पृथिवी को उद्धार गर्दा विषे. हिरण्यकश्यप दैत्य कन माया ॥ अमृत मथन गर्दा विषे.
कूर्म अवतार लि पीठ मा पर्वत कन धान्या ॥ हरिभन्दा सत्तोना उभयाको अवतार लि ॥ ग्राहले पकिराणा की गजेन्द्र कन
मोक्ष गया ॥ ७ ॥ १८ ॥ सुतिकन गर्ना भयाका कश्यप ऋषिका निमित्त. समिधालिनाम कन गया मा ॥ गाइका पा

गुप्त्रोपये मनु रिलोषधयश्च मात्मे कोडेहतो दिनिज उद्धरतां भसः क्षमा ॥ कौर्म धृतादिरमृतो न्मथ ॥
नेस्वयये. ग्राहात्प्रपन्नमिभराजममुवदानम् ॥ १८ ॥ संसुन्वतो विपतिता न्छमरा नृषींश्च. शकं
च वृत्रवधतस्तमसि प्रविष्टम् ॥ देवस्त्रियो सुरगृहे पिहिता अनाथा. जघ्रे सुरेन्द्रमभयाय सतां नृ ॥

ईलामाडुवाको देषिकन ॥ इन्द्रलेठदा गरियाका. वाल्मिकि त्रविहेरुको. उद्धार गरि आपदिकन छुटाउदा भ
या ॥ वृत्तासुर दैत्यलाई मारिकन ब्रह्महत्या कन प्राप्ति भयाका इन्द्रको ॥ ब्रह्महत्या कन छुटाई रक्षा कन गया ॥ नृसिंह
ह अवतार विषे सन्न जनका अभय निमित्त ॥ हिरण्यपुर दैत्य कन मारि. दैत्यका घर माथु निराणाका ॥ देवता
का स्त्री हेरु कन मोचन गर्दा भया ॥ अनेग अवतार ले गरि. सत्सैक राटै गया ॥ १९ ॥

॥ राम ॥
॥ ३ ॥

सर्वमन्त्रविषे देवताकारदैत्यका सुखविषे देवताकानिमित्तदैत्यकनमारि॥ अनेक अवतारमूर्तिले गरि भुवनतलक
नपालनागर्दाभया॥ वामन अवतारलिकन माइनाका छलले गरि॥ वलिनामादैत्यकी दृष्टीकन हार देवताकन दृष्टि
वीदिदैत्यलोककन सुतललोकमा पुग्याया॥ २०॥ पशु राम अवतारलि॥ एकाईस फेरा दृष्टि वीमा भ्रमन गरि घुमि
क्षत्रियकन मारि॥ दृष्टि वीमानि क्षत्रियकन ग्या॥ रामावतारलि॥ ससुद्रमायूलवां धिरावरा लाई मारि॥ सर्वलोकका

देवासुरेयुधिचदैत्यपति मुरार्थे हत्वा मन्त्रेषु भुवता न्यदभात कलाभिः॥ भूत्वाथ वामन इमामहरद्व
लेक्ष्माया च नाछलेन समदाददिते सुतेभ्य॥ २०॥ निःक्षत्रियामकृतगावत्रिसप्तकत्वोरामस्तु हैहय
कुलाप्ययभार्गवात्रिः॥ सोधिवबंधदशवक्त्रमहसलंकं सीतापतिर्जयतिलोकमलघ्नकीर्तिः॥ २१॥
भूमेर्भारावतरणाय ययुश्च जन्मा जातः करिष्यति सुरैरपि दुष्कराणि॥ वादैर्विमोहयति यज्ञकृतोत
दहान्छुद्रान्कलौक्षितिभुजो न्यहनिष्यदन्ते॥ २२॥

॥ पापहर्त्या कीर्ति गरि रामचन्द्र जो छत्र॥ वडा
उत्कर्ष संगरहंछन्॥ २१॥ दृष्टि कीभारहर्ता कन॥ यडवंसमाकृष्टावतारलि॥ देवता हेरुले पनि दुःखले गरि रा
सकना कर्मकन गनन्॥ वोड्ड अवतारलि॥ यज्ञगर्ता कन योग्यन भयाका भा फयज्ञगर्ता॥ एतादैत्य हेरु कन अहिंसा दु
लो धर्म छ भनि॥ एते वाद गरि मोहकन गनन्॥ कलिका अन्पमा॥ दृष्टि वीको भागगर्ता॥ शूद्र राजा हेरु कन मारनन्॥ २२॥

॥ भा. स. ॥
॥ २८ ॥

हेमहाराज तुलोजसभयाका जगत्कोपालनागर्भाभयाका भगवान्का स्तैषका शगिरि अवतारका कर्मभया भनिवर्णाम्
गरियाका छन् भनिनिमिनामाराजासंग ॥ इविलनामा योगीले आज्ञागया ॥ सोहिकननारदले वसुदेवकन आगया ॥ रा
जापरीक्षितकन भूकदेवले आज्ञागया ॥ सूतलेशोनका आदिगयाका अपि हेरुकन आज्ञागर्दाभया ॥ २३ ॥ इति श्रीभा
गवते महापुराणे स्कादशस्कंधे भाषायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अवफेरिराजा विंतिगर्छन् ॥ हे योगीश्वर हो भगवान्
को भजनगर्गा हेरुत विष्णुको नाशगिरि परमपदवीमाजादारखा छन् ॥ जो नृनहरिको भजनगर्देनन् ॥ इन्द्रियपनि

स्वविधानिकर्माणि जन्मानि च जगत्पतेः भूरीशो भूरियशो वरिणितानि महाभुजः ॥ २३ ॥ इति
श्रीभागवते महापुराणे स्कादशस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ राजोवाच ॥ भगवंतं हरिं प्रायेण भज
न्मात्मविन्नमाः ॥ तेषामशातकामानां कानिष्टा विजितात्मना ॥ १ ॥ श्रीचमस उवाच ॥ सुखवाहु
रूपादेभ्यः पुरुषस्याश्रमे सह ॥ चत्वारोजतिरेवर्णागुणैर्विप्रादय एव क ॥ २ ॥ ॥

जित्सकै नन् ॥ कामनापनि जस्का शांत छैनन् ॥ ते स्ता प्राणि को कौ नृगति दु छ भनि राजाले सोधार ॥ चमस
नामा योगी आज्ञागर्नलाग्या ॥ १ ॥ हेमहाराज सुन भगवान्का सुख वाहु उरु पाउ देखिन् सत्त्वगुणाले गरि
ब्राह्मणभया सत्त्व रजोगुणाले गरि क्षत्रियभया रजोगुणाले गरि वैश्यभया तमोगुणाले भूद्रभया
ब्रह्मवारी गृहस्थ वारा प्ररथ संन्यासि इचारै आश्रमभया स्तै प्रकारले ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य भूद्र चारव
र्णाचार आश्रमहुदाभया ॥ २ ॥

॥ एम
॥ २८ ॥

हेमहाराज भगवान् देवि न उत्पन्न भै कन जान्या ले जो भगवान् को भजन गर्दै नन् ॥ जानिकन पनि जो हेला गर्छन् ॥ तेसा
प्राणि जो छन् ॥ वर्ग का आश्रम का धर्म देवि न भ्रष्ट हुन्छन् भ्रष्ट हुन्छन् भनि जान्नु ॥ ३ ॥ तेसा प्राणि मा जो अज्ञानि छन्
तन्लाई ति मि हेरु ले करुणा गर्न योग्य छन् ॥ भनि आज्ञा गर्छन् ॥ हे निमिराज सुन हे रिकथा श्रवण देवि टाढार हन्या
को हिछन् ॥ हरि कीर्तन गर्ना को हिछन् ॥ भगवान् को भक्ति न गर्ना को हिछन् ॥ भगवान् को भक्ति न गर्ना को हिछन्

यसका पुरुषा साक्षादात्म प्रभव मी श्वरम् ॥ न भजन्य व जान त्रिस्थाना दुष्टा पतन्मधः ॥ ३ ॥ हरे
हरे हरिकथा केचि हरे वाच्यत कीर्तनाः ॥ स्त्रियः शूद्रादयश्चैव ते तु कम्पा भवादृशाम् ॥ ४ ॥ वि
प्रा राजन्य वैश्यो च हरः प्राज्ञाः पदान्निकम् ॥ श्रौते न जन्मनाथा पि मुह्यन्मा म्नाय वा दिनः ॥ ५ ॥
कर्मण्यको विदास्तथा मूर्खाः परिउतमानिनः ॥ वदन्ति चाटुकान् मूढाय यामाधा गिरोत्सुकाः ॥ ६ ॥

स्त्री हेरु भया शूद्र हेरु भया ॥ इस वै ति मि हेरु जज्ञा ज्ञानि जन हेरु ले करुणा गर्न लाई योग्य छन् ॥ ४ ॥ बाह्य राक्ष
त्रिय वैश्य हेरु भया व्रत बंध वेदाध्ययन ले गरिउत न भयो हरिको भजन गर्दा विषे ॥ उत न अधिकार क
न प्राप्न भया को छन् ॥ तेसा छत पनिकर्म फल वक्ष भया का छन् ॥ किन भया वेद मानि वृत्ति मार्ग माल गाउनानि मि
त्त ॥ पैले कर्म गर्नु भन्या सस्तो वेद भुनि ॥ कर्म फल वक्ष छन् ॥ वेद को अर्थ जो छ कर्म को निवृत्ति भनि जानै नन् ॥ क
र्म को फल सुन्दा वहुतै मोह कन प्राप्न भया का छन् ॥ ५ ॥ भक्ति मार्ग कवलियोग गर्ना लाइ ॥ कर्म कन निन्दा गर्छन् क

॥ भा. ८ ॥
॥ २८ ॥

मेलैजसोगरिवद्धुदैन. तेसाप्रकारसंगकर्मगर्ननजान्याटाडाहुनालेजान्याहेरुकनपनिनसोधन्या॥ मूर्खभयाकाप
निहामिपणितछोभनिअभिमानगर्नभया॥ यज्ञकनगर्न. स्वर्गमाअमृतपिउंला॥ ज्ञाहान्वारमहिनायज्ञगया.
स्वर्गमाअक्षयपुरापहुंछभन्या॥ सत्तासुन्दिघेरमात्रनिकोलाग्याभयाका॥ वेदकाअर्थकनसुनि. मोहमापयाकाछं
दा॥ यज्ञकर्मगर्नोलात. अमरासंगस्वर्गमाविहारगर्नोलाभनि॥ सुन्दिघेरमिठालाग्यावचनवोल्दछन् ॥ ६ ॥
सत्ताप्राणिहेरुकाकर्ममा. आग्रहुलोहुनालेकामक्रोध. लोभ. हेरुवढदछन्. भनिआज्ञागछन्॥ रजोगुणाले

रजसाघोरसंकल्पाः कामकाअहिमन्यवः॥ दांभिकामजितः पापाविहसन्त्यच्युतप्रियाम् ॥ ७ ॥ वदन्ति
तेन्योन्यमुपासितस्त्रिगृहेषु मैथुन्यसुरेषु वा शिषः॥ यजन्त्यसृष्टानेविधानदक्षिणां वन्यैपरंच्युति
यश्चूनतद्विद ॥ ८ ॥ श्रियाविभूत्याभिजनेनविद्ययाः त्यागेनरूपेणावलेनकर्मणा॥ जातप्ययं नां
धधियः सहेश्वरासतोवमन्यंतिहरिप्रियान्स्वला ॥ ९ ॥

॥ गरिअर्कालाईमार्नाकोसंकल्पभयाका. व
जोकामनागर्नभयाका॥ सर्पकाजसोक्रोधभयाका॥ दांभिकनभयाकाअभिमानीभयाका॥ पापवुद्धिभयाकाछं
दाभगवान्कापियारोभक्तकोठहागछन् ॥ ७ ॥ कसोकासनागर्नछन्भन्या॥ वृद्धकोसेवानगर्न. स्त्रीहरुको
सेवागर्न. घरविषेस्त्रीप्रसंगसुखकनवदोपदार्थमान्याभयाका॥ अतिथिकोपूजानगर्नभयाकाछंदा॥ स
तिपाईयोअरुज्जुअरुपाउलाभनिआसावढाहवोल्दछन्॥ दांभिककनभंछन्. कसोभन्यायज्ञगर्न. भोजनद
क्षिणाभन्यानदिन्या॥ हिंसाकोदोषकेहिनजान्या. जीविकानिमित्तपशुकनमान्यासत्ताहुंछन् ॥ ८ ॥ धनादिसंप

॥ राम ॥
॥ २८ ॥

त्रिले. ऐश्वर्यले. उत्तमकुलले. विशाले. दानले. रूपले. वलले. कर्मले. सतिकुराले. भयाकागर्वले. अधुद्धिभयाका
अभिमानिप्राणिजोछन्. इश्वरलेसहितभयाकासर्जनहेरुकनअपमानगछन्. ८॥ आकाशरुजिगरिसव
प्राणिविषेरहाकावडापियाराईश्वरकन. वेदलेवनायाकाकनपनिमुन्दैनन्. ९॥ एतामूर्खहेरुभयाका. मैथुन.
मांसमद्यकोसेवागर्नुभन्छ. भनिवेदकनभन्छन्. १०॥ एतेरीतलेगरिनिहन्निमागकनकहन्. वेदलाइप्रहन्निमा
गमालगाइवर्गनगछन्. १०॥ लोकविषेस्त्रीसंगभयो. मासुषानुभयोमद्यसेवागर्नुभयो. ११॥ सतिकुरामासवैप्राणि
लाईप्रीतिलागनालेनित्यछन्. अवस्पस्त्रीप्रसंगर्नु. मासुषानु. मद्यसेवागर्नुभन्नाछैन. परंतुव्यवस्थाछहेराज

सर्वेषुश्रवन्ननुभृत्त्ववस्थितं. यथास्वमात्मानमभीष्टमीश्वरम्. वेदोपगीतंचशृणुतेबुधा. म
नोरथानाप्रवदन्निवार्त्तया. १०॥ लोकेव्यवायामिषमश्वसेवा. नित्यासुजंतोनहितन्नचोदना
व्यवस्थितिस्तेषुविवाहयज्ञः. सुराग्रहैरासुनिहन्तिरिष्टा. ११॥

न. कलोव्यवस्थाभन्ना. स्त्रीप्रसंगनगरिभयन. अन्यतच्चित्रलागोभन्ना. विवाहगरिस्त्रीप्रसंगगर्नु. जाहाम
नूलागो. यथाभाविनगर्नु. मासुनखाईभयनभन्ना. यज्ञगरियज्ञमामासुषानु. जैलेमनूलागोकाटनुषादे
नगर्नुमद्यपिउनुमनूलागोभन्ना. सोत्रामशिभन्नाकोकोहियज्ञछ. तसैयज्ञमामद्यपिउनु. जैलेमनूलागो
तेहेनपिउनु. विवाहगयाकीस्त्री. यज्ञमामासुषानु. सोत्रामशियज्ञमामद्यपिउनुभन्नाकुरामापनि. भरिवित्र
निहन्तिमातात्पर्यराषनु. भतिआसक्तनहुनुभन्नातात्पर्य. अथर्वरावेदकोजानु. ११॥ ११॥ ११॥

॥ भा. ८ ॥

॥ ३० ॥

स्त्रीप्रसंगादिमनुष्यवागनाले आकुलचित्तभयाकाछंदा आत्मकनसुन्दैननुभनिभन्यो ॥ अवसससमयमाधर्मगना
निमित्तका धनकोपनिर्इश्वरप्राप्तिरूपफलछ ॥ एसाधर्मकोधर्मदेविभिन्नभयाकाकाममालगाइनाले ॥ थोरै
पनिआत्मज्ञानतनलाईहुंदैनभनिकहन्छन् ॥ धनलेधर्महुन्छ धर्मलेसन् ॥ विवेकपूर्वकआत्मज्ञानअतिवलियो
गरिहुन्छ ॥ ताहापछिमोक्षहुन्छ ॥ एसाधनकनदेहलाईभोगहवसभन्यानिमित्तलगाउछन्तेसाप्राप्तिजोछन्ह
राइकननसकीन्याभयाकादेहका मृत्युकन ॥ १२ ॥ यत्तमा मद्यपिउन्याकोपनिसुनुमात्रभन्याकोहो पिउनुभन्या
कोहोईन ॥ देवताकोनाउपारि यत्तमापशुहिंसागन्याकोहिंसाठहर्दैन ॥ यत्तनगरिदेवतालाईनचहाईगन्याको

धनं च धर्मैकफलं यतावै जानसविज्ञानमनुप्रशान्तिः ॥ एहेषु पुंजतिकलेवरस्प मृत्युं न पश्यंति दुर्
तवीर्यम् ॥ १२ ॥ यत्तद्यागभक्षोविहितः सुरायास्तथापशोरालभनं न हिंसा ॥ एवं व्यवयः प्रजयानरस्ये
इमं विशुद्धं न किदुःखधर्मम् ॥ १३ ॥ ये त्वनेवं विदो संतम्रधासदभिमानिनः ॥ पशून् दुष्टानि विस्त्रधाप
॥ त्यगादंति ते वतान् ॥ १४ ॥

भन्याहिंसाठहर्छ ॥ एसास्त्रीप्रसंगजोछ पुत्रजन्मसभंनानिमित्तमात्रछ सुख
मात्रछैन ॥ एसावढीयाआकाधर्मकन ॥ स्त्रीप्रसंगमासुषानु मद्यपिउनु सहिहोदुलोपदार्थभनिमान्याजोछन्
जादैनम् ॥ १३ ॥ जोप्राप्तिरसाधर्मकनजान्दैनन् ॥ दुर्जनभयाकाठाडासंतजनकोअपमानगर्वाभयाकाछदा ॥
पशुकारिषायामनसंतोषहोलाभनिविश्वासमापयाकावर्थेपशुकोद्रोहकनगर्छन् ॥ परंतुजोन्पशु जाहामा
रियाकाछन् ॥ तनैपशुहेरुजोछन् परलोकमाआफुलाईमार्गप्राप्तिकोमासुकनषाछन् ॥ हेमहाराजपराइका

॥ राम ॥
॥ ३० ॥

देहविषे वस्पाका ॥ ईश्वरको दोहगर्ना हेरु जो छन ॥ स्त्रीपुत्रादिले सहित भयाका देहविषे वडो प्रेम भयाका छंदानरकमाप
छन ॥ १४ ॥ हेमहाराज जो अज्ञानि छन ॥ तत्त्वज्ञानि हेरु का करुणाले तर्दछन ॥ तत्त्वज्ञानि जो छन ॥ आफै तर्दछन ॥ जो ज्ञा
निपनि छैनन ॥ अत्यंत अज्ञानी पनि छैनन ॥ ते स्ना अर्घ्याय प्राणि जो छन ॥ नरमा र्दछन ॥ कस्ता नि प्राणि भन्या ॥ धर्म ॥ अ
र्थ ॥ काममा सुखलाग्पाका ॥ शान्त चित्तन भयाका ॥ देह जो छ ॥ स्थिर भन्या बुद्धि भयाका ॥ समा प्राणि जो छन ॥ आत्म
हत्याकन गन्या हुन ॥ १५ ॥ समा आत्मघातगर्ना शान्तन भयाका ॥ अज्ञान विषे ज्ञान बुद्धिगर्ना ॥ काले लेन छगयाको

द्विषंतः परकायेषु स्वात्मानं हरिमीश्वरम् ॥ मृतकेशा उवंधे स्मिन् द्रुमे हाः पतन्मधः ॥ १५ ॥ यकैवल्य
मसंप्राप्तायेरातीताश्च मूढतान् ॥ त्रैवर्गिकाद्यक्षणाका आत्मानं घातयंति ते ॥ १६ ॥ यत आत्महनी
ऽज्ञाना अज्ञाने ज्ञानमानिनः ॥ सीदन्ते कृतकृत्या वै कालधस्तमनोरथाः ॥ १७ ॥ हित्वा त्याया सरचित्रा
गृहापत्य सुहृद्वियः ॥ तमो विशंत्य निच्छंतो वासुदेवपराङ्मुखाः ॥ १८ ॥

छ ॥ मनसुवा जुन्का ॥ भोगमा कृतकृत्यन भयाका छंदाना शिंछन ॥ १७ ॥ वडाडः खले वनायाका घर ॥ छोरा ॥ इष्ट
मित्र ॥ धनसंपन्निकन ॥ छोड्ना कन इछानगर्ना ॥ वासुदेवका भक्तन भयाका ॥ समा हेरु नरकमाप र्दछन ॥ त
स अर्थ हेमहाराज ॥ भगवान्को भक्तिगया प्रान्तनरकादिको भय छैन ॥ भनिचमसनामा योगीले आज्ञागयार
निमिना माराजा जो छन ॥ विंतिग छन ॥ १८ ॥ श्रीरामचन्द्राय नमः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ३९ ॥

हेयोगीश्वरहोकोनकालविषेकस्तोवर्णा॥ कस्तोआकारभयाकौटनाउभयाकाभगवान्को॥ मनुष्यहरूपूजागर्ह
ने॥ कौनलाउभयाकाभगवान्लाई॥ कौनविधानलेपूजागर्हयोसवैआज्ञागरभनिसोधार॥ करभाजननामा
योगीआज्ञागर्हन्॥ १९ ॥ हेमहाराजहेनिमिनामाराजासुन॥ सत्ययुगभयात्रेतायुग॥ द्वापरयुग॥ कलियुग
इचारेयुगविषेभगवान्जोछन्॥ भिन्नभिन्नवर्णाभिन्नभिन्ननाउगयाकाछन्॥ भिन्नभिन्नविधानलेगरिष्ठा

राजोवाच॥ कस्मिन्कालेसभगवान्किंवर्णाः कीदृशोन्मिः॥ नाम्नावाकेनविधिनापूज्यतेतदिहोच्य
नाम्॥ १९ ॥ श्रीकरभाजनउवाच॥ कृतंत्रेताद्वापरंचकलिरित्येषुकेशवः॥ नानावर्णाभिधाका
रोनानैवविधिनेज्यते॥ २० ॥ कृतेशुक्लश्चतुर्बाहुर्जटिलोवल्कलास्वरः॥ कृष्णाजिनोपवीताशा
न्विभ्रद्दण्डकमंडलु॥ २१ ॥ मनुष्यास्तुतदाशातानिर्वैरासुहृदःसमाः॥ यजतिनपसादेवंसमेन
चदमेनच॥ २२ ॥ हंसःसुपर्णवैकुण्ठधर्मयोगेश्वरोमल॥ ईश्वरःपुरुषोव्यक्तःपरमात्मेतिगीयते॥

नपूजागरिछन्॥ २० ॥ सत्ययुगविषेसेतोवर्णाचारवाहुजटाधारिभैवोकापैहृन्मा॥ कृष्णसारमृगकोछालाय
ज्ञोपवीतजपमालादण्डकमण्डलुकनधारणागर्णाभगवान्छन्॥ २१ ॥ सत्ययुगकामनुष्यभयावैरिभावन
गर्णा॥ अतिशान्तस्वभावभयाकासवैप्राणिमावरोवरबुद्धिभयाका॥ सवैकोहितगर्णाभयाकामनवाहेन्द्रि
यजितिष्ठानलेगरिभगवान्कोपूजागर्हन्॥ २२ ॥ सत्ययुगमाभगवान्जोछन्॥ हंससुवर्णावैकुण्ठधर्मयोगेश्व
रअमलईश्वरपुरुषअव्यक्तपरमात्मारुतिनाउलेगरिवोलाइछन्॥ २३ ॥

॥ राम ॥
॥ ३९ ॥

त्रेतायुगविषे रातोवर्णा चारवाहु मेखला पिहला केशले युक्त भयाका ॥ तीन वेद स्वरूप भयाका श्रक भयो सु
रो भयोलियाका ॥ साक्षात् यज्ञ मूर्ति स्वरूप छन ॥ २४ ॥ सत्ता भगवान् कन मनुष्य जो छन ॥ तीन वेद लेवताया
का कर्म लेगारि ॥ वडा धर्मात्मा वसु चित्त लगाउता भयाका छंदा पूजा गर्छन ॥ २५ ॥ त्रेतायुगमा भगवान् जो छन ॥ वि
ष्णु यज्ञ यज्ञि गर्भ सर्व देव उरुक्रम वषाकपि जयन्त उरुगाय ॥ एति नाउले गरिवो लो इच्छन् ॥ २६ ॥ वा

त्रेतायां रक्तवर्णा सोचतुर्बाहुस्त्रिमेखलः ॥ हिरण्यकेशस्य व्यात्मा श्रकश्च वायुपलक्षणाः ॥ २४ ॥ तंत
दामनुजादेवं सर्वदेवमयं हरिम् ॥ यजंति विशयात्रया धर्मिषा वसुवादिनः ॥ २५ ॥ विष्णुर्यज्ञः पृ
थ्विगर्भः सर्वदेव उरुक्रमः ॥ वषाकपि जयन्तश्च उरुगाय इतिर्यत ॥ २६ ॥ वापरे भगवान् श्यामः
पीतवासानिजायुधः ॥ श्रीवत्सादिभिरंकैश्च रक्षसैरुपलक्षितः ॥ ३ ॥ तंतदा पुरुषं मन्त्राम
हाराजो पलक्षणम् ॥ यजंति वेदतंत्राभ्यां परं जिज्ञासवो नृप ॥ २७ ॥ नमस्ते वासुदेवाय नमः
संकर्षणाय च ॥ सुद्युम्नायानिरुद्धाय तुभ्यं भगवते नमः ॥ २८ ॥

परयुगविषे भगवान् जो छन ॥ श्यामवर्णा भयाका पीताम्बर पैद्याका ॥ शंख चक्र गदा पद्म लियाका भृगुलां
छन लेको सुभनामा मणिले युक्त भयाका छन ॥ ३ ॥ छत्र चामर आदि गत्याका महाराजका चिह्न ले युक्त भ
याका भगवान् कन ॥ परमात्मा लाई चिह्न को इच्छा गर्ना मनुष्य हेरु जो छन पूजा गर्छन ॥ २८ ॥ वापरयुगमा वा
सुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध ॥ २९ ॥

॥ भा. स. ॥
॥ ३२ ॥

नारायणाय नमः पुरुष विश्वेश्वर विश्व सर्वभूत सुतिना उले गरि नमस्कार गरि वेद तंत्र ले गरि सुति गच्छ न कलि
मापनि नाना प्रकार का तंत्र मार्ग ले गरि पूजा गच्छ न ॥ ३० ॥ ३१ ॥ लोक रा सुन कालो वर्ण भया को ॥ इन्द्र मणि रुजि
अति उज्ज्वल कांति भया का ॥ सुता कृष्णा वनारि भगवान् कनक दयादि अंग ले को सुभ मणिले सुदर्शन चक्र ले
सुनन्द नन्द आदि गन्ना का सभा मावह्ना भक्त हेरु ले स हित भया का कन ॥ विवेकि पुरुष हेरु जो छन ॥ नाम उ
च्चारण गरि भयो ॥ सुति गर्ना ले गरि भयो ॥ अर्चन गर्न्दी चे गरि भयो ॥ इने स से यज्ञ ले गरि पूजा गच्छ न ॥ ३२ ॥ भन्मा

नारायणाय नमः पुरुषाय महात्मने ॥ विश्वेश्वराय विश्वाय सर्वभूतात्मने नमः ॥ ३० ॥ इति
छापर उर्वी श सुवंति जगदीश्वरम् ॥ नाना तंत्र विधानेन कलावपियथा शृणु ॥ ३१ ॥ कृष्ण
वर्ण त्विषा कृष्ण संगोपांग स्रपाषदम् ॥ यज्ञैः संकीर्तन प्रायैर्यजंति हि सुमेधसः ॥ ३२ ॥ ध्येयं
सदा परिभव धूमभीष्ट दोहतीर्था स्पदं शिव विरंचि जुतं - - शरणम् ॥ भृत्या त्रिहं प्रणत
पाल भवार्चि पोत वंदे महा पुरुष ते चरणारविन्दम् ॥ ३३ ॥

र सुतिकन कहन लाणा ॥ सदा सर्वदा ध्यान गर्ना कन योग भया का ॥ इन्द्रिय भया परिवार भया ॥ ईस वैजनाले
गन्ना काति रस्कार कन नाश गर्ना मनोरथ कन पूर्ण गर्ना ॥ गंगा आदि गन्ना का तीर्थ का आश्रय कुनाले ॥ अति
पवित्र भया का शिव ब्रह्माले सुति गन्ना का ॥ शरण मापर्ना को हित गर्ना भक्त का डः खहर्ना ॥ नमस्कार गर्ना
हेरु का पालना गर्ना भया का ॥ हे परमेश्वर हे महा पुरुष संसार रूपी समुद्र देधिन् ॥ पार उतार्ना उगा स्वरूप भ

साका नपा भि का स सा चरण क मल कन नमस्कार गच्छ न

॥ ३३ ॥

॥ राम ॥
॥ ३२ ॥

अवस्रसकालमा. कसैकोइछानगर्नाआफैपरिपूर्णाभयाकाछन्नपनिभक्तकानिच॥ पराधीनमारहन्याभै. केहिव
सुमाइछीगर्नाजस्तापनिछन्न॥ भनिकहनालाई. श्रीरामचन्द्रकोसुतिगछन्न॥ हेमहापुरुषहेश्रीरामचन्द्रवडा
धर्मात्माभयाकातपात्रिजोछै॥ वाचादशरथराजाकाअंशलेगरि. वडीराज्यलक्ष्मीकनछोडिदणकारणवन
माजाउभयाथ्यौ॥ वनमागयाकाछललेगरिआयाका. सुवर्णाकासृगकन. ल्याइदिउहवस्रभनिमीतालविंति

त्यत्कासुद्रस्यजसुरेफितराज्यलक्ष्मीधर्मिष्टआर्यवचसायदगादरण्यम्॥ मायामृदंगयितये
मितमन्वधावद्धंहेमहापुरुषतेचरणारविन्दम्॥ ३४ ॥ एवंयुगानुरूपाभ्यांभगवान्पुग
वर्तिभिः॥ मउजैरिज्यतेराजश्छेयसामीश्वरोहरि॥ ३५ ॥ कलिसभाजयत्यार्यागुणाज्ञासा
रगागिनः॥ यत्रसंकीर्तनैवैवसर्वःस्वार्थोभिलभ्यते॥ ३६॥

गरिर. सोहिमृगकापछिधाउदाभयाथ्यौ॥ सस्ताभक्तवत्सरतपात्रीहो॥ तस्रभर्थतपात्रिकाचरणकमलक
न. नमस्कारगर्छु॥ ३४ ॥ ससैप्रकारलेतिचारयुगमारहन्याप्राणिहेरुले॥ तनैनामरूपलेगरिकल्याणाका
कारणभयाकोभगवान्जोछन्न. पूजागरिन्छन्॥ ३५ ॥ इचारयुगमाकलियुगश्रेष्ठछन्न॥ ससैकारणलेकलि
युगकागुणकनजान्या॥ ठेरैशेषकलियुगमाछन्नपनि॥ कलिकागुणाभागकनमात्रलिन्नाजोछन्न॥ कलियु
गकनधन्यभनिमान्दछन्न॥ ३६ ॥

॥ भा.प. ॥
॥ ३३ ॥

तस्मिन्निमित्तकलियुगमाजन्मदुःखाप्राणिहेरुका॥ हरिकीर्तनजोछ॥ वडोलाभछ॥ जाहादेविदुलोलाभदोस्वोके
हिछैन॥ जौनहरिकीर्तनगर्नालेप्राणिजोछ॥ वडुतैशाम्भिकनप्राप्नुछ॥ संसारपनितस्कारणहराउंछ॥ ३७
रुसैकारण॥ सत्ययुगादिकाप्राणिहरूपनि॥ हेमहाराजनिमिनामाराजा॥ कलियुगमाजन्महवसभनिश्छाग
छैन॥ ३८॥ कलियुगमानारायणकोभक्तिमाचिन्नलगाउन्पाकोहिकोहिमात्रछैन॥ सवैजगामाछैन॥ ३९॥

नखतः परमोलाभो देहिनां भ्राम्यतामिह॥ यतो विन्देत्तत्परमांशं शान्तिनशपति संसृतिः॥ ३७॥ क
तादिषु पुजाराजकलाविद्युत्तिसंभवं॥ कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणा॥ ३८॥ कचि
त्कचिन्महाराजप्राविडेषु च भूरिशः॥ ताम्रपर्णी नदी यत्र कृतमालापयस्विनी॥ ३९॥ कावेरी
च महापराणा प्रतीची च महानदी॥ ये पिवन्ति जलं तां सामनुजामनुजेश्वरम्॥ ४०॥ प्रायो भक्ता
भवति वासुदेवे मलाशया॥ देवर्षिभूता प्रनृणां पितृणां न किं करोनायमृणी च राजन्॥ सर्वा
त्मना यः शरणां शरणं गतो मुकन्दं परिहृत्य कर्त्तम्॥ ४१॥

॥ उदेशमाटेरैछैन॥ जाहानात्रपर्णी
कृतमालापयस्विनीनामीरादीछैन॥ ३९॥ कावेरीप्रतीचीनामाचाडैपरापदिन्यामहानदीहेरुकाजलकन॥ जो
प्राणिहेरुपिउंदछैन॥ तिप्राणिहेरुजोछैन॥ निर्मलभयाकाछदा॥ ठेरैभगवानकाभक्तहुंछैन॥ ४०॥ हेमहाराज
कार्यकनछोडीकन॥ अथवानानाभेदकनछोडीकनसर्वप्रकारलेगारि॥ इराणकोहितभयाकाभगवानकाशर

॥ तम ॥
॥ ३३ ॥

नमो नमो ज्ञानं नमः ॥ तिष्ठति ज्ञानं देवताः ऋषिभूतः आपस्तेजः नमनुष्यः पितृः इस वैकाः ऋषिपतिः देवताः ॥ चा
करपतिः देवताः ॥ ४१ ॥ आकाशचरणाको भजनं गन्तुं ॥ अरु देवता विषे भावनान भयाका ॥ पियारा भक्तका हृदय
विषे प्रवेश गरिकन ॥ अकस्मात् आई पयाका कुकर्मकन पति भगवान् जो छन ॥ नाश गरि दिंछन ॥ ४२ ॥ हे महा
राज भनिति मिना माराजा कन आज्ञा गया ॥ कर भाजन नामा योगी ले र राजाले पतिः ॥ सवै भगवद्धर्मकन सुनिश्चिने

स्वपादमूलं भजतः प्रियस्य तत्कान्यभावस्य हरिः परेशः ॥ विकर्मयच्चोत्पतितं कथं विदुः नोति सर्वं ॥
हृदि संप्रविष्टः ॥ ४२ ॥ नारद उवाच ॥ धर्मा भागवतानित्यं श्रुत्वा समिधिलेश्वरः ॥ ज्ञायंते यान्मु
नीन् श्रीतः सोपाध्यायो ह्यपूजयत् ॥ ४३ ॥ ततो न्नदधिरे सिद्धाः सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ राजा धर्मानुपा
तिष्ठन् नवाप परमां गतिं ॥ ४४ ॥ त्वमप्येतान् महाभाग धर्मा भागवता श्रुतान् ॥ आस्थितः श्रद्धया
युक्तो निःसंगो यास्यसे परं ॥ ४५ ॥ युवयो र्वलुदं पत्यो यशसा पूरितं जगत् ॥ पुत्रतामगमयद्वा भग

नो योगीश्वर हेरुको पूजा पति गया ॥ ४३ ॥ ताहा प्राप्ताः सवै जनाले देष्टुं तैका सममा ॥ नो योगी हेरु अनर्था न हृदा
भया ॥ नो योगी लेवता याका धर्मको अनुष्ठान गरि ॥ निमिना माराजा पति परम गतिकन पाउदा भया ॥ ४४ ॥ ए
से कथा कन नारद मुनि जो छन ॥ वसुदेव कन आज्ञा गर्न लाया ॥ हे महा भाग हे वसुदेव तपात्रि पति सुन्या का ॥
भगवद्धर्मको श्रद्धा पूर्वक अनुष्ठान गरी कन संगले रहित भयाका छंदा परम गति माजा उला ॥ ४५ ॥ ॥

॥ भा. ए. ॥
॥ ३४ ॥

हेवसुदेव देवकी निमिडुई जनाकाजसलेजनकनपूर्णागरिराषेछ ॥ तत्राकोषमाश्रीकृष्णवतारहुनालेन छेरैजसव
द्याकोछ ॥ ४८ ॥ तपान्निहेरुले कृष्णविषे पुत्रकोस्नेहगरिदर्शनभयो ॥ आलिंगनआलापशयनआसन भोजन एति
कुरागनीले आत्माकनपवित्रवनाउदाभयो ॥ ४९ ॥ सनाब्रषान्इत्यादिकर्मविषेपनिवैरभावलेगरि ॥ शिशुपाल
नामाराजा पौद्रकवासुदेवसाल्व आदिगयाकाराजाहेरुजोछन् ॥ भगवान्कोगतिभयो विलासक्रीडाभयोहेनुभ
यो ॥ इनैकुरालेगरिरुठिपाकोचित्तभयाकाछंदा भगवत्स्वरूपकनवैरलेगरिपनिपाँउंदांभया ॥ जौनभगवान्वि

दर्शनालिंगनालापैः सयनाशनभोजनैः ॥ आत्मावांपाचितकृष्णेपुत्रस्नेहंप्रकुर्वतोः ॥ ५० ॥ वैरेण
यन्तपतयः शिशुपालपौरा शास्त्रादयोगतिविलासविलोचनाद्यैः ॥ ध्यायंत आहतधियः शयनास
नादौ तत्साम्यमापुरनुरक्तधियां पुनः किम् ॥ ५१ ॥ सापत्यबुद्धिमकथाः कृष्णे सर्वात्मनीश्वरे ॥ मा
यामनुष्मभावेन गूढैश्चर्य्यपरेव्ययैः ॥ ५२ ॥ भूभारासुरराजन्यहेतवे गुप्त्रये सताम् ॥ अवतीर्णस्य
निर्वृत्त्येयशो लोके वितन्वते ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ अतुरक्तचित्तभयाकाछंदा ॥ वडिभक्तिकनगछंरतिप्राप्तिहेरु
भगवत्स्वरूपकनपाउदछन्भनिकाभनुपछं ॥ ५२ ॥ हेवसुदेव तसर्थ मायालेमनुष्मलीलाकनलिना भगवान्
जगदीश्वरकृष्णविषे ॥ मेरोछोराभन्याबुद्धिनगर ॥ साक्षात्परमेश्वरहुन्भनिजान ॥ ५३ ॥ एथिवीकोभारभया
काराजाहेरुकनमारि ॥ सजजनकोरक्षागलार्इ अवतारभयाका ॥ जौनकृष्णकोजसुजोछसवैकोमाक्षगनीलार्इ विला

॥ राम ॥
॥ ३४ ॥

सु

रकनहुंछ. एस्ताकहनुभनि॥ नारदऋषिलेवसुदेवकनआज्ञागयाभनि॥ शुकदेवजोछन. राजापरीक्षितकन
आज्ञागछनहेमहाराजपरीक्षितसुन॥ ५० ॥ एस्ताकहनुभार. वडाभागलेयुक्तभयाकावसुदेवकीजोथिया
वडोआश्चर्यकनगर्दाछदाआक्रामोहकनछोडदाभया॥ ५१ ॥ एकायचिन्नगरि. अतिउगपकन. दिग्गएस्
इतिहासकनजोप्राणिसुन्दछ॥ एताप्राणिजोछ. एसैदेहविषेमोहछोडिकन॥ ब्रह्मस्वरूपकनहोइजोछभ
निशुकदेवले. राजापरीक्षितकनकहदाभयासहिकथाकनसूतलेशोनकादिऋषिहरुकनकहदाभया

श्रीशुकउवाच॥ एतच्छ्रुत्वामहाभागोवसुदेवोतिविस्मितः॥ देवकोचमहाभागजहन्मोहमात्मनः
॥ ५१ ॥ इतिहासमिदंपुराणंधारयत्यःसमाहितः॥ सविधूयेहसमलंब्रह्मभूयायकल्पते॥ ५२ ॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणोएकादशस्कंधेपंचमोऽध्यायः॥ ५ ॥ श्रीवादरायणिरुवाच॥ अथ
ब्रह्मात्मजैर्देवैः प्रजे शैरावृतो भूगात्॥ भवश्चभूतभवोशोययौभूतगणौवृतः॥ १ ॥ इन्द्रो मरु
द्भिर्भगवानादित्यावसवोऽश्विनौ॥ ऋभवोंगिरसोरुद्रा विश्वेसाध्याश्च देवताः॥ २ ॥

५२ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोएकादशस्कंधेभाषायांपंचमोऽध्यायः॥ ५ ॥ अवज्राहउग्रान्नवडाविलारले
ब्रह्मविशालाईकहनानीमिन्नकोहिकथाकाप्रसंगकन. शुकदेवजोछनकहंछन॥ हेमहाराजपरीक्षितसुन
ताहाप्रान्नसनकादियोगीहेरुभया॥ मरिचिआदिगयाकाप्रजापतिहेरुभया॥ ईसवैजनालेसहितभै. दारकावि
षेवब्रह्माउदाभयाभूतगणसहितभै. श्रीशिवआया॥ १ ॥

॥ स. भा. ॥
॥ २५ ॥

मरुतदेवतालेसहितभैरवआया॥ आदित्यभया. वसुदेवताहेरुभया रुद्रदेवता॥ विश्वेदेवताभया साध्यादेवताभया॥ २
गंधर्वभया अश्वराहेरुभया. नागहेरुभया. सिद्धहेरुभया. चारणागणभया॥ गुह्यकगणभया अषिहेरुभया. पितृहे
रुभया॥ विद्याधरगणभया. किन्नरगणभया॥ ३ ॥ ईसवैजनाकृष्णकादर्शनइच्छागर्भाभयाका आउंदाभया॥ सर्व
लोककनआनन्दगर्भामूर्तिनेगरि॥ सर्वलोककोपापकनहर्णजसकन॥ जोनभगवानलेविस्तारकनगर्दाभया॥

गंधर्वापरसोनागाः सिद्धचारणागुह्यकाः॥ त्रयः पितरश्चैव सविद्याधरकिन्नरा॥ ३ ॥ द्वारका
मुपसंजग्मु सर्वकृष्णदिदृक्षवः॥ वपुषायेन भगवान्तरलोकमनोरमम्॥ ४ ॥ यशोवितेनेलोके
षु सर्वलोकमलापहम्॥ व्यवक्षताः वितृष्णाक्षाः कृष्णमद्भुतदर्शनं॥ तस्याविभ्राजमानायां समृद्धा
यां महद्विभिः॥ ५ ॥ स्वर्गोयानोद्भवैर्मलैश्चादयंतो यद्भूतमम्॥ गीर्भीश्चित्रपदार्थाभिरुष्टुवर्ज
गदीश्वरम्॥ ६ ॥ देवाउचु॥ नतास्मतेनाथपदारविन्दं बुद्धीन्द्रियः प्राणमनोवचोभिः॥

एताकृष्णकोमूर्तिदेष्टुन्माहेरुलाईआश्चर्यकनगर्भा॥ दर्शनगर्तानिमित्त. नानातरहकासेश्वर्यलेगरिशोभा
भायमानभयाका. एतैद्वारकाविषेआउंदाभया॥ ५ ॥ नन्दनआदिगयाका. स्वर्गकावगेचाका फलकोदृष्टि
गदैगरि॥ मिठासुन्दरवाणिलेगरि. जगदिश्वरकृष्णकोलुतिगर्ताकनलाग्या॥ ६ ॥ देवाउचु॥ हेनाथ. हेकृ
ष्ण. हेभगवत्. बुद्धिइन्द्रिय. मनवचनलेगरि. हामिदेवताहेरुजोछौ॥ तपात्रिकाचरणाकमलकननमस्कार
गछौ॥ कलाचरणाकमलभया. जोनचरणाकमलकनयोगीहरुजोछन्. संसारदेविन्मोक्षहवसुभन्नानिमि

॥ राम ॥
॥ २५ ॥

न॥ वडा भक्ति भाव ले गरि अन्न हृदय विषे ध्यान कन गछे न॥ परंतु दर्शन कन पाउं दैन न॥ एसा भगवान् का चरणा कम
ल कन॥ हामि देवता हेरु नमस्कार गछौं॥ धन्य होहा सो भाग्य हे परमेश्वर॥ ७ ॥ हे जगदीश्वर ति मि जो छौं स
त्वरज तम इति न गुण ले युक्त भया कि माया ले गरि हे भगवन् माया का गुण विषे नियंता भैरव का छेंदा॥
वडा डः खले पतिर सो हो भनि कहि न्या भया का॥ महत्त्व आदि ग्या का प्रपंच कन सृष्टि गछौं पालना गछौं संहा

य चिंत्यते न हृदि भाव युक्तै मुमुक्षुभिः कर्म मयोरुपाशात्॥ ७ ॥ त्वं मायया त्रिगुणया त्मनि दुर्विभावं
व्यक्ते सृजस्य वसिलं पतित कुणस्थः॥ नैते भवात् जित कर्म भिरज्यते वैयत्ने सुखे व्यवहिते भिरते
न वश॥ ८ ॥ शुद्धिर्नृणां न तु तथेऽदरा शयानं विशाश्रुता ध्ययन दानतपः क्रियाभिः सत्वात्मना
वृषभते यस्य शीघ्र वृद्ध संश्रद्धया श्रवणा संभृतया यथा स्यात्॥ ९ ॥

र गछौं॥ एति कुरामा आपै गछौं भिन्न गदै नौ एसा कर्म गर्ना पति मि जो छौं॥ रागा दिले ही नृणा ले आत्म सु
ख स्वरूप विष आनन्द गर्ना हुना ले॥ एसा कर्म गरि वड हुदै नौ॥ एसा कारणा ले मोक्ष को इछा गन्या हरु जो छन॥
तया त्रिका चरणा कमल कन ध्यान गछे न॥ ८ ॥ आत्म सुख विषे आनन्द गर्ना आत्माराम मछु भन्या॥ सृष्टि स्थि
ति प्रलय आदि ग्या का कर्म गर्ना को कौन प्रयोजन छ भनुहा लात सुत॥ हे परमेश्वर स्तुति गर्न योग्य भया का॥
शुद्ध चित्त भया का प्रणि हेरु का तपा त्री को जस मुन्दा विषे॥ अति वड्या का बढी या श्रु काले गरि॥ जसो सुद्धि
हुँछ तसो उपासना शास्त्र श्रवण अवयन दानतपः स्थायज्ञादि क्रिया ले गरि हुदै न॥ तस अर्थ जस कन वि

॥ भा. ८ ॥
॥ ३६ ॥

स्मरणार्थं लाई सृष्टि आदि गत्या का कर्म गर्त योग्य छ ॥ ८ ॥ हे परमेश्वर तं प्रोजस सुखा विषेश्रद्धागर्तले पतिशुद्धि हुं छ
अवस्य हो ॥ परंतु हमि हेरुले त. तपात्रिको चरणा कमल को दर्शन पात्रं ॥ तस्कारण सुनि हेरुले मोक्ष हवस भन्नानि मि
तहृदयमाधान गरिया को. सलोचरणा कमल जो छ ॥ हाम्रा कल्पाणा स्वरूप भया का विषय वासना कन भस्म गर्त्या.
अग्नि स्वरूप हवस ॥ कलो तपात्रिको चरणा कमल भया ॥ भक्त हेरुले वडो से श्रव्य हवस भन्नानि मि त वा सुदेव सं
कर्षणा अनिरुद्ध इत्यादि गत्या का ॥ ब्रह्म विषे पूजा गरिया को फेरिकलो भन्या ॥ धीरपुरुष हेरुले वारं वार स्वर्गना

स्नान स्नानां धिरशुभाशयधूमकेतुक्षेमाय यो युनिभिराद्रं हृदो ह्यमान ॥ यः सात्वतैः समविभूतय
आत्मविद्भिर्व्यूहेचितः सवनशस्वरति क्रमाय ॥ १० ॥ यश्चिन्त्यते प्रयतपाणिभिरध्वराग्नौ जप्या
निरुक्तविधिने सह विगृहीत्वा ॥ अध्यात्मयोग उत योगिभिरात्ममायां जिज्ञासुभिः परमभागव
॥ तैः परीष्टः ॥ ११ ॥

नाधि ॥ वैकुण्ठमाजानानि मित्रधान गरिया को ॥ १० ॥ रामो मित्या का हातले होमद्रव्य चरु कनलि आहवनी
यनामायजका अग्नी विषे ॥ यज्ञ गर्त्या पुरुष हेरुले होम गर्तानि मित्रधान गरिया को ॥ फेरिकलो भन्या योग
गर्दा विषे योगी हेरुले पति तपात्रिकी माया जाना नि मित्रधान गरिया को ॥ वडा परम भागवत मुक्त हेरुले प
नि पूजा गरिया को ॥ सलो तपात्रिको चरणा कमल जो छ ॥ हाम्रा अकल्पाणा स्वरूप भया का विषय वासना को ना
श गर्त लाई समर्थ हवस भनितु ति गत्या ॥ ११ ॥

॥ राम ॥
॥ ३६ ॥

हे परमेश्वर सवे भक्त हेरू का वीचमा उत्तम भागवत विषे ॥ तपाजिकालक्ष्मी भंदापनि अर्घ्यालो श्री तिछ भनि सुतिग
छन् ॥ जौ नछातिमा वस्या किमलक्ष्मी छु ॥ उसै छातिमा वसि भया किपनि ॥ योमाला जो छन् वस छे भनि ॥ सोता
रुजिडाठ जै छातिमा वस्या किमलक्ष्मी कनपनि आदरन गरि ॥ तपाजि जो छो ॥ वासिमाला कनपनि भक्त ले चहाया
या कि भन्ना निमिन्न ॥ वडो आदर श्री तिगरि पूजा लिउहुं छ ॥ हे परमेश्वर एस्तो तपाजिको चरणा कमल जो छ
सदा सर्वदा हाम्रा विषय वासना कन भस्म गरस् भनि भन्यार ॥ १२ ॥ हे इश्वर तपाजिको चरणा कमल जो

पर्युष्टया तव विभो वनमालये यसं स्पृष्टिनी भगवती पतिपतिवद्धीः ॥ यः सुप्रणीतममु
यार्हणमाददन्तो भूयात्सदां धिरभुभाशयधूमकेतु ॥ १२ ॥ केतुस्त्रिविक्रमयुतस्त्रिपत
त्यतो कोयसे भया भयकरो सुरदेव चमोः ॥ स्वर्गाय साधुषु खलै धितराय भूमन्यादः पु
नातु भगवन् भजतामशंम ॥ १३ ॥

छ ॥ भक्त को पक्षपात गर्छ भन्ना यो कुरो वडै प्रसिद्ध भनि ॥ पार्थना गर्दा छंदा सुतिग छन् ॥ हे इश्वर वलिनामा दे
त्यलाई वन्दन लगाउदा विषे ॥ तिन पाउले युक्त भयाका वामन अवतारित पांजिकी ॥ तेस्तो सत्य लोकमा पुग्ना
को पाउरूपी धुजामा ॥ तिनै लोकमा उदिगंगारूपी पताका जस्तो छ ॥ एस्तो पाउ जो छ भक्तिगर्ना हाम्रा पापको ना
श गरि देवस् ॥ फेरि कस्तो भन्ना देवता कन भयगर्ना दैत्य कन भयगर्ना साधु संत जनलाई स्वर्ग दिन्ना ॥ दुर्जनलाई
नरकमा पुर्‍याउन्ना भयाको एस्तो ॥ १३ ॥

॥भा.स॥

॥३॥

ब्रह्मादिगयाकादेवताहेरुत.जाकमाछे शाकागोरुजिगरि॥जो नपरमेश्वरकावसमापयाछन्॥एसाप्रकृतिपु
रुषदेविभिन्नभयाका॥कालरूपीतपात्रिकोचरणाकमलजोछ.हाम्राकल्याणाकनविस्तारगरसभन्या॥कालस्वरू
पीपुरुषीजमपनितपात्रिहोभनिप्रार्थनागरिसुतिगछ्छन्॥हेपुरुषोत्तमतपात्रिजोछो॥प्रकृतिपुरुषमह
त्तत्त्व॥ईसवैकानियताभनिभंछन्॥संवत्सररूपकालजोछ.सोपनिनिमिहोउ॥एस्कारणालेयोजगत्संसारको
सृष्टिस्थितिप्रलयकनगर्नापनि.तिमिहोउ॥उत्तमपुरुषपनितिमिहोउ॥१४॥पुरुषजोछ.तपाइदेविशक्ति

नस्योतगावइवयस्यवशेभवंतिब्रह्मादयस्तनुभूतोमिथुरर्घ्यमानाः॥कालस्यतेप्रकृतिपुरुषयोः
परस्परशंनस्तनोतुचरणांपुरुषोत्तमस्य॥१४॥त्वत्तःपुमान्समधिकृत्यययास्यवीर्यं.धत्तेमहांत
मिवगर्भममोधवीर्यः॥सोयंतयानुगत॥आत्मनआराकोशःहैमंससर्जवहिराचरणोरूपेतम्
॥१५॥तत्तस्युष्टृश्चजगतश्चभवानधीशोयन्मापयोत्थगुणविक्रिययोपनीताम्॥

कनपाइकन॥मायालेसहितभै.विश्वसंसारउत्पत्तिगर्नागर्भरुजि.भयाकामहत्तत्त्वकनउत्पन्नगछ्छो॥तेसैमाया
लेसहितभैसोहिमहतत्वजोछ॥वाहिहकासात.पृथिवीआदिगयाकाआदिगयाका.आवरणालेयुक्तभया
का॥सुवर्गामयअराकोशकनवनाउछो.एसाइश्वरतपात्रिहो॥१५॥एसाईश्वरभनिकसोगरिजान्योभनौ
लात.हेईश्वरसुनजस्कारणाले.स्थावरजंगम.योसवैजगत्संसारका.तपात्रिजोछो.अधीश्वरहुनुहुन्छ॥तेसै

॥राम॥
॥३॥

कारणालेमायालेगरि।उत्पन्नभयाकाविषयकोइन्द्रियलेगरिभोगगछैतपनि॥तपान्निविषयमाछैनौ॥अरुप्राणिहे
रुभन्याविषयभोगगर्नुतकोनकराछ॥१६॥विषयवासनामात्ररह्याकोभयापनिविषयलेवद्धहोईजाछन्।ने
सर्थतपान्निईश्वरहोभनिजान्नुभनिदेवताहेरुलेभन्यार॥फेरिपनिविषयमावद्धभयाकानालिछैनौभनिप्रा
र्थनागछन्॥हेपरमेश्वरथोरैहासनानेअतिराम्रोभयाको॥हेर्नाकाकटाक्षलेदेखायाकोजोअभिप्रायछ।तस्
लेअतिराम्रोमनकनहर्न्यभयाकाआखिभूमरागललेपठायाका॥सुरतकामंत्रलेअतिवलियोभयाका॥एलाका

अथाश्रुषन्नपितृषीकपतेनलिप्त्रोयेन्येस्वतःपरिहृतादपिविभ्यतिस्म॥१६॥स्मायावलो
कलवदर्शितभावहारिभूमरागलप्रहृतसौरतमत्रसोरोरे॥पत्न्यसुषोडशसहस्रमनंग
वारौर्यस्येन्द्रियंविमथितुकरगोनंविम्वः॥१७॥विभ्यस्तवामृतकथोदवहास्त्रिलोकाः
पादावनेजसरितःशमलानिहंतुम्॥आनुश्रवंश्रुतिभिरंधिनमंगसंगैः।तीर्थद्वयंशुचि
॥षट्सुउपस्पृसंति॥१८॥

मदेवकामोहगर्न्यभयाकावाणालेगरि॥सोहृहज्जारअशेन्नरशयतपान्नि
कारानिहेरुलेपनिजोतपान्जिकाइन्द्रियकनभयोमनकनभयो॥क्षोभगर्नाकनसत्ताभयानन्।एस्कारणाले
तपान्निविषयलेगरिवद्धछैनौभनिप्रार्थनागन्यारविंतिगछन्॥१७॥हेपरमेश्वरतपान्निअमृतस्वरूपभ
याकाकथारूपीजलकनवहाउन्याभयाकातेलाकीर्तिरूपीनदीहेरुर॥तसैतपान्जिकापाउदेषिनिस्काकिश्रीगं

॥ भा.स. ॥
॥ ३८ ॥

गाजोछन्। तिनैलोककापापकोनाशगर्नाकन॥ सुन्नालेगरिरस्त्रानगर्नालेसमर्थछन्॥ तस्कारणलेभाक्काभाक्काआ
सनमारहाकाप्राणिहेरुजोछन्॥ हेपरमेश्वरतपानिकाकथाकीर्तिरूपीतीर्थकनर॥ गंगाजीकनसेवागछन्॥ भनिब्र
ह्मादिगयाकादेवताहेरुले॥ भगवान्कोसुतिगयाभनि॥ सल्लैकथाकनभुकदेवजोछन्॥ राजापरीक्षितकनआज्ञागछ
न्॥ १८ ॥ हेमहाराज॥ सल्लैसुतिकन॥ देवताहेरुलेगयायान्न॥ ब्रह्माजोछन्॥ हरिकनप्रणामगरिआकाशमारहाका
छदा॥ सकलैभैकेहिबिंतिगर्नलाग्ना॥ १९ ॥ ब्रह्मोवाच॥ हेविभो॥ हेकृष्ण॥ पृथिवीकोभार॥ हरणागर्ननिमित्त॥ अधि

श्रीवादरायणिरूउवा॥ इत्यभिसूयविबुधैः सेशः शतधृतिर्हरिम्॥ अभ्यभाषतगोविन्दप्रण
म्याम्बरमाश्रितः॥ १९ ॥ ब्रह्मोवाच॥ भूमेर्भारावतारायपुराविज्ञापितः प्रभो॥ त्वमस्माभिरशेषा
त्मस्तत्रथैवोपपादितम्॥ २० ॥ धर्मश्चस्थापितः सत्सुसत्यसंधेषुवैत्वया॥ किर्तिश्चदिक्षुवि
क्षिप्ताः सर्वलोकमलापहा॥ २१ ॥ अवनीर्य्ययदोर्वंशेविभ्रद्भूपमनुत्तमम्॥ कर्मण्युद्धामवृत्ता
निहितायजगतोद्यथा॥ २२ ॥ यानितेचरितानीशः मनुष्याः साधवः कलौ॥ भृगवंतः कीर्तयंत
श्चतुरिष्यंत्येजसातसः॥ २३ ॥

॥ हामिहेरुले॥ तपान्निलार्इविंतिगयाथुं॥ तपान्निलेपनिकृष्णाव
तारलिकनभूभारकनहरिदिनुभयो॥ २० ॥ अधर्मगर्न्याहेरुकोनाशगरि॥ धर्मकोस्थापनापनिगर्नुभयो
सवैलोकसंसारकोपापहर्न्याकीर्तिपनि॥ दिशादिशामाविस्तारगर्नुभयो॥ २१ ॥ हेभगवान्॥ यडवंशमाभ
वतारलि॥ अतिसुन्दरकृष्णमूर्तिकोधारणागरि॥ जगत्संसारकाहितनिमित्त॥ बडोउछामचरित्रकनगर्दाभया॥ २२

॥ राम ॥
॥ ३८ ॥

हे ईश्वर साधुमनुष्य हेरु कलियुग विषे तपाजिका चरित्र कन सुन्न न ॥ कीर्तन गर्न नर संसार कन न ॥ २३ ॥ हे
पुरुषोत्तम यदुवंश मा अवतार लिनु भया को तपाजिले ॥ एक शय पची सवर्ष भै गया ॥ २४ ॥ हे प्रभो अवयस
मय मा देवता हेरु को कार्य पनि विशेष रक्षा को छैन यादव को कुल जो छ सो पनि बल रा हेरु का सरा पले गरि
नाश कन प्राप्ति भै रह्यो ॥ २५ ॥ यादव कुल को संहार गया प्रांत ॥ हेरु हत तपाजिका चित्र माला गृह भन्या ॥ आर्क्ष
परम धाम वैकुण्ठ मा प्रवेश गर्नु हवस ॥ इन्द्रादिलोक ले सहित भया का ॥ हामि सबै लोक पाल देवता तपाजि

यदुवंशो वनीर्गस्य भवतः पुरुषोत्तमः ॥ शरच्छतव्यतीयायः पंचविंशधिकं प्रभो ॥ २४ ॥ नाधुना
तेखिलाधार देव कार्य वशेषितम् ॥ कुलं च विप्रशापेन नष्ट प्रायममूदिदं ॥ २५ ॥ ततः स्वधाम
परमं विशस्वयदि मन्यसे ॥ सलोकान् लोकपालान् न पाहि वैकुण्ठ किं करान् ॥ २६ ॥ श्रीगवानुवा
च ॥ अवधारित मेतन्मेयदात्थं विबुधेश्वर ॥ कृतं च कार्यमखिलं भूमेर्भारतवतारितः ॥ ३ ॥ त
दिदं यादवकुलं वीर्यशौर्यश्रियोद्धतम् ॥ लोकं जिघृक्षुः शुद्धं मेवैलयेव महार्णवः ॥ २७ ॥

काचाकर हेरु को पालना गर ॥ २६ ॥ भनि प्रार्थना गया को सुनि भगवान् आग्या गर्न लाग्ना ॥ भगवानुवाच ॥ हे व
सन्ति मि हेरु ले विंति गया को कुरो सबै सुन्या ॥ कार्य पनि सबै गया पृथिवी को भार पनि उताया ॥ ३ ॥ पराक
मलेर सुमाजिले सहित भया को ॥ ऐश्वर्य ले अनि उद्धत भया को ॥ एतौ यो यादव कुल जो छ ॥ सबै लोक को संह
लगर्ला भन्ना निमित्त तीर ले समुद्र लाई छेका रुजि मैले छेकि राघ्या को छ ॥ २७ ॥

॥ स.भा ॥
॥ ३८ ॥

अतिवलियाभयाकायडुवंशिहरुका॥योवशकुलकोसंछारनगरिकन.सवैकुण्ठमाजालान॥मर्यादामानरहन्वाभ
याकायडुकुललेगरियोलोकजोछनाशकनप्राप्तहोला॥तसुअर्थससकालविषे॥ब्राह्मणाकासरापलेगरि॥कुल
कानाशकाआरभभैरहेछ॥कुलकोनाशगरिसक्याप्राप्त.वैकुण्ठमाजादिषेर॥तपान्निकासत्यलोकमापनिमभा
उंला॥तिमिहेरुजावभनिकह्मलेआज्ञागरियाका.ब्रह्मालेपनि.रुह्मकनप्रणामगन्धार॥देवतालेसहितभै.आ
ज्ञाआक्राधाममाजादाभया॥२८॥ ३० ॥नाहाप्रान्त.हेमहाराज.तेसैद्वारकाविषे.नानाप्रकारकावडाउत्पातभया

पत्यसंहृत्यदृष्टानांयद्नाविपुलंकुलम्॥गतास्थानेनलोकोयमुद्धेलेनविनंद्यति॥ २९ ॥इदानी
नाशआरब्धःकुलस्यद्विजशापतः॥यास्यामिभवनंब्रह्मन्नेतदन्तेतवानशः॥ ३० ॥भूकउवाच॥३१
तुक्तोलोकनाथेनस्वयंभूःप्रणिपत्यतम्॥सहदेवगणार्देवःस्वधामःसमपद्यत॥ ३१ ॥अथनस्याम
होत्यातांनृदारवत्पांसमुस्थितान्॥विलोक्यभगवानाहयडुवृद्धान्समागताम्॥ ३२ ॥श्रीभगवानुवा
च॥एतेवैसुमहोत्यातासुत्तिष्ठन्तीहसर्वतः॥शापञ्चनःकुलस्यासीद्ब्राह्मणैर्भ्योदुरत्ययः॥ ३३ ॥नवस्त
वमिहाश्याभिर्जिजीविषेभिरार्यकाः॥प्रभासञ्चमहापुरुषंयास्यामौद्यौवमाचिरम्॥ ३४ ॥

कादेविकन॥रुह्मजोछन्.आक्रान्तीकमा.आयाकायडुवंशिहेरुकावृद्धवृद्धहरुकनकेहिआज्ञागर्नलाग्वा
३१॥३२॥हेयडुवंशिकावृद्धहोसुन॥ससद्वारकाविषे.जाहानाहोवडावडाउत्पातहुनलागीरह्याछन्॥हाया
यसकुलकनपनिब्राह्मणहेरुदेपि॥नाघिनसकनुसरापपरिरहेछ॥ ३३ ॥तसर्थ.जिउजनाकोइछाग

राम
३८

महामिसवैजना अवधारकामानवसौं॥ आजअतिपुण्यकनदिन्या प्रभासनामाक्षेत्रविषेजाउविलम्बनगरौं
॥ ३४ ॥ कस्तोप्रभासतीर्थछभन्याजो नृप्रभासतीर्थमास्नानगर्नालेगरि॥ दक्षप्रजापतिकाश्रापलेगरि भ
याकाक्षयरोगलेगरि सुक्याकाचन्द्रमाजोछन् त्योक्षयरोगदेपिन्मुक्तभै॥ उसैसमयमाकलाकिट्टि
कनपाउंदाभयाथा॥ एस्तोत्योवडोतीर्थहो॥ ३५ ॥ तस्मअर्थःहामिह रूपनिजाउरस्नानगरिदेवतापितृह
कन तर्पणगरि॥ नानाप्रकारकामिष्टानले वढीयाब्राह्मणकनभोजनगरा॥ ३६ ॥ श्रद्धालेगरिदानगरि

यत्रस्नात्वादक्षसायाकृहीतोयश्मरुणोदुरात्॥ विमुक्तः किल्बिषासद्योभजेभूयः कलोदयम्॥ ३५ ॥
वयंचतस्मिन्नास्तु तर्पयित्वा पितृन्पुरात्॥ भोजयित्वा शिवो विप्रान्नानागुणात्ताधमा॥ ३६ ॥ तेषु
दानानि पात्रेषु श्रद्धयात्तामहांति वै॥ वृजिनानि तरिष्यामो दानैर्नो भिरिवारिवम्॥ ३७ ॥ शुक उ
वाच॥ एवं भगवतादिष्टाया दवाः कुलनन्दन॥ गंतुकृतधियस्तीर्थं स्पन्दनात्समपूजयन्॥ ३८ ॥ त
न्निरीक्ष्योद्धवो राजन् श्रुत्वा भगवतोदितम्॥ दृष्ट्वा रिशानिघोराणि नित्यकृत्स्नमनुव्रत॥ ३९ ॥

कन॥ जाहाजलेसमुद्रतर्दाऊजिगरि॥ दानलेगरिपापकनकादौलाभनिकृष्णलेआज्ञागरियाका यादवहेरुजो
थिया॥ तिपनिवढियाभनिप्रभासतीर्थमाजानानिमित्त रथकोतयारिगर्दाभया॥ ३९ ॥ ताहापानहेमेहारा
ज रथकोतयारिभयाकोदेपिकन॥ अरुयादवहेरुलाई कृष्णलेआज्ञागयाकोसुनि॥ उत्पातहेरुभयाकादे
पिकन सदासर्वदाकृष्णकासंगमारह्याउद्धवजोछन्॥ एकान्तमागै जगत्काईश्वरकापनि ईश्वरभयाका क
कापाउमाशिरराधि नमस्कारगरिअंजलिबोधिकेहि विंतिगर्नलाग्या॥ ३९ ॥ ३९ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ४० ॥

॥ ४० ॥ उद्धव उवाच ॥ हे कृष्ण अवस्य तपात्रिजो छौ यो यादव कुल को संहार गरि ॥ सलोक न छोड जुहुं छ ॥ ४१ ॥ ब्राह्म
ण का सराप कन ॥ ऊटो गर्जु समर्थ भया का पनि ॥ तपात्रिले ऊटो गर्जु भयन ॥ तस अर्थ तपात्रिका चरणा कमल क
न कन हे केशव ॥ एक क्षण को आधा पनि छोड न सकिन ॥ ४२ ॥ तस्कार साहेनाथ ॥ तपात्रि वैकुण्ठ मा जानु हु छ
भया ॥ मलाई पनि ले जाउ हवस ॥ हे कृष्ण मनुष्य हरु को ॥ अति मंगल भया को ॥ तपात्री को लीला जो छ ॥ ४३ ॥ सोहि

विविक्त उपसंग मय जगतामीश्वरेश्वर ॥ प्रणाम्य शिरसा पादौ प्राजलि स्रम भाषत ॥ ४० ॥ उद्धव उवाच
देव देवेश योगेश पुराण श्रवण कीर्तन ॥ संहस्यै तत्कलं नूनं लोकसेत्यक्षत भवान् ॥ ४१ ॥ विप्रशाप
समर्थोऽपि प्रत्यहं नयदीश्वर ॥ नाहं तवाधिकं मलं क्षणाद्धर्मपिकेशव ॥ ४२ ॥ त्यक्तं समुत्सहेनाथ
स्वधामनय मामपि ॥ तव विकीर्तितं कृष्णं नृणां परममंगलम् ॥ ४३ ॥ कर्णवीर्यमास्थाय त्यजं न
स्पृहां जन ॥ शय्यासनाटनस्थानस्नानक्रीडासनादिषु ॥ ४४ ॥ कथं त्वां प्रियमात्मानवयं भक्त्या
स्तुजेमहि ॥ त्वयोपयुक्तं श्रृंगं धवासोलंकारचर्चिता ॥ ४५ ॥ उच्छिष्टभोजनोदासास्तवमाया
जयेमहि ॥ वातरसनायनवयः श्रमणा दुर्धमं धिना ॥ ४६ ॥

॥ कर्ण को अमृत कन पिशकन
अरु विषय का इच्छा कन ॥ प्राणि जो छ छोड दछ ॥ मंजो छुत पांज्रि को वडो भक्त भया को ॥ वारं वार सेवा मार हन्या ॥
कसो गरि छोड ना कन सकला ॥ ४४ ॥ हामि कला भया ॥ तपाइ का पाउ मान्नु हार ॥ निमात्य भया का ॥ माला चंदन वस्त्र
पहुि कन रह्या भया का ॥ ४५ ॥ जुटो घाना भया का ॥ एला दास हेरु हामि जो छौ ॥ तपात्रिका माया कन ॥ जितौ ला भनि

मम भया का उद्धरता भया का ॥ ४६ ॥
॥ राम ॥
॥ ४० ॥

शान्तस्वभावभयाका निर्मलचिन्तभयाका संन्यासिहेरुजोछन् ॥ वस्त्रचर्णदिउःखगर्नलेगरि वडाकष्टसंगतर्दछ
नर नप्राधाममाजांछन् ॥ हामिहेरुतमुखेलेगरितरौला कर्ममार्गमारुहाकापनि ॥ ४७ ॥ हेइश्वर तं प्राभक्तले
सहितभैः तं प्रालीलागाउनु ॥ स्मरणाकीर्त्तनगर्नुगरि ॥ उःखलेतरिनसकनु भवसागरतरौला ॥ ४८ ॥ गतिभ
यो थोरै हासिकनहेर्नुभयो ॥ ठट्टाभयो इत्यादिजोकोहिमउष्यलीलाकोअनुकारगर्नुभयो ॥ इसवैकुण्ठलेग

ब्रह्माख्यधामतेयांतिशान्ताः संन्यासिनोमलाः ॥ वयंत्विहमहायोगीन्भ्रमंतःकर्मवर्त्मसु ॥ ४७ ॥
त्वदार्त्तयातरिष्यामस्मावकैर्दुस्तरंतम ॥ स्मरन्कीर्त्तयंतस्तेकृतानिगदितानिच ॥ ४८ ॥ गत्पुन्नि
तेशराक्ष्वेलियन्तृलोकविडम्बनम् ॥ एवंविज्ञापितोराजन्भगवान्देवकीसुतः ॥ ४९ ॥ एकां
तिनंप्रियंभृत्यमुद्धवंसमभाषत ॥ ५० ॥ इतिश्रीभावतेमहापुराणोष्कादशस्कंधेभगवदु
द्धवसंवादेष्टशेषाध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यदात्थमांमहाभागतच्चिकीर्षितमेवमेवब्रह्मोभ
वोलोकपालाःस्वर्वासमेभिकांक्षिण ॥ १ ॥

॥ रितरौला हेकस्मभनि ॥ ४९ ॥ उद्धवलेवितिगरि
याकाभगवान्कृष्णजोछन् ॥ भाक्तावडाभक्तभयाकाउद्धवकनआज्ञागर्नलाग्नाभनि ॥ एसैकथाकनअक
देवलेराजापरिक्षितकनआज्ञागया ॥ सोहिकथाकनसूतलेशौनकादिअपिछेउआज्ञागया ॥ ५० ॥ इति
श्रीभागवतेमहापुराणोष्कादशस्कंधेभाषायांभगवदुद्धवसंवादेष्टशेषाध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीभगवानुवाच

॥ भा. ८ ॥
॥ ४९ ॥

हे महाभाग हे उद्धव. तिमिले जौ न कुरा भन्यो. सो कुरा मेरा मन मालाग को छ. ब्रह्मा. शिव. अरु जो कोहि लोकपाल देव
ता हे रूपनि वै कुरा ठमा आई वसन भनि इछा गछन् ॥ १ ॥ मैले पनि यो पृथिवी विषे देवता को कार्य जो छ सबै
गन्या ॥ ज्ञानि मित्र ब्रह्मा का पार्थना ले मैले अवतार लिया को हो ॥ २ ॥ हे उद्धव यादव को कुल पनि. ब्राह्मण का सरापले
गरिनाश कन भया को छंदो ॥ आपस मा रुगरागर्ना ले गरि समाप्त कन हुं छ ॥ आज का सातौं दिन मा. रस द्वा र का परि

मया निष्पादित स्वप्न देव कार्य मशेषतः ॥ यदर्थं भवती रोगं हं शो न ब्रह्मणार्थितः ॥ २ ॥ कुलं वै शाप
निर्दग्धं न क्षं न्यन्य विग्रहात् ॥ समुद्रः सप्त मेघेतां पुरी च क्षावयिष्यति ॥ ३ ॥ गर्ह्ये वायं मया त्वज्जो लोको
यं नष्टमंगलः ॥ भविष्यत्यतिरात्साधो कलिनापि निराकृतः ॥ ४ ॥ न वस्तु त्वं त्वयी वेह मया त्वत्के महीतले
॥ जनोऽधर्मरुचिर्भद्र भविष्यति कलौ युगे ॥ ५ ॥ त्वं तु सर्वे परित्यज्य स्नेहं स्वजन वंधुषु ॥ मया वै शप
नसम्पत्क समष्टक विचरस्व गाम् ॥ ६ ॥ यदिदं मनसा वाचा च शुभ्राश्रवणादिभिः ॥ न भ्रंरं यत्प्रमाणं
कन समुद्र ले उवाउ न्या छ ॥ १ ॥ जौ न दिन मा मै जौ छु. रस लोक कन छाडुला ॥ ३ ॥

सै दिन मा मंगल ले हीन भया को. यो लोक होइ आला ॥ हे उद्धव. कलिले पनि चाडै गरिया मगर्ला ॥ ४ ॥ मैले छोडि
गया प्रात. रस पृथिवी तल विषे तिमिले पनि न बह्यु ॥ रस कलि युग विषे मनुष्य जो छन्. अधर्म मा चित्त लगा
उ न्या छन् ॥ ५ ॥ हे उद्धव. तिमि पनि आक्रास वै वंधु विषे मोह कन छाडि कन ॥ रामो गरि मेरा चरण मा चित्त लगा
गाई कन ॥ सबै मा वरो वर दृष्टि गरि पृथिवी मा घुम्दै रहू ॥ ६ ॥ यो जो कोहि मन ले. वचन ले. नेत्र ले. कान ले ग

॥ राम ॥
॥ ४९ ॥

रिवुद्धि को वसु जो छ। तो सवै माया मात्र हो। मन ले कल्प नागरिया को रुंदो हो भ नि जान ॥ ७ ॥ हे उद्धव विषय मा भ्रात
भया का। नाना प्रकार को भिन्न भन्ना प्राप्ति हुंछ ॥ यो कुरा घटिया यो कुरा वटी या भन्ना। एस्तो बुद्धि भया का प्राप्ति का
यो कर्म यो अकर्म यो विकर्म भन्ना एस्तो भेद बुद्धि हुंछ ॥ ८ ॥ तस्कारण हे उद्धव इन्द्रिय समुदाय कन जितिकन
मन मन जितिकन ॥ विस्तार भया को पनि योज गत्तं सार कन आत्मा विषे देष ॥ आत्मा कन भन्ना मंसाक्षा दुख वि

पुंसो युक्त स्प नाना थों भ्रम संगुण दोष भाक ॥ कर्म कर्म विकर्म ति गुण दोष धियो विदा ॥ ८ ॥ तस्मा
युक्तेन्द्रिय ग्रामो युक्त चित्र इदं जगत् ॥ आत्म नीक्ष स्व वितत मात्मान मप्यधीश्वरे ॥ ९ ॥ ज्ञानं विज्ञान
संयुक्त आत्म भूतः शरीरिणाम् ॥ आत्मा नुभव तुष्टात्माना त्रयैर्विहं न्यसं ॥ १० ॥ दोष बुद्धो भवा
नीतो निषेधान्न निवर्त्तते ॥ गुण बुद्ध्या च विहितं न करोति यथा भर्कः ॥ ११ ॥

षे देष ॥ आत्मा यति हो। एति आत्मा हो इ न भन्ना ॥ एस्तो विवेक ज्ञान लेख वल विषय क ज्ञान ले युक्त भै ॥ सबै प्राणी हेरु
को आत्मा भया का ॥ ९ ॥ आत्मा को अनुभव गर्ना ले संतुष्ट भया का ति मिलार् ॥ संसारि विघ्न हेरु ले विघ्न गर्न सकै न व
ज्ञान भया का प्राप्ति पनि घटिया कर्म गर्देन वटी यै गर्दछ ज्ञानिला इ घटिया वाक्या चाहियो भनौ लात हे उद्धव सुन
॥ १० ॥ यो घटिया यो वटिया भन्ना। एस्तो भेद बुद्धि न भया को पनि ॥ उसै प्राकृतन को संस्कार हुना ले गरि घटिया
कर्म कन गर्देन परंतु यो घटिया कर्म हो। एस्तो कर्म गयाना शिख भन्ना भेद बुद्धि ले हो इ न ॥ वटिया कर्म गर्नु भन्ना

बुद्धि ले वटिया कर्म पनि गर्देन ॥ ११ ॥

॥ भा.स. ॥
॥ ७२ ॥

जसै बाल कजो छयो घटिया यो वढिया भन्ना. एलो भेद बुद्धि न भया को छंदो ॥ केहि कुरो छो उदछ केहि कुरो गछ ॥ तसै तानि
जो छ कर्म गछ ॥ सवै को मित्र भया को शांत स्वभाव भया को ॥ वेद शास्त्र का तात्पर्य अर्थ को निश्चय भया को ॥ वेद का अ
र्थ को अनुभव भया को छंदो ॥ विश्व संसार कन भगवत्स्वरूपै हो भनि देखु तो प्राणि जो छ ॥ फेरि संसारि दुदैन सुक्त हो
इजो छ भनि उद्धव कन कल्प ले आजा गणा का कथा कन भुक्त देव जो छन ॥ राजा परिशित कन आजा गछन ॥ १२ ॥

सर्व भूत सुहृत् शातो ज्ञान विज्ञान निश्चयः ॥ पश्यन्मदात्मकं विश्वं न विपद्यत वै पुनः ॥ १२ ॥ भुक्त उवाच
इत्यादि शो भगवता महाभाग वतो नृप ॥ उद्धवः प्रणिपत्या हत त्वजिज्ञासुरच्युतम् ॥ १३ ॥ उद्धव उवा
च ॥ योगेश योग विन्यास योगात्मन योग संभव ॥ निःश्रेयसाय मे प्रोक्त स्या गः संन्यास लक्षणाः ॥ १४ ॥
त्यागो यं दुष्करो भू मन् कामानां विषयात्मभिः ॥ सुतरां त्वयि सर्वात्मन भक्तै रिति मे मतिः ॥ १५ ॥

भुक्त उवाच ॥ हे यशस्वि त नामा राजा ॥ कल्प ले एलो आजा गरिया का ॥ वडा भागवत भया का उद्धव जो छन ॥ तत्व
ज्ञाना का इछा ले गरि ॥ कल्प कन नमस्कार गरि विंति गर्न लाग्ना ॥ १३ ॥ उद्धव उवाच ॥ हे कल्प मेरा कल्याण का
निमित्त सवै वसु मा ममता मोह न गर्नु भन्ना एलो आजा गर्नु भयो ॥ परं तु हे भगवन् हे कल्प ॥ विषय मा चित्त दि
या प्राणि हेरु का ॥ विषय भोग को र मोह को त्याग गर्नु वडो गा हो छ ॥ तस्मापनि अभक्त हेरु ले त अत्यंत विषय त्याग गरि
सक उछैन ॥ भन्ना एलो मेरा मन माला गदछ ॥ १४ ॥ हे कल्प त पात्रि की माया ले रचित भया का ॥ स्त्री पुत्र ले सहित भया का दे

॥ राम ॥
॥ ७२ ॥
दुविधि ॥ १५ ॥

मैं उद्धव हूँ मेरा इस वैस्वी पुत्र हूँ भनि मूढ मति हुनाले ॥ इस वै विषे फसिया को मैं जो छु ॥ तपाजिले आजा गया को
कुरो सुषले गरि सिद्ध गर्न जसो गरि सकुं ॥ तेला प्रकार को सिद्धा गर्नु हवस ॥ तपाजिको चाकर भया कामे रो उद्धार ग
नु हवस मैले संक्षेपले गरि कल्या को कुरो ॥ अरु संग विस्तार गरि सोध भनु होला त ॥ १६ ॥ हे कृष्ण आफै प्रकाश
भया का सत्य स्वरूप भया का ॥ एला तपाजि देषि न दो श्रो मलाइ सिद्धा गर्न सकन्या उलोव को जो छु ॥ देवता हेरु
विषे पनि मं कसै लाई देख्यो ती न देह धारि भया का वाहिर विषय मा वसु उद्धि भया का इस वै ब्रह्मादि देवता हे

सो हंम माह मिनि मूढ मति विगाढ स्वप्नाय पा विरचितात्म नि साजु वंधे ॥ तत्त्व जसा निगदितं
भवता यथा हं संसाधयामि भगवन्नुशाधि भृत्यम् ॥ १६ ॥ सत्य स्पते स्वदृश आत्मनो न्यं व
कार मीश विबुधेष पि ना नु चक्षे ॥ सर्वे विमोहित धियस्तव मायये मे ब्रह्मादयस्तनु भृतो वहिर
र्थभावाः ॥ १७ ॥ तस्माद्भवमनवतश्च मननत पारं सर्वज्ञ मीश्वर मकुराठ विकुराठ विष्णाम् ॥ निर्विस्म
धी रह मुह हृजिना भित्तो नारायणं नर सरवं शरणं प्रपद्ये ॥ १८ ॥

रूप नि ॥ तपाजिकी माया ले मोहित भया का छुन ॥ अरु को कौतुग न ना गर्नु पछ ॥ १७ ॥ तस्कारण हे कृष्ण ॥ सर्वे दो
ष ले हीन भया का काल ले देश ले जसो पार गरि सकनु छैन ॥ एला सर्वज्ञ भया का काल ले जसो स्थान भ
रु गरि सकनु छैन ॥ सर्वे कुरामा समर्थ भया का अर्जुन संग भया का ॥ एला नारायण तपाजिका सरण मा संसा
रि दुःख ले तात्पा को मजो छु पद छु भनि शरण मा परि उद्धव ले विंति गयार हे पशु क्षित राजा ॥ १८ ॥ ७ ॥

॥ स. ॥
॥ ४३ ॥

कृष्णजो छन आजागर्न लाग्ण हेउ छव. ससंसार विषे. ठेरै मनुष्य जो छन ॥ लोकतत्त्व कनन जान्ना कुशल भया काहे
दा ॥ घटिया विषय वासना देषि आत्म कन आफै उद्धार कन गर्दछन ॥ १९ ॥ हेउ छव पशु हेरु काशरीर विषे पनि
आ कुहित चिह्या गुरु जो छ आफै छ ॥ पुरुष काशरीर विषे त विशेष ले मरि आ कु गुरु आफै छ ॥ प्रत्यक्ष लेर अनु
मान ले गरि आ कुहित अहित अहित आफै ले जानि प्राणि जो छ कल्याण कन पाउंदछ ॥ २० ॥ सांख्य योग विषे
कुल भया काधीर प्राणि जो छन ॥ सब शक्तिले बढ्या का चडो विलार गरि रक्षा कामन कन मनुष्य शरीर विषे देष्ट

श्री भगवानुवाच ॥ प्रायेण मनुजालोके लोकतत्त्व विचक्षुणाः ॥ समुद्धरंति ह्यत्मानमात्मनैवाशुभा
शयात् ॥ १९ ॥ आत्मनो गुरुरात्मैव पुरुषस्य विशेषतः ॥ यत्प्रत्यक्षानुमानाभ्यां श्रेयो सावजुविन्दत
॥ २० ॥ पुरुषत्वे च साधीराः सांख्ययोगे विशारदाः ॥ आविस्तरं प्रपश्यंति सर्वशत्पुष्टं हितम् ॥ २१ ॥
एकद्वित्रीचतुष्पादो बहुपादस्तथापदः ॥ बहुसंति पुरः सृष्टास्मात्तामेवैरुषीषिया ॥ २२ ॥ अत्र मा
मार्गयंत्यद्या युक्ता हेतुभिरीश्वरम् ॥ गुह्यमोर्गुलौ लिंगैरग्राह्यमनुमानतः ॥ २३ ॥

छन भन्या ॥ ससै मनुष्य शरीर को सुति गरि वर्णन गर्न लाग्ण ॥ २१ ॥ एक पाउ हुन्ना. द्वि पाउ हुन्ना. तिन पाउ चार
पाउ हुन्ना. चहुनै पाउ हुन्ना. पाउ हुनै नहुन्ना ॥ एता सृष्टि गरिया का ठेरै शरीर छन ॥ तिसवै शरीर मा मनुष्य शरी
र जो छ अति पियारो छ ॥ २२ ॥ ससै मनुष्य शरीर विषे. मत्तन भया का सावधान पुरुष हेरु जो छन ॥ इन्द्रिय लेय
हरा गरि नसकिया को इन्द्रिय जउ हेरु को भन्या प्रकाश गर्ना आत्मा जो छ ॥ अहंकार हेरु देषि भिन्न भया को अ

॥ राम ॥
॥ ४३ ॥

वस्य छ भनि ॥ सत्ता अनुमान ले गरि साक्षात् ईश्वर मँ कन देखत छन ॥ २३ ॥ समै कुरा माय डना मारा जार ॥ अवधूत भ
या का दत्ता त्रेय योगी को संवाद भया को पहिले को हि इतिहास कथा कहं छु ॥ हे उद्धव सुन भया भगवान ले ॥ इ
तिहास कन कहन लाग्ना ॥ २४ ॥ हे उद्धव को हि अवधूत बाल राजो छ ॥ कसै को भयन मानि रक्षा को वडो जान्ना
तरुणा वयस भया को ॥ सत्ता कन देखिय डना मारा जा जो छन ॥ वडो धर्म कन जान्ना भया का छंदा के हि कुरो सो
धन लाग्ना ॥ २५ ॥ यडु रूवाच ॥ हे वसुन्कार्य भया निमि गदै नौ ॥ सत्ता वढीया बुद्धि का हा देखि पायो ॥ जो नु बुद्धि

अत्रा पुदाहरंती ममितिहासं पुरातनम् ॥ अवधूतस्य संवादं यदोरमित तेजसः ॥ २४ ॥ अवधूतं
द्विजं कंचिच्चरंतमकुतो भयम् ॥ कविनिरीक्षत रुरां यडुः पप्रच्छ धर्मवित् ॥ २५ ॥ यडु रूवाच ॥ कु
तो बुद्धिरियं ब्रह्मज्ञकर्तुः सुविशारदाः ॥ यामासाद्य भवा लोकं विद्यां चरति बालवत् ॥ प्रायो धर्मार्थ
कामेषु विविक्ता यो च मानवाः ॥ हेतु नैव समीहंते आयुषो यस्य शश्विषयः ॥ ३ ॥

पाई कन निमि जो छै ॥ वडा जान्ना पंडीत भया का पनि ॥ बाल कजै गरि आचर राग र्द छै ॥ २६ ॥ सवै लोक भन्स भिन
पनि निमि छै ॥ ठेरे लोक मामानि सहेरु जो छन ॥ धर्म अर्थ काम विषे आत्म विचार विषे लाग्ना काहुं छन ॥ ध
र्म अर्थ काम इतीन कुरा माय पनि आफु भया ॥ जस सँ श्रव्य हव स भनिका मना ले गरि प्रवृत्त भया काहुं छन
निमित्त समर्थ छै पंडित छै ॥ चतुर छै ॥ वढीया भाग्य मानि जला छै ॥ वढीया बोलन जान्ना भया का छै ॥ काम
पनि के हि गदै नौ ॥ कहि रक्षा पनि गदै नौ ॥ लाटा रुजि उन्मत्त जै पिशाच रुजि रक्षा का छै ॥ काम लोभ रूपी व

॥ भा. स. ॥

॥ ४४ ॥

नकाशागाले सवैडुनियाउठदाविषयनि. तिमिजोछौ आगा देषिभिन्नरह्या का ॥ गंगाजी काजलमावस्या का हातिरुजि
संतापकनपांउदै नौ ॥ ३ ॥ २८ ॥ २९ ॥ सत्तातपाजिजोछौ ॥ हे वसन् प्रह्लादगर्भाहामिलाई. केवलस्वरूपभयाका ॥
विषयभोगलेहीनभयाका ॥ सत्तातपाजीकाआत्माविषेआनन्दहुनाको. कारणको नृछ भनभनिसोधा. यडुना.
माराजालेर वडाभाग्यलेयुक्तभयाकाभवधूतब्राह्मणजोछन् ॥ यडुनामाराजाकनआज्ञागर्नलाग्पा ॥ ३१ ॥ ब्राह्म

त्वेतुकल्पकविर्दक्षः सुभगो मृतभाषणः ॥ नकर्त्तनेहसेकिंचिज्जडोन्मत्तपिशाचवत् ॥ २८ ॥ जनेषुद
समानेषुकामलोभदवाग्रिनानतप्यसेमिनामुक्तोगंगाभस्थः इवद्विपः ॥ २९ ॥ त्वहीनः पृच्छताब्रह्मना
त्मन्यानन्दकारणम् ॥ ब्रह्मिस्पर्शविहीनस्यभवतः केवलात्मनः ॥ ३० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यडुनैवम
हाभागो ब्रह्मरोपनसुमेधसा ॥ पृष्टः सभाजितः प्राह प्रशयावनतं द्विज ॥ ३१ ॥ श्रीब्राह्मणउवाच ॥ सं
तिमेगुरवोराजन्वहवोबुध्यपाश्रिताः ॥ यतोबुद्धिसुपादायमुक्तोतामीहताभ्रद्वरा ॥ ३२ ॥ पृथिवी
वायुराकाशमापोऽग्निश्चन्द्रमारविः ॥ कपोतोऽजगरः सिंधुपतंगोमधुकृकृजः ॥ ३३ ॥

राउवाच ॥ हेमहाराजयडुनामाराजाआफ्राबुद्धिलेलियाकामेरो ॥ गुरुहेरुठेरैछन् ॥ जौनृगुरुहेरुदेवि
बुद्धिलिइकनमुक्तभयाकोमंजोदु ॥ पृथिवीविषेयुमदछु ॥ तिमेरागुरुहेरुसवैकनभंछुसुन ॥ ३२ ॥ पृथि
वी १ ॥ वायु २ ॥ आकाश ३ ॥ जल ४ ॥ अग्नि ५ ॥ चन्द्रमा ६ ॥ सूर्य ७ ॥ कपोत ८ ॥ अजगर ९ ॥ सिंधु १० ॥ पातंग

॥ राम ॥

॥ ४४ ॥

११।मौही१२।हानि१३।महकाटिषान्नाश्राणि१४॥हरिरा१५।मीन१६॥पिंगलावेशा१७॥न्याहुलो१८॥वालक१९॥
कुमारी२०॥वाणावनाउन्नामनुष्य२१॥सर्प२२॥माकुरो२३॥कुमालकोटि२४॥एतिचौवीसगुरुमेरान्॥इने
चौवीसगुरुहेरुकाव्यवहारलेगरिभाफुलेलीनयोगभयाकारलीनयोगनभयाकाअर्थकनमैलेसिकाकोछ
॥३३॥३४॥एतिचौवीसगुरुदेविजोनकरोसिकाकोछ॥हेमहाराजयउनामाराजाजलोगरिसिकाकोछतले

मधुहहारिणोमीनपिंगलाकरोर्भकः॥कुमारीसरक्तसर्पः॥उरानाभिःसुपेशकृत॥३४॥एते
मेगुरवोराजंश्चतुर्विंशतिराश्रिताः॥शिक्षावृत्तिभिरेतेषामन्वशिक्षमिहात्मनः॥३५॥यतोयद
नुशिक्षाभिर्यथावानाहुषात्मज॥तन्त्रथापुरुषव्याघ्रनिबोधकथयामिते॥३६॥भूतैराक्रम्य
मानोपिधीरोदेववशाजुगैः॥तद्विद्वान्चलेनमार्गादचसिक्खक्षितेकृतम्॥३६॥शश्वत्पराथ
सर्वेहःपराथैकांतसंभवः॥साधुःशिक्षेत्तन्मृत्तोनगशिक्षःपरात्मताम्॥३७॥

गरिमभंछुसुन॥३५॥पृथिवीगुरुदेविक्षमाधारिहुनुसिकाकोछुसुन॥दैवकावसमापयाकाश्राणिहेरुलेपी
डागरियाकोपनिधैर्यलेयुक्तभयाकोपकजोछदैवाधीनछ॥सुखदुःखभनिआक्रामार्गदेविनउगुभन्नायो
करामैलेपृथिवीदेविसिकाकोछ॥३६॥पर्वतरूपपृथिवीरवृक्षरूपपृथिवीदेविसिकाकोकुरोभंछुसुन॥
परोपकारकानिमित्तसर्वेचेष्टागर्ज॥जन्मपाशकनपरोपकारगर्ज॥जसैपर्वतरवृक्षपरोपरकानिमित्तमात्रछ
नतसैभाफुलेपनिपरोपकारिहुन्भन्नायोकुरोसिकाकोछ॥३७॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ४५ ॥

वायुपनिर्द्वैप्रकारकोछ ॥ एकवाहिरवायुछ. एकभिन्नप्राणवायुछ ॥ तस्माप्राणजोछ. आहारमात्रलेसंतुष्टछ रूप
रसआदिगन्धाकाविषयकनइछागदैन ॥ तसैमुनिलेपनि. प्राणकृतिलेगरिमात्रसंतोषिभैरहनु ॥ इन्द्रियहेरुलाइ
प्रसन्नगन्धकामनगर्नु ॥ जोनप्राणवृत्तिगर्नालेज्ञानहराउंदैन ॥ वचनर. मनजोछन. जसोगरिहरदैनन ॥ तेतिमा
त्रप्राणवृत्तिगर्नु ॥ अर्घालोनषोजनुभनिप्राणवायुदेपिसिकाकोकुरोहो ॥ हेमहाराजयडनाभाराजा ॥ ३८ ॥ अ
ववाहिडकावायुदेपिसिकाकोकुरोभंछनुन ॥ शीतउष्णआदिगन्धाका. भिन्नाभिन्नधर्मभयाकाविषयविषे

प्राणवृत्तैवसंतुष्टेनमुनिनैवेन्द्रियप्रियैः ॥ ज्ञानंयथाननश्येत्तनावर्क्येत्तवाश्चन ॥ ३८ ॥ वि
षयेषाविसंयोगीनानाधर्मेषुसर्वतः ॥ गुणदोषव्ययेतात्मानविषज्जेतवायुवत् ॥ ३९ ॥ पार्थि
वेष्टिहृदेहेषुप्रविष्टस्तद्गुणाश्रयः ॥ गुणैर्नयुज्यतेयोगीगंधैर्वायुरिवात्मदृक् ॥ ४० ॥ अंतर्हि
तश्चस्थिरंजंगमेषुब्रह्मात्मभावेनसमन्वयेन ॥

॥ जाहाताहालाग्याकोपनिवायुजोछ ॥ गुणदोष
लेहीनभयाकोछंदो ॥ तसजगामावच्छुद्धदैन ॥ तसैयोगीलेनानाविषयकोभोगगछतपनि ॥ तिविषयमावच्छ
भैनरहनुभन्यायोकुरो. वाहिरकोवायुदेपिसिकाकोछ ॥ ३९ ॥ जसैवायुजोछ. गंधधर्मलेसहितभयाजसो
देपिंछ. तपनिगंधगुणलेवच्छवायुहुदैन. तसैआत्माजोछ ॥ सोपनिष्टथिवीकोविकारभयाकादेहविषेर
हाकोपनि ॥ देहकादुलोहुनु. साजुहुनु. सत्ताधर्मलेयुक्तहुदैन ॥ अहंकारलेवच्छुद्धदैन ॥ ४० ॥ एकैआत्माजो

॥ एप ॥
॥ ४५ ॥

वाहिरभिन्नरखाकोछ॥संगभन्नाकसैकोछैनभन्नायोक्रो॥आकाशदेविसिक्काकोहो॥भंछुसुनजसैस्यावरजगमश
णिविषे॥जोहाताहारखाकोपनि॥आकाशजोछ॥ताहाताहावद्धछैन॥तसैवसुसन्नालेवापकरूपलेगरिरखाको
पनि॥आत्माजोछसंगीकसैकोछैनभनिजानु॥जसैआकाशजोछ॥तिमिकालमाउत्पन्नभयाकावायुले॥एताउ
तिप्रेरणागरियाकामेघहेरुलेवद्धछैन॥तसैपुरुषजोछ॥तेजजल॥पृथिवीइत्यादिलेवनियाकादेहरूपग
णालेवद्धछैन॥४१॥४२॥जलवाटसिक्काकोभंछुसुन॥जसैजलजोछनिर्मलछ॥स्वभावैलेचिह्नोछमधुरसले

वाप्राव्यवच्छेदससंगमात्मनोमुनिर्नभस्त्विततस्यभावयेत्॥४१॥तेजोवन्नमपैर्भावैर्मे
घाद्यैर्वायुनेरितैः॥नस्पृश्यतेनभस्मद्वत्कालस्तृष्टैर्गुणैर्गुमान्॥४२॥स्वच्छःप्रकृतितस्त्रिगु
माधूर्यंस्तीर्थभूर्त्तणाम्॥मुनिःपुनात्यपामिन्नमीशोयस्पर्शकीर्त्तनैः॥४३॥तेजस्वीतपसा
दीप्तोऽर्धर्षोदरभाजनः॥सर्वभक्षोपियुक्तात्मानादन्नेमलमशिवत्॥४४॥

युक्तहुछ॥मनुष्यहेरुकोतीर्थरूपछ॥दर्शनस्पर्शनकीर्त्तनगर्नाले॥जस्तनपवित्रगर्दछ॥तसैइसवैदृष्टान्न
लेयुक्तहुनालेजलवरोवरभयाको॥मित्रपनिआक्कासखाकनपापवित्रगर्दछ॥४२॥अग्निदेविसिक्काकोक्र
ोभंछुसुन॥हेयडनामाराजा॥जसैतेजलेयुक्तभयाकोदीप्तभयाको॥कतिसुकैहालिदियापनिभस्मगरि
हालन्नासर्वभक्षीभयाकोपनिछटियावढीयाभन्नुअत्रिलार्इकेहिछैन॥तसैतपस्यालेदीप्तभयाकोपेटै

॥ भा.प. ॥
॥ ४६ ॥

अन्नराषण्यापात्रभयाको संग्रहनगर्नाने जस्वी योजस्वी योगीलाई सवै करामक्षणागत्याको पनि दोष केहि छैन
॥ ४४ ॥ अर्को कुरो पनि अग्रिबोट सिकाको भन्छु सुन ॥ जसै अग्रि जो छ अर्को काइ छाले गरि होम गत्याको चरु
कनलिन्छ ॥ कैहे देषिन्छ कैहे देषिंदैन ॥ कल्याणको इच्छागर्नले उपासनागर्न योग्य भयाको पनि छ ॥ तसै यो
गी पनि दाता हेरुले दियौं बाँछे ॥ पान्नाका निमित्त को यत्न गर्दैन ॥ कैहे प्रकाश रहन्छ ॥ कैहे दु विरहन्छ ॥ अधिभ
याको पछि हुन्छ ॥ पापको भोग गरिरहन्छ ॥ ४५ ॥ जसै दारुवा मा ॥ जसो दारुवा छ ॥ उसै स्वरूपले गरि अग्रिरहन्छ

कवि छन्नः कवित्पष्ट उपास्यः श्रेयश्छताम् ॥ भुक्ते सर्वत्र दातृणां दहन् प्रागुत्तराशुभम् ॥ ४५ ॥ वि
सर्गायाः श्मशानाभावाद्देहस्य नात्मनः ॥ कलानामिव चन्द्रस्य कालेनाव्यक्तवर्त्मना ॥ ४६ ॥

तसै आत्मा जो छ ॥ व्यापक भै आक्रे माया ले सृष्टि गरियाका ॥ देवता ॥ पशु आदि गरियाका ॥ अथवा विप्रक्षत्रिय
आदि गत्याका जगत मा प्रवेश गरि अग्रि रूत्रिने ति स्वरूप ले देषिन्छ ॥ तस अर्थ ॥ साउदुलोउ चनी चयो व्यवहार
जो छ ॥ आत्मा का देह ले गरि हुन्छ ॥ स्वभाव ले हुंदैन भन्या ॥ आत्मा का जन्म नुछ भन्नु ॥ वढनु ॥ वढा हुनु ॥ घटनु ॥ म
र्नु ॥ इछ विका जो छन ॥ देह का हुनु ॥ आत्मा का है नन् भनि चन्द्र मा का दृष्टान्त ले गरि भन्छन् ॥ हे महाराज ॥ जन्म
देषि मरणा सम्म का छ विकार जो छन ॥ देह का जान ॥ आत्मा का न जान ॥ जसै घटनु वढनु ॥ जो चन्द्र मा का कला को
हो ॥ चन्द्र मा का होईन ॥ तसै छ विकार न भया को आत्मा जानु ॥ ४७ ॥

॥ राम ॥
॥ ४६ ॥

फेरिपनिअग्निदृष्टान्तलेगरि. देहकोक्षरौमानाशरहेछ॥ भनिदेहमावैराग्यसिकाकोछभंछुसुन॥ जलप्रवाहरुनी
वेगभयाकाकाललेगरिआत्मादेविदेहकाउत्पत्तिरप्रलयजोछन॥ नित्यछन्नपनिअग्निकाज्वालाफुजिगरिदेवि
नैनन॥ ४८॥ अवसूर्यदेविसिकाकोभंछुसुन॥ जसैसूर्यजोछन. जलकनकालकालमावर्षहुंछन॥ किरण
लेगरिपंत्रिविलिंछन. तसैसुनिजोछइन्द्रियलेविषयकेहिलिन्छ॥ जौनकालमाभयो॥ कोहिमाडन्याआउंरा
दिंछपाजादिआभन्याशहंकारगर्देन॥ ४९॥ भेदनभयाकापनिआत्माकोभेददेविउजोछ॥ देहादिगया

कालेनत्यायवेगेनभूतानांप्रभवार्थयो॥ नित्यावपिनदृश्येतआत्मनोऽप्येयथार्थिषाम्॥ ४८॥ गु
णैरुत्तमानुपादनेयथाकालंविमुच्यते॥ नतेषुयुज्यतेयोगीगोभिर्गाइवगोयतिः॥ ४९॥ बुद्ध
तेस्वनभेदेनव्यक्तिस्थइवतद्भूतः॥ लक्ष्यतेस्थूलमतिभिरात्मावावस्थितोर्कवत्॥ ५०॥ नाति
मेहःप्रसंगोवाकर्तव्यकापिकेनचित्॥ कुर्वन्निन्देतसंतापंकपोतइवदीनधी॥ ५१॥ छ ॥

काउपाधिलेछभनि. सूर्यादृष्टान्तलेभंछन॥ आकास्वरूपविषेरखाकोआत्माजोछ. भिन्नदेविदेन॥ देहादिग
याकाउपायविषेरखाकोभन्या. सूर्यहेरुलेभिन्नदेविंछ॥ जसैसूर्यसकैछन्नपनिजलादिमाप्रतिविश्वपया
मा॥ भिन्नभिन्नदेविंछन. तसैजानु॥ ५०॥ अतिप्रेमअतिआसक्तिजोछकेहेपनिकसैसंगपनिनगर्नु॥ गर्वाभ
न्यादीनुबुद्धिभयाको. परेरुत्रिसंतापकनपाउंदछन॥ तसुअर्थअतिप्रीति. अत्यंतउपलालनादिआसक्तिनग
र्नुभंन्याकुरो. परेवादेविसिकाकोछ. सुन. राजाभनि. अवधूतसुनिजोछनआज्ञागर्नलाग्ना॥ ५१॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ४ ॥

कोहि परे वाजो छ. वनविषे. वडा वृक्ष विषे. गुंडलगाई ॥ आक्री भार्या कपोतीले संग. काहि वर्षपर्यन्त वस्था को थि
यो ॥ हे महाराज. तिकपोत कपोती जो छन ॥ ५२ ॥ प्रेमले वांधिया को चित्त भया काटह स्थिधर्म मारया का छंदा दृष्टि
मा दृष्टि मिलाइ. अंगमा अंग मिलाई ॥ बुद्धिमा बुद्धि मिलाई वांधिया का थिया का थिया ॥ ५३ ॥ विछाउना. आस
न. हिडउ. वस्तु. वार्ता गर्नु कीडा गर्नु ॥ इत्यादि कुरा कन गर्दा. हामि कैले. छुटिन्या छैनौ भन्या. वडो विश्वास कन

कपोतः कश्चना रणे कृतनी डोवन स्य नौ ॥ कपोता भार्या साई सुवास कनि चित्तमा ॥ ५२ ॥
कपोतौ हेन ह गुणित हृदयो गृहस्थ धर्मिणो ॥ दृष्टिं दृष्ट्यांगमंगेन बुद्धिं बुद्ध्या च वंधतु ॥ ५३ ॥
शय्यासनाटनस्थानवार्ता कीडा शमादिकम् ॥ मिथुनी भूय विस्तधौ चेतुर्वनराजिषु ॥ ५४ ॥
यंयं वा छतिशाराजं सूर्ययंत्यनुकंपिता ॥ तत समनयत्कामं कृच्छ्रेणाप्यजितेन्द्रियः ॥ ५५ ॥ क
पोती प्रथमं गर्भं गृहती काल आगते ॥ अंडानि सुषुवेनी डे स्वपत्यः सन्निधौ सती ॥ ५६ ॥

प्राप्त भया का छंदा उ इजना स्त्री पुरुष संग भै वनमा पिर्दथा ॥ ५४ ॥ हेराज न आक्री भार्या कपोती जा छ ॥ हांसिक
न हेर्नु. राम्रो वोलउ गरि ॥ अनि प्रसंगा गराउदी ॥ परे वाले दया गरिया को जो न करो इछा गथि ॥ सोहि कुरो इन्द्रिय
जित नन सकन्या परे वाजो छ वडा ड. खले गरि पुयाउं थो ॥ ५५ ॥ कपोतीले पनि प्रथम गर्भ कनधारि छर ॥ काल

॥ राम ॥
॥ ४ ॥

प्राप्त भयामा आक्राष्ट संकान जीक विषे वस्था किछ दी ॥ गुडमा फल पार्दि मै छ ॥ तिने वच्चा हेरु विषे भगवान् किशक्ति
ले गरि ॥ ५६ ॥ कोहि कालमा अति कोमल छाँप उत्यन्न भया छन ॥ सस्ता छोरा छोरी कन दे वि वरो मनमा प्रसन्न भया
का ॥ ५७ ॥ वच्चा का तोता वो लि सुन्दामा अति आनन्द मान्ना भया का ॥ सस्ता कपोत कपोती जो थिया प्रजा को पाल
ना गर्था ॥ ५८ ॥ छोरा छोरी का कोमल छाँप ले अति राषो चेशाले तोता वो लि लवन दे वि गुडमा आफु हेरु ले

तेषु काले व्यजायंतरं चिता वयवाहरे ॥ शक्तिभिर्दुर्विभाव्याभिः कोमलांगत नरुहाः ॥ ५९ ॥ प्र
जाः पुपुषतुः श्रीतौ दंपती पुत्रवत्सलौ ॥ श्रुत्वा तौ कृतं तं तासां निवृत्तौ कलभा धितैः ॥ ५८ ॥ ता
स्यापतत्रैः सुस्पर्शैः कृतितैर्दुग्धवेष्टितैः ॥ प्रत्याहुर्मैरदीनाना पितरौ सुदमापतुः ॥ ५९ ॥ स्त्रे
हाउवद्ध हृदया वनो न्यविष्णु मायया ॥ विमोहितौ दन धियौ शिशू मुपुषतुः प्रजाः ॥ ६० ॥
सकदा जगमनुस्त्रा सामन्त्रार्थं तौ कुटुंबिनौ ॥ परितः कानने तस्मिन्नर्थिनौ चैरतश्चिरम् ॥ ६१ ॥

आउंदा विषे ॥ गुड छोडी आक्रान जीकमा आउना ले कपोत कपोती जो थिया अति हर्ष कन पाउ दाहुं थ्या ॥ ५९ ॥
प्रमलुवा धिया को छ मन जन्को विष्णु की माया ले मोहित भया का दीन बुद्धि भया का ॥ सस्ता कपोत कपोती जो
थिया छोरा छोरी को पालना गर्द थ्या ॥ ६० ॥ एक कोही कालमा तन्कपोत कपोती जो थिया छोरा हेरु लाइ आहारा
घोजना कन गया छन ॥ ते सै वन विषे जाहां तां हो वहु तै काल सम्म फीर्दा भया छन ॥ ६१ ॥ ६१ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ४८ ॥

वच्चाकनपनिकोहिवाधाले गुडकानजीकमादेवेछरजालफिजारिपक्रदोभयेछ ॥ कपोतकपोतीपनिआहारालिगुडमाआया
छन ॥ कपोतीलेजालमावेहियाकाआक्राछोराहेरुकनदेविछन ॥ चिउं चिउं गरिकणं दावच्चाकानजीकमा ॥ वडीडुःखितभे
धाउं देजोदिभै ॥ भगवान्किमायालेछोराछोरीमावद्धचिन्नभयाकी ॥ आफुपनिजालमापयाकादेष्टादेष्टतैपनिमपनि
वेहिं सुंलाजालमाभनिन्नजानिजालमावोधिदैभै ॥ कपोतपनिआफुभंदापियाराभयाकाजालमावाधियाका ॥ आक्रा

दृष्टातां लुधककः श्विष्टदृष्टातो वने चरः ॥ जगृहे जालमातयचरतः खालयां तिके ॥ ६२ ॥ कपोतश्च क
पोती च प्रजापे स दोस्तु कौ ॥ गतौ योषणमादये खनीडमुपजग्मनुः ॥ ६३ ॥ कपोती स्वात्मजान् वीक्ष्य
वालकान् जालसं वृत्तान् ॥ तानभ्यधावन् कोशं तीको संतो भृशडुःखिता ॥ ६४ ॥ सासक्तत्वे ह गुणितादी
न चिन्ताजमायया ॥ स्वयं वावध्यत शिवावधान्यस्यं त्यस्मृति ॥ ६५ ॥ कपोतश्चात्मजान् वृत्तानात्मनोप्य
धिकान् प्रियान् ॥ भार्यां चात्मसमां दीनो विललापाति डुखित ॥ ६६ ॥ अहो मे यश्च तापाय मत्पुण्यस्य
उर्मतेः ॥ अतुष्टा कृतार्थस्य गृहस्यैवर्गिको हतः ॥ ६७ ॥

छोराछोरिकनदेवि ॥ आफुवरोवरकिभार्याकपोतीकनपनिदेवि ॥ दीनडुःखितभयाकोछंछंदो नानाप्रकाल
लेविलापगारिभन्नलाग्ना ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ अहोआश्चर्यथोरैपुण्यभयाकाउर्मतिभयाका ॥ एतोमेरो
नाशभयाकोदेष्टगृहस्थाभममातृपिभयाकोधियेन धर्मअर्थकाम इतिनैकराजौनृहस्थाश्रममाहुंछन्तो
करोमेरानष्टभयो ॥ ६७ ॥

॥ राम ॥
॥ ४८ ॥

मलाईयोगभयाकीएसीस्वाहीजोछ॥योभूयघरविषेमलाईछाडिकन॥वढीयापुत्रहेरुलेसहितभैस्वर्गमाजांछे॥६८॥
मजोछुयोभूयघरविषेदीनभयाको॥स्त्रीमयाकोवडोडुःखकष्टलेगरिकिनजिउनाकोइछागरूला॥६९॥जाल
मावेहियाकाभृत्यकायासकनप्राप्तभयाका॥जालदेविनिस्किजानाकोइछागरिचेष्टागदीछोराछोरीकनदेवि
आफुपेनिजालमावांछिमुंलाभनिषवर्तनपाँउदोछंयोजानमापर्दोभयो॥७०॥निठुरभन्याकोवाधापनिगोएह

अनुरूपानुकूलचयस्यमेपतीदेवता॥भूयएहेमांसंन्यज्यपुत्रैःस्वर्गानि साधुभिः॥६८॥
सोहंभूयएहेदीनोमृतदारोमृतप्रज॥जिजीविषेकिमर्थवाविधुरोडुःखजीवितः॥६९॥
तान्तथैवावतोन्शिभिर्मृत्युग्रंथान्विवेचत॥स्वयंचरुपणाःशिशुपस्यन्यवुधोऽपव
त्॥७०॥तलझालुचकक्रूरकपोतंएहमेधितम्॥कपोतकान्कपोतीचसिद्धार्थःप्रययौए
हम्॥७१॥एवकुडुंयशांतात्माद्वंद्वारामयतत्रिवत्॥प्रहं कुडुं वंरुपनःसाउवंधोवसीदति ॥७२॥

सिपरेवाह्रूवचाकपोतीतिसवैलाईलिकार्यसिद्धिगरिघरविषेजादोभयो॥७१॥एतेप्रकारलेगरिशा
स्त्रचित्तनभयाकोपरिवारकोपालनागर्नीनिमित्त॥अत्यन्तडुःखकनपाउंदोएहसिजोछ॥त्येएहसिप
रेवारुजिगरिपुत्रस्त्रीसहितभैनाशदशाकनप्राप्तहुन्छ॥तसर्थएहस्थिरुजोछपंछिकनपनिअ
मर्थछभन्याअरूकोक्याकरागर्नुपर्छ॥७२॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ४८ ॥

नस्त्रिमिन्नहेमहराज ॥ आत्मा लेहीन भया को सुक्ति को दार भया को ससो मनुष्य जो निपाई कन घर मा आसक्त जो हुंछ
नो प्राणि जो छ ॥ स्वर्ग मा जान्या सिद्धि देषि ओ सूर्वा को भनि जानु ॥ पंछि रुजि ना शिख भनि यो कथा कन ॥ यडु नामा रा
जा कन दत्ता त्रेय ले आजा गया ॥ सोहि कथा कल्ल ले उछव कन कथा ॥ सोहि शु क देव ले राजा परीक्षित कन कथा
सूत ले सोन क आदि जाषि हेरू कन कहंदा भया ॥ ७३ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे सकादश स्कंधे भाखायां अव
धूतोपाख्यान सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ताहा पछि फेरि कल्ल ले आजा गर्न लाग्या ॥ हे उछव अववा लरा जो छन यडु

यः प्राप्य मानुषं लोकं सुक्ति दार मया दत्तम् ॥ गृहे पुरव गवत्सक्त समाकूटच्युतं विदुः ॥ ७३ ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे सकादश स्कंधे अवधूतोपाख्यान सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ सुख मे
न्द्रिय कं राजन् स्वर्गे नरक एव च ॥ देहिनां यद्यथा दुःखं तस्यान्नेच्छेत्तदुधः ॥ १ ॥ या संसृष्टं विर
संमहांतं लोकमेव च ॥ यदृच्छयेवापति तं यसेदाजगरोक्रियः ॥ २ ॥

नामाराजा कन प्राक्तन कर्म को भोग जो छ अवश पन होई रह दैन भन्या ॥ कर्म भोग का निमित्त का उद्योग गर्ना ले ग
रि आयु जो छ ॥ व्यर्थ न घटाउनु भनि अजिगर देषी सिक्या को कुरो कहन लाग्या ॥ हे राजन् स्वर्ग यो निमापनि न
रक यो निमापनि ॥ प्राणि हेरू का जलै इछान गरिया को पनि दुःख आइ लाग्य ॥ तसै इन्द्रिय ले गरि दुन्या सुख प
नि आइ जाछ ॥ तस अर्थ सुख हव स भन्या निमित्त जान्या ले यत्न गर्ना को इछान गर्नु ॥ १ ॥ यो कुरो मिथो यो कुरो न
मिथो ठे रै थोरै उसे आइ कन मित्या को या सपाई अजिगर रुजि रहनु ॥ २ ॥

॥ राम ॥
॥ ४८ ॥

पानानिमित्तपताउतिजात्याकामनगर्तु॥षाउषाइपुगेनभन्याकसोगर्तुभनौलात॥उद्यमनगरिकननिराहारभैठेरैदि
नसम्मसुतिरहउ॥दैवपुयाउलाभनिअजिगरहनिभैचुपलागिरहउ॥षानमिलेनभनिचटपटनगर्तु॥समर्थभ
याकालेपनिसुरहउकि॥कसोगर्तुभन्यासुन॥हेयजनइन्द्रियकोवलभयो॥मनकोवलभयो॥शरीरकोवलभयो
ईसवैवललेयुक्तभयाकोदेहभयापनि॥कर्मनगरिसुतिरहउ॥निद्रालेहीनहुनु॥परमेश्वरकाचरणमाटछिदि
नु॥इन्द्रियहेरुलेयुक्तभयाकालेपनिचेष्टानगर्तु॥३॥४॥अवसमुद्रदेधिसिकाकोभंछुसुन॥प्रसन्नगंभी

शयीताहानिभूरीणिनिराहारोनुपक्रमः॥यदिनोपनमेहासोमहाहिरिवदिष्टभुक्॥३॥ओ
जःसहोवलयुतंविभ्रद्देहनकर्मकम्॥शयानोवीतनिडुश्चनेहनेन्द्रियवानपि॥४॥मुनिः
प्रसन्नगंभीरोडुविंगाद्योउरत्ययः॥अनन्तपारोखक्षोभ्यतिमिदोदश्वार्णवः॥५॥समुद्र
कामोहीनोवानारायणपरोमुनि॥नोत्सर्पेतनभुष्येतसरिन्दिरिवसागरः॥६॥

रहुंउडुःखलेपनिभिन्नकोवातथाहानुपाईसकनुडुःखलेपनिनाघिनसकनु॥काललेदेशलैपनिपारगारिन
शकनु॥हत्वाइनसकनु॥निश्चलभयाकोसमुद्ररुजिभै॥मुनिलेरहउ॥नारायणमाचिनलगाइयासुनिजोछ
कामनापढाकोभयापनि॥कामनालेहीनभयामापनि॥जसैवर्षावढाकानदीलेवढाकोसमुद्रजोछ॥मर्ज्या
राछोउदैन॥ग्रीष्मकालमासुकिपनिजादैन॥तसैवढामाहर्षनगर्तु॥घद्यामासोकनगर्तुमुनिले॥६॥

॥ भा ॥
॥ ५० ॥

रूप रस गंध स्पर्श शब्द इविषयले गरिमौ हित भयाका पतंग मधुकर गज हरिण मीन ई पांच जो छन मृत्युकन प्राप्ति भ
यात स्कारा रूप रसादिविषय विषे आसक्ति न गर्नु ॥ गयाना शिंछ भंन्या कुरा माइ नै पतंग आदि गयाका पांच गुरु छन
भनिक हंछन ॥ पहिले रूप विलास ले मोहित भयाको प्राणि छ ॥ पतंग मृजिना शिंछ भनिक हंछन ॥ हे राजा देवता
की माया रूप भयाकि स्त्री कन देषि कन स्त्री कानाना चेष्टा ले लोभि भयाको इन्द्रिय जित न न सकन्या पुरुष जो छ ॥ भ
धकार विषे आगमा पतंग नाशि दाम्जि गरिना शिंछ ॥ ७ ॥ स्त्री हेरू को शरीर घटिया छ तपनि सुवर्ण का गह

दृष्टा स्त्रियं देव मायांत ज्ञा वैर जितेन्द्रियः ॥ प्रलोभितः पतसंधेत मस्य मौ पतंगवत् ॥ ७ ॥ योषि
द्वरणारणा म्वरादिद्रव्येषु मायारचितेषु मुढः ॥ प्रलोभितात्मा सुपभोगवुद्ध्या पतंगवन्न श्यति ॥
नष्टदृष्टिः ॥ ८ ॥ लोको लोको यसे यासं देहो वने तयावता ॥ गृहारा हिंसनातिष्ठे दृष्टिं माधु करीबुध ॥

नावस्व बुकुता कोर गइत्यादि गयाका माया ले रचित भयाका ॥ वसु कोरा मो देषना ले मोहित भयाको मूढ पुरुष जो
छ ॥ स्त्री मालुव भयाको छ दो आगा को जोतिको रूप कन देषि ॥ आगमा पर्ण जान्या पतंग नाशि दाम्जि ॥ भोग
गरुं भन्या बुद्धिले स्त्री कान जी कमा जान्या प्राणि नाशिंछ ॥ ८ ॥ जतिले गरि देह निर्वाह हुंछ तत्रि वसु जो छ ॥
गृहस्थिक न पीडन गरि षाई रहनु ॥ जसै भसै भवरा जो छ वढीया दां धर सकालो भले ॥ एकै फल मावस्या
कोरा त्रिविषे वाधिंछ ॥ तसै सुनि हेरू पर्नि मिठा वसु कालो भले ॥ एकै घर मावस्या भन्या मोहले वाधिंछ ॥ तस
अर्थ एकै ठाउं मा सुनिले न वसु ॥ ९ ॥

॥ राम ॥
॥ ५० ॥

जसै भवरा लेसाना दुला फल देषि रसमात्र लिंछ ॥ तसै साना दुला शास्त्र देषि मुनिले सार वस्तु कनफि किलिउ ॥ १० ॥ भीष्मा
माग्या को कुरो जो छ ॥ भो लिवा ला सांज वा ला भनिन सांचु ॥ भिक्षा थापन्या पात्र हात को राखन्या पात्र पेद को गरि
रहनु थुप्राइन राषनु थुप्राई राष्या भन्या ॥ मह थुप्राउ न्या मौहि रुजि थुप्राया का वस्तु समेत माशिंछ ॥ ११ ॥ १२
योगीले हात लेत कौन कुरा छ ॥ पाउ लेप निमनुष्य स्त्री कनत कौन कुरा छ ॥ काटकी मूर्ति वन्या की स्त्री कनपनि
न छुनु ॥ द्योयो भन्या हन्या निको ॥ अंग स्पर्श हुदा हाति वां धिया रुजि वां धिंछ ॥ १३ ॥ तस अर्थ जान्या ले साक्षात आ

अनुभ्यश्च महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्यः कुरालो नरः ॥ सर्वतः सारमादद्यात्पुण्येभ्यश्च वषट् वद ॥ १० ॥ सायंतनश्च संजं वानसं
गृहीतमिक्षितम् ॥ पाणिपादोदरमात्रो मक्षिके वनसं गृही ॥ ११ ॥ सायंतनेश्च जनवानसं गृहीतमिक्षुक
मक्षिकाश्च सं गृह्णन्सहते व विनश्यति ॥ १२ ॥ पदाति युवंती भिक्षुर्न स्पृशेद्दारवीमपि ॥ स्पृशन्करीव वध्यत क
रिणा अंगसंगतः ॥ १३ ॥ नाधि गच्छेत्स्त्रियं प्राज्ञ कहिचिन्मृत्युमात्मनः ॥ वलाधिकैः सह न्येत गजैरन्यैर्गजो यथा
॥ १४ ॥ न देयं नोपभोगं चलुषैर्यत्तचित्तधनं ॥ भुंक्ते न दपित चान्यो मधु हे वार्थ विन्मधुः ॥ १५ ॥

ऊमृत्यु स्वरूप भया की स्त्री कान जी कमान जाउ ॥ गयो भन्या आऊ भन्या वलिया ले मार्द छन ॥ १४ ॥ दान भोग न ग
रि थुप्राया का धन जो छ ॥ अर्क छे उजा छ भन्या कुरा मा मह कनफि कन्या प्राणि गुरु छ ॥ लोभि हेरु ले उखले सं
चिता गरि थुप्राया का धन जो छ ॥ दान भोग के हि हुदै न त्यो धन जो छ ॥ अर्क ले वां छ ॥ जसै मोहिले चार दिशा दे
खिल्या इ थुप्राइ संग्रह गन्या का मह कन ॥ अर्क ले वां छ ॥ मोहिले पाउ दैन तसै ॥ १५ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ५९ ॥

हे महाराज. यह स्निहेरु लेवडाउ. खलेक मायाका धन कन. केहिले उद्यमन गरिपनि. पान कन संन्यासिले पांउदछ. जसै
महावडन्या करामा. उद्यमन गरिपनि महकाटन्या प्राणि जोछ. महकन वाछन सै ॥ १६ ॥ अवहरिण देषि सिका
को भंछु. सुन. गांउ का पुरुष हेरुका. गांउ त्यागी दकन न सुनु. वनमार हन्या योगीले. सुमो भन्या. वनमाया धालेगा
याको सुनि. गान शब्द मा भुल्या को मृग मंजि वां धिंछ ॥ १७ ॥ गांउ का स्त्री हेरुका. नाचनु. गांउनु वजाउनु. न सुनु. सु

सुउ. खोपार्जिते विनैराशासानां यह शिषः ॥ मधु हेवाग्र तो भुंक्ते यतिर्वै यह मेधिनाम् ॥ १८ ॥ ग्राम्य
गीतं न भुङ्गा यायति र्वनवरः क्वचित् ॥ शिक्षेत्तं हरिणा वंधान् मृगयोगी तमोहितान् ॥ १९ ॥ नृत्यवादित्रगी
तानि जुषन् ग्राम्याणि योषितान् ॥ आसां कीडनको वश्य मध्य भृंगो मृगी सुत ॥ २० ॥ जिह्यातिप्रमा
थिन्या जनो रसविमोहितः ॥ मृत्युमृच्छत्यसं दुर्द्धिमी न सुवडि शैर्यथा ॥ २१ ॥ इन्द्रियाणि जयंत्याभु
निराहार मणीषिणः ॥ वर्जयित्वा तु रसनंतं न रन्नस्य वर्द्धने ॥ २२ ॥ तावज्जितेन्द्रियो न श्पाद्विजिता
तान्येन्द्रियः पुमान् ॥ न जयेन्मसनं यावज्जितं सर्वं जिते रसे ॥ २३ ॥

वश्य परिनाशिंछ ॥ १८ ॥ जिभ्रो जित नन सकन्या प्राणि जोछ ॥ रसमा मोहित भयाको छ दो ॥ वल सिनिलन्या मा
छा मंजिनाशिंछ ॥ १९ ॥ निराहार गन्या प्राणिका इन्द्रिय सवै वश्य मार हंछन ॥ जिभ्रो मात्र रुन वढ दछ ॥ त
स अर्थ जिभ्रो पनि शान्तर हन्या अरु इन्द्रिय पनि न वढन्या उलोउ पाय गरि. थोरै थोरै घातु ॥ २० ॥ अरु इन्द्रिय
जित्याको छ नत पनि जिभ्रो जित्याको छैन भन्या ॥ इन्द्रिय जित्या ठ हर्देन जिभ्रो जितो भन्या ॥ सवै इन्द्रिय कन जितो भनि

॥ राम ॥
॥ ५९ ॥
॥ २९ ॥

हेयडनामाराजा.पिंगलानामावेशादेपिसिकाकोकुरोभंदुसुन। पहिलेजनकपूरविषेवस्थाकि.पिंगलानामावेशाधियै.
त्येहिवेशाजोछ॥ एककोहिसमयविषे.पुरुषहेरुसित.शयलगर्भारतिस्थामविषे॥ १२ ॥ कांतभन्याकाकोहिपुरु
षकने.तिमिआयाभन्याकोथियो॥ भृंगारगरिअतिमुन्दररूपकनवनाइर केहेआउलापुरुषभनिहारविषेवसि
रहदिभै॥ २१ ॥ २३ ॥ हेयडनामाराजा.मागविषेपुरुषहेरुकनआउंदादेपिकेन॥ ठेरैधनकोकामनाभयाकिछंदि
दि.आफलाइधनदिनसक्याठेरैधनभयाकापुरुषहेरुकनवढीयामान्दधिईन॥ २४ ॥ रतिस्थानमाभायाकापुरु

पिंगलानामवेशासिद्धिदेहंनगरेपुरा॥ तस्यामेशिक्षितंकिंचिन्निबोधनपनन्दन॥ २२ ॥ सास्त्रेरिरोपक
दाकांतसंकेतउपनेष्यति॥ अभूत्कालेवहिर्घारिविभ्रतीरूपमुत्तमम्॥ २३ ॥ मार्गभागछतोवीक्ष्यपुरु
षासुरुवषर्षभ॥ नाशुल्कदानिन्नवंतकात्रान्नेमर्थकामुका॥ २४ ॥ आगतेष्वपयातेषुसासंकेतोपजी
वनि॥ अप्यनोवित्रवान्कोपिमासुयैष्यतिभूरिद॥ २५ ॥ एवंडराजयाध्वजनिद्राद्यर्पवलंविनी निगं
छत्रीप्रविशंतीनिशीथंसमपद्यतः॥ २६ ॥ तस्यावित्राशयाभुष्यदक्रायादीनचेतसः निर्वेदःपरमोजने
॥ चिन्ताहेतुसुखावह ॥

षवाटजिवन्वृत्तिगर्दी॥ त्योवेशाजोछआउदैपुरुषहेरुगर्दथा॥ अर्कोपनिको
हि.धनिपुरुषआउलाकि.ठेरैधनदिन्याभनिइछागर्दथि॥ २५ ॥ एलैडुरासालेगरिनिद्रामारिहारमावस्थाकिभि
त्रवाहिहुगर्दीगर्दी.अर्द्धरात्रिकनप्राप्तहुदोभयो॥ २६ ॥ धनकाआशालेसुखसुक्याकोभयाकी॥ दीनचिन्तभयाकी
एलैत्योवेशाकाचिन्तालेगरि॥ अकस्मात्सुखकनदिन्यावडोवैराग्यजोछहुदोभै॥ २७ ॥ ॥ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ५२ ॥

वैराग्यचित्रभयाकीतोवेषालेभयाकोकरोसुन॥ हेयडुनामाराजाआसारूपीडोरीकनकाटिदिन्ना॥ जसोवैराग्यरूपीतरवारहेछतसोअरुकरोकेहिरहेनछ॥ वैराग्यनभैदेहबंधनकनकाटनसजोरहेनछ॥ २८ ॥ एसोवैराग्यभयाकीतोपिंलाजोछवोलनलागी॥ अहोआश्चर्यमनकनजितनेनशक्या॥ मेरोमोहकोविस्तारदेख॥ विवेकलेभयाकीमैलेअसत्तुछभयाकापुरुषदेखि॥ कामनाकनजस्काररागया॥ २९ ॥ वडीअज्ञानीमैलेनजीकमारहाका॥ रतिप्रीतिक

तथानिर्विस्मिचित्रायागीतशृणुयथामम॥ निर्वेदआशापाशानांपुरुषस्ययथाह्यसि॥ नहं गाजातनिर्वेदोदेहभंगंजिहासति॥ २८ ॥ पिंगलोवाच॥ अहोमेमोहविततिंपश्यताविजितात्मनः॥ याकांतादशतः कामकायेयेयेनवालिशा॥ २९ ॥ सतंससीपेरमनंरतिप्रदंविचप्रदंनित्यमिमंविहाय॥ अकामदंडुखभयाधिशोकमोहप्रदंतुछमहंभजेता॥ ३० ॥ अहोमयात्मापरितापितोवृथा॥ सोकेत्यवृत्त्यातिविगर्हवार्त्तया॥ स्वैरांतरागार्थतृषोनुशोच्या॥ कीतेतविन्नंरतिमात्मनेछती॥ ३१ ॥

नदिन्नाएसाईश्वरकनछोडिन॥ कामनापूर्णनगर्नाडुखभयोचिंताभयोशोकभयोमोहभयो॥ इत्यादिकुराकनदिन्नाघटियातुछभयाकापतिकनभजनगरि॥ आजस्मरहाकीरहाछ॥ ३० ॥ अहोआश्चर्यनिन्दागरियाकाजीवनरुत्रिलेगरि॥ रतिस्थानमापुरुषहेरुलाईल्योई॥ स्त्रीमालंपटभयाकालोभिभयाका॥ शोकगर्नाकनयोग्यभयाकापुरुषदेखि॥ जिउहालि॥ धनकाररतिसुखकोइछागर्ना॥ मैलेवर्थेआत्माकनसंतापगराजा॥ ३१ ॥

॥ राम ॥
॥ ५२ ॥

हाडलेवनाको. हाडको हाडो हाडमा. करंका हाडं जोरियाको. हात पाउ का हाड जोरियाको. छाताले रोमले. नखले ठाकिया
को. बारवार चहुडो. नौद्वारले युक्त भयाको. विष्टा मूत्रले परिपूर्ण भयाको. एला देह रूपी देह कन. मदे पिअ की कौन
स्त्री भगन गलिको हि गरैन. ३२. योजन कपूर विषे. वडो मूर्ख बुद्धि भयाकी. मसकै पिंगलार हांछु. कष्टि में भया भ
गवान् छोडि. पुरुष संग का भोग को इच्छा गर्दि. ३३. अवड प्रान्त. मित्र भयाको. पियारो भयाको. नाथ भयाको आ.

यदस्थिभिर्निमित्तिवंशवंश्य. स्मृतां त्वचारो मनखैः यिनद्धम्. ॥ क्षरं नवद्वारमगारमेतद्विष्टमूत्रपूर्णं
मउपैतिकान्या. ३२. विदेहानां पुरेह्यस्मिन्नहमेकेवमूठधी. ॥ यान्यमिच्छत्यसंत्यस्मादात्मदोक्तो ममसु
तात्. ३३. सुहृत्पश्यतमो नाथ आत्मा चायं शरीरिणाम्. ॥ तं विक्रीयात्मनैवाहं रेमेतेन यथारमा. ३४. ॥
कियत्प्रियं ते व्यंभजं कामाये कामदानराः. ॥ आशंतवंतो भार्याया देवा वा कालविदुताः. ३५. ॥ नूनं मे भग
वान्प्रीतो विष्णुः केचापि कर्मणा. ॥ निर्वेदो यंडराशाययन्मे जातः सुखावहः. ३६. ॥

त्मा हरि जोछ. सवै शरीर को आधार छ. ॥ तसर्थ लक्ष्मी ले विष्णु संग रुजि. एला आत्मा ले. ॥ आत्मा हरि लाइ किनिकन
आनन्द संग र मन गरुला. ३४. ॥ आदि अन्न ले युक्त भयाका. काल का चपेटा मा पयाका. कामना कन दिन्या मनुष्य भ
या. ॥ देवता भया भार्या हेरु भया. ॥ कति सुख कन दिन न. कौनै सुख कन देवैन न. ३५. ॥ हुन कन भया. मंघटिया हुन
नर गवा विष्णु जोछ न. ॥ कौन पुण्य कर्म गया को रहे छ. र प्रसन्न भै दुष्ट आसा भया कि मेराउ पर. सुख कन दिन्या वैराज
जोछ उत्पन्न गरि दिया. ३६. ॥ भाग्य ले हीन भया की पनि रहिन छु किन भया. ॥

॥ भा. ए. ॥
॥ ५३ ॥

जौ न वैराग्य ले घर स्त्री पुत्र हेरु छोडि पुरुष जो छु ॥ कल्प राकन पाउं दछु उलो वैराग्य दुन्या दुःख मलाई दुदो हो ॥ एलो वैराग्य भयो त भाग्य मानि मर ह्यो छु ॥ अव विष्णु ले उपकार गरिया का वैराग्य कन लि ॥ गाउं का विषय कन छोडि में शरणा भागवान् का जांछु ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ कसो गरिजां छे सभ न्या वैराग्य मा श्रद्धा गर्दि संतुष्ट भया कि ॥ जति मिल्यो उनि मा संतोष गरि जीव नगरि ॥ अंतर्यामि भगवान् रूपी पती संग विहाय कन गर्दछु ॥ ३९ ॥ संसार रूपी कृता विषे पया को वि

भैवं सुर्मंद भाग्यां क्लेश निर्वेद हेतवं ॥ येनाउ वंधं निर्हत्य पुरुषः सममृच्छति ॥ ३७ ॥ तेनोपकृत मादाय शिरसायास्य संगताः ॥ त्यक्त्वा उराशाशरणां व्रजामितमधीश्वरम् ॥ ३८ ॥ संतुष्टा श्रद्धा ये तथैवालाभेन जीवति ॥ विहराम्यमुनैवाहमात्मनारमणो न वै ॥ ३९ ॥ संसार रूपे पतितं विषये सुषितक्षराम् ॥ यसं कालाहिनात्मानं को न्यस्त्रातु मधीश्वरः ॥ ४० ॥ आत्मैव ह्यात्मनो गोप्ता निर्विद्य तपदांतात् ॥ अग्रमत्त इदं पश्येत्तयसं कालाहिना जगत् ॥ ४१ ॥ वात्सरा उवाच ॥ एवं व्यवसितमति उराशांकां ततर्षजाम् ॥ छित्वां यशममास्थाय शय्या सुप विवेस सा ॥ ४२ ॥

भयाको ॥ काल रूपी सर्प ले ग्रासरिया का ॥ आत्मा कन भगवान् देवि दोस्त्रो कौ नरक्षा गर्ना कन समर्थ छु ॥ एस्कारा भागवान् का शरणा मा जाछु ॥ ४० ॥ सवै संसारि विषय देवि वैराग्य गोभ न्या ॥ आकुरक्षा गर्ना आकै छु ॥ काल रूपी सवले ग्रासरिया का ॥ जगत् संसार कन देषु भं न्या ॥ एस्ता प्रकार को निश्चय बुद्धि भया की ॥ पिंगलाना मावेशा जो छु ॥ काज कानि मित्र को उष्ट आशा कन छोडी ॥ वडा शोति कन प्राप्त भया की विछाउना मा आइव स्ति भई न ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

॥ राम ॥
॥ ५३ ॥

आशाभन्याको वडाडुःख रहेछ ॥ आशानगर्नु वडो सुख रहेछ भनि कांतको आशा छेडि ॥ सुखसंग पिंगला जो छ वडा आनंद पूर्वक सुत्ति भै ॥ ४३ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे सकादशस्कंधे भारवाया अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ वासुदेवा उवाच ॥ हे उद्धव मनुष्य हे रुका जति जति पियारा कुरा छन ॥ तनको संग्रह गर्नु जो छ वडाडुःख दिन्यार रहेछ भनि स्तो जानि सव वस्तु कात्याग गरिरह्य प्राणी जो छ ॥ नो अति सुख कन पाउंदोरं हे छ भन्या यो कुरो ॥ न्याहुला देषि सिका को हो

आशाहि परमंडुःखं नैराशं परमं सुखम् ॥ यथासंछिद्यकांतासां सुखे सुखापि पिंगला ॥ ४३ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे सकादशस्कंधे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ श्री वासुदेवा उवाच ॥ परिग्रहोति दुःखाय यद्यपि यतमं नृणाम् ॥ अनन्तसुखमाप्नोति तद्विद्वान्पुण्यस्त्वकिञ्चनः ॥ १ ॥ सामिषं कुररं जघुर्वलि नो मे निरामिषाः ॥ तदा मिषं परित्यज्य स सुखं समविन्दतः ॥ २ ॥ न मे या नापमानौ स्तो न चिंता गेह पुत्रिणाम् ॥ आत्मकीड आत्मरतिर्विचरामीह बालवन् ॥ ३ ॥

भन्नु हे यडुना मारा जा सुन ॥ मा सुले सहित भयाको कोहि न्याहुला कन ॥ भरुरिन्नावलिया न्याहुला जो थिया ॥ मा सुकानि मिक्त दुःख दिन लाग्या ॥ नो मा सुछेडो न्याहुलालेर सुखन प्राप्नुदो भयो ॥ तस अर्थ संग्रह न गर्नु मलाई मान अपमान केहि छैन ॥ घरहुन्या हे रुका जो चिंता छ नो चिन्ता पनि मेरा छैन ॥ आफ्नै कीडा माछु आफ्नै मा आनन्द छु बाल करु जिपर्दछु ॥ वडा आनन्द मारहा काचित्त मुक्त भयाका मूर्ख र गुराको पारंगत भयाको पेटि तडुई जना छन ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ भा. ए. ॥
॥ ५४ ॥

४ ॥ कुमारी देवि सिकाको मंछु सुन ॥ कोहि दरी दकी छोरी कुमारी जो थिई ॥ आफलाइ माइ ना कनक न्याथी पुरुष हेरु आ
या विषे वाम हनारि हेरु कनै डलन गया विषे ॥ भोजन दिनानि मित्र सकान विषे ॥ कुमारी जो छु शाली धान कनकुट
न थिई ॥ धान कुट्ता विषे ॥ हात माला या काश खका वुरा जो छन ॥ वज्र ना कन लागा ॥ आफै धान कुट्ति दरिद्रि कि
छोरि रहि छ भन्नन् भन्नाल ज्जाले गरि ॥ सबै फोरि डुइ डुइ मात्र चुरा हात मारा निभयी ॥ फेरि कुट्ने लागी र डुइ वो

छावे वचिन्न या मुक्तौ परमानन्द आमुनौ ॥ यो विमुग्धो जडो बालो योगो भ्यः परंगत ॥ ४ ॥ कचित्कु
मारी त्वात्मानं चरणान् नृहमागतान् ॥ स्वयं तानर्हया मासकापियाते पुवंधुषु ॥ ५ ॥ तेषामध्यव
हार्थं शालीनहसि पार्थिव ॥ अवघ्नन्त्याः प्रकोष्ठस्थाः श्वक्रः शंखाः स्वनं महत् ॥ ६ ॥ सातन्त्रगुप्तिनं म
त्वा महेती प्रीडिता ततः ॥ वमं मैकै शकशं खान्दो दौ पाण्णारसेषयत् ॥ ७ ॥ उभयोरप्यभूत् घोषो
द्यवघ्न्याः स्मशेखयोः ॥ तत्राप्येकं निरभिदं देकस्मान्नाभवधनिः ॥ ८ ॥ अन्वशिक्षमिमं तस्या उप
देशमरिन्दमलोकानुचरन्नेतान् लोकतत्त्वविवित्सया ॥ ९ ॥ वासो वह्नुनां कलहो भवेदार्जुन्यो
रपि ॥ एकस्वचरेन स्मात्कुमार्या इव कंकरा ॥ १० ॥ छ ॥

इहातका ॥ चुराको पनि शब्द हुदो भयो ति डुई मा पनि ॥ एकै राधिर शब्द हुदो भयन ॥ त्यो कुमारी देवि न् एकलै रह
दो रूगार रहे न भनि ॥ सिकाको हो ॥ मैले लोक को तत्व जाना काइ छाले ॥ पृथिवी मा घुम्दा विषे ॥ एकदरिद्रि कि छोरी कु
मारी संग भेट भयाको हो ॥ ९ ॥ ठेरै संग वास हुदा मा कलह हुदो रहेछ ॥ डुइ जना छुदा मा पनि ॥ वात हुदो रहेछ ॥ तस्त्र
र्थ त्यो कुमारी का कंकरा रुजि मजा छ ॥ एकलै फिर्दछु ॥ १० ॥

॥ राम ॥
॥ ५४ ॥

प्राणजिति. आसनजिति. अलसीनभै. वैराग्यका अभ्यासगरि. धारिया कामन कनरुकायगरि समाधिताउनु ॥ ११ ॥ ये मन जो छ-
परम आनन्दरूप भगवान् विषे लागा को छें दो कर्मवासना कन छाड दछ ॥ सत्त्वगुणावढाई रजोगुणानमो गुणाय घालि गु-
णरु गुणकार्य ले हीन भयाको. ध्यानगर्जलाई योगवत्साकार रूपे हुंछे ॥ तस समयमा आत्मा मा अत्यंत चित्तलगाई वाहि-
र भित्र केहि जानै न जसै वा रावनाउ न्या प्राणि जो छ ॥ वाणमा चित्तलगाया को हुनाले. नगरावजाई. आफ्नान जीकमा आउ-
दा. राजा कन पनि देषतैन ॥ तसै आफ्ना चित्रमा दिंदि न्या अरु कुरा जानै न ॥ अवसर्प देषि सिक्या को कुरा भंछु सुन ॥ जसै

मन एकत्र संयोज्या जित श्वासो जितासनः ॥ वैराग्याभ्यासयोगेन ध्रियमानगतं दित ॥ ११ ॥ यस्मिन्मनो लब्धपदं
यदेतच्छनैः शनैः मुंचति कर्मरेणान् ॥ सत्वेन तृद्धेन रजस्तमश्च विधूय निर्वीणमुपैत्य निश्चनं ॥ १२ ॥ तदैवमा-
त्मन्यवरुद्धचित्रो न वेद किंचिद्वहिरंतरं वा ॥ पथेषु कारो नृपतिर्वृजंत मिषौ गतात्मान ददर्श पाश्वे ॥ १३ ॥
एकचार्यनिकेतः स्यादप्रमत्तो गुहाशयः ॥ अलक्ष्यमासा आचारैर्मुनिरेकोत्पभाषणः ॥ १४ ॥ गृहारंभोति
इ. खाय विफलश्चाक्रवात्मनः ॥ सप्यं परकृतं वेश्यप्रविश्य सुखमेधते ॥ १५ ॥ एको नारायणो देवपूर्व-
सृष्टस्वमायया ॥ सहस्रकालकलया कल्पान्न इदमीश्वरः ॥ १६ ॥

सर्प जो छ. अरनवनाई. एकलै सावधान भै गुफामा वसछ ॥ तसै थोरै बोलन्या भै मुनिले एकलै रहउ ॥ घरवनाउनु व-
डोडो. खछ अनित्य शरीर पाई कन फल पनि. घरवनाउना को केहि छैन भनि ॥ पराई लेवना या का घरमा पसि सुख
संगर्स वसछ ॥ एकै नारायण देव जो छ ॥ आफ्नै मायाले. पहिले सृष्टि गणा का जगत्संसार कन ॥ प्रलयकाल का अत्यं-
त विषे. आफ्ना आधार आफ्नै भयाको ॥ सम्पूर्ण जगत्संसार को भन्या ॥ आधार भयाको ईश्वर जो छ ॥ एकै रह दो भयो ॥ १२

॥ भा. ८ ॥
॥ ५५ ॥

॥ १७ ॥ प्रधानपुरुषकोईश्वरभयाका वस्त्रादेवताकोर ॥ अरु मुक्तभयाको जीवले पाउना कनयोगस्वरूपभयाको मोक्ष
नाउभयाको छंदोरहंछ ॥ १८ ॥ उपाधिलेहीनभयाको सत्त्व रज तम इतिनगुणले युक्तभयाकी
मायाकनक्षोभगराईकन ॥ तेसैमायाले गरिकालकनसहायलि ॥ पहिले क्रियाप्रधानभयाका महत्तत्त्वकनसृष्टि
गर्छ ॥ कस्तोसो महत्तत्त्वभया सत्त्व रज तम ईतीनगुणको कार्यभयाको ॥ नानाप्रकारका जगत्कन अहंकारकन
द्वारगरिसृष्टिगर्णभयाको ॥ सूत्ररूपभयाको कारणरूपभयाको ॥ जौन सूत्रामा महत्तत्त्वविषे ॥ यो विश्वसंसारजो
छ उनी कन रक्षाकोछ ॥ प्राणरूपनित्यछ जसले गरिजीवजोछ संसारिहुंछ ॥ २० ॥ सत्त्वै प्रकारले गुरुहेरुदेवि

एकस्वादितीयो भूदात्माधारोखिलेश्वर ॥ कालेनात्मानुभावेन सांम्यनीती सुशक्तिषु ॥ १७ ॥ सत्त्वादिधातु
पुरुषः प्रधानपुरुषेश्वरः ॥ परावराणां परम आत्मैकैवत्पसंज्ञितः ॥ १८ ॥ केवलात्मानुभवानन्दसदोहोनि
रूपाधिकः ॥ केवलात्मानुभावेन स्वमायां त्रिगुणात्मिकाम् ॥ १९ ॥ संक्षोभयत्तजन्त्यादौ तथा सूत्रमरिन्द
म ॥ नामाहुस्त्रिगुणाव्यक्तिं सृजंती विश्वतो मुखम् ॥ २० ॥

॥ सिक्याकोऊराकनभन्या ॥ अवधूतवा
सराजोछन ॥ यडनामाराजाकन भगवान्जोछ ॥ सृष्टिसंहारकम सत्तातरहसितगर्छ भनि दृष्टान्तगरिकनकेहछ
न ॥ हे महाराज यडनामाराजा जसैमाकुरोजोछ ॥ आक्रापेटदेविन् सुखद्वारवाट सूतनिकासि ॥ सूतकोजाल
विस्तारगरिवनाईजालमा कोहिकालसम्म विहारगरि फेरिउसैजालकनयासगरि निल्दछ ॥ तसैभगवान्
पनि सृष्टिगरि नानातरहको विहारशायलगर्छन रूपछिसंहारगर्छन भनि आज्ञागयार भगवान्को ध्यानगर्ण

॥ राम ॥
॥ ५५ ॥

पुरुष हेरुका भगवान् को सरूप मिल छ भन्ना कुरामा आश्चर्य के हि छैन भनि कुमाल को टि दे धियो कुरो जान्ना को छ भनि
कहंछन् ॥ २१ ॥ स्नेह ले भयो द्रव ले भयो भय ले भयो एस्मन ले गरि दे हि जो छ ॥ जौ न जौ न स्वरूप कन ध्यान क
न गछ ॥ स्वहि स्वरूप कन पाउं दछ ज सै कुमाल को टिले भिन्ना माले जाई रा धिया को मा कुरो जो छ ॥ रीस ले कुमाल को
टि को ध्यान गर्दा ॥ आक्रु पहिले को देह कन छोडि कन ॥ कुमाल को टि को स्वरूप लिंछ ॥ त सै भगवान् को स्वरूप को ध्यान

यस्मिन्मो तमिदं विश्वयेन संसरते पुमान् ॥ यथो र्गानाभि हृदया इरा सतत्पवक्तव्यं तया विहृत्य भू
यस्ती ग्रसत्येवं महेश्वर ॥ २१ ॥ यत्र यत्र मनो देहि धारयेत्स कलंधिया ॥ स्नेहा द्वेषाद्गया द्वापिया तितत्र
स्वरूपताम् ॥ २२ ॥ कीटः पेशस्कतं ध्यायत्कुशांतेन प्रवेशितः ॥ याति तस्मात्पतां राजन् पूर्व रूपमसं
त्तजन् ॥ २३ ॥ एवं गुरुभ्यस्तेभ्यस्त्वामे शिक्षिता मतिः ॥ स्वात्मोपशिक्षितां बुद्धिं शरणमेव दत्तः प्र
भो ॥ २४ ॥ देहो गुरुर्मम विरक्तिविवेकहेतुः ॥ विभ्रत्स्य सत्त्वनिधनं सततात्पुदकम् ॥ तच्चान्यनेन विमृ
शामि यथा तथा पि पारक्यमित्यवसितो विचराम्यसंगः ॥ २५ ॥

गर्मा जो छ ॥ भगवत् स्वरूप कन पाउं दछ ॥ २२ ॥ २३ ॥ हे भगवन् एति गुरु हेरु दे धि सिका को ए सो यो मेरो बुद्धि हो
अवउ प्रान्त आक्रा देह दे धि सिका को बुद्धि भंछु सुन ॥ वारं वार उः खै फल भया को ॥ जन्म नु मनु हुं न्या भया को वै
राग प्र विवेक को कारण भया को ॥ ए सो यो मेरो ह जो छ गुरु छ ॥ ए सै देह ले गरि तत्त्व कन विचार गछु ॥ परं तु
ह दे जो छ आक्रु होई न अकै को हो भनि निश्चय बुद्धि भया को म जो छु ॥ कसै को संग न गरि फि दछु ॥ २४ ॥ २५ ॥

॥ भा.स. ॥
॥ ५८ ॥

स्त्री छोरा धन पशु चाकर घर इष्ट मित्र आपस जन हेरु कन ॥ जो छन देह लार् भोग हव सभ नानि मित्र पुरुष जो छ
विस्तार गरि पालनु पो सनु पो सनु र्द गच्छ ॥ वडाउः खले धन पनि थुप्याउ छ ॥ सोहि देह जो छ आयु का अंत्य विषे ज
सै वृक्ष जो छ वीज उत्पन्न गच्छ ॥ आफु वृक्ष नाशिंछ ॥ तसै अर्को देह वताउ न्या कर्म रूपी वीज कन उत्पन्न गच्छ ॥ आफु
नाशिंछ ॥ २८ ॥ ससु देह कन अथवा देह मा अभिमान गर्ना पुरुष कन रस निरजि ह्याष जिचिलै जांछ ॥ निर्वाजल
निरलै जांछ ॥ लिंग जो छ स्त्री हेरुतिरलै ज्यान्छ ॥ त्यक इन्द्रिय जो छ स्पर्शतिरलै जांछ ॥ पेट रुकातिरलै ज्यान्छ ॥

जायात्म जायार्थ पशु भृत्य गृहास्त्र वर्गान्मुल्योति यस्मि यचिकीर्षयया वितन्वम् ॥ स्वांते सकृच्छुमवरुद्ध
धनः सदेहः सृष्ट्वा स्पृष्ट्वा वीजमवसीदति वृक्षधर्म ॥ २८ ॥ जिह्वैकतो मुमय कर्षति कर्हितर्षा शिश्रो
न्यतस्त्वगुदरं श्रवणं कुतश्चित् ॥ घ्राणो न्यतश्च पलटक कर्षे कर्मशक्तिर्वह्यः सपत्न्य इव गेहयति
लुठंति ॥ २९ ॥ सृष्ट्वा पुनरिति विविधान्यजयात्मशक्त्या वक्षान्मरी सृष्ट्वा पशून्वगदंशमस्यान् ॥ तै
स्तेरतुष्ट हृदयः पुरुषं विधाय ब्रह्मावलोकधिषणं सुदमापदेव ॥ ३० ॥

श्रवणोन्द्रियस्कातीरलै जांछ ॥ घ्राणोन्द्रिय जो छ गंध तीरलै जांछ ॥ नेत्र जो छ रूपतिरलै जांछ ॥ कर्मेन्द्रिय जो छ न आ
प्ता आप्ता काम तीरलै जांछ ॥ जसै घर का सउटा पतिकन ठेरै सोता जो छ न कोहिक तै घिसा छ न कोहिक तै घि
सा छ न तसै देह कन ॥ अथवा देहाभिमानि पुरुष कन ॥ आकाश कार्य मा इन्द्रिय हेरु जो छ न ष जिचिकनलै जांछ
न ॥ ३१ ॥ वैराग्य र ॥ विवेक को कारण भया को देह जो छ गुरु छ भन्यार ॥ अवउ प्राप्ति देह पाउनु वडो दुख भ छ भ

॥ राम ॥
॥ ५८ ॥

निदेवाश्च॥ देहपाईकनईश्वरमालागसुभनिकहिंछन॥ हेमहाराज॥ आत्मीमायाले॥ वृक्ष॥ सर्प॥ पशु॥ पंक्षि॥ इंस॥ मा
छा॥ कीट॥ पतंग॥ इत्यादिगयाकानानाशरीरकन॥ वनाईकन॥ सवकुरामासामर्थभयाका॥ तितिशरीरविषेसंतोष
नभै॥ ब्रह्मविचारकनसमर्थभयाको॥ बुद्धिभयाकापुरुषशरीरकनवनायार॥ परमेश्वरजोछन॥ हर्षकनप्राप्तहु
दाभया॥ २८॥ बहुतैज्जन्मकाअत्यंतविषे॥ बडाडु॥ खलेपनिपाइनसकनु॥ सवैपुरुषार्थकनदिन्या॥ आफ्रभनित्य
भयाको॥ एसासमनुष्यजोनिपाइनकन॥ एससंसारविषे॥ धीरपुरुषहेरुले॥ मृत्युकावसकननपदै॥ कल्याणकानिमित्त
यत्नगर्नु॥ विषयमालंपटभैरहुनु॥ विषयमालेपटभैरहुनु॥ विषयजोछ॥ सोतपशुआदिगयाकायोनिविषेपनि
ल्ह॥ विषयभोगमात्रभन्ना॥ देहजोछकामकोछैन॥ विषयमावैराग्यगरिव्रह्मविचारकानिमित्तभन्ना॥ देहजोछ॥ पा

लबासुउत्तमनिदं बहुसंभवान्ने॥ मानुष्यमर्थदमनित्यमपीहधीरः॥ तुरायतेतनपतेदनुमृत्सुयाव
जिअयेसायविषयः खलुसर्वतस्यात्॥ २९॥ एवंसंजातवैराग्योविज्ञानालोकआत्मनि॥ विचरामि
महीमेतांसुक्तसंगोनहंकृतिः॥ ३०॥ नखेकस्माकुरोर्ज्ञानंसुस्थिरस्यात्सुपुष्कलम्॥ ब्रह्मेतदधितीयंवै

इनसकनुभनिआज्ञागयारभंछन॥ २९॥ एतैप्रकारलेढेरैगुरु॥ गीयतेवहुधर्षिभि॥ ३१॥ छ॥
देखिवढियाज्ञानजोछ॥ स्थिरहुदैन॥ तसअर्थयसकुरामाचिन्नलगाउनु॥ एसाकुरामाचिन्नलगाउनुभन्नाकुरा
माईमेराढेरैगुराछन॥ परमार्थउपदेशगर्नागुरुतएकैछ॥ भनीपछिभन्नाछ॥ याब्रह्मजोछ॥ ढेरैअविहेरुले॥ एकै
छ॥ अधितीयछ॥ भनिकहंछन॥ भनिएसकुराकनउच्चवकनरुसभगवान्जोछन॥ आज्ञागर्छन॥ हेउच्चवसुन॥ यदुनामा
राजाकन॥ एसाआज्ञागयार॥ दत्तात्रेयअविजोछन॥ बडोगंभीरबुद्धिभयाकाछदायडुराजासंगविदाभै॥ यदुराजा

॥ भा. ८ ॥
॥ ५ ॥

लेन मस्कार पार्थना गरिया का. वरुनै प्रसन्न भया का. जता देषि आया था उतै जां दा भया ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ हे उद्धव दत्ता त्रे
यका एसा वचन सुनिकन ॥ हा मा कुल का पूषार्थ सवै भंदा. जेठा भया का यडुना मारा जा जो छन ॥ सव संग त्या गरि. स
वै वसु मा वरो वर बुद्धि गरि रह दा भया ॥ ३३ ॥ इति श्री भागवते महा पुराणे एकादश स्कंधे भाषा टीका यां नव मो ध्यायः ॥
अव भगवान् जो छन एसा प्रकार ले विवेक भया का भक्त. आका उद्धव कन तत्त्व ज्ञान हव स भन्ना निमित्त ॥ पहिले देषि

श्री भगवानुवाच ॥ इत्युक्त्वा स यदुं विप्रस्तमामत्र गभीरधीः ॥ वंदितो भवितो राजाय सोऽप्रीतो यथा
सुखम् ॥ ३२ ॥ अवधूत वच श्रुत्वा पूर्वेषां नः स पूर्वजः ॥ सर्वसंग विनिर्मुक्तः समचित्तो बभूव ह ॥ ३३ ॥
इति श्री भागवते महा पुराणे एकादश स्कंधे भगव उद्धव संवादे नव मो ध्यायः ॥ ६ ॥ श्री भगवानु
वाच ॥ मयोदिते स्ववहितः स्वधर्मेषु मदाश्रयः ॥ वर्णाश्रम कुलाचार मकामात्मा समाचरेत् ॥ १ ॥ अ
न्वीक्षेत विभुश्चात्मा देहिनां विषयात्मना ॥ गणेषु तत्त्व ध्यानेन सर्वारंभ विपर्ययम् ॥ २ ॥ छ ॥

आरंभ गरि उपाय कन कहं छन ॥ भगवानुवाच ॥ हे उद्धव मैले वता या का पंचरांत्र आदि गया का वैष्णव धर्म विषे
सावधान गरि विषय मालें पटन भै. मेरो आश्रय गरि. वर्णाकार. आश्रम का. कुल का धर्म को अनुष्ठान गर्नु ॥ १
भुद्ध चित्त भै. विषय मा आसक्त चित्त भया का प्राणि हेरु को ॥ विषय मा सत्य बुद्धि गर्ना ले गया का. ठेरे आरं
भ को फल मा. भेद देषि. त्यापनि विचार गर्नु र. सुखादिको कामना न गर्नु ॥ २ ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ छ ॥

॥ राम ॥
॥ ५ ॥

कामनागरियाकाजोकोहि विषय छन निसवै जुदा छन न तस्कारणा कामना न गर्नु सुत्पाका प्राणिको सपना जसै जु दो छ
ध्यानगर्नाको मन सुवा जसो जु दो छ ॥ तसै इन्द्रियले गरिवाहिक को नाना बुद्धि छ त्यो सवै जु दो छ ॥ ३ ॥ एस्कारणाले
कामनाका कर्म न गर्नु ॥ विद्वन्निमार्गका कर्म र नित्य नै मित्रिक कर्म कन गर्नु ॥ ब्रह्मकन जानु भन्नाले कर्म गर्नु भन्ना
वेदवाक्यः कन आदर न गर्नु ॥ ४ ॥ यमभन्नाका अहिंसादि हेरू कन वारं वार सेवा गर्नु ॥ शोच आदि गम्याका नि

सुप्रस्य विषयालोको ध्याय तो वामनोरथः ॥ नानात्मकत्वादि भल लथा भेदात्मधी गुरौ ॥ ३ ॥ निवृत्तं कर्म
सेवेत प्रवृत्तं मत्परस्य जेत् ॥ जिज्ञासायां समवृत्तो नाद्रियेत्कर्म मोदनाम् ॥ ४ ॥ यमानभीषां सेवेत निय
मान्मत्परः क्वचित् ॥ मदभिज्ञे गुरुं शान्तमुपासीत मददात्मकम् ॥ ५ ॥ भ्रमान्मत्सरो दक्षो निर्ममो दृढ
सौहृदः ॥ असत्यरो र्थं जिज्ञासु रतु सूर्युरमोघवाक् ॥ ६ ॥ जायापत्य गृहक्षेत्रस्वजन द्रुविणादिषुः
उदासीनः समं पश्यन् सर्वे च र्थमिवात्मनः ॥ ७ ॥

यमकन भन्नाः आक्रासा मर्त्यले गरि गर्नु ॥ चित्तकन मं विषे लाउन्ना मं कन जान्ना शान्त स्वभाव का गुरु को उपासना गर्
नु ॥ ५ ॥ अभिमान न गर्नु डाढन गर्नु चतुर्हुनु ममतान गर्नु ॥ सवै मा मित्रता गर्नु ब्रह्म जान्ना को इच्छा गर्नु पराई को
निन्दान गर्नु व्यर्थ न बोलनु ॥ ६ ॥ स्त्री छारो घर पेत् आक्रा इष्ट मित्र धन विषे उदासीन हुनु ॥ सव देह मा आत्मा
एक हुनाले ॥ आक्रा देह विषे जसै सुख दुःख को विचार राषि छ ॥ तसै स्त्री पुत्र चाकर सवै मा सुख दुःख को विचार
राषि वरावर देषनु ॥ ७ ॥

॥ भा. ए. ॥
॥ ५८ ॥

साउदुलादेहदेविआत्माजोछभिन्नछदेविन्यावस्तुदेवि॥ जसैदेष्टुन्याभिन्नहुंछं॥ तसैदेहादिदृश्यवस्तुदेविदेष्टुन्यासाक्षीरूपभा
त्माजोछभिन्नछस्वयंप्रकाशछ॥ देहादिस्वयंप्रकाशछैन॥ जसैअग्निजोछ॥ उठन्यादारुवादेषिभिन्नछप्रकाशगर्वापनिछ
॥ ८ ॥ दारुवाभिन्नपस्याकोअग्निजोछ॥ दारुवाकोनाशिउउत्पन्नहुनु॥ साउदुलो॥ वांगोसोमोइत्यादिगयाकागुणकनपोउं
छपरंतुअग्निमाईगुणकेहिछैन॥ तसैआत्माजोछं॥ सोपनिदेहकाजन्मउ॥ मर्जुसाउदुलोइत्यादिदेहकाधर्मकनपाउछ
आत्माभाभन्याइकोहिधर्मछैन॥ ९ ॥ हेउद्धव॥ परमेश्वरकाअधीनमारहाकीमायाकागुणालेगरिवन्याको॥ जोयोसा

विलक्षणाः स्थूल सूक्ष्मा देहादात्मैक्षितास्वदृक्॥ यथाग्निर्दारुणो दाह्यादाहकोन्यः प्रकाशकः॥ ८ ॥ निरो
धोत्पत्त्यनुवहन्नानात्वं तत्कृतान् गुणान्॥ अंतःप्रविष्टश्चाधत्तेस्वदेहगुणान्परः॥ ९ ॥ योसौगुरो
र्विरचितो देहोयं पुरुषस्य हि॥ संसारस्तन्निबन्धोयंपुंसोविद्याछिदात्मनः॥ १० ॥ तस्मान्जिज्ञासयात्मा
नमात्मस्थं केवलं परम्॥ संगम्यनिरसेदेतद्वस्तु बुद्धियथाक्रमम्॥ ११ ॥ आचार्यो रगिराद्यः स्यादत्रैवा
सुत्ररारणितसंधानं प्रवचनं विद्यासंधिः सुरवावहः॥ १२ ॥

॥ उदेहछदुलोदेहछ॥ तेसैदेहकोसंवंध
हुनालेजीवकाआत्मविद्याकोनाशगर्वासंसारहुंछ॥ अरुकरालेछैन॥ १० ॥ तस्कारण॥ हेउद्धव॥ विचारलेगरिदेहमाव
स्याका॥ केवलपरमात्माकनजानुर॥ क्रमैलेगरिदेहहेरुविषे॥ वस्तुबुद्धिकनछोडनु॥ ११ ॥ गुरुवाटभयाकाविद्याको
नासगर्नाकनसकछभनिकहनाकन॥ विद्याकाउत्पत्तिकनअग्निकाउत्पत्तिस्वरूपलेगरिकहंछन॥ अग्निमंथनगर्वा
उधोकोकाष्टरूपीगुरुछ॥ उभोकोकाष्टरूपीशिषाछ॥ तिउईकोसंनिधिगर्वा॥ मारुकोकाष्टरूपीगुरुकोशिष्यलाईग
याकोउपदेशकहिंछ॥ तिकाष्टलेजोरिउरूपीगुरुवाट॥ शिष्यलाईभयाकोसुखकनगर्वाविद्याकहिंछ॥ १२ ॥

॥ राम ॥
॥ ५८ ॥

वडाकुशलगुरुलेउपदेशगरियाकाअग्नि॥कुशलशिष्यलेपायाकि॥अत्यंतशुद्धभयाकीबुद्धिजोछ॥गुराकीकार्यरूपभ
याकीमायाकननाशगछे॥जीवकोसंसारकनगर्नाकारणाकनउछाईकन॥दारुवालेहीनभयाकाअग्निरुजिगरि
आफैशान्नहुंछे॥तस्कारणाकार्यकारणाविद्याकसैलेपनि॥विचारमानक्षेकनाले॥साक्षात्परमानन्दस्वरूपहुंछे
रुसोभयोभया॥स्वयंप्रकाशज्ञानस्वरूपभयाकोनित्यरुकेआत्माछ॥कर्तृत्वादिधर्मजोछन्सोछन्सोतनेसआ
त्माकादेहुउपाधिलेगरिभयाकाजानु॥आत्मदेविभिन्नजति॥मायारूपछ॥सवैअनित्यछ॥रुस्कारणसबवस्तु

वैशारदीसानिविशुद्धबुद्धि॥धूनोतिमायांगुरासंप्रसूताम्॥गुराश्चसंदह्ययदात्ममेतत्स्वयंच
शाम्पत्यसमित्यथाग्निः॥१३॥अथैवांकर्मकर्तृणांभोक्तृणांसुखदुःखयोः॥नानात्वमथनित्यत्वं
मथनित्यत्वंलोककालागमात्मनाम्॥१४॥

मावैराग्यगर्दो॥जाहांताहांआत्मबुद्धिगर्नालेमोक्षकनपाउदछ॥१३॥रुसाप्रकारले॥वेदसमुदायले॥निश्च
यगरियाकाअर्थविषे॥अरुमतसगविरोधहुनालेसन्देहनहवसुभनानिमित्त॥तनेअरुमतकनफालना
कनआज्ञागर्नुलाग्ना॥हेउद्धव॥शरीरशरीरमाभिन्नआत्माछभन्याईजीवहेरुकन॥कर्मगर्नाहरुकन॥सु
खदुःखकोभोगगर्नाकन॥नानाभिन्नमान्छकि॥उसोभन्यावैराग्यपनिहवैन॥भोगस्थानकोअनित्यभयावैरा
ग्यहुन्याहो॥अनित्यछैन॥भोगगरिन्नाकालकोर॥भोगगराउन्नाकर्मकन॥बुजाउन्नाशास्त्रकोभोगआत्माको
अनित्यभयाहुन्याहो॥सोकराकेहिछैन॥अथवालोक॥कालशास्त्र॥आत्मा॥इन्लाइअनित्यमाछस्॥१४॥

॥ भा. स. ॥
॥ ५८ ॥

सर्वे भोगवस्तुकनछुटिनाले वैराग्य होला भनौला त सुन ॥ सर्वे स्वकचन्दनवनितादि हेरुको स्थिति जो छ ॥ प्रसाहरूपले
नित्य छ ॥ तस्कारणा वैराग्य कसो गरि होला हवैन ॥ उ सो भन्या जगत कनवना उ न्या कर्ता ईश्वर पनि जान ॥ आत्मस्वरूप
भया ज्ञान जो छ सकै छ भन्या सुन ॥ घटपटादि आकार भेद ले गरि ज्ञान उत्पन्न हुन्छ ॥ यस्कारणा अनित्य छ भिन्न पनि हुं
छ ॥ जाहा तात्पर्य अर्थ सलो छ कलो भन्या सुन ॥ नित्य ज्ञान रूप आत्मा छैन ज्ञान कार्य ले युक्त छ ॥ उ सो भन्या विका
रि भया अनित्य होला भन्या सुन ॥ ज्ञान रूप विकार जो छ नित्यत्व को विरोधि छैन ॥ तस्कारणा सुक्ति विषे इन्द्रिय हे
रुले हीन हुनाले परिणाम नहुनाले जौ नहुनाले सुक्ति पाया पनि पुरुषार्थ हुनाले प्रवृत्ति मार्ग श्रेष्ठ छ नीहति

मन्यसे सर्व भावानां संस्था खोत्य नि कीयथा ॥ तत्र दाकृति भेदे न जायते भिद्यते च धी ॥ १५ ॥ एवमप्यं
ग सर्वेषां देहिनां देहयोगतः ॥ कालावयवतसंधि भावाजन्मादयोऽसकृत् ॥ १६ ॥ अत्रापि कर्मणां
कर्तुरत्वात्तं च तक्षते ॥ भोक्तृश्च दुःखसुखयोः को न्वर्थो विव संभवेत् ॥ १७ ॥

मार्ग छैन ॥ १५ ॥ पूर्वपक्षपगर्भाले भन्या को अगीकार गरि कनयनि वैराग्य लाइ प्रकटर्ना गनि मित्र ॥ प्रवृत्ति मा
र्ग जो छ भनर्थ को कारणा छ भनिक हंछन हेउछ वसवै देहि हेरुका देह को संवधि हुनाले गरि कालका अव
यव भयाका संवत्सरादिले गरि बारंवार जन्म आदि गन्याका विकार हुन्छन ॥ १६ ॥ कर्मगर्भा प्राणिकापनि
धराधीनता देषिन्छ ॥ आकावसमा कर्मगन्याको देषिदै न सुख दुःख को भोग गर्ना प्राणिकापनि पराधीन भयाको
देषिन्छ ॥ पराधीन न भै कौन कुरो गरिछ कौनै कुरो गरिदै न पराधीन न भयाका प्राणिले दुष्ट कर्म दुष्ट कर्म गन्याको दे

॥
विच्छेद दुःख भोग गन्याको पनि देषिन्छ ॥ १७ ॥

॥ गम ॥
॥ ५८ ॥

जोत प्राणि हेरुवठीया कर्मगर्हन् ति प्राणि जो छन् सुखी हुं छन् जो प्राणि वठीया कर्मगर्न जां दैनन् ति प्राणि जो छन् दुःखी
 हुं छन् भनौ लात सुन वडा वठीया कर्मगर्न जाया पणित भया का देहि हेरुका पनि अलिकता सुख जो छ देषि दैन त
 सै मूर्ख हेरुका पनि दुःख देषि दैनन् स्कार रा हा मि हेरु कर्मगर्नी मा कुशल छोर सुखी छै भनु कुरा जो छ वथा
 अहंकार गर्नु मात्र छ १८ ति मिले भन्या को कुरो हो भनौ लात सुन स्ला कर्मगया सुख हुं छ स्लो कर्मगर्न्या दुःख हुं
 भनि जा प्राणि जां द छन् ति प्राणि हेरु पनि ज सो गरि आ फ्राउ पर मृत्यु जो छ समर्थ हुं न सक्तैन ते स्लाउ पाय कन जा
 दैनन् १९ मृत्यु कन पर सार्न सक्तैन न त पनि वठीया कामगर्न्या लार् जिउं ज्वा ल सुखै हुं छन् भन्या पनि सुन हेउ

न देहि नां सुख किं चिद्विद्यते विदुषामपि तथा च दुःखं मूढानां वथा हंकाराणां परम् १८ यदि प्राप्तिं
 विद्या तं च जानंति सुख दुःखयोः तेष्वज्ञानविदुर्योगं मृत्युर्न प्रभवेद्यथा १९ कोन्यर्थः सुखयत्ये
 नं कामो वा मृत्युरंतिके आघातं नीयमानस्य वधस्येव न तु हिदः २० अतं वदष्टव उष्टं स्पृष्टं
 यात्ययययैः वहं तराय कामत्वात् कृषिवच्चापि निष्फलम् २१

॥ इव मृत्यु न जी क छ भन्या मा
 र्ग ठाउं माले गया का मारि न्या पुरुष कन ज सै कौ नै कुरा ले पनि सुख हुं दैन त सै संसार मा कौ नै काम ना ले पनि
 प्राणि कन सुख गराउ दैन २० स्ला प्रकार ले स्लो क विषे सुख छैन भन्या र स्वर्ग दि लोक मा पनि सुख छैन
 भनिक हुं छन् हेउ इव सुनिया को स्वर्ग लोक जो छ स्पृष्टा भाग्रामा दोष लगाउन स्या नाश व्यय इत्यादि कुरा
 ले गरि उष्ट भयो को हुना ले सै देषिया का लोक जे जिउ छ वहुनै गुणा दि रूप विघ्न समा छन् स्लो सुख हुना

॥ भा. ॥
॥ ६० ॥

लेपनिजसैषेतिगर्तुसुखदुःखभनियकोषेतिजोछः सुखरूपछैन ॥ तसैसुखलेयुक्तदुःखभनिसुनियकोपनिः स्वर्गादिलोकजो
छरवदिन्याहुदैन् ॥ २१ ॥ विघ्नरूपदोषछैनस्वर्गादिसुखमाभन्यापनि ॥ स्वर्गादिसुखकोनाशजोछ ॥ वडाडुःखलेपनि
परसारिसकनुछैनभनिकहंछन् ॥ हेउद्धवः सुन विघ्नहेरुलेनाशगर्तुसकाकोपनि ॥ वढीयाप्रकाशातअनुष्ट
नगयाकोधर्मछतेसैधर्मलेपनिजितियाकोः स्वर्गादिस्थानजोछः सोपनिजसोगरिजाछः सोकुरासुन ॥ २२ ॥ हेउ
द्धवः सुलोकविषेयज्ञगर्तुपुरुषजोछ ॥ यज्ञगरिकनदेवताहेरुकोपूजागर्द्धः स्वर्गलोकमाजाछः आक्रापुरापक
र्मलेगरियाकोदिव्यदिव्यभोगकन ॥ स्वर्गलोकविषेदेवतारुजिगरिभोगकनगर्द्ध ॥ २३ ॥ आक्रासृत्सुकर्मलेगरि

अंतरायैरविहतोयदिधर्मस्वउद्धितः ॥ तेनापिनिर्जितंस्थानंयथागच्छतितद्धृणु ॥ २२ ॥ इष्टेहदेवता
यज्ञैः स्वर्लोकंयातियाजिकः ॥ भुंजीतदेववन्नत्रभोगान्दिव्यान्निजार्जितान् ॥ २३ ॥ स्वपुरोपापचितेषु
भ्रेविमानउपगीयते ॥ गंधर्वैर्विहरन्मध्येदेवानांरुद्रशवेषधृक् ॥ २४ ॥ स्त्रीकामगयानेनः किंकिणीजा
लमालिनः ॥ कीडन्तवेदात्मपातंसुराकीडेपुनिर्हतः ॥ २५ ॥ तावत्प्रमोदतेस्वर्गेयावत्पुरांपसमाप्यते
क्षीणपुराणपतत्यर्वांगशिछन्कालचालितः ॥ २६ ॥

देवतालेपनिवढीयामानियाकोभेसधारिः गंधर्वहरुकमारुमाविहारगर्दोः जताभन्यो ॥ उतैजान्याविमानलेगरि
अप्सराहेरुसंगः देवताकानन्दनआदिगयाकावगजिवाविषेशयलगर्दोः गंधर्वहेरुलेगानगरियाकोछंदोफिर्दछ
परंतुस्वस्वर्गलोकदेपिः मेषसुलाभनिवुद्धैन् ॥ २४ ॥ २५ ॥ तपोस्वर्गः याकोप्राणिजोछ ॥ जाहासम्मपुराणमेकिंदैन
तांहिसम्मस्वर्गमाआनंदगरिरहंछः पुराणकोभोगलेगरिजवक्षीणभयो ॥ ताहाप्रांतकाललेउधोयसायियाकोः उधो

आउनाकनइछानगर्दोपनिकरुसंगउधोयसायियाकोः ॥ २६ ॥

॥ राम ॥
॥ ६० ॥

परतिमार्गजोछ विधिले गरि गया को एक छ ॥ विधिलाई नाचि नमानि गया को एक छ ॥ ससै प्रकारले उई तरह को छ ॥ त
स्मा विधि पूर्वक गया का काम्य कर्म को गति रु सै छ भन्या ॥ विधि शास्त्र कन नाचि गया का अधर्म कर्म को गति कन भंछु
छुन हेउ छव असज्जन को संग हुना ले ॥ अधर्म कर्म मालाणा को इन्द्रिय कन जित नन सकन्या ॥ विषय भोग कन रक्षा
गर्मा कपण भया को ॥ लोभि ॥ स्त्री लंपट भया को ॥ स्त्री हेरु कानि मित्र ॥ हिंसा गर्मा ॥ ३ ॥ विना विधान ले धन कानि मि

ययः धर्म रतः संग दस तां चाजितेन्द्रियः ॥ कामात्मा कृपणो लुब्धः स्वैरो भूत विहिंसकः ॥ २७ ॥
पशून विधिना लभ्यते भूत जनान्य जन ॥ नरकानवशो जंतू र्गत्वा यां सुखं तमः ॥ २८ ॥ कर्मा
णि दुःखोदकाणि कुर्वन् देहे न ते पुनः ॥ देह मा भजते तत्र किं सुखं मयं धर्मिणाः ॥ २९ ॥ लोका
नां लोकपालानां मद्भय कल्प जीविनाम् ॥ ब्रह्मणोऽपि भयं मत्तो द्वि परार्द्ध परायुषः ॥ ३० ॥

त्र पशु हेरु कन मारि ॥ भूत प्रेत गणा को पूजा गर्मा प्राणि जो छ ॥ पराधीन भै नरक हेरु मा जान्छ ॥ नरक देवि
धान ले उन्नी ॥ वृक्षादि ॥ योनि मा जा छ ॥ सत्ता तरह का कर्म गर्मा लाइ सुख पनि छैन ॥ उच्चार पनित न को छैन
भनिक ह छन ॥ पछि दुःख ठे बे हुन्या कर्म कन देह ले गर्दो ॥ फेरि न नै कर्म ले गरि देह कन न पाउद छ ॥ सरध
मि देह कन पाउदा ॥ कौ न सुख छ केहि सुख छैन ॥ २८ ॥ २९ ॥ लोक भया लोक पाल हेरु कन भया ॥ कल्प
स्मा जिउ न्या हेरु भया ॥ इस वै जना लाई मेरो भय हुं छ ॥ उई परार्द्ध संम जिउ न्या ॥ ब्रह्मा लाई पनि मेरो भय हुं छ ॥ ३० ॥

॥ भा. ए. ॥
॥ ६९ ॥

जौ न ईश्वर देखि न वायु सूर्य अग्नि मृत्यु ईस वै जना भया मान्य छनर आका काम माघ वदरि भैर हंछन ॥ एस्कार
गाले प्रवृत्ति मार्ग जो छ अर्थ को कारग छ ॥ तस अर्थ प्रवृत्ति मार्ग मा वै राग गरि नि निवृत्ति मार्ग माला गुनु यो ज
छ ॥ एस्कराले आफै ले ईश्वर को थापना गर्ना ले ईश्वर जो छ ॥ छैन भन्या कुरो वर्थ भयो कर्त्ता भोक्ता आत्मा छ
भन्या कुरो पनि वर्थ गर्छन ॥ इन्द्रिय हेरु जो छन कर्म कन गर्छन आत्मा गर्दै न ॥ सत्वर जतम आदि गर्ना का गु
रा जो छन इन्द्रिय कन लगा उदछन ॥ एस्कार आत्मा लाई कर्त्तव्य धर्म छैन ॥ भोक्ता धर्म पनि उपाधिले गरि हुं
छ आत्मा सास्वभाव ले हुदै न भनिक हंछन ॥ जीव जो छ सो त इन्द्रियादि हेरु ले युक्त भया को कर्म मा अहंकार गर्ना ले

गुणाः सृजंति कर्माणि गुणो नु सृजते गुणान् ॥ जीवसु गुणसंयुक्तो भुंक्ते कर्मफलान्यसौः ॥ ३१ ॥ यावत्स्या
त्तु गुणवेषम्यं तावन्नानात्वमात्मनः ॥ नानात्वमात्मनो यावत्पारतंत्र्यं तदैव हि ॥ ३२ ॥ यावदस्यास्वतंत्र
त्वावदिश्वरतो भयम् ॥ यस्तत्समुपासीरं स मुह्यंति भुवार्पिताः ॥ ३३ ॥

कर्मका फल कन भोग गर्छ ॥ ३१ ॥ आत्मा लाई नाना छ भन्या कुरो पनि उपाधिले भया को हो ॥ स्वभाव ले होई न भ
निक हंछन जाहासम्म अहंकारादिकार्य रूप को भेद छ ॥ ताहासम्म आत्मा लाई नानात्व हुंछ आत्मा लाई पराधी
नता पनि ताहासम्म हुंछ ॥ ३२ ॥ जाहासम्म आत्मा जो छ पराधीन रहंछ ॥ ताहासम्म ईश्वर देखि भय हुंछ ॥ जो
प्राणि हेरु अहंकारादिकार्य का भेद कन तसै ले गरि भया का भोग केन कर्म कन सेवा गर्छन ॥ ति प्राणि हेरु
जो छन लोक हेरु को अनित्य हुनाले ॥ शोक ले युक्त भया का छंदो मोह कन पाउँदछन ॥ ३३ ॥ छ ॥

॥ एम ॥
॥ ६९ ॥

लोक हेरु जो छन अनित्य मात्र छैनन् मायारूप पनि छन भनिक हंछन् ॥ हे उद्धव काल आत्मा शास्त्र लोक स्वभाव धर्म ई
सवै कन माया को क्षोभ भया विमलाई ठेरै भंछन् ॥ काल आत्मा देह हेरु म देवि भिन्न छैनन् ॥ तत्कारण हे उद्धव
मुक्तिको कारण हुनाले निवृत्ति मार्ग जो छ सो हि श्रेष्ठ भन्ना कुरो सिद्ध हुंछ ॥ ए सो भन्नाले आत्मा जो छ एकै छ
नाना छैन ॥ ते स एक आत्मा को गुण को कार्य भयो का देह को संवंध हुनाले संसार हुंछ ॥ ए सा एक अद्वितीय आ
को ज्ञान भया प्राप्ति मुक्त हुंछ भनि ॥ यो कुरो पनि सिद्ध भयो ॥ ३५ ॥ उद्धव जो छन मन मा संदेह भया को कुरो धन
सो

काल आत्मा गमो लोक स्वभाव धर्म एव च ॥ इति मां बहुधा प्राहुर्गुण व्यतिकरे सति ॥ ३४ ॥ श्री उद्धव उ०
गुणेषु वर्तमानोऽपि देह जे छन पावत ॥ गुण न वध्य ते देहि वध्य ते वा कथं विभो ॥ ३५ ॥ कथं वर्तते वि
हरे कै वा ज्ञायेत लक्षणे ॥ किं भुंजी तो न विस्तेजे न शयीता शीतयाति वा ॥ ३६ ॥

लाग्ना ॥ उद्धव उवाच ॥ हे भगवन् हे कृष्ण गुण हेरु छं दामा मुक्ति हुंछ कि म छं दामा मुक्ति हुंछ गुण हेरु न छं
दामा ज्ञान का उपाय हुनाले मुक्ति हवैन गुण हेरु छं दामा भन्ना ॥ गुण को कार्य भया का देह विषे देह ले गया का
कर्म सा सुखा दि विषे पनि कसो गरि वुद्ध हुंछैन गुण हेरु छं दामा पनि ॥ ति गुण हेरु ले आकाश रुजिन ठां कि
नाले वां धि नैन भन्ना वंध जो छ हुना छैन ॥ हे विभाक सो गरि वां धि छ ॥ देहा दि विषे अहंकार गर्नाले वां धि छ भन्ना
पनि ॥ वद्ध मुक्त कुरा मा संदेह भै रहै छ आज्ञा गर ॥ गुण मा गुण को कार्य रूप देह मा भया को अहंकार छोडनाले मु

॥ भा.प. ॥
॥ ६२ ॥

कहुंछ भन्या ॥ सुक्त भया को कसो गरिरहंछ ॥ कसो विहार गछं कौन चिहूले जानिंछ ॥ काषांछ ॥ काछाउछ ॥ सुतिरहंछ
कि वसिरहंछ कि हिडिरहंछ कि ॥ हे कछ भन्या ॥ ले गया को प्रह्न को उजर गर्नु हवस ॥ एकै आत्मा जो छ ॥ देह हेरु को संवं
ध हुनाले नित्य वदछ सो हि आत्मा जो छ सो नित्य सुक्तरहे छ भन्या ॥ एलो मलाइ भ्रांति भैरहे छ ॥ आजा गर्नु हवस
भनि उछ वले ॥ कछ छेउ छि तिगदा भया भनि थु कदे वले ॥ राजा परीक्षित कन आजा गर्दा भया ॥ सो हि कथा कन ॥ स्त
तले शौनक आदि गया का अपि हकन आजा गर्दा भया ॥ ३७ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे सकादशस्कंधे भाषा

एतदच्युतमेव हि प्रह्न प्रह्न विदाम्बर ॥ नित्य सुक्ते नित्य वदस कसवेति मे भ्रमः ॥ ३७ ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे सकादशस्कंधे भगवदुद्धवसंवादे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ श्री भगवानुवाच ॥
॥ ६० ॥ वदो सुक्त इति व्याख्या गुणतो मे न वस्तुतः ॥ गुणमायामूलत्वान्न मे मोक्षो न वंधनम् ॥

यां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ पूर्व अध्याय मा एकै आत्मा जो छ ॥ नित्य वदरहे छ ॥ नित्य सुक्त पनिरहे छ भन्या ॥ ए
लो भ्रांति मलाइ भैरहे छ भनि प्रह्न गया उछ वले ॥ लोक रा एकै आत्मा जो छ ॥ वद पनिसुक्त पनिरुमा हैन भन्या ए
लो विरोध समुक्ति कन हो कि ॥ परंतु आत्मा सा वंध मोक्ष के आत्मा हुना हो ॥ उ उता वदस उरा सुक्त हुना हैन भन्या
एलो मन मानि श्रय उक्ति कन हो कि ॥ परंतु आत्मा सा वंध मोक्ष के हिन हुनाले उछ वको शंका के हि छैन भनि
भगवान् कछ जो छ ॥ आजा गर्नु लाणा ॥ हे उछ वसुन आत्मा जो छ ॥ वदछ सुक्त छ भनु एलो कुरा जो छ ॥ ९

॥ राम ॥
॥ ६२ ॥

मेरा अधीन मारखा का सत्व रज तम आदि गुण का गुण रूप उपाधिले गरिंछु सत्य रूप छैन ॥ जसै ता उला मा जल को ता
तो रूप उपाधिले गरिचावल पाऊ छैन ॥ तसै सत्वादि गुण रूप उपाधिले गरि पनि ॥ आत्मा मा वद्ध मुक्त व्यवहार
जो छ सत्य होला भनौला त सुन ॥ रुदी माया कारणा भया का गुण हे रूप निरुदा छैन ॥ तस्कारण हे उद्धव रुदा गु
ण रूप उपाधिले गरि आत्मा मा वंधन जो छ सत्य छैन ॥ पहिले वंधन छैन भया मोक्ष पनि छैन ॥ आत्मा मा भया
एस्तो मेरा सिद्धान्त छ ॥ १ ॥ शोक मोह सुख दुःख देह पाउ उर्ई सबै जसै स्वप्न जो छ वृद्धि को धर्म हो ॥ तसै रुदी मा

शोक मोहौ सुख दुःख देह पाउ पति श्व मायया ॥ स्वप्नो यथात्मन ख्यातिः संसृति ननु वास्तवी ॥ २ ॥ विशा
विद्यमम तनू विद्युद्ववशरी रिणाम् ॥ मोक्ष वंध करी आये मायया मे विनिर्मिते ॥ ३ ॥ एक स्पे
वसमांश स्य जीवस्यैव महामते ॥ वंधो स्या विद्यया नादि विद्यया च तथेतरः ॥ ४ ॥

याले गरि भया का हुन साचा है न ॥ संसार पनि साचो है न माया स्वरूपै हो ॥ १ ॥ हे उद्धव जीव कन मोक्ष र व
ंधन कन गर्ना विचार अविद्या जो छैन ॥ मेरि माया ले वन्पा का आद्य शक्ति हुन ति मि जान ॥ जव मं अविद्या कन
दिंछु तैले वंधन हुंछ ॥ जव विद्या कन दिंछु तैले मोक्ष हुंछ ॥ २ ॥ हे उद्धव मेरो अंश रूप भया का एकै जीवात्मा का भ
विद्याले गरि वंध हुंछ ॥ विद्याले गरि मोक्ष हुंछ ॥ तस्कारण विद्याले गरि वंध मोक्ष छैन ॥ परंतु आत्मा मा साचा छैन ॥ ४ ॥

॥ भा. स. ॥

॥ ६३ ॥

अवउप्रान्न. हेउद्धव. एकशरीरविषेवस्याका. शोकर. आनन्द. एलोविरोधिधर्मभयाका. वद्धभयाकोजीवर. सुक्तभ
याकाईश्वरको. भेदकनभंदछुसुन. ॥ ५ ॥ जलैवृक्षमा. दुइपक्षिदे. विभिन्नभयाका. वृक्षमागंडलगाईवस्याकार
हंछन. तलैशरीरविषेभिन्नभैवस्याका. चित्तअंशरुकैहुनालेवरोवरभयाका. कैहेनछुटिनाले. संगिभयाका
सल्लाजीवरईश्वरजोछन. तिहुईजनामा. सुउटाजीवजोछ. कर्मफलकोभोगकनगछ. अर्कोईश्वरजोछ. सो
तभोगनगरिपनि. आफ्नैआनन्दमा. तृप्तिभयाकोछदो. ज्ञानादिशक्तिलेगरिअधिकैभन्यार. ॥ ६ ॥ ज्ञानादिव

अथवद्धस्यसुक्तस्यवैलक्षण्यंवदामिते. विरुद्धधर्मिशोलातस्थितयोरेकधर्मिशिः. ॥ ५ ॥
सुषर्गावेतशदृशौसखायौयदृष्ट्याकृतनिदोवृक्षे. एकस्ययोःखादतिपिप्यलान्नमन्मो
निरत्नोपिवलेनभूयात्. ॥ ६ ॥ आत्मानमन्यंवसवेदविद्वानपिप्यलादोननुपिप्यलादः. यो
विद्ययायुकसतुनित्यवद्धोविद्यासयोयःसतुनित्यसुक्तः. ॥ ७ ॥

लकोआधिक्यकनभनछ. कर्मफलकनभोगपनिनगर्नाईश्वरजोछ. वडोजांन्याछ. आफ्नैकनकनअर्काकनप
निजान्दछ. कर्मफलकोभोगगर्नाजीवजोछ. सोतआफ्नैकन. अर्काकनकसैकनपनिजान्दैन. एस्कारणालेहेउद्ध
व. जोअविद्यालेयुक्तछ. त्योजिवजोछनित्यवद्धछ. जोतविद्यालेयुक्तछ. ईश्वर. त्योनित्ययुक्तछ. ॥ ७ ॥

॥ राम ॥

॥ ६३ ॥

अवस्यसमयमावद्धमुक्तजीवः। इसवैकाभेदकनआज्ञागच्छन् मुक्तजोछसंस्कारकावललेदेहविषेरह्याकोपनिदेह
विषेरहदैन॥ जलैसपनादेविउद्याकोप्राणिजोछसमझियाकासपनाकादेहमावस्याकोपनिसपनाकादेहकासुखदुख
कनहुनाले। सपनाकादेहमारहदैन॥ तलैदेहमारह्याकोपनिमुर्षजीवजोछ॥ देहेकसुखदुखादिभोगगर्नलेगरिदे
हमारह्याजमोदेखिंछजलैसपनाकादेहमागयाकोप्राणिजोछ॥ तेसैलामासुखदुखकोभोगगच्छतलैजानु॥ एसैवा
वाटमाअकोपनिभेदकहंछं॥ हेउद्धवइन्द्रियहेरुले॥ आफाविषयकोग्रहागयाविषेगुणहेरुलेगुणहरुकोग्रह

देहस्थोपिनदेहस्थोविद्वास्वप्राघथोत्थीतः॥ अदेहस्थोपिदेहस्थःकुमतिस्वप्नदृग्पथा॥ ८॥ इ
न्द्रियैरिन्द्रियार्थेषुगुणैरपिगुणेषु॥ एहमागोचहंकुर्यान्नविद्वान्यत्नविक्रियः॥ ९॥ देवाधि
नेशरीरेस्मिन्गुणभावेनकर्मणा॥ वर्तमानोवधस्तत्रकर्त्तास्मीतिनिवध्यते॥ १०॥

रागयामापनि॥ जोजांन्याप्राणिछमग्रहागच्छभनिअहंकारगदैँन॥ विषयहेरुमाप्रीतिपनिगदैँसैकारणावद्ध
पनितोछैन॥ ८॥ ९॥ सुखजीवजोछसोतहेउद्धवपूर्वजन्मकाकर्मकाअधिनमारह्या॥ एसदेहविषेरह्या
कोछदो॥ इन्द्रियहेरुलेगयाकाकर्मकर्ममैलेगयाभनिअहंकारगर्नले॥ देहहेरुविषेवद्धहुन्छ॥ १०॥ इति
नश्लोकलेगरिसुखदुखलेर॥ अभिमानलेहिनभयाकोभन्नालेमुक्तजोछ॥ कसोगरिरहंछभनिगयाकाप्रह्म

॥ भा. ए ॥
॥ ८४ ॥

कोउत्तरागर्हाभया॥ एतैप्रकारलेसुतनुवस्तुफिर्जुमज्जनगर्जुदर्शनगर्जु॥ स्पर्शनगर्जुगंधलिउखातुश्रवणागर्जुइत्या
दिकुराविषेवैराग्यागर्जाज्ञानाप्राणिजोदेहमारहाकोपनिआकाशवायुसूर्यजैकनैआसक्तनभयाको॥ नोहोता
होविषयकोइन्द्रियकनभोगगराउदोपनिदेहादिविषेसूर्यजैवद्धुदेन॥ ११ ॥ १२ ॥ संगनगर्जलेअत्यंतविष
भयाकोअनिवठियाजानरूपिखड्डलेसवैसंदेहकनकाटि॥ जसैसुतिउद्याकोप्राणिजोछ॥ सपनामादेष्टाका
नानावस्तुदेषिन्भिन्नहुन्छ॥ तसैजांन्याजोछदेहआदिगयाकाप्रपंचदेषिभिन्नहुन्छ॥ १३ ॥ जौनृजान्नाप्राणि

एवंविरक्तः शयन आसनादनमज्जने॥ दर्शनस्पर्शनघ्राणभोजनश्रवणादिदिषु॥ ११ ॥ नतथा
बध्यतेविद्धांस्तत्रतत्रादयन्गुणां॥ प्रकृतिस्थोप्यसंसक्तोयथावंसवितानिल॥ १२ ॥ वैशारद्येक्ष
यासंगशितछियान्नसमशयः॥ प्रतिबुद्धश्चस्त्वप्नानानात्वाद्विनिवर्तते॥ १३ ॥ यस्यसुर्वीतसंक
ल्पाः प्राणोन्द्रियमनोधियाम्॥ वृत्तयः सविनिर्मुक्तोदेहस्योपिहितकुरौः॥ १४ ॥ यस्यात्माहिंस्यतेहि
शैर्येनकिंचिद्यदृच्छया॥ भर्त्यतेवाकचिन्नवनव्यतिक्रियतेबुधः॥ १५ ॥

का. प्राणा. इन्द्रिय. मन. बुद्धिकावृत्तिहेरुजोछन्॥ संकल्पलेहीनभयाकाछन्॥ एतौप्राणिजोछ॥ देहकारणालेहीन
भै. देहमारहाकोपनिनित्यमुक्तछभेनिजानु॥ १४ ॥ दुर्जनहेरुले. अरुजोकोहिप्राणिहेरुले॥ जस्कादेहकनपीडाग
छन्. पूजागछन्॥ पीडागयापनिजुद्धहुदैन्॥ पूजागयापनिप्रसन्नहुदैन्॥ सवैजनामाजोवरोवररहन्छ. तसलोइमुक्तभया

कोमनिजानु॥ १५ ॥

॥ भा. ए ॥
॥ ८४ ॥

घटियावठियावाटगर्नाकनपनि. सुतिनिन्दाकेहिगदैँन. गुणदोषलेहीनभयाको. समदृष्टिभयाकोसुनिहुन्छ. का
र्यपनिनगरस. घटियावठियाकुराकोचिंतापनिनगरस. आफैमाआरामभयाको. समैववहारलेगरिसुनिजो
छलाटात्रिफिरस. समैप्रकारलेदेहकानिमित्तकाकर्ममापनिउदासीनभयाकोसुनिजोछसुक्तहुन्छ. अरु
सलोआवरणभयाकोप्राणिजोछबहुभनिजानु. १६. १७. वेदवेदार्थमापारगतभै. परब्रह्मकनजानैँन
भन्ना. तेसालेवेदपर्छमापरिश्रमगर्नुजोछउदनदिन्यागाईकोगोठालोहुनुजसोमानहो. १८. हेउद्धव. उद

नसुवीतननिन्देतकुर्वतः साधुसाधुवा. वदतोगुणदोषाभां वर्जितः समदृष्टुनिः. १६. नकु
र्यान्नवदेकिचित्तन्धायेत्साधुसाधुवा. आत्मारामोनयोवृत्त्याविचरेज्जडवन्मुनि. १७. शर
ब्रह्मणिनिष्ठातो न निष्ठायात्परे यदि. श्रमस्तस्य श्रपफलोह्यधेनुमिवरक्षतः. १८. गांडुध
दोहामसतींचभार्यादेहेपराधीनमुसत्यजांच. विनेत्वंतीर्थीकृतमंगवाचंहीनामयारक्षतिउरव
उःखी. १९. यस्यांनमेपावनमंगकर्मस्थितुद्भवत्राणानिरोधमस्य.

नदिन्यागाईकोपनि. भर्तानभयाकीभार्याको. पराईकाअधीनमारहन्नादेहकोउर्जनपुत्रको. पात्रनजीकमान
दियाकाधनको. मैलेहीनभयाकावचनको. जोप्राणिरक्षागर्छ. त्योप्राणिदुःखमाथीदुःखवढाउन्नाहोभनिजानु
१९. हेउद्धवजोनवचनविषेविश्वसंसारकोसृष्टिस्थितिप्रलयगर्नाभयाका. अनिपवित्रभयाकामेराचरि

॥ भा. ए. ॥
॥ ६५ ॥

त्रछैनर लीलालेलियाका. सवजगत्लेषीनिगरियाका. रामकृष्णआदिगयाका. मेरातानाभवतारपनिछनर. एसाअ
तिघटियावचनकजान्यालेनधारजु. २० ॥ हेउछवएसैविचारलेआमाभयाका. नानात्वभ्रान्तिकनफालिकन. सवैका
अतर्घटर्घटमारहन्वा. वाहिहूपनिरहन्वापेरिपूरामविषे. निर्मलमनलगईकनजान्नभैरहु. २१ ॥ ब्रह्मविषे.
निश्चलगरिकन. मनकनधीरणागर्नाकनसमर्थछैनोत. हेउछव. केहिफलकोआशानगरि. सवैकर्मकनगर
गयाकाकर्मको. मंविषेअर्पणगर. २२ ॥ कल्पारालेयुक्तभयाका. अतिपवित्रभयाका. मेराकथासुन्दाविषे. श्र

लीलावतारेप्सितजन्मवास्याइंध्यांगिरंतांविभ्रयान्नधीर. २० ॥ एवंजिज्ञासयायोह्यनानात्वभ्रममा
त्मनि. उपारमेतविरजंमनोमय्ययसर्वगे. २१ ॥ यद्यनीशोधारयितुंमनोब्रह्मणिनिश्चलम्. म
यिसर्वाणिकर्माणिनिरयेक्षःसमाचर. २२ ॥ श्रद्धालुर्मैकथाश्रुतावनभुभद्रालोकपावनी. गाय
ननुस्मरकर्मजन्मचाभिनयन्सुहृ. २३ ॥ मदर्थेधर्मकामार्थानाचरन्मदयाश्रय. लभतेनिश्चलां
भक्तिमय्युद्धवसनातने. २४ ॥ सत्संगलक्ष्याभक्त्यामयिमांसउपाशिता. सवैवेदशितंसद्भिरंजसाविं

छागर. मेराजन्मकर्मकनसमृ. गानकनगर. मैरेगयाकालीलाको. भेसउतारीलीलागर. ॥ दत्तेयदम् ॥ २५ ॥
२३ ॥ मेरोआधारगरिहेउछव. मेरानिमित्त. धर्म. काम. अर्थको. सेवाकनगरिरहु. सनातन. मविषेनिश्चलभक्ति
कनपाउला. सत्संगलेगरि. मविषे. भयाकिभक्तिलेगरि. भक्तजोछ. मैकनधानगर्नाहुछ. नोभक्तजोछ. संतजन
लेदयाका. मैस्वरूपकन. सुखैलेगरियाउंदछभनि. आज्ञागयाकृष्णले. उछवजोछन्विर्तिगछन्. २४ ॥ २५ ॥

॥ राम ॥
॥ ६५ ॥

उद्धव उवाच ॥ हे भगवन् आकाश उद्धिले ठहराया का साधु हे रूढे रै छन परंतु तपानिका उद्धिले ठहराया का साधु जो छ-
क सो छ भक्ति पनि भिन्न भिन्न छ नाराण तरह की छ ॥ निमिले ठहराया की निभिविषे लाग्या ॥ नारद आदि गय्या का म-
धि हे रूढे आदर गरिया को भक्ति जो छ कनि छ आजागर ॥ यो कुरा मलाई सेंदे ह छ तमा चरगमा पिछापया को छ
शीतिगर्वा छ नमस्कार गर्वा छ ॥ २६ ॥ ३ ॥ तपानि जो छौ साक्षावल हो प्रतिदे धिभिन्नै हो आका भक्त इछाले ग-
रि देह धारि भै अवतार लिन्या भया का ॥ हे भगवन् भनि गोप्य कुरा पनि मलाई आजागर भनि विंति गय्या उद्धव लेर कछ
जो छन आजागर्न लाग्या ॥ २७ ॥ हे उद्धव सुन दया भया को सोह कसै छे उन गर्वा ॥ सबै का उपर सहनशील भया को सत्यमा

श्री उद्धव उवाच ॥ साधु से उन्नत मश्लोक मत कीटक विधः प्रभो ॥ भक्ति स्वयुपयुज्ये त की दृशी सद्गिरावता ॥ २८ ॥
एतन्मे पुरुषाध्यक्ष लोकाध्यजगत्प्रभो ॥ प्रगाताया उरक्ताय प्रपन्नाय च कथ्यताम् ॥ ३ ॥ त्वं वत्स परमं बोधमपुरुष
प्रकृतेः पर ॥ भवती शोभि भगवन् स्वस्वेच्छोपातयुथग्वपु ॥ २९ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ कृपालुरक्तद्रोहलितिक्षुः
सर्वदेहिनाम् ॥ सत्यसारे नव आत्माः समः सर्वोपकारकः ॥ ३० ॥ कामै रहत धीर्दानो मृदुः शुचिर किंचनः ॥ ३१ ॥

रह्या को भर्का को निन्दन गर्वा चिन्न भया को ॥ सबै मावरो वर बुद्धि भया को ॥ सबै को उपकार कन गर्वा भया को ॥ ३२ ॥
कामना ले चिन्न चश्चलन भया को ॥ मन कन जित्या को मल स्वभाव भया को ॥ शुद्ध संश्र को नै कुरा कानर्वा सबै क्रिया ले
हीन भया को ॥ थोरै क्षान्ता शान्त स्वभाव भया को मेरो शरणा गर्वा भया को मनन गर्वा ला इशील भया को सावधान भ-
या को कलै कुरा माय निविकार हुन्या ॥ धैर्य ले युक्त भया को ॥ तीर्षा भयो भोक भयो शोक भयो मोह भयो ॥ जरा भयो
मृत्यु भयो ॥ इछै कन जित्या भया को मेरो सन्मान पूजा गरन भनि इछान भया को ॥ भर्का को सन्मान गर्वा भर्का ला इदि

॥ भा. प. ॥
॥ ६६ ॥

नाकनसर्मथभयाको. ठांटनआयाको. करुणालेयुक्तभयाकोवठियाजांयाभयाको ॥ ३० ॥ ३१ ॥ एलालाईसाधुभनुवेदले
वतायाका. आकाधर्मलाईछोडिकनजोमेरोभक्तिगछ. त्योउत्तमपुरुषहोआकाधर्ममारखावढीयाछनरखादोसछ
भनिगुणदोसजान्नालेपनि. सवैधर्मकनछाडि ॥ ३२ ॥ इश्वरभजनैलेमात्रतस्तुलाभनिनिश्चयगरि. मेरोभजनगर्नाजो
छ. त्योवडोउत्तमसाधुजनहोभनिजालु ॥ ३२ ॥ जानीकन. नजानिकनजस्तोमहुजतिछ. एलामकन. एस्तोमहु. ज
छ. एलामकनएकाग्रगरिजोभक्तिगछन ॥ ३३ ॥ तिमेराभक्तमाश्रेष्ठभयाकाभक्तजनहुन ॥ ३३ ॥ हेउद्यवमेरामुक्तिको
मेराभक्तजनको दर्शन. अर्चन. सेवासुति. नम्रभैमेरागुणकर्मकोकीर्तनगर्नु ॥ मेरोकथासुन्दाविषेश्रद्धागर्नु. जति.

अनीहोमिनभुक्शांतःस्थिरामछरनोमुनिः ॥ ३० ॥ अग्रमन्त्रोगभिरात्माधृतिमान्जितषड्गुणः ॥ भमानी
मानदः कल्पौमैत्रः कारुणिकः कविः ॥ ३१ ॥ आज्ञायैवंगुणान्दोषान्मयादिष्टानपिस्वकान् ॥ धर्मान्
त्यः त्ययः सर्वान्मांभजेतसउत्तमः ॥ ३२ ॥ ज्ञात्वाज्ञात्वाथयैवैमांयावान्यश्चास्मियादृश ॥ भजंत्यनन्यभावे
नतेमेभक्तनमामता ॥ ३३ ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिवर्णसुतिः प्रहंगुणकर्मजुकीर्तनम्

मित्याकावलुकनचहार्दितुनिप्रोदासहंभनि. आत्मनिवेदनगर्नु ॥ मेरोजन्मकर्मकोकीर्तनगर्नु ॥ मेरोएकादशी
आदिगयाकापर्वकालविषेहर्षउपवासगर्नु ॥ गाउनु. वजाउनु. नाचनु. वार्तागर्नु. उत्पादिकुरालेमेरोउत्सवग
र्नु ॥ सवैवर्षदिनसम्पकापर्वकालविषेयात्रागर्नु ॥ फलभेटिचहाउनु. विशेषलेचातुर्मासिएकादसिविषेउत्त
सवगर्नु. जन्माष्टमीविषेउत्सवगर्नु. वैदिकतात्रिकदीक्षालिजु. मेरोब्रतधारणगर्नु ॥ मेरोप्रजास्थापनागर्नु. वि
षेश्रद्धागर्नु ॥ एकलैमिलिकनभयो. मेरोनिमित्तउद्यमगर्नु ॥ फलढेरैभयाकोवोचा. फलढेरैभयाकोवगेचा.

॥ राम ॥
॥ ६६ ॥

शयलगर्भाठाउवनाउउ॥ पुरभयो. घरभयो. वनाउउ. वढाउ. पोतउ. सर्वतोभद्रलेआलयकोसुसारगर्नु. कपटनगरिदो
समैभैरहनु॥ ३०॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ अभिमाननगर्नुदांभिकनहुनु गयाकुरोकीर्त्तननगर्नु॥ मेरानिमित्तवाला
कोदियोजोछनहेनु हेरियोभम्माउईवातिहालिदियोवालनुश्रकीलेचहायाकोपनिदीयोजोछनलिनु॥ ४०॥ संसा
रमाजोनुकुरोवढीयाछआऊलेनिकोमान्याकोछ. त्योवलुमलाईचहाउउर. अनन्तफलमिलछ॥ ४१॥ सूर्य. अग्नि

मत्तथाश्रवणोश्रद्धामदनुध्यानमुद्धव॥ सर्वलाभोपहरणंदासेनात्मनिवेदनम्॥ ३५॥ मज्जन्मकर्म
कथनंममपर्वानुमोदनं॥ गीतताराववादित्रगोष्ठीभिर्मृहोत्सव॥ ३६॥ यात्रावलिविधानंचसर्व
वार्षिकपर्वसु॥ वेदिकीतांत्रिकैर्दीक्षामदीयव्रतधारिणां॥ ३७॥ समार्चास्थापनेश्रद्धास्वतसंहृत्यचो
द्यमः॥ उद्यानोपवनाक्रीडपुरमद्विरकर्मणि॥ ३८॥ सम्मार्जनापलेपाभ्यांसेकमण्डलवर्त्तनै॥ गृहश्रु
षणामस्यदासवधदमायया॥ ३९॥ अमानित्वमदभित्वंकृतस्यापरिकीर्त्तनम्॥ अपिदीयावलोकं
मेनोपयुज्यानिवेदितम्॥ ४०॥ पश्यद्विष्टमंलोकेयच्चातिप्रियमात्मनः॥ तत्रनिवेदयेन्मह्यंतदानया
यकल्पते॥ ४१॥ सूर्याग्निर्वास्तरोगावोवैष्णवरवंमरुज्जलम्॥ भूरात्मासर्वभूतानिभद्रपूजापदानि
मे॥ ४२॥ सूर्युविद्ययान्नय्योहविषाग्नौयजन्माम्॥ आतिथ्येननुविप्राभ्योगोद्यगयवसादिना॥ ४३॥

वाल्मगा. गार्. वैष्णव. आकाश. वायु. जल. पृथिवी. आत्मा. अरु. सवैष्णविजोछनु॥ कल्याणकनदिन्यापूजागरि
न्यास्थानहुनु॥ ४२॥ सूर्यविषेवेदलेगरिपूजागर्नु. अग्निविषेहोमगर्नु. ब्राह्मणविषेवानदिपूजाहुन्छ. गार्को
घासघानदिपूजागर्नु॥ ४३॥

॥ भा.प. ॥
॥ ६ ॥

वैष्णवहेरुविषे आकाशबंधहेरुविषे रुजि सत्कारगर्नाले ॥ हृदयरूपिआकाशविषे ध्यानगर्नाले वायुविषे प्राणदृष्टिगर्ना
ले ॥ जलविषे जलआदिगत्याकाशव्यले गरि नर्पणगर्नाले ॥ भूमिविषे रहस्यमंत्रकोन्यासगर्नाले आत्माविषे भोगग
र्नाले ॥ सर्वप्राणिविषे वरोवरबुद्धिगर्नाले गरि मेरो पूजागर्नु ॥ सत्संगकाले पाटिपोवावगैचालगाई ॥ षवर्दारिगरी
मेरो पूजागर्नु ॥ सतिगर्नालाई मं विषे वढीया भक्तिमिले ॥ साधुकोसेवागर्नाले मेरो स्मरणहु ॥ ७ ॥ सत्संगले गरि भया

वैष्णवबंधुसत्कृत्यहृदिखे ध्याननिष्ठया ॥ वायोमुखधियातोयेद्रव्ये सोयपुरस्कृतै ॥ ४४ ॥ स्थिति लेमं
त्रहृदये भोगैरात्मानमात्मनि ॥ क्षेत्रज्ञे सर्वभूतेषु समन्वेन यजेत मा ॥ ४५ ॥ विष्णुप्रेष्ठिति मद्रूपं शंख
चक्रगदासु जैः ॥ युक्तं चतुर्भुजं शान्तं ध्यायन् चैतमाहित ॥ ४६ ॥ इष्टापूर्त्तनमासेव योयनेत समाहि
तः ॥ लभेत मयि सद्भक्तिं मत्स्मृतिसाधुसेवया ॥ ७ ॥ प्रायेण भक्तियोगेन सत्संगेन विनोदकः ॥ नोपा
ये विद्यते सम्यक् प्रायणहि सतामहं ॥ ४८ ॥ अथैतत्परमं गुह्यं शृण्वतो यद्वनन्दनः ॥ सुगोप्यमपि व
क्षामित्वमोभृत्यः सुहृत्सखा ॥ ४९ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

काभक्तियोगदेविदोस्त्रोउपायजोछ ॥ संसारतर्दविषे हेउद्धवछैन ॥ सज्जनहेरुकोमजोछ आश्रयछ ॥ अवज्ञाहाउपात्र
हेउद्धव ॥ प्रकाशगर्नयोग्यर्नभयाको ॥ अतिगोप्यभयाकोकुरो ॥ मतिमिलाई कहंछु सुन ॥ मेरातिमिभृत्यछौ ॥ वहुनै
हीतगर्नासखापनिछौ ॥ भनिकहंछु सुनभनि ॥ कल्पलेउद्धवकनआज्ञागयाकोकुराजोछ ॥ भुकदेवलेराजापरीशि
तकनआज्ञागया ॥ सतलेशोनकादिअपिहेरुछेउआज्ञागर्दाभया ॥ ४९ ॥ इति श्रीभाग० एकादशस्कंधे भाषायां

॥ ११ ॥
एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

॥ राम ॥
॥ ६७ ॥

भगवान्कृष्ण आज्ञागर्णलाग्वा ॥ हे उद्धव सुन ॥ असन प्राणायामादि गत्या को योग भयो ॥ सांख्यज्ञान भयो ॥ अहिंसादि धर्म भयो ॥ साध्यायणादितपस्या भयो ॥ संन्यास भयो ॥ अग्निहोत्रादियज्ञ भयो ॥ कुवावनाउतु भयो ॥ वगैत्रिचावनाउतु भयो ॥ दक्षिणा भयो ॥ एकादशादिव्रत भयो ॥ देवताको पूजा भयो ॥ गोप्यमंत्र भयो ॥ तीर्थ भयो ॥ नियम भयो ॥ एतिकुराले गरिजलोसत्संगले ॥ सवैसंगको हरि गरिमलाइवसकनगछ ॥ तलोवसकनगर्नसत्तै नर ॥ २ ॥ हे उद्धव सत्संग

श्री भगवानुवाच ॥ नरोधति मां योगेन सांख्यं धर्मं एव च ॥ न साध्यायस्तपस्या गोनेष्टा पूर्णानंदक्षिणा ॥ १ ॥ व्रतानियतछंदसि तीर्थानि नियमायमा ॥ सत्संगेन हि दैत्येयाया तु धानामृगाः ॥ गंधर्वा अप्सरा मोनागाः सिद्धचारणा गृहका ॥ ३ ॥ विशाधरामनुष्येषु वैश्यः शूद्राः स्त्रियोऽन्यजाः ॥ खगाः ॥ रजस्तमप्रकृतयस्तस्मिंस्तस्मिंस्तु गेयुगे ॥ ४ ॥ वहवो भूतपदं प्राप्तास्त्वास्तु कायाधवादयः ॥ वृषपर्ववलिर्वाणो मयश्चाथ विभीषणाः ॥ ५ ॥ सुग्रीवो हनुमान् चक्षोराजो यश्चो वणिकपथः ॥ व्याधः कुव्राजे व्रगोप्यो य

॥ जयत्पत्न्यथापरे ॥ ६ ॥

ले गरि ॥ दैत्य भया ॥ राक्षस भया ॥ गंधर्व भया ॥ अप्सरा भया ॥ नाग भया ॥ सिद्धचारणा ॥ गृहकगरा भया ॥ ३ ॥ विशाधरगरा भया ॥ मनुष्यविषे ॥ वैश्य ॥ शूद्र ॥ स्त्री ॥ अन्यजाति ॥ रजोगरा स्वभाव भयाका ॥ रत्नाढेरैयुगयुगविषे ॥ ४ ॥ मेरापदकनप्राप्त भया ॥ व्रतासुरदैत्य भयो ॥ विभीषन भया ॥ ५ ॥ सुग्रीव भया ॥ हनुमान भया ॥ जाम्बुवागाभालु भया ॥ गजेन्द्र भयो ॥ जटायुग्रीध्र भया ॥ तुलाधारवनिजा भयो ॥ धर्मव्याध भयो ॥ कुव्राभ ॥ ईश्वरजविषे गोपिनी हेरु भया ॥ यज्ञगर्णा बालरा हेरुका बालरा हीरु भया ॥ ६ ॥

॥ भा. प. ॥
॥ ६८ ॥

सत्ताईसवैजना वेदपनिनपद्माका वडाजनको सर्वापनिनगयाका वतभयोतपस्याभयो केहिनगयाकापनि सत्स
गरि मंकनपाउंदाभया ॥ ७ ॥ केवलवडोभावनागर्नाले गरि गोपिनी हेरु यमलार्जुन वृक्ष हेरु गाई हेरु अरुजोको
हिमूर्ख जीव हेरु कालीय सर्प भयो ईसवै सिद्ध भयाका छुंदा सुखैले गरि मकनपाउंदाभया ॥ ८ ॥ योगले सांख्य
ज्ञानले दान वत नपस्या यज्ञगर्नाले व्याख्यानगर्नाले वेदपहर्नाले संन्यासले इत्यादिगर्नाले गरि वदायत्तलेप

तेनाधीतश्रुतीगणानोपासीतमहत्तमाः ॥ अवतातप्तनपसः सत्संगाया सुपागताः ॥ ७ ॥ केवलेन
हिभावेन गोप्योगावोनगामृगा ॥ येनैमूढधियोनागाः सिद्धामामी पुरंजसा ॥ ८ ॥ यन्नयोगेन सांख्ये
नदानवततपोधरे ॥ व्याख्या स्वाध्याय संन्यासैश्चापुया यत्नवानपि ॥ ९ ॥ रामेण सार्द्धं मथुरां प्रणी
तेश्चाफलिकिनामप्यनुरक्तचिन्ताः विगाढभावेन न मे वियोगती बाधयोदइभुः सुखाय ॥ १० ॥ ता
साः क्षयाः प्रेष्टतमेन नीता मयैव वृन्दावनगोचरेण ॥ क्षणार्धवन्ना पुनरंगतासां हीनामया कल्पसमावुभू ॥

निजस्कनपांउनुछैन ॥ तत्तामकनपाउंदाभया ॥ ९ ॥ हेउद्धव वलदेवले सहितभयाकामकन अक्रूरलेगोकु
लदेविमथुरामालैज्यां दामा ॥ वडाप्रेमले अति आसक्तभयाको चिन्नभयाको ॥ मंसंगको विछोड हुनाले मन
मतापर्माभयाका गोपिनि हेरुले अरुवसुकन सुखगराउन्दा देष्पान थ्या ॥ सत्तागोपीनी हुन ॥ १० ॥ हेउद्धव वृन्दा
वनविषे किर्णामपियारालै संगरहदा विषे निशरकालकारा विजो थिया क्षणको आधारु त्रिपनिलाग्दैन थ्या

॥ रप ॥
॥ ६८ ॥

उनैरात्रिजोछन् मैलेहीनहुनाले गोपिनीहेरुकन कल्पसमानलागनलाग्ना मविषेचित्रलगाउनाले तिगोपिनीहे
रुलेआकादेहकनपनिजान्दाभयानन जसैसमाधिगर्दविषेमुनिहेरुजोछन् नामरूपजगतकनजान्देनन स
मुद्रमापस्याकेनदीहेरुजानिन्देनन तसैदेहकनटाढाछन्जीकछुसलोकेहिजान्देनथा ॥१२॥ मेरोस्वरूपकन
चित्ताभयाकागोपिनीहेरुजोछन् मेरोकामनाभयाकाछन्दा साक्षाब्रह्ममकन जारबुद्धिगरियाउदाभया एतै
प्रकारलेमेरोसगलेगरि ठेरैलेमलाइपाउदाभया ॥१३॥ तस्काराहेउद्धव तिमिपनिश्रुतिस्मृतिसवैछोडि प्र

जानाविदनुमय्यनुषंगवद्धधियः स्वमात्मानमदस्मथेदम् ॥ यथासमाधौमुनयोचितोयेनद्यःप्रविष्टा
इवनामरूपे ॥१२॥ सत्कामारमरांजारमस्वरूपविशेवला ब्रह्ममापरमं पापुःसंगाछतसहस्रसः ॥१३॥
तस्यान्तमुद्धवोत्सृज्यचोदनां प्रत्यचोदनाम् ॥ प्रवृत्तेच निवृत्तंच श्रोतव्यश्रुतमेवच ॥१४॥ मांमेकमेव
शरणांमात्मानं सर्वदेहिनाम् ॥ याहिसर्वात्मभावेनमयास्याह्यकुतोभयः ॥१५॥ श्रीउद्धवउवाच ॥ सश
यः श्रुत्वावतोवाचतवयोगेश्वरेश्वरः ॥ ननिवर्त्तेतन्मात्मस्थोयेनभ्राम्यतिमेमतः ॥ १६ ॥ छ ॥

प्रवृत्तिनिवृत्तिमार्गछोडिसुनियाकोसुत्राकनयोगभयाका ईसवैछोडिसवैकोअंतर्यामि ॥१४॥ मरुकेकार
णपरर मैलेगरितिमिलाईभयकटैवाटहत्तैनभनिभगवानुलेआज्ञागयार उद्धवजोछन्विंतिगछन् ॥१५॥ हेभ
गवन् हेरुहन् अधिभयाकर्मगर्तुभनुभयो ॥ अहिलेभन्या सर्वकर्मछाडिमेराशरणामारहुभन्या ॥ एतातपाजिका
वचनसुन्दामामनकोसंदेहजोछमेटिन्देन ॥ जोन्संदेहलेमेरामनजोछद्युम्छभनिउद्धवलेविंतिगयारभगवान्क
ह्मजोछन्आज्ञागर्नलाग्ना ॥ १६ ॥

॥ भा. प. ॥
॥ ६६ ॥

हे उद्धव सुन ॥ मेरा वचन को तात्पर्य ॥ ईश्वर जो छ आ क्री माया ले गरि प्रपंच रूप ले प्रकाश छ ते सै प्रपंच को अभ्यास गर्ना ले ॥
अनादि अविद्या ले गरि जीव का कर्तृत्वा दि धर्म हुं छन ॥ ताहा प्राज्ञ विधि विषे ध को अधिकार हुं छ ते सकाल मादे हम
न सुद्ध हव सुभन्ना निमित्त कर्म कन भन्ना को हो ॥ मन शुद्ध भया विषे कर्म माला गिन रहसु ॥ कर्म को भा दर न गरि व
डा विश्वास ले भजन गर सुभन्ना को हो ॥ विद्या भया प्राज्ञ के हि कर्तव्य गर्नु पदै न भन्ना को हो ॥ ताहा विषे ईश्वर देखि
वा कइ द्रिय को द्वार गरि जीव को संसार मा कारण भया को ॥ प्रपंच को उत्पत्तिक न भं छन ॥ हे उद्धव यो परमे श्वर
जो छ साक्षात्कार छ ॥ मूलाधार स्वाधिष्ठान मनि प्ररक अनाहत आत्मा चक्र विषे छ ॥ प्रकाश ज स्को छ ॥ पराना
मा प्रवेश गर्छ ॥ ताहा पछि भयं माना ॥ माना द जो छ ॥ विशुद्धि चक्र मा प्रवेश गरि मुख मा पुगि मात्रा हू सादि उदात्ता

श्री भगवानुवाच ॥ सर्व जीव विवर प्रसूति प्राणेन घोषेण गुहां प्रविष्टः ॥ मनो मयं सूक्ष्म सुषेत्परूपं
मात्रा स्वरो वर्ण इति स्थितिः ॥ ११ ॥ यथानलः सेनिल बंधुरूपः ॥ बलेन दारुण पथि मथ्यमानः ॥ शृणुः प्र
जातो हविषा समिध ते तथैव मे व्यक्तिरियं हि वारणी ॥ १८ ॥

॥ दिस्वर अकारा दिवर्णा ककारा दिव
र्ण रूप ले सवैले सुनिया को ॥ वैषरी नामा द जो छ ॥ भति डुलो भया को छंदो ॥ नाना वेद शाखा स्वरूप हुं छ ॥ ११ ॥
प्रकाशन भया को पनि ॥ सूक्ष्म मध्यम कम ले प्रकाश हुं छ भन्ना कुरा मान भं छन ॥ हे उद्धव ज ते अग्नि जो छ आकाश
विषे प्रकाशन भया को उ अ रूप ले गरि रक्षा को दारुवा लाई ॥ बल ले मथन गर्दी विषे ॥ वायु सहाय भया को छंदो
अति साजु जइ नारूप निस्कं छ ॥ फेरि डुलो भया को धिउ हालि दिदा वढ दछ ॥ त सै मेरो वारणी जो छ कम ले गरि प्र

॥ रा. प. ॥
॥ ६६ ॥
काश हुं छ ॥ १८ ॥

हेउद्धवस्रसैप्रकारलेबोलनुजोछ. मेरोप्रकाशहो. वागिन्द्रियकोकार्यवाणीहो. हातकोकर्मजोछकार्यकहिंछ. गति
जोछपाउकोचरिहो. विसर्गजोछ. कारउपस्थिन्द्रियकोचरिहो. गंधलिनुषाराइन्द्रियकोचरिहो. रसलिनु रस
नेन्द्रियकोचरिहो. नेत्रकोहेनुत्वगिन्द्रियकोस्पर्शगर्तु. काराकोमुनुचरिहो. संकल्पजोछमनकोचरिहो. वि
ज्ञानजोछबुद्धिकोहो. अभिमानजोछअहंकारकोचरिहो. सूत्रजोछप्रधानकोहो. सत्वरजतमहेरुकोअधि
दैविक. अधिभौतिक. अध्यात्मिक. इतिनप्रकारकोप्रपंचजोछचरिहो. परंतुयोसवैमेरोप्रकाशहोभनिजानु
॥ १८ ॥ तसअर्थहेउद्धव ईश्वरदेविप्रकटभयाकोयोजोकोहिप्रपंचजोछ. ईश्वरदेविभिन्नछैनभनिभन्नुसु

स्वंगदिः कर्मगतिर्विसर्गो घ्राणो रसो दृक् स्पर्शः श्रुतिश्च ॥ संकल्पविज्ञानमथाभिमानः सूत्रं र
जः सत्त्वतमो विकारः ॥ १९ ॥ अयं हि जीवस्त्रिदृक् त्रयो निरव्यक्तस्को वयसा स आयः ॥ विश्लेष
शक्तिर्वहुर्धेवभाति वीजानि योनिप्रतिपद्यत ॥ २० ॥

॥ न यो ईश्वरजोछ. पैलेप्रकाशनभ
याकोरुकैथियो. काललेगरिछुटियाकाछन्. वागिन्द्रियहेरुजस्का. अथवाभालिंगनगयाकोछ. मायाशक्तिजस्के
रुसोछदानानाप्रकारजिभैप्रकाशहुंछ. जस्कारण. सोहिआयईश्वरजोछसत्त्वगुण. रजोगुणतमोगुणतीनगु
णकोआश्रयभयाको. लोकरूपीकमलको. जसैयेतमावीजपछर. नाज्जिदेविन्छ. तसैरुकैयनिईश्वरजोछ
नानादेविन्छ. हेउद्धवतस्कारण. ईश्वरदेविउत्पन्नभयाकाजगतकन. ईश्वरदेविभिन्नमानुभन्नाकुरामादृष्टान्त
गरिभंछुसुन. जेलोकपराजोछ. ठाडातछाधागामाउनीइवनायाकोहुंछ. तसैजोनईश्वरविवेउनियाकोछरसै.

॥ भा.प. ॥
॥ ७० ॥

यो संसाररूपी वृक्ष जो छ ॥ प्रवृत्ति निवृत्ति कर्म को स्वभाव भया को अति पुरा नु भया को छंदो ॥ भोग र मोक्ष रूप फल कन उ
त्पन्न गर्छ ॥ स संसार कन वृक्ष रूप ले गरि वर्णान् गर्छन् ॥ २० ॥ २१ ॥ हे उद्धव ॥ यो संसार रूपि वृक्ष का पुरा पर पा पडु ईवी
ज छन् ॥ सन्निहन् भनि न सकना छन् वासना रूपी जना जस्का सत्वर जतम इति नै गुण छन् ॥ दुला हांगा जस्का ॥ यथि
वीज पुते ज वायु आकाश ई पाच भूत छन् ॥ सा ना हांगा जस्का ॥ रूप रस गंध स्पर्श शब्द ई पाच रस को छ ॥ उत्पत्ति
जस्का मन समेत स पार ह छन् ॥ इन्द्रिय रूपी रसाना हांगा जस्का जीवर परमात्मा को छ गुड जस्का ति न छन् वात पित्त श्ले

यस्मि निदं प्रोतम शेष मोतं पथो यथा तंतु वितान संस्थ ॥ य एष संसारजरूः पुराणाः कर्मात्मनः सुष्य फ
ले प्रसूते ॥ २१ ॥ हे अस्य वीजेश तमूलं स्त्रिनालः पंचसंधः पंचरसः प्रसूतिः ॥ दशैकशारेणोदिसुपर्णनीद
स्त्रिवल्फलोद्विफलोर्कप्रविष्ट ॥ २२ ॥ अदंति चैकं फलमस्य ग्रीध्रायामेव रासकमररापवासाः ॥ हंसा यस्य
कंवद्वरूपमिज्यैर्मायामयं वेदसवेदवेदम् ॥ २३ ॥

॥ य रूपि वीजा जस्का सुख दुःख दुई छन् पल
जस्का ॥ ए सौ संसार रूपी वृक्ष जो छ ॥ सूर्य मणाले सम्पदा प्रग रिरखा को छ ॥ २२ ॥ अब हे उद्धव ॥ संसार रूपी वृक्ष का फ
ल को भोग गर्ना हे रुकन भंडु मुन ॥ ठे रै विषय भोग को इछा गर्ना भया का गृहस्थी प्राणि हे रु जो छन् ॥ संसार रूपी छै
कामा परि सुष रूप फल कन पां छन् ॥ जो त विवेकि वन वासि परम हं सह रु जो छन् ॥ सो सुख रूप फल कन पां छन् ॥ माया
ले गरि नाना रूप भया का ॥ ए स्ता एकै परमात्मा कन गुरू का उपदेश ले गरि ॥ जो न प्राणि जान्द छन् ॥ २३ ॥

॥ राम ॥
॥ ७० ॥

हेउद्धवतिमिजोछो॥गुरुकोउपदेशलेगरिवशेभक्तिगर्नाले॥भतिनिषोभयाकाज्ञानरूपीकुठारले॥लिंगशरीरकनकाटिक
नेपरमात्माकनभेदाईकनसावधानभेदैर्यलेगरि॥जोनउपायलेगरिपरमात्माकनभेदाईकनभंछन्सोउपाय
पीविद्याकननछोड॥२४॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणोएकादशस्कंधेभाषायांद्वादशोऽध्यायः॥१२॥विशारूपीकुठारले
लिंगशरीरकनकाटिउपायकनछोडभन्नुभयो॥सत्वरजतमश्नादिगयाकागुणकावृत्तिहेरु॥विघ्नछदाविषेकसोगरि
विशाकोउत्पत्तिहोलाभनौलान॥हेउद्धवविद्याकोउत्पत्तिहुन्याप्रकारकनभंछुसुन॥सत्वरजतमगुणजोछन्प्रकृतिका

एवंगुरुपासनयैकभक्त्याविद्याकुठारेणशितेनधीरः॥विवश्वजीवाशयमप्रमत्तःसंपद्यचात्मानमथत्य
जास्वम्॥२४॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणोएकादशस्कंधेद्वादशोऽध्यायः॥१२॥श्रीभगवानुवाच॥सत्वर
जसमइतिगुणाबुद्धेर्नचात्मनः॥सत्वेनान्यतमोहस्यात्सत्वंसत्वेनचैवहि॥१॥सत्वाद्वर्माभवेद्धृदासं
सोमद्रक्तिलक्षणा॥सात्विकोपासयासत्त्वततोधर्मप्रवर्त्तते॥२॥धर्मो रजसमोहंन्यात्सत्त्ववद्विरजो
त्तमः॥आशुनश्यतितन्मूलोऽयधर्मउभयेहते॥३॥

हुनआत्माकाहोइनन्॥सत्त्वगुणालेगरि॥रजोगु
णालेगरि॥रजोगुणतमोगुणकनपरफाल्गुउपशमवृत्तिलेगरि॥सत्यदयादिवृत्तिभयाका॥सत्त्वकनजित्तरजो
गुणतमोगुणहराया॥सत्त्वगुणवद्वोभया॥पुरुषका मेरोजभलेभक्तिहुंछस्सोधर्मजोहुंछ॥सात्विकवस्तुकोसेवा
गर्नालेसत्त्ववद्वेताहाप्रान्नधर्मकोप्रवृत्तिहुंछ॥१॥२॥त्योधर्मजोछरजोगुणतमोगुणकोनाशगछ॥जोनधर्ममा
वडोसत्त्वगुणकोवृद्धिछ॥हेउद्धव॥रजोगुणतमोगुणहरायापछिरजोगुणतमोगुणकोकारणभयाकोअधर्मजो

छ. नोपनिहराउंछ. सत्वगुणकनवढाउमाउपायकहनाकन. सामान्यरूपले गरि. निनै गुणका वसिका हलुकन आत्ताग
छन् हेउछवनिवृत्तिमार्गकोशास्त्रभयो. तीर्थजलभयो. निवृत्तिमार्गमालाग्याकाप्रजाभया. एकान्तदेशभयो ब्राह्मीमु
रूत्रादिकालभयो. धर्मभयो. जन्मभयो. ध्यानभयो. मंत्रभयो. संस्कारभयो. एतिदशजो छन् गुणकाकारणछन्. ३
॥ ४ ॥ एतिदशकुराविषेजो न. कनवद्धहेरुवढीयाभनिवर्णनगछन्. तेसैकनसात्विकर्मभन्नु. वद्धहेरुले. जस्क
ननिन्दागछन्. ताममधर्मतेसैलाई भन्छन्. वद्धले निन्दापनि सुतिपनि नगरियाको धर्मजो छ. राजसधर्म कहिंछ

आगमोयः प्रजादेशः कालः कर्मचजन्मच. ध्यानमंत्रोथसंस्कारोदशैते गुणाहेतवः. ४ ॥ आगमोयः प्रजो
थः कालः कर्मचजन्मच. ध्यानमंत्रोथसंस्कारोदशैते गुणाहेतवो. ४ ॥ तत्रसात्विकमैवैषां यथवृद्धाप्र
चक्षते. निन्दन्ति तामसंततद्राजसंतद्रूपेक्षितम्. ५ ॥ सात्विकानेवसेवेतपुमास्तत्त्वविद्वद्ये. ततो
धर्मस्ततो ज्ञानं यावत्स्मृतिरपोहनम्. ६ ॥ वेगवसंघर्षजो वह्निदग्धाशाम्यतितद्वनं. एवं गुणावत्ययजो
॥ देहः शाम्यतितक्तिय ॥ ७ ॥

५ ॥ तत्कारणहेउछव. सत्वगुणवढम्. भन्नानिमित्त. निवृत्तिमार्गकोशास्त्रको
सेवागर्तु. प्रवृत्तिमार्गकोशेवानगर्तु. तवधर्महुंछ. ताहापछिज्ञान. मोक्ष. लिंगशरीरस्थूलशरीरकाकारणभयागुण
कोनाशभै. आत्माजोछ. चिहजाहासम्मसकिंदैन. ताहासम्मरहंछ. ६ ॥ वासकावनमा. बांसहेरुघसिनालेउत्पन्नभया
कोभग्निजोछ. तेसबांसकावेन. उडाईकनशातहुंछ. एतै प्रकारले सत्वादिगुणाहेरुले गरिभयाको देहजोछ. देहका
अधारभयाकागुणकनआकैउत्पन्नभयाकाविद्याले गरिनाशगरि. आकैशान्तिकनपाउदछभनिआत्तागयाभगवान्
लेरउछवजोछन्विनिगछन्. ७ ॥

हेरुस्रदेरैमनुष्यजोछन विषयहेरुकनआपनिकास्थानहुनभनिवारंवारकहंछन॥तैपनिकुकरगदाहावाघ्राज्जिग
रि विषयकोभोगकनकसोगरिगछंनभनिसोधाउद्धवले॥भगवानकस्रआज्ञागर्नलाग्णा॥८॥हेउद्धवविवेकनभ
याकादेहादिविषेकुठोभयाकोअहंबुद्धिजोछहृदयविषेउत्पन्नहुंछ अहंबुद्धिभयाप्रांत्त सत्वमुखभयाकोपनिम
नजोछअतिभयगर्नारजोगुणकनप्राप्तहुंछ॥९॥रजोगुणिमनदेविभोग्यवल्लुहहिछभन्यानिश्चयरूपकल्पहुं

उद्धवउवाच॥निन्दन्निमन्त्राःप्रायेणविषयान्यदसापदाम्॥तथापिभुंजतेकस्रतंकथंश्वखराजवत्॥१०॥
श्रीभगवानुवाच॥अहमित्यन्यथाबुद्धिःप्रमत्तस्ययथाहृदि॥उत्सर्पतिरजोघोरततोवैकारिकंमन॥९॥
रजोयुक्तस्यमनसःसंकल्पःसविकल्पकः॥ततःकामोगुणाध्यानादुःसहंस्याद्विदुर्मतेः॥१०॥करोति
कामवशातःकर्मण्यविजितेन्द्रियः॥उःखादकानिसंपश्यन्रजोवेगविमोहितः॥११॥रजस्तमो
भ्यांयदपिविद्वान्विक्षिप्तधीःपुनः॥अतंद्वितोमनोयुंजनदोषदृष्टिर्नसज्जते॥१२॥ ७॥

छसुन्दररूपरहेछभन्याससोगुणकोध्यानगर्नलेथामिनसक्तकामदेवउत्पन्नहुंछ॥१०॥कामकावसमाप
याकोरजोगुणकोवेगलेमोहितभयाकोइन्द्रियजित्ननसक्तभयाकोप्राणिजोछ॥विषयभोगगरुंभनानिमि
त्तपछिउःखदेरैहुन्याभनिजानेपनिकर्मकनगछं॥११॥हेउद्धवरजोगुणलेमूढबुद्धिभयाकोप्राणिजोछ॥प्राणि
तछुभन्यादोषछभनिदेवनालेअलसिनगरिमेराचरणमाचिन्नलगाउदोछदोवहुहुदैन॥१२॥ १२॥

॥ भा. ए. ॥
॥ ७२ ॥

हे उद्धव मेरा शिष्य सनकादि हेरुलाई जसोगरि सब सिष्य देषि मन कन धैचि साक्षात् मविषे लागछ ॥ ए सो योग जो छ-
वता जों था ॥ १३ ॥ साधधान भै सु सो सु सो म विषे मन कन लग उनाले तस्का लमा ॥ प्राणा जिति आसन जिति अल्सिन
गरि परमानन्द रूप विषे मन लाउनु ॥ १४ ॥ भनि आज्ञा गया कृष्ण लैर उद्धव जो छन विंति गर्न लागण ॥ हे केशव जो न काल
मान रूप लिकन सनकादि हेरुलाई यो छन आज्ञा गर्नु भया को हो मोहिरूप मलाई जाना को इछा भई रहै छ आज्ञा गर भ

एतावानो ग आदिष्टो म छिष्टोः सनकादिभिः ॥ सर्वतो मन आकृष्ट मय्य द्वावेश्यते यथा ॥ १३ ॥ अप्रमत्तो
जुयं जीत मनो मय्यर्पय छनैः ॥ अनिर्विस्मो यथा काल जीतश्चासौ जितासन ॥ १४ ॥ श्री उद्धव उवाच ॥ य
दा त्वं सनकादिभ्यो येन रूपेण केशव ॥ योगमादिष्टवाने तद्रूपमिच्छामि वेदिनुम् ॥ १५ ॥ श्री भग
वानुवाच ॥ पुत्राहिरण्यगर्भस्य मानसासनकादयः ॥ प्रप्रच्छन्ति तं सूक्ष्मां योगस्यैकान्तिकिं निम्न
सनकादय उचुः ॥ गणेशा विसते वेता गुणाश्चेतमि च प्रभो ॥ कथमन्योन्य सत्या गोमुमुक्षोरति तीर्षयः ॥

नि उद्धव ले विंति गयार ॥ श्री कृष्ण जो छन आज्ञा गर्न लागण ॥ १५ ॥ हे उद्धव ब्रह्मा कामानसि कछोरा सनकादियो
गी हेरु जो थिया ॥ अति सूक्ष्म भया कियो ग गती कन ॥ आका वा वो ब्रह्मा का चरण मा प्रणाम गरि कन सो ददा भ
या ॥ १६ ॥ हे ब्रह्म नु विषय मारा ग प्रीति ले गरि चित्र जो छ प्रवेश गछ ॥ अनु भगव गरिया का विषय हे रूप निवा
सना रूप ले गरि चित्र मा प्रवेश गछन ॥ विषय छोडि मोक्ष को इक्षा गछन ॥

॥ राप ॥
॥ ७२ ॥

एस्तो प्रकारले प्रह्नको खरातगर्ना काछलले गरि। सामान्य रूपले आत्मस्वरूपको निश्चय गयार। ब्रह्मले पनि दुःखले उत्तर
गरिन सक्याका प्रह्नका उत्तर कनगर्न लाग्या। कर्तृत्व भोक्तृत्व रूपले गरि विषयसंग बांधियाको चित्र जो छ बुझा
दिशब्दले भनियाको तेहि जीवस्वरूप हो भन्या। विषयको छुटि नुहै सकैन। जीवको स्वरूप न मंत्र ब्रह्म चित्रको अभ्यास
ले गरि चित्रको स्वभाव लि विषयसंग बांधियाको जानु। एस्कारण आहु ब्रह्म रूपको भावना गरि। विषय हेरुलाई नु
ठाको भावना गरि। सबै विषय देखि वैराग्य भै भगवान्को भजन गर्नालाई परिपूर्ण स्वरूप वस्था हुन्छ। हेसनका

गुणोष्ठा विशते चेतो गुणाश्चेतसितप्रजाः। जीवस्य देह उभयं गुणाश्चेतो मदात्मन॥ २५ ॥ गुणोष्ठा
विशच्चित्रमभीक्षां गुणसेवया। गुणाश्च चित्रप्रभवामदुप उभयं त्यजेत्॥ २६ ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषु
प्तं च गुणतो हृदि वृत्तयः। तांसां विलक्षणो जीवः साक्षित्वेन विनिश्चीतः॥ ३ ॥

दिहो साचोहो विषयमाचित्रलाग्नाको छ। विषय हेरुपनिवासनारूपले चित्रमा लाग्याका छन्। एस्तै प्रकार
ले मन र विषय जो छन् बांधियाका छन्। ब्रह्मस्वरूप जीवको छ। अभ्यास गरियाको उपाधि हो स्वरूप है न॥ २५ ॥ वा
रंवार विषयो वासगर्नाले संस्कारले गरि विषयमा चित्र छ। वासनारूपले गरि विषय जो छन्। एस्तो गरि बांधिया
का चित्र र विषय कन मंत्र ब्रह्म रूप हुं भन्या भावनाले गरि छोडि दिनु॥ २६ ॥ हेसनका दिहो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति ईतीन जो
छन्। गुणले गरी भयावृद्धिका वृत्ति हुन्। जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति एस्कावृद्धिका वृत्ति देखि भिन्न भयाको जीव जो छ साक्षि भ
नि निश्चय गरियाको छ॥ ३ ॥

॥ भा. ॥
॥ ७३ ॥

जाग्रत् आदिगयाकावृत्ति आत्माकाहै ननु भन्त्या मं जाग्रद्गर्भभन्त्या ॥ एतौ व्यवहारकसो गरिहुं छ भनौ लातु न ॥ तस्कारणा
बुद्धिले गरिवां धिनु जो छ आत्मा लाई सत्वादिगुण ले गरि भयाका ॥ जाग्रत् आदिगयाका धर्म कन दिन्छ ॥ तस्कारणा तु
रीय अवस्था स्वरूप भयाका में विषे रखा को छंदो ॥ यो बुद्धिले भयाका वंधन कन छोडि हालतु ॥ तसकाल मा चित्त को
र विषय को छुटिनु आफै हुन्छ ॥ बुद्धिका धर्म मा अहंकार गर्ना ले गरि भयाको आत्मा को आनन्दादि धर्म कन ठाकि

यहिं संमृति वंधो यमात्मनो गुणवृत्तयः ॥ मयितुर्ये स्थितो जह्या न्यागस्तङ्गुणाचेतसाम् ॥ २८ ॥
अहंकारकृतं वंधमात्मनो र्थविपर्ययम् ॥ विद्वान्निर्विद्यसंसारचित्तानुर्ये स्थितस्त्यजेत् ॥
॥ २९ ॥ यावन्नानार्थधीः पुंसो न निवर्तेत युक्तिभिः ॥ जागर्त्यपि स्वपन्नतः स्वप्ने जागरणं यथा ॥ ३० ॥

अनर्थको कारणा भयाको वंध हो भनि जो छ ॥ वैराग्य गरि में विषे रखा को छंदो ॥ संसार की चिंता कन छोडि हालतु ॥
जाहा सम्म जुक्तिले गरि पुरुषा को नाना बुद्धि हरउंदैन ॥ जाहा सम्म भजो नि जो छ ॥ सपना मा जागरण भया रुजिकर्म
गछ ॥ जाग्रत् भन्त्या पनि सुत्ता को हो भनि जानु ॥ वेद ले वनायाका वर्ण आदि गयाका ॥ नाना धर्म विषे ला गया को बु
द्धि जो छ ॥ कसो गरि निवृत्ति होला भन्त्या सुन ॥ देहादि भया देहादिले गरि भयाको वर्ण आश्रम भयाई सवै कुरा जो छ

॥ राम ॥
॥ ७३ ॥

न सपनामादेष्याकावलुहन्निआत्माकाव्यर्थछन्॥ वेदजोछसोपनिअज्ञानिहेरुलाईनिर्वाहगराउन्गामात्रहो॥ ३१॥ जौन
आत्माजोछ॥ सवैइन्द्रियहेरुलेगरिसाक्षात्यक्षदेवियाकाक्षणाक्षणमानाशङ्क्या॥ वालनारुणअदिगयाकाधर्मलेयु
क्तभयाका॥ सत्तास्थूलदेहादिहेरुकन॥ जाग्रत्समयविषेभोगकनगछ्छ॥ सपनाविषेमनमावासनालेगरिरह्याका
दिनमादेष्याका॥ वरोवरभयाकावलुकनजोभोगगछ्छ॥ सुषुप्तिमासंहारकनजोगछ्छ॥ सोआत्माजोछ॥ सत्वरजतमेईतीन
गुणलेभयाकावुद्धिका॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिआदिगयाकावृत्तिकनदेव्या॥ इन्द्रियकोईश्वरभयाकोरुक्छ॥ ३२॥

असत्वादात्मनानेषांभावानांतत्कृताभिदा॥ गतयोहेतवश्चास्पृष्टास्वप्नदृशोयथा॥ ३१॥ योजाग
रेवहिरनुक्षणाधर्मिनोर्थान्भुक्तेसमस्तकरणौर्हृदितत्सदृक्षात्॥ स्वप्नेषुसुप्नुतयसहरतेसप्तकः
स्मृत्यन्वयात्रिगुणावृत्तिद्विगिन्द्रियेशः॥ ३२॥ एवंविमृश्यगुणातोमनसस्यवस्थामत्माययामपिक्ल
ताइतिनिश्चितार्थाः॥ संछिद्यहार्दमनुमानमडुक्तीतीक्ष्णज्ञानासिनाभजतमाखिलसंशयाधीन॥ ३३॥

समैप्रकारसंगगुणालेगरिभयाकामनमा॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिईतिनअवस्थाजोछन्॥ मेरिमायालेगरिमंजीव
विषेगयाकाहुनसांचाहैनन्भनिविचारगरि॥ सत्यभन्याआत्मामात्रहोभन्यासत्तोनिश्चयलेगरि॥ हेसनकादि
हो॥ अनुमानभयो॥ सज्जनकोउपदेशभयो॥ श्रुतिभयो॥ इनैलेगरि॥ तीखीभयाकाज्ञानरूपीखड्गलेगरि॥ मनमार
ह्याकाअहंकारकनकोटिमेरोभजनकनगर॥ ३३॥ अनुमानलेभन्याथा॥ साहिअनुमानकनदेवाउंछन्॥ हेस

॥ भा. ॥
॥ ७४ ॥

नकादिहो मनले कल्पना मात्र गरिया को हुनाले स्वप्न त्रिहुनाले अति चंचल हुनाले यो देषिया को जगत् जो छ ॥ भ्रान्ति रू
पविला समात्र देषु उडोरि मास र्प को भ्रान्ति हुन्छ ॥ जगत् छुदै छैन भन्या भ्रान्तिक सो गरि होला भनौला त सुन ॥ एकै विज्ञा
न जो छुनाना त्रिप्रकाश हुन्छ ॥ तस्कारण का सृष्टिले गरि भया को तीनु प्रकार को यो भेद जो छु सवै माया हो ॥ तसुनि
मित्र हे मन कादिहो ॥ यो दृश्य संसार देषि दृष्टि फिर्साई कन ॥ तृष्णाले हीन भई कन मन वचन देह का व्यापार ले हीन
भैनु पला गिरहु ॥ देह धारिका सर्वथा संसार देषि दृष्टि न फिर्नाले फेरि संसार जो छ होला भन्या सुन ॥ नगरि

ईक्षेत् विभ्रममिदं मनसो विलासं ॥ दृष्टं विनष्टमति लोलमला तचक्रम् ॥ विज्ञानमेकमुरुधेव निभा
निमाया ॥ स्वप्नस्त्रिधा गुणविसर्गकृतो विकल्पः ॥ ३४ ॥ दृष्टं तद्विस्तृतः प्रतिनिवर्त्य निवृत्त तृप्तः
सूक्ष्मी भवेत्तिजमुखा नुभवो निरीहः ॥ संदृश्यते कचयदिदमवलुबुद्ध्या त्यक्तं भ्रमाय न भवेत्स्मृति
॥ रातिपातात् ॥ ३८ ॥

नहुन्या भया का आहारा दिविषे देषि छुत पनि पहिले वलुहे न भनिछो द्रिया को संसार जो छ फेरि मोह गराउ
नानि मित्र हुदै न ॥ परंतु देह न ठल न ज्वाल सम संसार स्रो हो भन्या संस्कार मात्र रहन्छ ॥ जश्ले भागवत स्वरूप
कन चिह्या को छ ॥ उलो सिद्ध प्राणि जो छ ॥ यो नासिन्या देह कन आसन देषि उद्या को छ ॥ उठि फेरि आसनै माव स्या
को छ देव चेले गरि आसन देषि उठि अरु जगा मा गई रहेछ फेरि उसै आसन मा आई व स्या का छ ॥ सत्ता कुरा जसै मदि रा

॥ राम ॥
॥ ७४ ॥

जसै मदि रावाई मन्त्र भया को प्राणि जो छ ॥ आकाशरीर मा ओढा को वस्त्र जो छ कांठै मा छ ॥ एसिर हे छ भन्या एसो पा
द के हि पाउं दैन ॥ ते सै कहि थाहा पाउं दैन देह कन पनि विसंछ ॥ ३६ ॥ देव वश मा हि डू दो देह जो छ सो पनि प्राकृत क
र्म जो छ जाहा सम्म रहंछ ॥ ताहा सम्म प्राण इन्द्रिय ले सहि न भया को छंदोर हिर हंछ ॥ उ सो भन्या वद्व पनि कदाचि
न हूँ जां दो हो भनि न भन ॥ प्रपंच जगत् कन स्वप्ना मा देख्वा का वस्तु रूजि अनित्य कन मान्द छ ॥ पाया को छ समाधि र

देह च नश्वर मवस्थित सुस्थितं वा ॥ सिद्धो न पश्यति यतो ध्य गमत स्वरूपम् ॥ दैवा डुपेत मथ दैव व
शाद पेतं वा सो यथा परिकृतं मदि रामदाध्व ॥ ३८ ॥ देहोपि दैव वशागः खलु कर्म यावत्त्वारंभकं प्र
ति समीक्षत एव सासु तं स प्रपंच मधिरूढ समाधियोगः स्वाप्न पुनर्न भजते प्रतिबुद्ध वस्तु ॥ ३७ ॥
मयैत दुक्तं वो विप्रा गुह्यं यत्सांख्य योगयो ॥ जानीत मागत यज्ञ युष्मद् धर्म विवक्षया ॥ ३८ ॥ अहं
योगस्य सांख्यस्य सत्यं स्य ते स्य ते जसः ॥ परायणां द्विज श्रेष्ठाः श्रियः कीर्तेर्दमस्य च ॥ ३९ ॥

योग जश्ले ॥ एसै कारणा जान्या को छ परमार्थ वस्तु यज्ञ श्ले ॥ एसो सिद्ध जो छ फेरि संसार मा श्रीति पनि गर्दैन वद्व
पनि हुदैन ॥ ३७ ॥ हे सनकादि हो सांख्य योग को अति गोप्य कुरा कन मैले ति मि हे रुकन सुना जा ॥ ति मि हे रुला
ई धर्म वताउना का निमित्त ॥ साक्षात् विष्णु मं आया को हु जान ॥ ३८ ॥ मजो छु सांख्य को योग को उपदेश गरिया का
धर्म को ॥ अनुष्ठान गरिया का धर्म को ॥ ऐश्वर्य को कीर्तिको ॥ बाहि हु का इन्द्रिय जित्ना को ई सवै को आधार छु ॥ ३९ ॥

॥ भा.प. ॥
॥ ७५ ॥

निगुणीइछालेहीनभयाकामन॥सवैगुणजोछन्भज्जदछन्॥साम्यभसंगआदिगयाकागुणजोछन्गुणाकापरिनामहुदै
नन्॥ ४० ॥ सत्त्वप्रकारलेसंदेहमेटाईदियाकासनकादियोगीहेरुलेवभक्तिलेमेरोपूजागरिसोत्रलेसुतिगर्नलाग्वा॥ ४१
सनकादिवडाअविहेरुलेवठियाप्रकारसितपूजालुतिगरियाकोमंजोछु॥तिसवैलेदेष्टुनैकासमयमावैकुण्ठधाम
माजांदाभजाभनि॥उद्धवलाईसुनाईआज्ञागयाकाकथाकन॥भुकदेवलेराजापरीक्षितकनकहंदाभया॥ ४२ ॥ इ
तिश्रीभागवतेमहापुराणोष्कादशस्कंधेभाषायांत्रयोदशोऽध्यायः॥ १३ ॥ भगवत्भक्तिलेगरिमोक्षभनिरुखले

मांभजंतिगुणाःसर्वेनिर्गुणानिरपेक्षकम्॥सुहृदंपरमात्मानसाम्यासंगादयोगुणा॥ ४० ॥ इतिमे
छिन्नसंदेहामुनयःसनकादयः॥संसाजयित्वापरयाभक्त्यागुणानसक्तवै॥ ४१ ॥ तैरहंपूजितःसम्प
क्तंस्तुतःपरमर्षिभिः॥प्रपयायस्वकंधामपश्यतःपरमेष्ठिन॥ ४२ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोष्का
दशस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः॥ १३ ॥ उद्धवउवाच॥वदंतिरुक्षेत्रेयांसिवरूनिब्रह्मवादिनः॥तेषांविक
ल्पःप्राधान्यमुताहोसकमुख्यताः॥ १ ॥ भवनोदाहृतःस्वामिन्भक्तियोगानपेक्षितः॥निरस्यसर्वतःसंगंय

आज्ञागयार॥अरुतअरुकुरालेगरिमोक्षहुंछभंछन्कसोहोभनिनिश्चयगर्ननिमित्त॥उद्धवजोछन्रुक्षसंगसो
छन्॥ १ ॥ हेरुक्षनपात्रिलेभक्तियोगलेमोक्षछभनिआज्ञागर्नुभयो॥ब्रह्मवादिहेरुजोछन्सोतअरुकुरालेग
रिमोक्षहुंछभंछन्॥परंतुमोक्षमातिसवैसकैनाशकारणछन्कि॥कोहिमुखकोहिअमुखछन्॥अथवावरोवरका
रणछन्॥तपात्रिलेभयासवसंगत्यागगरिभक्तियोगगर्नुसमन्जोछशांतिविषेलागुछभनिरुक्षोआज्ञागयोभनि
विंतिगयाउद्धवलेरुश्रीरुक्षनआज्ञागछन्॥ २ ॥

॥ गम ॥
॥ ७५ ॥

कौनै कुरा को संग्रह नगर्ग्य मन कन जित्या वाहि हुका इन्द्रिय कन जित्या सम बुद्धि भया का संतुष्ट चित्र भया का प्राणिका सवै
दिशा जो छ नुख स्वरूप छन ॥ १३ ॥ म विषे चित्र ल गा उया प्राणि जो छ ॥ म ला ई छो डिकन सत्य लोक को भयो इन्द्रासन को भ
यो चक्रवर्ति राजा हुनु भयो पाताला दलोक को राजा हुनु भयो नाना प्रकास ले योग सिद्धि भया मोक्ष भयो इसवै कुरा क
न इच्छा गर्दै न ॥ १४ ॥ हे उद्धव मेरा भक्त हुना ले निमिजला पियारा छौ ॥ तला पियारा ब्रह्मा शिव संकर्षण लक्ष्मी मेरो दे

अ किंचन सदा न्न स्या शांत स्य समचेत स ॥ मया संतुष्ट मनसः सर्वाः सुख मया दिशः ॥ १३ ॥ न पार मे ह्यं नम
हेन्द्र धि ह्यन सार्व भौमं नर साधिपत्यम् ॥ न योग सिद्धि र पुनर्भवं वाम यर्पिता त्पे छ निमदिनान्यम् ॥ १४ ॥
न तथा मे प्रिय तम आत्म यो निर्नशंकरः ॥ न च संकर्षणो न श्री नैवात्मा च यथा भवान् ॥ १५ ॥ निरपे
क्षु मुनिः शान्तं निर्वैरं समदर्शनम् ॥ अनुबुजाम्यहं नित्यं पूयेयेत्यं धिरेणुभि ॥ १६ ॥ निश्चि चना
मय्यनु रक्तचेतसः शांता महाता खिल जीव वत्सला ॥ कामैरना सध्व धियो त संतियं त नैरपेक्ष नं वीड
॥ सुखं मम ॥ १७ ॥

ह इ सवै मा निमिजला पियारा को हि छैन न ॥ १५ ॥ कौनै व सु को इच्छा नगर्ग्य शांत भया का
वैर नगर्ग्य सम दृष्टि भया को सला प्राणि को चरण का धुलाले गरि ॥ मेरा येट मार हा का ब्रह्मा रा क नर देह कन प
वित्र गरुला भनानि मित्र पछि हि ड्दु ॥ १६ ॥ संग्रह वा सै को नगर्ग्य म विषे प्रीति गर्ग्य शान्त चित्र भया का वडा भनि
कहिया का सव प्राणि हेरु कन दया गर्ग्य विषय लेठ गियो छैन बुद्धि जत्का ॥ सला प्राणि हेरु जो छन जलो कौनै कुरा

॥ भा. ८ ॥
॥ ७५ ॥

कोइछानगर्नालेसुखकनपाउंदछन्॥ भरुविषयीरुहजोछन्तेसासुखकनमनलजान्दापनिजान्दैनन्॥ १७ ॥ विषयलेइ
न्द्रियजितननसक्याउरुषहेरुलेपीडागरियाकोपनिमेरोभक्तजोछ॥ वडाभक्तिलेगरिविषयकावशमापदैन्॥ १८ ॥
हेउद्धवजसोभतिवल्दाज्वालातेजुक्तभयाकोभक्तिजोछ॥ दारुवाकनभस्मगर्दछ॥ तसोभक्तजनमविषेगन्दाकीभ
क्तिजोछ॥ पापकनभस्मगर्दछ॥ १९ ॥ हेउद्धवजसोमंभक्तिगर्नालाइमिल्दछ॥ तसोसांख्ययोगधर्मवेदकनप

बाध्यमानोपिमद्भक्तोविषयैरजितेन्द्रियैः॥ प्रायःप्रगल्भेयाभक्त्याविषयैर्नाभिभूयते॥ १८ ॥
यथाग्निःसुसमृद्धार्चिकरोचेधांसिभस्मसात्॥ तथासद्दिषयाभक्तिरुद्धवैनाशिकृत्स्नशः॥ १९ ॥
नसाध्यतिमांयोगोनसांख्यधर्मउद्धवः॥ नसाध्यायसपस्यागोयथाभक्तिर्ममोर्जिता॥ २० ॥ भ
क्त्यायमेकयायास्यःश्रद्धयात्माप्रियःसताम्॥ भक्तिःपुनातिमन्त्रिणःश्रवणकानपिसंभवान्॥ २१ ॥
धर्मसत्यंदयोपेतोविद्यावातपसान्विता॥ भद्रकृपेतमात्मानंनसंम्यक्प्रपुनानिहि॥ २२ ॥

जुनपस्यागर्नुइकोनैकुरालेमिल्दैन्॥ २० ॥ श्रद्धालेगरिगयाकासकैभक्तिलेसंतजनकोपियागेभयाकामला
ईपाउर्नुछ॥ मंविषेगयाकिभक्तिजोछ॥ चरागलादिहेरुकनपनिपवित्रगर्द॥ २१ ॥ सत्यदयालेयुक्तभयाकोधर्म
भयो॥ अथवानपस्यालेयुक्तभयाकोविद्याभयो॥ ईडुईकुरालेपनिमेरोभक्तिलेहीनभयाकाआत्माकनराभोग
रिपवित्रकनगर्नसकैनन्॥ २२ ॥

॥ राम ॥
॥ ७६ ॥

जौनभनिगर्दामा रोमांचहुदै न चित्रजोछ सोपनिवगलदै न ॥ आनन्दकाओं सुकाधारापनिछु दतैन ॥ एलो छैन भन्या
चित्रभुद्धहुदै न ॥ २३ ॥ मेरो भक्तिगर्ना प्राणिजोछ गद्गदवागिले गरिबो लुदछ ॥ वारंवार चित्रपेनि ते स्कोरुंछ ॥ कैले
हामछ पनिलाज छोडि नांचनु गछ ॥ एला प्रकारले भुवनतल कनपनि पवित्र गछ ॥ २४ ॥ जस्तै आगाले पोल्याको
सुवर्णजोछ मयल कनछोड्छ र आकै स्वरूप कन भज्दछ ॥ आत्माजोछ सोपनि मेरि भक्तियोग गर्नाले ॥ कर्म

कथं विनारोम हर्षद्रवनाचेतसाविना ॥ विनानद्राश्रकलयाभुद्धद्रक्त्याविनाशयः ॥ १३ ॥ वाग्ग
द्गदाद्रवते यस्य चित्रं रुदत्यभीक्षां हसति क्वचिच्च ॥ विलज्ज उक्तायति नृत्यते च मद्भक्तियुक्तो भु
वनपुनाति ॥ २४ ॥ यथाग्निना हेममलं जहाति ध्यातपुनः स्वभजते स्वरूपम् ॥ आत्मा च कर्मातुश
यं विधूय मद्भक्तियोगेन भजत्यथो माम् ॥ २५ ॥ यथा यथात्मा परिमृज्यते सौमत्युपगता श्रव
णाभिधानैः ॥ तथा तथा पश्यति तत्त्व सूक्ष्मचक्षुर्यथैवाजन संप्रयुक्तम् ॥ २६ ॥ विषयाभ्याय
तश्चित्रं विषयेषु विसज्जते ॥ मामनुस्मरतश्चित्रं मज्येव प्रविलीयते ॥ ३ ॥

वासना कन परवालिकन तां हां प्राप्ता मं कन भज्दछ ॥ २५ ॥ हेउद्धव मेरा पुण्य कथाको श्रवण कीर्तन गर्नाले गरि
यो आत्माजोछ जस्तो अंजन लगाया काने त्रैजि गरित त्व सूक्ष्म कन देख्छ ॥ २६ ॥ हेउद्धव विषयको ध्यान गर्ना
प्राणिको चित्रजोछ विषयमावाधिंछ ॥ मेरो ध्यान गर्ना प्राणिको चित्रजोछ मविषेली नहुंछ ॥ ३ ॥ छ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ५७ ॥

जस्कारणहेउडव घटियाविषयहेरुध्यानगर्नुजोछ सपनामादेव्याकावसुकोर मनसुवागयाकावसुकोध्यानग
नुजसोवर्थमात्रछ फलकेहिछैन ॥ तस्कारण असद्विषयकोध्यानगर्नुछोडि मेरोभावलेयुक्तभयाकामनक
नमविषेसमाधिलेगरिलेगाउ ॥ २८ ॥ स्त्रीहेरुकोसंगभयो स्त्रीहेरुकोसंगगर्नाप्राणीहरुकोसंगभयो ॥ दाढे
छोडिकन वडोधीर भैवधियाएकान्नजगामावसि ॥ अल्सीनभैमेरोचिन्ताकनगर्नु ॥ २९ ॥ जसोस्त्रीहेरुको

तस्मादशदभिधानंयथास्वप्नमनोरथम् ॥ हित्वा मयि समाधत्स्व मनो मद्भावभावितम् ॥ २८ ॥
स्त्रीनां स्त्रीसंगिनां संगत्यक्ताहरत आत्मवान् ॥ क्षेमेविविक्त आसीनश्चितयेन्मामतंद्रितम् ॥ २९ ॥
न तथास्य भवेत्केशोवधश्चान्यप्रसंगतः ॥ योषित्संगाद्यथापुंसोयथातत्संगिसंगतम् ॥ ३० ॥
श्रीउडवउवाच यथात्वामरविंदाक्षयादृशंवायदात्मकं ध्यायेन्मुमुक्षुरेतन्मेध्यानवैवक्तुम् ॥ ३१ ॥

संगगर्नार स्त्रीहेरुकोसंगगर्नाप्राणि संगगर्नापुरुषकनडःखछ वंधनपनिछ ॥ तसोअरुकोसंगगर्नाले
गरिछैनभनि भगवान्लेआज्ञागयार उडवजोछनवितिगछन ॥ ३० ॥

॥ राम ॥
॥ ५७ ॥

नाहोपदि कृष्णजो छन आजागर्न लाग्या ॥ हे उद्धव सुनः सम आसन मा सो जो आइ गरि वडा सुख पूर्व कले वसि ॥ काष माहातरा
षिना क का सो जा हे रि इन्द्रिय क न जिनि ॥ पूर क कुंभ क रेच क ले गरि प्राण मार्ग क न भुङ्गु ॥ अथ वा वाम नाडी ले पूर
रा गया मा दक्षिणा नाडी ले छोडु दक्षिणा नाडी ले पूर रा गया मा वाम नाडी ले छोडु ॥ अथ वारेच क २ पूर क १ कुंभ
कः स स्ना उलटा शीत ले पनि ॥ प्राण का मार्ग क न भुङ्गु गरि सु सो सु सो प्राणायाम को अभ्यास गर्तु ॥ ३२ ॥ मूल धार दे धि क
तैन दृढि वार वार आया को चंटा काना द ले तुल्य भया का स स्ना हृदय मा व स्या का ओं कार क न प्राण ले उ भो उ ठाई छा

श्री भगवानुवाच ॥ सम आसन आसीनः सम कायो यथा सुखम् ॥ ह स्ना वृत्त संग आय स विना सा य कृते
क्षणाः ॥ ३२ ॥ प्राण स्य शोधयेन्मार्गं पूर कुंभ करेचकैः ॥ विपर्ययेणापिशतैरभ्यसेन्नियतेन्द्रियः ॥ ३३ ॥
हृद्यवच्छिन्नमोंकारं घंटानादं विशोर्णावत् ॥ प्राणो नो दीर्घतत्राथ पुनः संवेशयेत्स्वरम् ॥ ३४ ॥ स
वैष्णव संयुक्तं प्राणमेव समभ्यसेत् ॥ दशकृत्वस्त्रिषवशां मासादवां कजितानिलः ॥ ३५ ॥

दश स्थान मा पर्यन्त लै ज्पाई ॥ कमल को नाल का तंतु रुजि मात्रा ले हीन भया का पधु उ विड क न लै ज्पाउ ॥ फेरि ते सै
विंडु क न शिर मा लै ज्पाउ फेरि ते सै विंडु क न शिर मा लै ज्पाउ ॥ अथ वा मूला धार दे धि आरं भ गरि मूर्च्छा सम्म ॥ कमल का
नाल को सूत रुजि सा उ भया को न टु टाई क न मन मा प्राण ले गरि प्रकाश गरि ॥ फेरि ते सै ठा उ मा घरा ठा ना द रुजि ओं
कार क न उ दा त्र ना द क न स्थिर गर्तु ॥ ३३ ॥ स स्ने प्रकार ले हे उद्धव प्राण व ले युक्त भया का प्राणायाम का अभ्यास क न
तिन काल मा द इ दश फेरा ग र्ना ले गरि रु क मै हू ओ ठो वा उ क न जि त्पा हं ॥ ३४ ॥

॥ भा.स. ॥
॥ ७८ ॥

देहका अन्तरमारहाको उभोनालभयाको उधोसुखभयाको सुकुलितभयाका केराकाठु गाऊनिभयाको ॥ कल्याणभया
उभोसुखभयाको भाठपत्रभयाको चिचमाकर्णिकाले सहितभयाको हृदयरूपी कमलको ध्यानगर्नु ॥ कर्णिकावि
षे सूर्यको न्यासगर्नु ॥ तां हो देषि उन्नरभागमा चन्द्रको र अश्रिको न्यासगर्नु ॥ अश्रिकाविचमा ध्यानगर्नुको मंगल
स्वरूपभयाको मेरा समरूपको स्मरणगर्नु ॥ कस्तो मेरो रूपभया हस्तपादादि अवयव सुन्दर योग्यभयाको शां
तभयाको हसिलो सुखभयाको ॥ लामा सुन्दर रात्रा घटिभयाको गाला रावाभयाको ॥ थोरै हास्याको अनिरात्रो

हृत्पुणारी कमन्तस्थ मूर्द्धनालमधोसुखम् ॥ ध्यात्वोर्ध्वसुखमुन्निद्रमष्टपत्रं सकर्णिकम् ॥ ३८ ॥ क
र्णिकायां न्यसेत्सूर्यमाग्नीतुन्नरोन्नरम् ॥ वह्निमध्ये स्मरेद्रूपममैतद्धानमंगलम् ॥ ३९ ॥ समं प्रशांत
सुसुखं दीर्घचारुचतुर्भजम् ॥ सुचारुसुन्दरग्रीवं सुकपोलं सुचिस्मितम् ॥ ४० ॥ समानकर्णविन्य
स्तस्फुरन्मकरकुण्डलम् ॥ हेमास्वरं घनस्योमं श्रीवत्सं श्रीनिकेतनम् ॥ ४१ ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमा
लाविभूषितम् ॥ नूपुरैर्विलसत्पादं कौमुभयभयायुतम् ॥ ४० ॥

॥ मिल्पाका कानमालायाको ॥ चम

कभयाका माछाको आरभयाका कुण्डललगायाका पीतांबर ओढ्याका मेघरुजिष्णाम सुन्दरवर्णभयाका ॥ भृ
गुलाञ्जनलेपुक्तभयाकालक्ष्मीलेवासगरिया शंखचक्रगदापद्मवनमालाले सोभितभयाका नैवर्लेगायाकाको
सुभमगिलगायाका चमकुभयाका सुकुटवाला करधनिवाजुवन्दलगायाका ॥ सवै अंग सुन्दरभयाका मनमा
अतिलीलागर्णभयाका ॥ प्रसादले उज्जालो सुखनेत्रभयाका ॥ रत्नासकुमारमेशी सवै अंग विषे मनकनलगाई ध्या
नगर्नु ॥ इन्द्रियहेरुकनविषयदेषि मनले गरिषत्रिचि ॥ ते समनकनमं विषे लगाउनु ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ४० ॥

॥ राम ॥
॥ ७८ ॥

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ बुद्धिलाई सारथि तुल्य ई सव प्रकार ले धीर भै मं विषे लाउनु ॥ जा हाता हा गै व्यापक भया का चित्र कन षजि वि
 रुके मन विषे धारणा गर्नु ॥ ४३ ॥ थोरै हास्या का मुख को ध्यान गर्ना ले ॥ अरु कुरा को चिता फेरि न गर्नु ॥ ध्यान गरि जौ न
 अंग कन चिह्नो ध्यान गर्ना मन कन चिह्ना का अंग देखि उभो सारि ॥ सवै कारण रूप भया का ॥ भगवान विषे धार
 णा गर्नु ॥ ४४ ॥ त्यो कारण रूप कन पनि छोडि ॥ मथु डव वस्त्र विषे आरूढ भया का छंदो ॥ ध्यान गर्ना गरि न्या ई दुइ
 भाग कन पनि चिंतान गर्नु ॥ सलोम विषे सकाग्र चित्र भया को प्राणि जो छम कन आफु विषे देखे छ आफु कन

धुमकीरी टकटक कटि सूत्रांग दायुतम् ॥ सर्वाङ्ग सुन्दर रह्यं प्रसाद सुमुखे क्षणम् ॥ ४१ ॥ सुकुमार
 मभिधाय सर्वङ्गेषु मनोदधत् ॥ इन्द्रियारणीन्द्रियार्थे भो मन साकृष्य नमन ॥ ४२ ॥ बुद्ध्या सारथिना
 धीरप्रणयेन मयि सर्वतः ॥ तत्सर्वव्यापकं चित्रमाकृष्यैकत्र धारयेत् ॥ ४३ ॥ नान्यानि चिंतयेद्भूयः सु
 स्मितं भावयेन्मुखम् ॥ तत्र लक्ष्यपदं चित्रमाकृष्य बोद्धिधारयेत् ॥ ४४ ॥ तच्च तत्पत्कान्मदारोहो न किं
 चिदपि चिंतयेत् ॥ एवं समाहित मनियो मेवात्मानमात्मनि ॥ ४५ ॥ विचष्टे मयि सर्वात्मन ज्योतिर्यो
 निषु संयुतम् ॥ ध्यानेनेष्टं सुतीव्रेण युंजतो योगिनो मनः ॥ संयास्यत्यासु निर्वाणं द्रव्यज्ञानक्रियाभ्रमः ॥

भया सवै को आत्मा भया का मं विषे ज्योति मिल्य रुजि गरि मिल्या को देखे ॥ ४५ ॥ सलै वडा ध्यान ले गरि मं विषे म
 न को समा धिल गाउ न्या जोगी को मन जो छ ॥ अधिभूत अधिदैव अध्यात्मिक यो सवै भ्रांति न भया को छंदो ॥ अथ वा द
 र्श दर्शन इत्यादि भ्रांति न भया को छंदो ॥ चाँडै वडिया प्रकार संग शांति कन प्राप्ति हुंछ ॥ हे उद्धव भनि भगवान् रुदन

॥ भा. ॥
॥ ७८ ॥

लेआज्ञागयाकाकथाकन॥शुकदेवलेराजापरीक्षितकनआज्ञागया॥सोहिकथाकनसूतलेनैमिषारन्यवनमा.सौनकादि
अषिहेरुकहंदाभया॥ ७८ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोष्कादशस्कंधेभाषाटीकायांचतुर्दशोऽध्यायः॥ १४ ॥ सप्ता
प्रकारसंगमेरोसमाधिगर्भयोगीकासिद्धिहेरुजोछन्॥विघ्नरूपछन्भनिकहनानिमित्त.कृष्णजोछन्सिद्धिक
नकहंछन्॥हेउद्धव.इन्द्रियजित्वाभयाका.स्थिरचित्तभयाकाप्राणकनजित्वाकामंविषेचित्तलगाउन्याजोगिका
सिद्धिहेरुजोछन्॥नजीकमाआइंदछन्भनिभन्याकोसुनिउद्धवजोछन्विंतिगछन्॥ १ ॥ हेरुह्नकौन्धारणोग

इतिश्रीभागवतेमहापुराणोष्कादशस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः॥ १४ ॥ श्रीभगवानुवाच॥जितेन्द्रियस्यमुक्तस्य
जितश्वसस्ययोगिनः॥मयिधारयतश्चेतउपतिष्ठंतिसिद्धयः॥ १ ॥ उद्धवउवाच॥कयाधारणायाकाश्चि
त्तथंवासिद्धिरच्युत॥कतिवासिद्धयोबूहियोगीनांसिद्धियोभवान्॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच॥सिद्धयो
ष्टादशप्रोक्ताधारणायोगपारंगैः॥नासामद्यैमत्प्रधानादशैवगुणाहेतवः॥ ३ ॥

रिकसिसिद्धिहंछेकतिसिद्धछन्॥योगीहेरुलार्सिद्धिदिन्यातपाजिहुउहुंछभाज्ञागरभनिविंतिगया.उद्धवलेर
भगवान्कृष्णआज्ञागर्नलागण॥ २ ॥ हेउद्धवसुनयोगमापारंगतभयाका.प्राणिहेरुलेवतायाकासिद्धिहेरुजोछ
न्.अष्टारछन्धारणापनिअष्टारैछन्॥तिअष्टारसिद्धिहेरुमाआठसिद्धिजोछन्सुखछन्.मेरोस्वरूपपाउ
दामाकीहिमेंभन्दाथोरैघटिछन्॥अरूदशसिद्धिहेरुजोछन्मैलेदियाकाहुन्॥ ३ ॥

॥ राम ॥
॥ ७८ ॥

अणिमा महिमा लघिमा इति न देहका सिद्धि कुन् ॥ सव प्राणिका इन्द्रियका अधिष्ठाता देवता ले संग संवंध हुनु जो छ-
प्राप्ति नाम सिद्धि कहिन्छ ॥ अन्याका देव्याका पृथिवीमा देव्याका वस्तुको थाहा पाउनु जो छ प्रकाश सिद्धि कहिन्छ ॥ रसि-
तानाम सिद्धि कहिन्छ ॥ ४ ॥ विषय भोग विषे संग न गर्नु वसिता सिद्धि कहिन्छ ॥ जो न सुख को रक्षा गयो सो हि पाउनु
जो छ त्यो स उदा सिद्धि छ ॥ हेउछु वई आठ सिद्धि जो छ न स्वभावै ले योगिलाई भयाका जान अत्यंत श्रेष्ठ पनि छ न ॥ ५

अणिमामहिमामूर्तेर्लघिमा प्राप्तिरिन्द्रियैः ॥ प्राकाश श्रुत दृष्टे शुशक्तिः परागमो शिताः ॥ ४ ॥ गुरो
स्वसंगो वशिता यत्कामस्तव दस्यति ॥ एता मे सिद्धयः सौम्य अष्टावृत्य त्रिकामताः ॥ ५ ॥ अन्तर्मिमत्वं
देहस्मिन् रुरश्रवणादर्शनम् ॥ मनोजवः कामरूपं परकायः प्रवेशनम् ॥ ६ ॥ स्वच्छन्दमृत्युर्देवानां सह
क्रीडानुदर्शनम् ॥ यथासंकल्पं संसिद्धिराज्ञा प्रतिहता गतिः ॥ ७ ॥ त्रिकालज्ञत्वमद्वंद्वं परचिन्तायभि-
ज्ञता ॥ अग्न्यर्काम्बुविषादीनां प्रतिष्ठामो पराजयः ॥ ८ ॥

(देहमाभोक तीर्षानलागनुटाठैव सि-
मुनु देषु एक सिद्धि मनको रुजि देहको गति हुनु एक सिद्धि ॥ जसोई छाला गोउ सै मूर्ति वनाउनु क सिद्धि ॥ अ-
र्काको देहमा प्रवेश गर्नु एक सिद्धि ॥ ६ ॥ आकाश छाले मृत्यु हुनु एक सिद्धि ॥ अपराहेरुले देवता हेरुको क्रीडा भयाको
देषु एक सिद्धि ॥ जो न चिन्ता यो सो हि कुरो पाउनु एक सिद्धि ॥ जाहा गयो रोक सिद्धि ॥ रुकुमूसवैले मानु पर्य एक सिद्धि ॥
एतिसिद्धि हुन् ॥ हेउछु व अवछोटा सिद्धि कन भछु सुन ॥ ७ ॥ तिनै कालको वात कन जानु ॥ विसोता तातो सहउ प-
पराईका चित्रको वात जानु ॥ अग्निसूर्य जल विषे को लंभन गर्नु न हाउ ॥ ८ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ८० ॥

योगधारणाले गरिहृन्माई सिद्धि हेरु नो छुन नाउ लिई कन मै ले भन्या ॥ जौ न धारणाले जौ न सिद्धि जसो गरिहंछु नो कुरो
भंछु सुन ॥ ८॥ भूत सूक्ष्म काउ पाधि मेरो मन धारणा गर्नाले अशिमा सिद्धि हुंछु ॥ सहस्वरूप मेरो धारणा गर्नाले म
हिमा सिद्धि हुंछु ॥ आकाशादि महाभूत कोउ पाधि स्वरूप मेरो धारणा गर्नाले महाभूत हेरु को महिमा सिद्धि हुंछु

एताश्चोद्देशतः प्रोक्ता योगधारणा सिद्धयो ॥ यथा धारणाया यास्याद्यथा वास्यान्निबोध मे ॥ ८॥ भूत सू
क्ष्मात्मनि मयितन्मात्रं धारयेन्मनः ॥ अशिमानमवाप्नोति तन्मात्रोपासको तमः ॥ ९० ॥ महत्यात्मनः
यि परे यथा संस्थं मनो दधत् ॥ महिमानमवाप्नोति भूतानां च पृथक् पृथक् ॥ ९१ ॥ परमाणुमये चि
त्रं भूतानां मयिरंजयन् ॥ कालसूक्ष्माक्षं तां योगिलधिमानमवाप्नुयात् ॥ ९२ ॥ धारयन्मय्यहं त
त्वे मनो वैकारिके लिलम् ॥ सर्वेन्द्रियाणां भात्मत्वं प्राप्ति प्राप्नोति मन्मना ॥ ९३ ॥ महत्यात्मनियः स
चे धारयेन्मयि मानसम् ॥ प्राकाशं पारमेष्ठं से विन्दते व्यक्तजन्मनः ॥ ९४ ॥ विष्णोर्ब्रह्मीश्वरे चित्रं
धारयेत्कालविग्रहे ॥ स इति त्वमवाप्नोति क्षेत्रज्ञे क्षेत्रज्ञोदनात् ॥ ९५ ॥ ॥ छ ॥

९१ ॥ परमाणुपमेरो धारणा गर्नाले कालकी सूक्ष्म गतिकन जान्दछु ॥ लधिमा सिद्धि हुंछु ॥ ९२ ॥ वैकारिक अहंका
र स्वरूप भयाका मेरो धारणा गर्नाले स वैश्विको अधिष्ठाता हुंछु ॥ ९३ ॥ महत्त्व स्वरूप में विषे धारणा गर्नाले प्र
काश सिद्धि हुंछु ॥ ९४ ॥ त्रिगुणाले युक्त भयाकी मायाका नियंता भयाका विष्णु विषे मनको धारणा गर्नाले ईशित्व सि
द्धि हुंछु ॥ ९५ ॥

॥ रत्न ॥
॥ ८० ॥

तुरीयश्रवणाभयाका. भगवत्शब्दलेवोलियाकानारायणमं विषेमनकोधारणागर्नाले. वसितासिद्धिकनपाउंदछ
॥ १८ ॥ निर्गुणवत्समविषे. शुद्धमकनधारणागर्नाले. परमानन्दकनपाउंदछ. जौनपायाप्रान्न. पाउउवाकिरहंदे
न ॥ १७ ॥ शुद्धधर्मस्वरूपभयाका. श्वेतदीपकापतिभयाकामं विषेमनकोधारणागर्नालीजोछ. भोगतीर्षा
आदिगयाकाछ. धर्मलेरहितभयाकोछंदो. शुद्धकनहुंछ ॥ १८ ॥ १८ ॥ आकाशरूपमः प्राणविषेमनलेगरि.

नारायणोतुरीयाखेभगवच्छब्दशब्दितेमनोमयादधयोगीमधर्मावशितामियात् ॥ १८ ॥
निर्गुणोवत्सनिमयिधारयेन्निशदमनः ॥ परमानन्दमाप्नोति यत्र कामोवसीयते ॥ १७ ॥ श्वे
तदीपपतौचिन्नशुद्धधर्ममयेमयि ॥ धारयन् श्वेततांयाति स्रुडमिरहितोनर ॥ १८ ॥ म
याकाशात्मनिप्राणमनसाशेषुमुद्वहन् ॥ तत्रोपलब्धाभूतानां हं सोवाच सरोत्तमसौ ॥ १९ ॥
चक्षुस्त्वष्टरिसंयोज्यत्वष्टारमपिचक्षुषि ॥ मातत्रमनसाध्यायन्निश्वं पश्यति चक्षुदृक् ॥ २० ॥
मनोमयिसुसंयोज्यदेहंतदनुवायुना ॥ मधारणानुभावेन तत्रात्मायत्र वैमनः ॥ २१ ॥ छ ॥

नारंदकचित्रागर्दोछ. दोयोजीवजोछ. नानावचनकनमुन्दछ ॥ १९ ॥ सूर्यमा. चक्षुकनमिलाईकन. चक्षुमासू
र्यकनमिलाईकन. तिडुईवीषेमेरोध्यानगर्नाले. सवैविश्वसंसारकनदेष्टछ ॥ २० ॥ मनकनदेहमारखाका
वायुलेसहितभयाकादेहकन. मंविषेमिलाईकन मेरोध्यानगर्नाकोमनजोछ. जाहांआत्माछतसैठाउमारहंछ

॥ भा. ८९ ॥

हेउछव मन जो छ जौ न जौ न देवादि रूप लिइ कन ॥ उल्लेख न धोज दछ सोहि देवादि रूप जो छ मेरो धारणा गर्ना कावल ले
गरि दुछ ॥ २१ ॥ पराई का देह मा प्रवेश गर्ना सिद्ध ले ॥ आत्मा कन ते से पराई का देह मा चिंत ना गर्नु ॥ प्राणा मुख भया को
लिंग शरीर उपाधि भया को वायु स्वरूप भै ॥ आत्मा देह कन छोडि भवराज ले ॥ सुउद फल छोडि दोस्त्र फल मा जो छ न
ते पराई का देह मा जान ॥ २२ ॥ हेउछव अवस्थ छ न मृत्तुकन भन्छु सुन ॥ कर्कवाले गुड छार कन अवाइ ॥ प्राणा कन ह
दय मा उर स्थल मा मूर्द्धा मा लै जाई वल रंध्र वाट वल मा पयाई देह कन छोडनु ॥ २३ ॥ देवता हेरु का शयल गर्ना

यदा मन उपादाय यथ रूपं बुभूषति ॥ तत्र न भवे न्नो रूपं त्वद्योगवलमाश्रयः ॥ २१ ॥ परकायं विश
निद्ध आत्मानं तत्र भावयेत् ॥ पिरां हित्वा विश्वारोवा वायु भूतः षडंघ्रिवः ॥ २२ ॥ पाह्म्या पीडा गुदं
प्राणो हृदुरः कण्ठ मूर्ध सु ॥ अरोप्य वल रंध्रे रावल नीलोत्तरे जे ननु म् ॥ २३ ॥ विहरिष्य मुरा क्रीडे
मत्स्य सत्व विभावयेत् ॥ विमाने नोपनिवृत्ति मत्त वृत्ति सुरसिय ॥ २४ ॥ यथा संकल्प यदुधाय
दावा मत्परः पुमान् ॥ मयि सत्य मनो पुंजं सत्ता तत्समुपाश्रुते ॥ २५ ॥ यो वै मद्भा वमापन्न ईशितुर्वा प्रा
न पुमान् ॥ कुतश्चिन्न विहस्येत तस्य

ठाउ विषे ॥ शयल कन गर्दो छंदो ॥ भुद्ध मेरा मूर्त्तिकन भाव मा गर्नु ॥ सत्व
का अंश भया का भस्म राह रू विमान कन लि न जो क मा आउं द छ न ॥ २६ ॥ मेरा ध्यान गर्ना प्राणि जो छ जलो मन
ले संकल्प गर्छ सोहि पाउं द छ सत्य रूप मं विषे मन लगाउ न्या जो छ मलाई पाउ छ ॥ २७ ॥ सवै लाई वस गर्ना सवै
कोई भवर मेरा ध्यान गर्ना कनै हट् नै न जो आशा रुजि गरि नेको आज्ञा मान्द छ न ॥ ३ ॥

॥ राम ॥
॥ ८९ ॥

धारणाकन जान्या मेरो भक्तिगर्नाले भुद्धचिन्तभयाका योगीका ति नै कालको वलु कन जान्या आ प्रा जन्म मृत्यु कन जान्या भ
याकी बुद्धि हुन्छ ॥ २८ ॥ मेरो योगगर्नाले शास्त्रचिन्तभयाका योगस्वरूपभयाका शरीरकन अग्रीले पनि उठाउदैन
॥ २९ ॥ धृजभयो छाताभयो ईस वैकुण्ठाले सहितभयाका वामावर्त्तन घुम्माको छातिको रोमावलिभयाको शंखचक्रग
दापद्म इत्यादि मेरा विभूतिकन जो ध्यान गछे तस्को पराजय कैले हुंदैन ॥ ३० ॥ हे उद्धव योगधारणाले मेरो उपासना

मद्भक्त्या भुद्धसत्त्वस्य योगिनो धारणा विदः ॥ तस्य त्रैकालिकी कृद्धि जन्म मृत्यु पदं हिता ॥ २८ ॥ अथादि
भिर्न हनेत मुने र्योगमयं वपुः ॥ मयोगशास्त्रचिन्तस्य यादसा मुदकं यथा ॥ २९ ॥ मद्भिभूतिरभिधाय न
श्रीवक्ता संविभूषिताः ॥ धृजातपत्रव्यजतैः स भवेद पराजित ॥ ३० ॥ उपासकस्य मामेव योगधार
णायामुने ॥ सिद्धयः पूर्वकथिता उपतिष्ठन्त्यशेषतः ॥ ३१ ॥ जितेन्द्रियस्य दांतस्य जितश्चासात्मनो मु
ने ॥ मद्धारणाधारयतः कासा सिद्धिः सुदुर्लभा ॥ ३२ ॥ भजरायान्वदन्ते तां युंजतो योगमुन्नमम् ॥

मया संपद्यमानस्य कालक्षपणहेतवः ॥ ३३ ॥

गर्ग्यमुनिलाश ॥ पहिले कल्याका सिद्धि हेरु जो छन सवै हुन्छन ॥ ३१ ॥ इन्द्रियकन जित्वा मनकन जित्वा प्राणा
कन जित्वा मेरो धारणा गर्ग्यमुनिका ॥ कौन सिद्धि न पाई शक उछ को हि छैन ॥ ३२ ॥ मलाई पाउन्ना निमित्त
मयोग गर्ग्य ॥ हस्तो योगीका सिद्धि हेरु जो छन विष्णु हुन भनिक हुन्छ ॥ परंतु मलाई भेटाउन्ना योगीका कालक्षप
न गर्ग्य निमित्त मात्र छन ॥ ३३ ॥

॥ भा. ५ ॥
॥ ८२ ॥

जन्मोषधि. तप. मंत्र. इन्ले गरिज त्रिसिद्धि छन्द. तिसवै सिद्धि जो छन्द. योग ते ग गरि मिल छन्द. योग की गति जो छन्द. अरु कु
राले मिल दैन ॥ ३४ ॥ हे उद्धव. सवै सिद्धि को कारण महु. पति प्रभु महु. मोक्ष को आत्म अनात्म ज्ञान को. धर्म को. धर्म उप
देश गन्धर्व वल्गवादि हेरु को कारण पालक मै छु ॥ ३५ ॥ मजो छु. सवै जीव को. आत्मा अंतर्गमि छु ॥ वाहिद्रूप निष्ठापक
भैरव को छु ॥ किं किय को पति सखेन जन्मो चार प्रकार को प्राणि हेरु का भिन्न. वाहिद्रु. पृथिवी आदि गमा का पां

जन्मोषधितपो मन्त्रे यावती रिह सिद्धयः ॥ योगेनाप्नोति ताः सर्वानन्यैर्या गगतिं व्रजेत् ॥ ३४ ॥ सर्वसा
मपि सिद्धिना हेतुप्रतिरहं प्रभु ॥ अहं योगस्य सांख्यस्य धर्मस्य ब्रह्मवादिनाम् ॥ ३५ ॥ अहं मात्मानं
रोवाहो नावृतः सर्वदेहिनाम् ॥ यथा भूतानि भूतेषु वहिरत्तः स्वयन्तथा ॥ ३६ ॥ इति श्रीभागवते
महापुराणे एकादस्कंधे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ श्रीउद्धव उवाच ॥ त्वं ब्रह्म परमं साक्षादुनायत
मया वृतम् ॥ सर्वेषामपि भावानां त्राणस्थित्यप्ययोजनवः ॥ १ ॥

च महाभूत रक्षा का छन्द. तलै मरखा को छु ज्ञान भनिकु लले. उद्धव कनवता या मोहिकथा कन. भुक देवले राजा
परीक्षित कनवता या ॥ सूतलेशौनकादि ऋषि हेरु कनवता उंदा भया ॥ ३६ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एका
दस स्कंधे भाषा दी कायां पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ जन्मो प्राणि हेरु मा को हि प्राणि जो छन्द. केहि गुण विशेषले
गरि अधिक मानले सहित भया का छन्द. को हि प्राणि सवै वरा वरै छन्द. को हि घटिया छन्द. तलै तपा निपति

॥ राम ॥
॥ ८२ ॥

कौन्विभूतिमाकसोगरिरहाकाछौभनि उद्धवजोछन् कुरुकनविंतिगर्नलागा हेरुह्मआदिअन्नलेहीनभयाका
कसैलेनढावियाका सवैप्राणिकोसृष्टिस्थितिप्रलयकनगर्नासत्तासाक्षात्परंब्रह्मतपोत्रिहो ॥ १ ॥ मनजित्तनस
कन्याहेरुलेछोटावटा जोकोहिप्राणिविषेरहाकापनि तपात्रिकनजान्नपनिगाहोछ ॥ सत्तातपात्रिकनहेभगव
न् वेदकोतात्पर्य अर्थकनजान्नाब्राह्मणारुहजोछन् जत्ताप्रकारलेउपासनागछन् ॥ २ ॥ जौन्वसुविषेरहा

उच्चावचेषुभूतेषुउर्जेयमरुतात्मभि उपासनेत्वांभगवन् यथातथेनब्राह्मणाः ॥ २ ॥ यषुयेषुच
भावेषुभक्त्यात्वांपरमर्षयः ॥ उपासीनाः प्रपद्यंतेसंसिद्धितद्वयस्वमे ॥ ३ ॥ गूढश्वरतिभूतात्माभू
तानांभूतभावनः ॥ नत्वांपश्यंतिभूतानिपश्यंतमोहितानिते ॥ ४ ॥ याकाश्चभूमौदिविवैरसायां
विभूतयोदिक्षुमहाविभूते ॥ तामहमाख्यायउभावितास्तेनमामितेतीर्थपदांघ्रिपद्मम् ॥ ५ ॥

कातपात्रिकन ॥ भक्तिलेउपासनागर्नावडावडाअपिहरुजोछन् जौन्सिद्धिकनपाउंदछन् सोकुरोमेंकन
आज्ञागर ॥ १ ॥ प्राणिहेरुकाअंतर्गमिभयाकातिमिछौ ॥ गुप्तरहाकाछौ तंमिमायालेमोहितभयाकाप्रा
णिजोछन् साक्षात् देषातपात्रिकनपनिदेष्टुदैनन् ॥ ४ ॥ हेरुह्म पृथिवीमास्वर्गमापातालालिलोकमादि
शामातपात्रिलेकोहिशक्तिलेयुक्तगरियाका विभूतियोगकनआज्ञागर तपात्रिकाचरणकमलकननमस्का
रगछु ॥ ५ ॥ भनिविंतिगयाउद्धवलेरुह्मजोछन् आज्ञागर्नलागा ॥ हेउद्धव कुरुक्षेत्रमाशत्रुसंगयुद्धगर्ना

॥ भा.प. ॥
॥ ८३ ॥

कोइछागर्ग्यः भर्जुनलेपनिहिरुहकनगयाथा ॥ ८॥ युद्धगर्ग्यः कोइछागर्ग्यः भर्जुनलेपप्रह्मगर्ग्यः कोकारणभच्छन् राज्यका
निमित्तः ज्ञातिकोवधगर्जुनभधर्मरहेछः निन्दाहुन्यापनिरहेछः भनिवृजिः मंमार्याहुं योमारिन्याहोभन्नायोस्तोवृद्धि
भयाकाभर्जुनजोथिया ॥ युद्धगर्दिनभनिहृतिभया ॥ तसैयुद्धमाचिन्ननलगाउन्नाभर्जुनकनयुक्तिलेवृजानारभ
र्जुनलेपसैविभूतियोगकनसोददभयाथा ॥ हेउद्धवजलैरगाभूमिविषेः अर्जुनकनविभूतियोगकनवनाजाथा

श्रीभगवानुवाच ॥ एवमेतदहंयष्टः प्रह्मप्रह्मविदाम्बरः ॥ युयुत्सुनाविनसनेसपत्नैरर्जुनेनवै ॥ ८ ॥
ज्ञात्वाज्ञातिवधं गर्ह्यमधर्मराज्यहैतुकम् ॥ ततोनिवृत्तोहंताहंहतोयमितिलौकिकः ॥ ७ ॥ सतदापु
रुषव्याघ्रोयुक्तोमेघनिबोधितः ॥ अभ्यभाषतमामेवंयथात्वंरणमूर्धनि ॥ ८ ॥ अहमात्मोद्धवामी
षाभूतानांसुहृदीश्वरः ॥ अहंसर्वानिभूतानितेषास्मित्युद्धवाप्ययः ॥ ९ ॥ अहंगतिगतिर्मतांकाल
ः कलयतामहम् ॥ गुणानांचाप्यहं साम्यं गुणान्योत्पत्तिकोगुणः ॥ १० ॥ गुणिनामप्यहंसूत्रं महतां
च महानहम् ॥ सूक्ष्मानामप्यहं जीवोद्वर्जयानामहंममः ॥ ११ ॥

तस्मैतिमिलाइयनिविभूतियोगव
ताउलागुन ॥ ८ ॥ हेउद्धवः मजोछः इसवैप्राणिकोआत्माभनिः सुहृत्भनिः ईश्वरभनिउपासनागर्ग्यलाईयोग्य
छु ॥ सवैप्राणिमंहं सवैप्राणिकोसृष्टिस्थितिप्रलयमंदेविहंछ ॥ ९ ॥ गतिहुन्याहेरुविषेगतिमहं ॥ वसगर्ग्यहे
रुविषेकालभन्याकोमहं सत्वादिगुणविषेअव्याकृतभन्याकोप्रधानमहं ॥ गुणिप्राणिहेरुमास्वभावलेभयाको
गुणजोछसोमहं ॥ १० ॥ गुणिहेरुमाप्रथमकार्यमहं महत्तत्पनिमहं जीवपनिमंहं ॥ जितिनसकिन्नावसुमामनम

॥ राम ॥
॥ ८३ ॥

॥ ११ ॥

वेदपद्माङ्गाहेरुमा मन्त्राङ्कारमङ्गं ॥ अक्षरहेरुमा अकारअक्षरमङ्गं छन्दहेरुमा गायत्रीछन्दमङ्गं ॥ १२ ॥ सवैदेव
ताहेरुमा इन्द्रमङ्गं ॥ वसुदेवतामा हव्यवाटनामा वासुदेवनामङ्गं वाह्यादित्यहेरुमा विष्णुमङ्गं ॥ एकादशरुद्र
मा नीललोहितनामा रुद्रमङ्गं ॥ १३ ॥ ब्रह्मर्षीहेरुमा भृगुर्षीमङ्गं ॥ राजर्षीहेरुमा स्थायंभुवनामामनुमङ्गं
देवर्षीहेरुमा नारदमङ्गं गाईहेरुमा कामधेनुगाईमङ्गं ॥ १४ ॥ सिद्धहेरुमा कपिलमुनिमङ्गं ॥ पक्षिहेरुमा

हिरण्यगर्भो वेदानामंत्राणां प्रणवस्त्रिवृत ॥ अक्षराणामकोरोस्मिपदानिछन्दसावहम् ॥ १२ ॥ इन्द्रो
हं सर्वदेवानावसूनामस्मिहव्यवाट ॥ आदित्यानामहं विष्णुरुद्राणां नीललोहितः ॥ १३ ॥ ब्रह्मर्षिणां
भृगुरहं राजर्षिणामहं मनुः ॥ देवर्षीणां नारदोहं हविर्धान्यस्मिधेनुषु ॥ १४ ॥ सिद्धेश्वराणां कपिलः
सुपर्णोहं पतत्रिणाम् ॥ प्रजापतीनां दक्षोहं पितृणामहं मर्यमा ॥ १५ ॥ मां विष्णोऽवदैत्यानां प्रह्ला
दमसुरेश्वरम् ॥ सोमं नक्षत्रौषधीनां धनेशं यक्षरक्षसाम् ॥ १६ ॥ ऐरावतं गजेन्द्राणां यादसां वरु
णं प्रभुम् ॥ तपतां शुमतां सूर्यमनुष्यानां च भूपतिम् ॥ १७ ॥

गरुडमङ्गं प्रजापतिहेरुमा दक्षप्रजापतिमङ्गं पितृहेरुमा भार्यनामामङ्गं ॥ १५ ॥ हेउडवदैत्यहेरुमा प्रह्ला
दनामादैत्यमङ्गं ॥ ताराहेरुमा औषधीहेरुमा चन्द्रमामङ्गं वैश्वपतिमङ्गं ॥ यक्षराक्षसहेरुमा कुबेरमङ्गं ॥ १६ ॥ गजेन्द्र
हेरुमा ऐरावतहातिमङ्गं जलजंतुमा वरुणमङ्गं ॥ तापगन्धर्वकान्तिरुन्माहेरुमा सूर्यमङ्गं मनुष्यहेरुमा राजामङ्गं

॥ ८८ ॥
॥ ८४ ॥

घोडा हेरुमा उच्चैः श्रवा घोडो महुं ॥ धातु हेरुमा सुवर्ग महुं ॥ दराग र्ग्य हेरुमा यमराज महुं ॥ सर्प हेरुमा वासुकी महुं ॥ १८ ॥ ना
गेद्र हेरुमा अनन्त नामानाग महुं ॥ सिंह ॥ हुं न्या दाहू हुं न्या मा ॥ सिंह महुं ॥ आश्रम हेरुमा ॥ सन्यासाश्रम महुं ॥ चारवर्ग
मा वासुगाम हुं हेउ द्रव ॥ १९ ॥ तीर्थ मानदी हेरुमा गंगाम हुं ॥ नेलाउमा ससुद्र महुं ॥ आयुध माधनु महुं ॥ धनुर्धा
रिमा महादेव महुं ॥ २० ॥ वस्त्राजगामामे रूपत महुं ॥ जाइन सकिन्या माही मालय महुं ॥ जाइन सकिन्या माही

उच्चैः श्रवातुरंगानां धातूनामस्मिकां च नमः ॥ यमः संयमता चाहं सर्पाणामस्मि वासुकी ॥ १८ ॥ नागे
न्द्राणां मननो हं मृगेन्द्रः शृंगिदंष्ट्रिणाम् ॥ आश्रमाणामहं तुर्यां वर्गानां प्रथमो नद्य ॥ १९ ॥ तीर्थानां
स्रोतसां गंगामसुद्रः सरसामहम् ॥ आयुधानां धनुर्हं विपुरघ्नो धनुष्प्रताम् ॥ २० ॥ धीस्थानाम
स्पृहं मेरुर्गरुनानां हिमालयः ॥ वनस्पतीनामश्वत्थ औषधीनामहं यवः ॥ २१ ॥ पुरोधसां वसि
ष्टो हवस्मि शानावहस्पतिः ॥ स्कन्दो हे सर्वसेनायामग्रराणां भववानजे ॥ २२ ॥ यज्ञानां वत्स्य यज्ञो हं
वृत्तानामविहिंसनम् ॥ वायव्यर्काम्बुवागात्मा शुचीनामप्यहं शुची ॥ २३ ॥

मालय महुं ॥ वनस्पतिमापि प्यल महुं ॥ औषधीमाजो महुं ॥ २१ ॥ पुरोहितमावसिष्ट महुं ॥ वेदको अर्थ जान्यामाव
हस्पति महुं ॥ सवै देवताका सदीरमा स्वामिकार्त्तिक महुं ॥ सत्सर्गमादेधाउ न्या हेरुमा वत्सामहुं ॥ २२ ॥ यज्ञ हेरुमा
वत्स यज्ञ महुं ॥ वतमा अहिंसामहुं ॥ शुद्धगर्ग्य हेरुमा अतिशुद्धगर्ग्य भयाको वायु अग्नि सूर्य जल वचन मन महुं ॥ २३

॥ राम ॥
॥ ८४ ॥

योगहेरुमा मनजितरूपयोछमहुं जिनाकोइछागर्वाहेरुमा विषमंत्रणामहुं विवेकआदिगयाका वदीयावसुमा
अनात्माविवेकविद्याजोछमहुं आख्यातिअन्यथाख्याति शून्यख्याति असत्ख्याति अतीयख्याति एतेख्यातिवादि
हेरुको यो कुरोरुसैहो भनिजानिनसकु भेदजोछ सोमहुं ॥ २४ ॥ स्त्रीहेरुमाशतरूपा राशिमहुं पुरुषमास्वायंभु
वमनुमहुं सुनिमानारायणमहुं ब्रह्मचारीमासनकुमारमहुं ॥ २५ ॥ धर्ममासंन्यासधर्ममहुं भयनहुन्यास्था

योगानामात्मसंरोधोमंत्रोस्मि विजिगीषताम् ॥ आन्वीक्षिकीकौशलानां विकल्पख्यातिवादिनाम् ॥ २४ ॥
स्त्रीणां तु शतरूपा हं पुंसां स्वायंभुवो मनुः ॥ नारायणो मुनीनां च कुमारो ब्रह्मचारिणाम् ॥ २५ ॥ धर्मा
णामस्मि संन्यासः क्षमाणामवहिर्मती ॥ गुह्यानां सुनृतं मौनमिथुनानामजस्वहं ॥ २६ ॥ सम्वत्सर
रोस्मि निमिषा मृतौनां मधुमाधवौ ॥ मासानां मार्गशीर्षो हं नक्षत्राणां तथाभिजित् ॥ २७ ॥ अहं युगा
नां च कृतधीराणां देवलोसितः ॥ दैवायनोस्मि व्यासानां कवीनां काव्यआत्मवान् ॥ २८ ॥ वासुदेवो
भगवतात्वं तु भागवतेष्वहम् ॥ किंपुरुषाणां हनुमानविद्याभ्रानां सुदर्शनः ॥ २९ ॥

लमा भगवान्मा चित्तलाउनुमहुं गुप्तकुरामापियारोवो लनुमहुं मौनहुनुपनिमहुं ॥ मिथुनधर्महुन्यामाव
लामहुं ॥ २६ ॥ कालमासंवत्सरमहुं ऋतुमावसन्त ऋतुमहुं ॥ महिनामामार्गशीरमहिनामहुं ॥ नक्षत्रमाभिजि
ननक्षत्रमहुं ॥ २७ ॥ युगमासत्ययुगमहुं धीरपुरुषमादेवल असित ऋषिमहुं ॥ व्यासहेरुमा कृष्णदैवायनव्या
समहुं कविहेरुमा आत्मज्ञानी भयाकाशु काचार्यमहुं ॥ २८ ॥ भागवतशब्दलेकहियाका प्राणि विषे वासुदेव

॥ भा. ए. ॥
॥ २५ ॥

महुं भागवत हेरु विषे निमिजे छो हेउरु वमैहुं ॥ किं पुरुष हेरु विषे हनु मान महुं ॥ विद्याधर हेरु विषे सुदर्शन नामा वि
द्याधर महुं ॥ २८ ॥ रत्नमापमरागमणि महुं सुन्दर वसुमाकमल को पियासे महुं दर्शजाति माकुश महुं ॥ धिउमागा
इको धिउ महुं ॥ ३० ॥ उद्योगीमालक्ष्मी महुं उवार हेरु माछलगन्या जुवार महुं सहनशील प्राणिको सुहुनु जो
छ महुं ॥ सत्वहुन्या प्राणिमा सत्व महुं ॥ ३१ ॥ वलहुन्या हेरु माइं द्रियको वल देहको वल महुं भागवत हेरु लेभ

रत्नानापमरागोस्मिपमकोशः सुपेशमाम् ॥ कुशोस्मीदर्भजातीनांगव्यमाज्यं हविष्यहम् ॥ ३० ॥
व्यवसायिनामहं लक्ष्मीः कितवानां छलयहः ॥ तिनिक्षमस्मितिनिक्षराणां सत्वं सत्त्ववतामहम् ॥ ३१ ॥
ओजः सहो वलवतां कर्माहं विद्धि सान्वताम् ॥ सान्वतां नवमूर्त्तीनामादिमूर्त्तिरहपराः ॥ ३२ ॥ वि
श्ववसुः पूर्वचित्रिगंधर्वाप्सरसामहम् ॥ भूधराणामहस्येय्यं गंधमात्रमहं भुवः ॥ ३३ ॥ अ
पारसश्च परमस्तेजस्विनां विभावसुः ॥ प्रभासूर्येन्दुताराणां शब्दोहनभसः परः ॥ ३४ ॥

क्विले गरिना कर्म महुं वासुदेव संकर्षण आदिगणाका नौ मूर्त्तिमा वासुदेव महुं ॥ गंधर्वमा विश्वावसु गंधर्मम
हुं ॥ अप्सरागरामा पूर्वचित्रि अप्सरामहुं ॥ पर्वत हेरु माभयाको स्थिरस्वभाव महुं ॥ पृथिवीका गंधगुण महुं ॥ ३३ ॥
जरकोरसगुण महुं ॥ तेजस्वी हेरु मा अग्नी महुं ॥ सूर्य चन्द्र तारा हेरु को कान्ति महुं ॥ आकाशको शब्दगुण महुं ॥ ३४ ॥

॥ राम ॥
॥ ८५ ॥

ब्रह्मणकोहितकारिमा बलिनामादेत्यमहुं वीरहेरुमाअर्जुनमहुं प्राणिहेरुकोस्थितिउत्पत्तिप्रलयमहुं ॥ ३५ ॥ गति
भयो त्यागभयो संमानभयो बोलभयो आनंदभयो ईयांचकर्मन्द्रियकाकामभया ॥ हेतुचिसो नातो स्पर्शगर्त
तितोमिठोथाहापाउनु सनु गंधलिनु ईयाचज्ञानेन्द्रियकाकामभया ॥ इन्द्रियभया इन्द्रियहेरुलेआकुआकुका
मगर्तुमज्जुभयो योसवैमहुं ॥ ३६ ॥ हेउद्धव पृथिवी वायु आकाश जल ज्योति रूप रस गंध स्पर्श शब्द मह

ब्रह्मणानांवलिरहंवीराणामहमर्जुन ॥ भूतानांस्थितिउत्पत्तिरहंवैप्रतिसंक्रमः ॥ ३५ ॥ गत्यु
त्पत्तिसर्गोपादानमानन्दस्पर्शलक्षणां ॥ आस्वादश्रुत्यवघ्राणमहंसर्वेन्द्रियेन्द्रियम् ॥ ३६ ॥ पृ
थिवीवायुराकाशआपोज्योतिरहंमहान् ॥ विकारपुरुषोव्यक्तरजःसत्त्वंतमःपरम् ॥ ३७ ॥ अहं
मेतत्प्रसख्यानंज्ञानंतत्त्वविनिश्चयः ॥ मयेश्वरेणजीवेनगुणोनगुणिनाविना ॥ ३८ ॥

तत्त्व अहंकार रूपाद्रुद्रियजीवप्रकृतिईसवैपचिसतत्त्वमहं ॥ रजोगुण सत्वगुण तमोगुण एतिप्रकृतिका
गुणभयो परब्रह्मपतिसवैमैहुं ॥ ३७ ॥ तत्त्वहेरुकोगुणानांगर्तुलक्षणांलेगरिज्ञानगर्तु तत्त्वज्ञानकोफलभयो
तिहुन् तत्त्वभनितत्त्वकोनिश्चयगर्तुभयोसवैमैहुं जीवभनुभयो ईश्वरभनुभयो गुणगुणिभनुभयो क्षत्रज्ञ
भयो रूपायोव्यवहारजोद्धमहुं मईश्वरदेविभिन्नवस्तुकेहिद्वैतसवैमैहुं ॥ ३८ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ८६ ॥

मेरोसन्तानभयाकोजगाकतेछैनसवैमछु. ठेरैकाललेगरिपरमाराकोगरानागर्नसकियलानैपनिकोटिवसाराकोसु
ष्टिगर्ना. सत्तामेराविभूतिकोविस्तारवर्गानगरिसकनुछैन. जाहाजाहाप्रभाव. श्री. कीर्ति. ऐश्वर्य. अकार्यदेवि
भयगर्नु. त्यागसोभाग्य. वल. सहज. विज्ञानसतिकुराछन्. जाहामेरोअंसछभनिजान. ४० ॥ हेउद्धवसंक्षेपलेग

सर्वात्मनापिसर्वेणानभवोविद्यतेकचित्. संख्यानं परमाराणां कालेन क्रियते मया. ३८ ॥
नतथामेविभूतीनां सृजतो रणानिकोटिशः. तेजः श्री. कीर्ति. ऐश्वर्य ही स्यागं सौभगं भग. ४० ॥
वीर्यं तितिक्षा विज्ञानं यत्र यत्र समं शकः. सतामे कीर्तिताः सर्वाः संक्षेपेण विभूतयः. ४१ ॥
मयानो विकारा एवैते यथावाचाभिधीयते. वाचं यच्छ मनो यच्छ प्राणं यच्छेन्द्रियाणि च. ४२ ॥
आत्मानमात्मना यच्छन् भूयः कल्पते धने. ४२ ॥

गरिविभूतियोगमैलवतायां. ईसवैविभूतिजोछन्. मनलेकल्पनालेगरियाकासात्रछन्सांचाछैनन्. ज
सोभाकाशपुरुषाभनिबोलीमात्रछ. साक्षात् आकाशपुष्पछैनवाकइन्द्रियकनजित. मनकनजितप्राण
कनजित. इन्द्रियकनजितबुद्धिकनजित. सतिकुरागयाप्राप्त. हेउद्धवफेरिसंसारकनप्राप्तिहुदैन्. ४२ ॥

॥ एव ॥
॥ ८६ ॥

जौनयोगीजोछुबुद्धिलेवचनमनकनजित्तसकैनभन्या॥तेसयोगीकावतभयोतपस्याभयोकाचामाटाकाघडाको
जलनभामिदामिथामिदैनन॥४३॥तस्कारणमेरोआश्रयकनगन्यालेमेरोभक्तिलेयुक्तभयाकोबुद्धिलेगरि॥व
चनमनप्राणकनजित्प्राप्तप्राणिजोछुहृतार्थहुंछुभनिउद्धवकनश्रीकृष्णलेआज्ञागयाकाकथाकन॥भुकदे
वलेराजापरीक्षितकनकहंदाभया॥सूतलेशौनकआदिगयाकाअधिहेरुकनवतउंदाभया॥४४॥इतिश्रीभा
गवतेमहापुराणोष्कादशस्कंधेभाषाटीकायांषोडशोध्याय॥१६॥भक्तिलेगरिगयाकोकर्मजोछुमोक्षकोका

योवैवाडमनसीसम्यगसंयच्छन्धियंपति॥तस्यव्रतंतपोदानंस्वव्यामघटामुवत्॥४३॥तस्माद्वचो
मनःप्राणान्नियेच्छेन्मत्परायण॥मद्भक्तियुक्तयाबुद्ध्याततःपरिसमाप्यते॥४४॥इतिश्रीभागवतेमहा
पुराणोष्कादशस्कंधेमहाविभूतियोगोनामषोडशोध्याय॥१६॥श्रीउद्धवउवाच॥यस्त्वयाभिहित
पूर्वधर्मस्त्वद्भक्तिलक्षणा॥वर्णाश्रमाचारवतासर्वेषां द्विपदामपि॥१॥यथानुष्टीयमानेनत्वयिभ
क्तिवृत्तांभवेत्स्वधर्मणारविन्दाक्षतन्ममाख्यातुमर्हसि॥२॥

रणाछुभनिआज्ञागर्तुभयोतसअर्थहेरुकृष्णभनिउद्धवजोछुनविंतिगर्नलागा॥पेहेतपांजिलेआज्ञागयाको
भक्तिलेसहितभयाकोधर्मजोछुबालेराआदिभयाकावर्णाको॥आश्रमकोअरुजोकोहिदुइपाउहुंन्याप्राणि
काधर्मकनआज्ञागरजौनधर्ममारहनालेगरिमनुष्यहेरुकातपाजिविषेभक्तिलागछुसुलोधर्ममलाईआज्ञागर॥२॥

॥ भा. ॥
॥ ८७ ॥

पहिले हे प्रभो न पांजिले हों सको रूपलिकन वडो सुखरूप धर्मकन ब्रह्मालाई वताउनु भयो थो ॥ ३ ॥ सोहि धर्म जान्या मनुष्य जो छु ॥ समकालमा ठेरे काल जानाले वहुधा कोहि हवैन ॥ ४ ॥ हे कृष्ण पृथिवी विषे न पांजिका धर्मकन कह्या गन्या धर्मको रक्षा गन्या दोसो छैन ॥ पृथिवी मा छैन भक्तु को न कुरा छ जो न जमामा वेद हेरु मूर्ति धारि छु ॥ उला वला का सभा विषे पनि छैन ॥ ५ ॥ धर्म स्तो हो भनिकह्या धर्म गन्या धर्मको रक्षा गन्या ॥ स्तोता न पांजिले पृथिवी कन छो

उरा किल महावा हो धर्म परमकं प्रभो ॥ यत्ने न हंस रूपे रावला रोभ्या तथ माधव ॥ ३ ॥ स इदानी सुमह ता काले नामित्र कर्शन ॥ न प्रायो भविता मर्त्यो लोके प्राणा गशा सित ॥ ४ ॥ वक्ता कर्ता विताना नो धर्म स्याच्युत ते भुवि ॥ सभायामपि वोरयां यत्र मूर्तिः धराः कलाः ॥ ५ ॥ कर्ता वित्रा प्रवक्ता च भवतामधु मदनः ॥ त्यक्ते महीतले देव विनष्टकः प्रवक्ष्यति ॥ ६ ॥ तत्वं नः सर्व धर्मज्ञ धर्मस्त्वद्भक्त लक्षणा ॥ यथायस्य विधीयेत तथा वर्णाय नः प्रभो ॥ ७ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ धर्म्यं स तवः प्रह्मे निश्चये स करो नृणाम् ॥ वर्णाश्रमाचारवतां तयुद्धवनिबोधमे ॥ ८ ॥

डिगया विषे ॥ नाशिया का धर्मकन को वताउला ॥ ६ ॥ तस्कारण सवै धर्मकन जान्या भयाका हे कृष्ण जसले गरित पांजि विषे भक्तिला गछु ॥ स्तोता धर्म जो छु हा मिलाइ आजागर जो न वर्णाले ॥ जो न आश्रम ले जसो गरि गरि न्छु ॥ न स्तो हे प्रभो ॥ हा मिलाई वर्णानगर ॥ ७ ॥ भनि विनिगया उधवलेर कृष्ण आजागर्न लाग्या ॥ हे उद्धव योनि प्रो प्रह्म ॥ धर्म ले युक्त भयाको छु ॥ मनुष्य का कल्याण गन्या पनि छु ॥ तस्कारण वर्ण आश्रम को धर्मकन भक्तु सुन ॥ ८ ॥

॥ राम ॥
॥ ८७ ॥

पहिले सत्ययुगविषे मनुष्यका वर्ण जो छ भुक्त भनिकहिं थ्यो ॥ प्रजा हे रूप निज नैले गरि कृत कृत्य थिया ॥ यस्कारण कृत यु
ग भनियुग को न उ भयो थ्यो ॥ ८ ॥ पहिले वेद जो छ प्राण वमात्र थियो ॥ धर्म पनि न प सत्य दया शौच ई चारै सहित पाउ
भया को थियो ॥ तप त्याग गर्वा प्राणि जो छ नृपा पले हीन भया का छंदा महस को उपासना गर्द थ्या ॥ १० ॥ हे उद्धव त्रेता
युगविषे वैरा प्राण लाई निमित्त गरि हृदय दे विवेद त्रयी जो छ प्रकट हुदी भई ते सै वेद त्रयी वाट होता अध

आदौ कृत युगे वर्णान्तरां हं स इति स्मृत ॥ कृत कृत्या प्रजां ज्ञात्वा तस्मात् कृत युगं विड ॥ ८ ॥ वेदः
प्राणवस्वाग्नेधर्मा हं नृपरूप धृक् ॥ उपासते तयो निष्ठा हं सं मां मुक्त किल्बिषा ॥ १० ॥ त्रेता मुखे म
हाभाग प्राणान्मे हृदया त्रयी ॥ विशा प्रादूर भूत स्या भहमा सं त्रिवृन्मखः ॥ ११ ॥ विप्रक्षत्रिय विद
भुद्रा मुख वाहू रूपा दजाः ॥ वैराज पुरुषा ज्ञाता य आत्मा चार लक्षणाः ॥ १२ ॥ गृहाश्रमो जघनमो
ब्रह्मचर्य हृदो मम ॥ वक्षस्य लाहने वा सो न्यासः शीर्षाणि संस्थितः ॥ १३ ॥ वर्णानामाश्रमानां च जन्म
भूम्यनुसारिणी ॥ आसनं प्रकृतयो नृणां नीचैर्नीचोन्नमोन्नमैः ॥ १४ ॥

(यु उक्ता ता इ न ले गरि ति न
रूप भया को मय जहु दो भयो ॥ ११ ॥ वैराज पुरुष का मुख वाहु उरू पाउ दे वि आ फु आचार गन्या भया का ॥ वासरा
क्षत्रिय वैश्य भूद्र ई चार वर्ण हुदा भया ॥ १२ ॥ वैराज पुरुष का जघन दे वि गृह स्याश्रम भयो ॥ हृदय दे वि ब्रह्म चारी
आश्रम हुदो भयो ॥ वक्षस्य ले दे वि वारा प्रस्थाश्रम भयो शिर दे वि संन्यासाश्रम भयो ॥ १३ ॥ हे उद्धव वर्ण को आश्र
म को जो न्ठा उ दे वि आ फु उत्पन्न हुदा भया उसै स्वभाव हुदो भयो ॥ १४ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ८८ ॥

हेउद्व. तिस्रभावकोलक्षणपनिभंडुसुन ॥ शमभयोदमभयो. तपस्याभयो. शौचभयो. संतोषहुनुभयो सहनशीलहुनु
भयो सवैलोकसंगसोमारहुनुभयो ॥ मविषेभक्तिगर्नुभयो. दयागर्नुभयो. सत्यबोलनुभयो ॥ एतिस्रभावब्राह्मणाका
हुनु ॥ १५ ॥ प्रतापभयो. बलभयो. धैर्यभयो. सरोहुनुभयो ॥ सहनशीलहुनुभयो. कोनैकामगर्दापनिवडोछोतिग
र्नुभयो. उद्योगभयो ॥ ब्रह्मणाकोहितगर्नुभयो. ऐश्वर्यभयो एतिस्रवियकास्वभावहुनु ॥ १६ ॥ आलिकहुनुभ
यो. दानभयो कपटनगर्नुभयो. ब्राह्मणाकोसेवागर्नुभयो. धनकमाउंदासंतोषनगर्नुभयो. एतिकुरावैश्यका

शमोदमस्तपः शौचसंतोषः क्षान्तिरार्जवम् ॥ मद्रक्तिश्च दया सत्यं ब्रह्म प्रकृतयस्त्रिमा ॥ १५ ॥ तेजो
बलं धृतिः शौर्यं तितिक्षा दार्यमुद्यमः ॥ स्थैर्यं ब्रह्मण्यैश्वर्यं क्षत्रप्रकृतयस्त्रिमा ॥ १६ ॥ आलि
कं दाननिश्चयश्च देभो ब्रह्मसेवनम् ॥ अनुत्थिरथौपचये वैश्यप्रकृतयस्त्रिमा ॥ १७ ॥ शुश्रूषणं
द्विजगवां देवानां चाप्यमायया ॥ तत्र लब्धेन सन्तोषः शूद्रप्रकृतयस्त्रिमा ॥ १८ ॥ अशौचमनृत
स्तेयं नास्तिक्यं भुक्कवियह ॥ कामः क्रोधश्चतर्षश्च स्वभां वो ते वसयिनाम् ॥ १९ ॥

स्वभावहुनु ॥ १७ ॥ ब्राह्मणाको. गाइको. देवताको. कपटनगरिसुसारगर्नुभयो ॥ तनैको सुसारगर्दाजनिमि
ल्यो ॥ उसैमा संतोषगरिजिउनुभयो ॥ एतिस्रभावशूद्रकाहुनु ॥ १८ ॥ चारवर्णादेभिभिन्नभयाका. चराशाला
दिहेरुकास्वभावकनभंडुसुन ॥ शौचनगर्नु. रुदोबोलनु. चोरीगर्नु. ईश्वरछुभन्नामतिनगर्नु. विनाकामै
रुगरागर्नु. विषयभोगमाढेरैइछागर्नु. अतिकोठगर्नु. तृष्णागर्नु. एतिस्रभावचणालादिकाहुनु ॥ १९ ॥

॥ राम ॥
॥ ८८ ॥

हिंसानगर्ज. साचोबोलन. विषयभोगकोइछानगर्जकोधलोभनगर्ज. सबप्राणिकोपियारोइछान. हितइछानाकराको
इछागर्ज॥सलोधर्मजोछ. सबैवर्गकोहो॥२०॥हेउद्धव. पहिलेब्रह्मचारीकाधर्मकनभंछुसुन॥गर्भाधानादिसं
स्कारकाक्रमलेगरिउपनयननाउंभयाकादोस्त्राजन्मकनेपाईकन॥ब्राह्मणक्षत्रिय. वैश्यले. गुरुले. पढ़डा
काप्राप्तइन्द्रियजितिगुरुकाघरमावसिवेदकनपहु॥२१॥मेखला. मृगछाला. दण्डजपमाला. जनै. क.

अहिंसासत्यमस्तेयमकामकोधलोभता॥भूतप्रियहितेहाचधर्मोयंसर्ववर्णिकः॥२०॥द्विती
यप्राप्यानुपूर्वाज्जन्मोपनयनंदिज॥वसनगुरुकुलेदानोब्रह्माधीयोतवाग्यतः॥२१॥मेखला
जिनदण्डक्षब्रह्मसूत्रकमण्डलन॥जदिलाःधौतदहासौःरक्तपीठःकुशान्दधन॥२२॥स्नानभोज
नहोमेषुजपोच्चारैववाग्यतःनछिन्नखरोमोगिकक्षोपस्थगतान्यपि॥२३॥रेतोनावकोरज्जातुव
सव्रतधरःस्वयम्॥भवकीरोवराह्यासुयतासुस्त्रिपदीजपेत्॥२४॥अग्रकाचार्यगोविप्रगुरु
वृद्धसुश्रुचि॥समाहितउपाशान्नसंधेचयतवाकजपन्॥२५॥

मण्डल. जलपात्रलिखन॥जटापालन. नथोपाकावस्त्रपैहनु. दातनधनु. रंगितआसनमानवस्तु॥२१॥हो
मजप. पिशाप. विष्टासाग. सतिकुरागर्दनबोलन॥काषिकाउपस्थकापनि. रोमनकाटन. नखनकाटन॥२३॥
ब्रह्मचारीलेकैलेपनिवीर्यगिराउनुछेन॥कदाचित्गियोभन्या. जलमाडुविस्नानगर्ज॥प्राणायामगेरिगाय
त्रीजपगर्ज॥२४॥भुद्धभैरवकचिन्नगरि. आगो. सूर्य. गुरुगाई. ब्राह्मणभाचार्य. वृद्धदेवताहेरुकोउपासनागर्जस

धकाउपासनापनिनबोलिगर्ज॥२५॥

॥ भा. ॥
॥ ८५ ॥

गुरुकनसाक्षात्कृतहोभनिमात्र॥ अयमानकैलेनगर्जु. मनुष्यद्वन्द्वभयावृद्धिलेनिन्दानगर्जु॥ गुरुभयाका. सर्वदेवनास्वरूप
पहुन॥ २८॥ व्याहानवेलुकाभिक्षामागित्यायाकोगुरुलाईदिनु॥ अरुजोकोहिकुरापायाकोपनिगुरुलाईदिनु॥ ग
रुकोआज्ञालिषानु॥ २९॥ दासगुरुभिभैगुरुकोसुसारगर्जु॥ पीठमावाकियाका. शोयामा. आसनमावस्थाका. गुरुकान
जीकमावसि. अंजलिवांधिकहि॥ आज्ञागर्जानगुरुलाभनिवसिरहनु॥ ३०॥ एतौशीलभयाको. भोगविलासके

आचार्यमांविजानीयात्रावमन्येतकहिचित्॥ नमस्त्वुद्यासूयेतसर्वदेवमयोगुरुः॥ ३१॥ सायंप्रा
तरुपानीयभैक्षतस्मैनिवेदयेत्॥ यच्चान्यदप्यनुज्ञातमुपयंजीतसंयतः॥ ३२॥ भूश्रूषमानआचा
र्यसदोपासीतनीचवत्॥ यानशय्यासनस्थामैर्नातिहरेकृतांजलिः॥ ३३॥ एवंदत्तौगुरुकुले
वसेद्भोगविवर्जितः॥ विद्यासमाप्यतेयावद्विभ्रद्धतमखण्डितम्॥ ३४॥ यद्यसौछन्दसालोक
मारोक्षन्ब्रह्मविष्टयम्॥ गुरवेविन्यसेद्धेहस्वाध्यायार्थवृहद्वतः॥ ३५॥

हिनभयाको॥ ब्रह्मचर्यव्रतकनखण्डितनगरिविद्याकोसमाप्तिनहुंज्याल्गुरुकाघरमावसु॥ ३६॥ एतौ
प्रकारकाअधिव्रह्मचर्यमारहिगृहस्थिहुन्याब्रह्मचारिकोधर्मकनवनायार॥ गृहस्थिकैहेनहुन्यानैष्टिकव
्रह्मचारिकाधर्मकनवेताउनलाग्या॥ हेउद्धव. ब्रह्मचारिजोछ. महत्लोकमाब्रह्मलोकमाजानाकोइछागर्छभया
नैष्टिकव्रह्मचारीकाव्रतकनगर्जामभयाकोछदे॥ गुरुदक्षिणाकानिमित्तदेहकनगुरुलाईअर्पणगरिदिनु॥ ३७॥

॥ भा. ॥
॥ ८६ ॥

पापलेहीनभयाको. ब्रह्मनेजलेयुक्तभयाको. ब्रह्मचारिजोछ. भागामा. गुरुमा. आश्रमा. सबै प्राणिमा. मरु कैलाई देषतो. भेद
बुद्धिनभयाको छंदो. मेरोउपासनाकनगर्दछ. ३१. स्त्री हेरु कन हेर्नु. छनू. संगवोलनु. ठटागनु. स्त्री पुरुष संग रहन्याको
संग गर्नु. एतिकुरा ब्रह्मचारीले नगर्नु. ३२. शौच भयो. आचमन भयो. स्नान भयो. संध्योपासन भयो. मार्जन भयो. तीर्थस्ना
न भयो. जप भयो. नछ. उनपाउ. नबोलनु. कुराको वर्जन गर्नु. ३३. हेउछव. सबै प्राणि विषे. मनवचन कर्मले गरि. मेरो.

अग्नौ गुरावात्म निच सर्वभूतेषु मा परम्. अथ गंधीरूपा मीत ब्रह्मवर्चस्प कल्मषः. ३१. स्त्रीणां निरीक्ष
णस्य शंसंलापश्चेलनादिकम्. प्राणिनो मिथुनी भूतान गृहस्था यतस्त्यजेत्. ३२. शौचमाचमनं स्ना
नं संध्योपासनमार्जवम्. तीर्थसेवा जपो स्मृश्या वक्ष्या संभाष्य वर्जनम्. ३३. सर्वाश्रमप्रयुक्तोयं नि
यमः कुलनन्दन. मद्भावं सर्वभूतेषु मनोवाक्कायसंभवः. ३४. एवं ब्रह्म तद्धरो ब्राह्मणो प्रिरिव
ज्वलन्. मद्भक्तस्तीव्रतपस्यादग्ध कर्माशयो मल. ३५. अथानन्तरमावेक्ष्य तथा जिज्ञासितागमः
गुरुवेदक्षिणान्दत्तास्त्रापाकुर्वन्नुमोदित. ३६.

भावना गर्नु जोछ. सबै आश्रमको धर्म हो. ३४. एतै प्रकार संग ब्रह्मचारी व्रत कनगर्नु. आगारु त्रिउज्यालो भ
याको दुलोतपस्या गर्नाले. रागादिमल बुद्धनाले निर्मल चित्त भयाको ब्राह्मण जोछ. मेरो भक्त हुन्छ. ३५. हेउ
व. वेदपही सक्या प्राप्ता. गृहस्थाश्रमका इच्छोगर्नु. ब्रह्मचारिले गुरुलाई दक्षिणा दिनुर. गुरुका आज्ञाले गरि स्ना
न गरि ब्रह्मचर्यको समाप्ति गर्नु. ३६. श्री कृष्णाय नमः. ३७.

॥ भा. ८ ॥
॥ ८० ॥

ताहा पछि विषयको कामना छ भन्ना गृहस्थाश्रम गर्नु विषयभोगको कामना छैन भन्ना वनमा जानु वनमा गै अन्न करण भु
दि गरि ब्राह्मणाले संन्यास लिनु घरै मार हुनाको इच्छा नहुनाले भन्ना गृहस्थाश्रम वाराणसीमा अश्रम संन्यासाश्रम ईआ
श्रम कनक मैले गरिलिनु अनाश्रमी भै रहनु ॥ ३७ ॥ घरै मार हुनाको इच्छा नहुनाले आफु वर शील भयाकी वढी
या कुलमा जन्मा कि वढीया लक्षणा भयाकी वयै सले पनि आफु भंडाका छि भयाकी आफ्नै जातकी कन्या कन विवाह

गृहं वनं चोपविशेत्प्रव्रजेद्वा द्विजोत्तमः ॥ आश्रमादाश्रमं गच्छेन्नान्यथा मत्परश्चरेत् ॥ ३८ ॥ गृहार्थी स
दृशी भार्यामुद्धहेदजुगुप्सिताम् ॥ पवीयसीतु वयसायां सवर्णमनुक्रमात् ॥ ३९ ॥ इत्याध्यायनदा
नानि सर्वेषां च द्विजन्मनाम् ॥ प्रतियहो व्यापनं च ब्राह्मणस्यैव याजनम् ॥ ४० ॥ प्रतियहं मत्प्रमानस
पत्ने जोयशो नुदम् ॥ अनाभ्यासे वजीवे तशीलैवां दोषदृक् तयो ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणस्य हि देहो यं क्षुद्रका
मायनेष्यते ॥ कछ्राय तपसे चैह प्रेत्या न तत्तु खाय च ॥ ४२ ॥

गर्नु ॥ ३८ ॥ यज्ञ गर्नु पर्नु दान गर्नु इती न धर्म जो छन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इति नैवर्णा का हुन दान लिनु प
डाउनु यज्ञ गराउनु इति न धर्म ब्राह्मण का हुन ॥ ३९ ॥ प्रतियह जो छ तपस्याको यज्ञको नाश गर्ना रहे छ भनि
मान्नाले प होउनु यज्ञ गराउनु इडुई धर्म लजी विका गर्नु इडुई धर्म मापनि गा हो मान्नाले शीलो घो जि जि विका
गर्नु ॥ ४० ॥ रक्षा प्रकारको जीवन वृत्तिकाउ खकन ब्राह्मणाले सहनु भन्छन हेउछव ब्राह्मणको देह जो छ छो

॥ राम ॥
॥ ८० ॥

दाविषयको भोग गरि सुखगर्ना कनछैन ॥ सुसलोकमा तपस्या गरि दुःख भोग गरि ॥ मरि कन परलोकमा अनन्त सुखगर्ना
निमिन्न छ ॥ ४१ ॥ शिलोखोजि जिउ न्या ॥ वजारमा यस्याका ॥ एक एक दाना टिपि ॥ घाई जिउ न्या ॥ अतिसन्तोषी चिन्न भयाको
कोहि पाहुना आये भया पाहुनाको पूजा गरि दाना दिना ॥ सुलोव डो धर्म कन गर्ना ॥ मविषे चिन्न लगाउ न्या घरमा अति
दुव्याको ॥ चिन्न नभयाको ॥ सुलोवा लागे जो छ ॥ घरैमा वसिपनि मोक्षको अधिकारी हुन्छ ॥ ४२ ॥ हेउछ वदरि अले अर

शिलोमूढ न्यापरि नुष्ट चिन्नो धर्म महान्न विरजं जु खान ॥ मय्यर्पितात्मा यदहं स्वतिष्ठ नूनातिः प्र
सक्तः समुपैति शान्तिम् ॥ ४३ ॥ समुद्धरति ये विप्र शीदं तं मत्परायणम् ॥ तानुद्धरिष्ये न चिरादाप
ज्ञानो रिवार्षावान् ॥ ४४ ॥ सर्वाः समुद्धरेद्राजा पिते न व्यसनात् प्रजा ॥ आत्मानमात्मानाधीरो यथा ग
जपति गंजान् ॥ ४५ ॥ एवं विधो नरपतिर्विमानेनार्कवर्चसा ॥ विधूयेह शुभकृत्स्नमिन्द्रेण सह मोद

ति दुःख पाउदा ॥ वालागाको अथ वामेरो भक्ति गर्ना ॥ जो कोहि प्राणिको उच्चार गर्ना प्राप्ति हेरुको आपत्ति देषि ॥ समुद्र
मा दुव्याका डुंगा रुजि गरि मुउच्चार गर्छ ॥ ४६ ॥ राजाले प्रजा हेरु कन ॥ वाबुले छोराको दुःख छुदाई पालना गर्दा रुजि ॥ उ
खदै धिरक्षा गरि पालना गर्नु ॥ ४७ ॥ सुलो धर्मात्मा राजा जो छ ॥ सुसलोकमा सबै पाप घालि ॥ उज्जालो विमानमा चहि ॥ स्वर्गमा
इन्द्रसंग वडा हर्ष पूर्वक भानंद गरि रहन्छ ॥ ४८ ॥

॥ भा. ए. ॥
॥ ८९ ॥

आक्रावृत्तिले जीविकागर्नसकेन भन्या. बासुराले वैश्वकोवेचनु. किन्तु वृत्तिले गरिजीउनु. वैश्ववृत्तिगर्दपनि आपत्तिछु
टेन भन्या. तरवारहानमालिक्षत्रियवृत्तिले जीउनु. परन्तु आफु भन्दा घटिया वर्णाको सेवा गरि नजीउनु. ४६. राजा
लाई आपत्ति पर्दा. वैश्वकावृत्तिले जीउनु. सिकारखेलि जीउनु. अथवा बासुराको रूपधारी जिउनु. नीचाको सेवा गरि
नजिउनु. ४७. वैश्वले आपत्ति पर्दा. भूद्रको वृत्तिले जिउनु. भूद्रले आपत्तिमा बुरुट जातिको गुंदि चराई वनाउनु.

सीदन्विषोवशिकवृत्त्यापगौरे वापदतरेन. रक्केन वापदाक्रान्तो नश्ववृत्त्या कथंचन. ४८. वैश्ववृ
त्त्यातुराजम्योजीवेन्मृगययापदि. चरेद्वा विप्ररूपेणानश्ववृत्त्या कथंचन. ४९. भूद्रवृत्तिं भवेद्दे
वः भूद्रकारुकटक्रियाम्. रुद्रान्मृक्तो न गच्छेन्न वृत्तिलिप्सेत कर्मणा. ५०. वेदाध्यायस्व
धा स्वाहा वलान्नाथैयथोदयम्. देवर्षिपितृभूतानि मद्रूपा रापन्वहं यजेन्. ५१. यदृच्छो
पपन्नेन शुक्लेनोपार्जितेन वा. धनेनापीडयेन्मृत्यायायेनोपाहरेत्क्रतून्. ५२.

वृत्तिछु. तेसै वृत्तिले जीउनु. आपत्तिका दुःखमात्र घटिया वृत्तिलिनु. आफ्नै वृत्तिले जिउनु. ४८. आक्राउद
यमाफिकवेदपहुनु आश्वगर्त. होमगर्त. वलि वैश्वदेवले गरि अन्नादिव सुले गरि. देवमणिपितृ हेरु. अरु जो
कोहि मेरा रूपकने पूजा गर्नु. ४९. उद्यमन गरि मिल्पाका अथवा आक्रावृत्तिले मिल्पाका. रक्षाधनले चाकर
हेरु कनपीडन गरि धर्मन छोडियन गर्नु. ५०.

॥ राम ॥
॥ ८९ ॥

परिवारले सहित भयाकापनि परिवारसंग वधनहुनु मन्त्रनहुनु जान्याले यो लोक स्वर्गदिलोक भयो सवैनासिन्नाछ
भनि देषनु ॥ ५१ ॥ जसै सपनामा देष्याका वलु विउज्या प्राप्ति हराउछन् तसै पुत्रस्त्री इष्ट मित्र वंधुवर्ग ईसवैसंग
भेट हुनु जोछ ॥ यो वासका प्राप्ति भेत्ता जसोछ ॥ ईसवै देहनाशि दानाशिंछन् भनि सस्तो विचार कन गन्थ ॥ घरमा
पाहुना रुजि गरि वस्याको समतान गन्थ अहंकार नगन्थ प्राप्ति जोछ घरमा वधनहुंदैन ॥ ५३ ॥ गृहस्थाश्रमको

कष्टमेषु न सज्जेत न प्रमादकुटुंबापि ॥ विपश्चिन्नश्वरं पश्येदष्टमपि दृष्टवत् ॥ ५१ ॥ पुत्रदाराप्रबंधनं
सगमः पान्थसगमः ॥ अनुदेहं वियंत्येते स्वप्नो निद्रानुगो यथा ॥ ५२ ॥ इत्थपरिस्तुशन्मुक्तो गृहे धनिधि
वद्धमन् ॥ न गृहैरनुवद्धत निर्ममो निरहंकृतः ॥ ५३ ॥ कर्मभिर्गृहमेधीयैरिष्टामामेव भक्तिमान् ॥ तिष्ठे
द्वनंचोपविशेत्प्रवान्वापरित्यजेन् ॥ ५४ ॥ यस्त्वासक्तमतिगृहे पुत्रवित्तैषणातुरः ॥ स्वैशाः कृप
राधी मूढो ममाहमिति मन्यते ॥ ५५ ॥ अहो मे पितरौ हृदौ वार्ष्णीवालात्मजात्मजा ॥ भनाथामामृते
दीनाः कथं जीवंति दुःखिता ॥ ५६ ॥

॥ कर्मले गरि भक्तिसंग मेरो पूजा गरि घरमा वस्यापनि भार्या
समेत वनमा गयापनि छोराछन् भन्थ भार्या कनछाडि गयापनि वढियैछ ॥ ५४ ॥ जो प्राप्ति घरमा वध भयाको पु
त्रधनको इच्छा गर्दै आकुल चिन्त भयाको स्त्रीका वसमापयाको मूढ बुद्धि भयाको मेरो नरो भन्दै वध हुन्छ ॥ ५५ ॥ अहो क
ष्ट छ बुढाबाबु आमाछन् बालक छोरा भयाकी भार्याछ ॥ मैले छोरा प्राप्ति अनाथ छोरा हेरुपनी कसो गरि जिउन नभन्दो

॥ भा. ८ ॥
॥ ८२ ॥

एस्तो प्रकार लेखरमावस्त्राका आशाले नानातरंगले पुक्त भयाका विज्रभयाको मूढ बुद्धिभयाको स्त्रीभयाको स्त्रीहेरुमा
वैराग्यनभयाको वारंवार तनै स्त्रीपुत्रको ध्यानगर्दी मरि कन ॥ अति नारकी योनिकन प्राप्त हुंछु भनिकुलले उद्धव कनव
तायाका कथा कन ॥ अकदेव जो छन राजा परीक्षित कन वना उंदा भया ॥ सो हिकथा कन सुतले सौनक आदि ग्या
का अविहेरु कन वना उंदा भया ॥ ५ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे एकादशस्कंधे भाषाटीकायां सप्तदशोऽध्यायः ॥ ७ ॥

एवं गृहाशयाक्षिप्तहृदयो मूढधीरयन् ॥ अतृप्तस्नान उध्यायस्ततो धविशते तमः ॥ ५ ॥ इति श्री भाग
वते महापुराणे एकादशस्कंधे सप्तदशोऽध्यायः ॥ ७ ॥ श्री भगवानुवाच वनं विवक्षुः पुत्रेषु भार्या
न्यस्य र्सहैव वा ॥ वन एक वसे छात सुतीयं भागमायुषः ॥ १ ॥ कन्दमूलफलैर्मध्येर्तुनि प्रकल्पयत् ॥ वसी
तवल्कलं वा ससूरापणं जिना निच ॥ २ ॥ केशरोमनश्मश्रूमलानि विभृयादृतः ॥ नधा वेदपुमज्जे
तत्रिकालं स्थण्डिलेशयः ॥ ३ ॥

अव भगवान् कृष्ण जो छन उद्धव कन वन वासिवाण प्रस्थाश्रमका धर्म कन आज्ञागर्न लाग्ना हे उद्धव वनमा
जाना को इच्छा गर्ना वाण प्रस्थले ॥ भार्या लाई छोरा छे उछे डि जानु ॥ अथ वा संगलि जानु सत्र विवर्ष सम्पवने माव
सु ॥ १ ॥ पवित्र भयाका कन्दमूलफल वनका षाई जीविका गर्नु ॥ बोका पै हुनु नृणायात मृगछाला पै हुनु ॥ २ ॥ इति
वनलिउ केशरोमनश्मश्रु या दाहिनकाटनु ॥ आंगको मयल पनि नफालनु ॥ जलमा त्रिकाले स्नान गर्नु भूमिशय्याग
रिस्तनु ॥ ३ ॥

॥ राम ॥
॥ ८२ ॥

श्रीष्मकालमापंचाग्नितपनु वर्षाऋतुमापानिकाधारासहिजलैमारहनु॥ शिशिरऋतुमाद्यादिसम्मकाजलमाडवितपस्या
गर्नु॥ ४॥ आगामापकायाकाषानु अथवाकाललेपाक्याकाषानु॥ ओषलमाकुटिषानु॥ पथर्मापिहिषानु अथवादांते
लेकुटिपिहिषानु॥ ५॥ आफुलाईजिउनाकानिमित्तकावसुकन आफेलेल्याउनु देशकालवलमाफिककोकामजा
न्याभैरहनु॥ हिजात्यायाकोआजनवानु आजको आजैभोलिकोभोलिवानु सांचिनराषनु॥ ६॥ कालकालमाआईप

श्रीष्मेतप्येतपंचाश्रीवर्षास्वासारसाडजले॥ आकराठमनःशिशिरएवंवृन्तपश्वरत्न॥ ४॥ अग्निपक्कं
समश्रीयाकालपक्कमथापिवा॥ उल्लरेवलाइमकुदोवादत्तोलखलएववा॥ ५॥ स्वयंसंचितुपात्सर्व
मात्मतोवृत्तिकारणम्॥ देशकालवलाभितोनाददीतान्यदाहृतम्॥ ६॥ वनैश्चरुपुरोडाशैनिर्व
येत्कालचोदितात्॥ ननुश्रौतेनपशुनामायजेतवताश्रमी॥ ७॥ अनिहोत्रचदर्शश्चपूर्णाभासश्च
पूर्ववत्॥ चातुर्मास्यानिचमुनेरास्नातानिचनैगमे॥ ८॥ एवंचीरोनतपस्यामुनिर्धमनिसंततः
मांतपोमयमाराध्यन्नपिलोकाडुपैतिसाम्॥ ९॥

॥ याकाकानकन वनकाचरुपुरोडासादिहे
लेगरि कामचलाउनु॥ पशुकोद्यातगरिमेरोपूजावाणाप्रस्थलेनगर्नु॥ ७॥ अनिहोत्रभयो दर्शपूर्णाभासभयो
चातुर्मास्याकावतभयाईसवैरुहस्थिलेज्जि॥ वाणाप्रस्थलेपनिगर्नु वेदवादिहेरुलेभन्याकोछ्॥ ८॥ एतोतप
स्यागर्णालेनसामात्रवेदियाकोमुनिजोछ मेरोआराधनागरिमहल्लोक जनलोकइत्यादिलोकदेवि क्रमैलेगरिमंछे

॥ उआउंदछ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ ८३ ॥

जो प्राणि वडा दुःख ले गया का मोक्ष कन दिन्या त पस्या कन छोटा सुख भोग कानि मित्र संकल्प गर्ह ॥ जो प्राणि वडो मूर्ख हो ॥ १० ॥
उठानिले कन गर्ना जनि गर्नु करा भन्या को गर्न न सकन्या ॥ एसा मुनिले आत्मा विषे अग्निराधि मं विषे चित्रल गाई आ
ग्निमा प्रवेश गर्नु ॥ ११ ॥ दुःख ठेरे भया का बल लोक सम्म कालोक विषे वै राग भया का मुनिले अग्निको त्याग गरि ता
हां प्रात संन्यास योग लिनु ॥ १२ ॥ अष्टकादि श्वाद्य गरि प्राजापत्य विधिले मेरो यज्ञ गरि ज्ञात्तिक कन सर्व स्वदक्षि

यस्त्वेतत्कुरुतश्चीर्णतपोनिःश्वेयसंमहत् ॥ कामाया लीयसे युज्यादालिशः को परस्ततः ॥ १० ॥ यदा
सौ नियमे कल्पो ज्ञरया जात वेपथुः ॥ आत्मन्यग्नीन्समारौप्यमच्चित्तोऽग्निं समाविशेत् ॥ ११ ॥ यदा कर्म
विपाकेषु लोकेषु निरयात्मसु ॥ विरागो जायते सम्यक्कल्पसाग्निः प्रव्रजेन्नतः ॥ १२ ॥ इष्टायथोपदे
शं मांदत्वा सर्वस्वमृत्तिजे ॥ अग्नीन्स्वप्राणा आवेश्य निरपेक्षपरिव्रजेत् ॥ १३ ॥ विप्रश्च वै संन्यसतो दे
वा दारादिरूपिराः ॥ विद्या कुर्वन्त्ययत्नस्मानाक्रम्य समियात्परम् ॥ १४ ॥ विभृयाच्चेन्मुनिर्वीरः को
पीनाच्छादनं परम् ॥ त्यक्तं न दण्डपात्राभ्यां मन्यन् किंचिदनापदि ॥ १५ ॥

अग्निकन आत्मा विष अर्पण गरि को नै वस्तु को इछान गरि संन्यास योग को उपासना गर्नु ॥ १३ ॥ संन्यास योग को
उपासना गर्ना बाला का देवता जो छन ॥ स्त्री पुत्र आदि गया का परिवार हेरु ले पनि विष्णु कन गर्छन ॥ इ विष्णु कन
नाधि पर ब्रह्मा जोनु ॥ १४ ॥ एसा उपासना गर्ना मुनिले वस्त्र भन्या को पिन्मात्र पै हुनु दण्ड कमण्डलु मात्र लिनु ॥ १५ ॥

॥ राम ॥
॥ ८३ ॥

आखालेहेरिवागेमाहिउनु॥ वस्त्रलेखानिपानिपिउनु॥ साचोवोलनु॥ मनलेविचारगस्थिउकुरोगनु॥ १८॥ मौनलेवेशन
नलेप्राणायामगर्नाले॥ वचंदेहचित्रहेरूकोदरागनु॥ हेउधव॥ सतिकुराजस्काछैननभन्या॥ वांसकोडिनुमात्रलि
गेरुवावस्त्रमात्रपैहीसंन्यासीकहिदेन॥ १९॥ ब्राह्मणआदिगयाकाचारवर्णविषे॥ पतितभया॥ चोरिजारिलगाइया
काभया॥ सत्ताकाघरछोडिभिक्षामागनु॥ मिललाभनिआफुचित्रलेठहराईयाकासातघरमामाडुनु॥ नाहंजनिमि

दृष्टिंपूतंन्यसेन्यादंवस्त्रपूतंपिवज्जलम्॥ सत्यपूतांवदेहाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥ १८॥ मोनानीहा
निलायामादरागवाग्देहचेतसाम्॥ नह्येतयस्यसंन्यगवनुभिर्नभवेद्यति॥ १९॥ भिक्षांतुर्षुवर्गेषुवि
गर्ह्यान्वजयश्चरेत्॥ सप्तागारानसक्तुस्त्रांलूष्येलधेनतावता॥ १८॥ वहिर्जलाश्रयगत्वातत्रोपसृ
श्यवाप्यतः॥ विभज्ययाचितंशेषंभुंजीताशेषमाहृतम्॥ १९॥ एकश्चरेन्महीमेतानिःसंगःसंय
तेन्द्रिय॥ आत्मकीडआत्मरतआत्मावान्समदर्शनः॥ २०॥ विविक्तक्षेमशरणाभद्रावविमलाशयः
आत्मानंचिंतयेदेकमभेदेनमयामुनि॥ २१॥

॥ लोउत्तिमासन्नोषगनु॥ १८॥ ग्रामदेविवाहिहज
लाशयमाजाउ॥ माणाकाअन्नकनजललेसेचरांगनु॥ विष्णु॥ ब्रह्माभर्कभूतप्राणिलार्इतेसैश्रन्नमावांङि॥ वौकी
शेषरहाकोअन्नजोछ॥ नवोलिकनघाउ॥ १९॥ इन्द्रियजितिसंगकंसैकोनगरि॥ समदर्शिभैधैर्यगरि॥ आफैमाखे
लेगर्नाभै॥ आफैमासंतुष्टभै॥ पृथिवीमाएकलैघुमनु॥ २०॥ मेरोध्यानगर्नालेनिर्मलचित्रभयाको॥ एकांतमावा
धालेहीनभयाकाजगामावह्यासत्तामुनिले॥ मकृष्टलेसंगअभेदगरि॥ आत्माकोध्यानगनु॥ २१॥ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ २४ ॥

ज्ञानले गरि आत्मको बंध मोक्ष ईडु इकरा को विचार गर्नु इन्द्रिय न जित्ना आत्मा को बंध छ ॥ इन्द्रिय हेरु कन जित्ना आत्मा को
मोक्ष छ ॥ २२ ॥ तस्कार गाहे उद्धव छ इन्द्रिय कन जिति मेरो ध्यान गरि छोटा सुख मा वैराग्य गरि आत्मा विषे को बडो सु
ख पाई मुनिले रहनु ॥ २३ ॥ पुरमा भया गाँउमा भया गोठ भया यात्रा गर्ना प्राप्ति हेरु भया ॥ एखा प्राप्ति संग भिक्षा
माउ नानि मित्र जानु ॥ पुरापदेश भया नदी हेरु भया ॥ पर्वत भया वन भया आश्रम भया ॥ एखा ठाउँ मा जानु ॥ २४ ॥

अन्वीक्षेतात्मनो बंधं मोक्षच ज्ञान निष्ठया ॥ बंध इन्द्रिय विक्षेपो मोक्षरुषा च संयमः ॥ २२ ॥ तस्मान्नि
यस्य षड्वर्गं मज्ञावेन चरेन्मुनि ॥ विरक्तः शुक्तकामेभ्यो लधात्मनि सुखं महत् ॥ २३ ॥ पुरा मव्रजा
न्मार्थान् भिक्षार्थं प्रविशश्चरेत् ॥ पुरापदेश सरि छैल वनाश्रमवती महीम् ॥ २४ ॥ वागाप्रस्थाश्रम
पदेश भीक्ष्यां भैक्षमाचरेत् ॥ संसिद्ध्या श्वरं मोहः शुद्धसत्त्वः शिलाभ्रमा ॥ २५ ॥ नैतद्वस्तु तयाप
श्यदृश्यमानं विनश्यति ॥ असन्नं चित्तो विरमेदिहा मुत्र चिकीर्षितात् ॥ २६ ॥ यदेतदात्मनि ज
गमनो वा कप्राणसंहितम् ॥ सर्वमायेति तर्केन स्वस्थस्य न्तानतस्मरेत् ॥ २७ ॥

वागाप्रस्थकाश्रमविषे वारं वार भिक्षा नित्र जानु ॥ शिलोषो ज्ञाको अन्नघाई शुद्ध देह भयाको ॥ मोहन भया
को प्राप्ति जो छ चाडै मुक्त हुन्छ ॥ २५ ॥ यो संसार कन वस्तु न देखे दृश्यमान वस्तु जो छ नाशिन्छ यो लोक परलोक दुवै लो
कका वस्तु विषे विरक्त भै कार्य मा चित्त न दिनु चुपला गिर हुनु ॥ यो को हि देखाको जगत जो छ मेरो भनियाको भ
हंकार गरियाको ॥ मन वचन प्राण ले सहित भयाको ॥ सर्व माया हो भनि सप्राजस्तो हो भनि छोडि ॥ चित्र स्वस्थ भै त्यो जग
त कन न समझनु ॥ २७ ॥

॥ राम ॥
॥ २४ ॥

बाहिद्रुकाविषयमाविरक्तभयाकोज्ञानि॥ कौनैकुराकोइछानगर्गामेराभक्तले॥ त्रिदशलेसहितभयाकाधर्मकन॥ आ
श्रमकनछोडिस्नानगर्गुभयाकोछ॥ विधिमाभयाविधिकोअनुसंधानराषि॥ आचारनगर्गु॥ २८॥ जान्नाभयापनिवा
तकरुत्रिखेलगर्गु॥ कुशलभैकनपनितारात्रिहुनु॥ परिणतभयापनिउन्मत्तरुत्रिवोलनु॥ वेदकोअर्थजान्ना
छतापनिमनलाग्पाका॥ आचारकनगर्गु॥ २९॥ कर्मकाराकोव्याख्यानगर्गानहुनु॥ वेदविरुद्धभयाकापाषाणी॥

ज्ञाननियेविरक्तोवामद्रक्तोवानपेक्षक॥ सलिंगानांश्रमांस्पृक्काचरेदविधिगोचरः॥ २८॥ बुधोवातकव
त्कीडेकुशलोजउवचरेत्॥ वदेदुन्मत्तवद्विद्वानोचर्यानेगमश्चरेत्॥ २९॥ वेदवादरतोन्नस्यान्नपाषाणी
नहेतुक॥ शुक्कवादविवादेनकवित्पक्षसमाश्रयेत्॥ ३०॥ नेधीजेनजनाधीरोजनबोद्धेजन्तु॥ अत्रि
वादास्तिनिक्षेपनावमान्येतकेचन॥ ३१॥ देहमुदिश्यपशुवधैरंकुर्यान्नकेनचित्॥ एकस्वपरोद्या
न्माभूतेष्टान्मन्यवस्थितः॥ ३२॥ यथेन्दुरुदयात्रेषुभुताम्येकात्मकानिच॥ अतधीनविषीदेतकालेका

धर्मपनिनगर्गुकेवलसकामात्रगर्ग्यापनिनहुनु॥ विनाहकरुगराकोविवादनगर्गु॥ विवादहदासउरापक्षलि
अर्कापक्षकोखराणनगर्गपनिनलागनु॥ ३०॥ प्राणिदेष्टिन्नासनगर्गु॥ प्राणिलाईनासनलाउनु॥ अरुप्राणि
लेगालिगयाकोसहनु॥ अरुकसैकोअपमाननगर्गु॥ ३१॥ योदेहकानिमित्तपशुरुत्रिकसैसंगवैरभावनगर्गु
सकैआत्माजोछप्राणिविषेरह्याकोछकारणरूपलेदेहहेरूपनिसकैछन्॥ भिन्नछैनन्॥ जलपात्रविषेचन्द्रमा
छैरैदेष्टियापनिचन्द्रमासकैछतसै॥ ३२॥

॥ भा. ॥

॥ ८५ ॥

कालकालमाधाननमित्वापनिमनमाग्लानिनगर्नु ॥ धानमित्योभनिहर्षपनिनगर्नु ॥ धानमित्यनुनमित्यनुदेवा
धीनछभनिधैर्यगरिरुहुनु ॥ ३३ ॥ आहारकानिमित्तमात्रवेष्टागर्नु ॥ प्रारारहन्पाकामगर्नुयोग्यछ ॥ देहमाप्रा
राकनधान्याकोभयातेसुदेहलेतत्तजानिन्दुरमुक्तहुंछ ॥ ३४ ॥ उद्यमनगरिपायाको अतिश्रेष्ठअनकनवानु ॥
वस्त्रभयोशय्याभयोमित्यामित्याकोलितु ॥ ३५ ॥ शौचआचमनस्नानविधिमाभयाको छभनिनगर्नु ॥ अरुजो

कालेसनकवित् ॥ लघानहृष्येकृतिमानुभयंदैवतंत्रितं ॥ ३३ ॥ आहारार्थं समीहितप्रकृतसाराधारणाम्
तत्त्वंविमृश्यतेनेनतद्विज्ञायविमुच्यते ॥ ३४ ॥ यद्वह्योपपन्नान्नमयादेहसमुत्तापरम् ॥ तथावासन्न
थाशय्याप्राप्तप्राप्तंभजेन्मुनिः ॥ ३५ ॥ शौचमाचमनस्नानतनुबोदार्थनेचरेत् ॥ अन्याश्चनियमाज्ञानी
यथाहंलीलयेश्वरः ॥ ३६ ॥ नहितस्यविकल्पाख्यायार्वमस्तीक्ष्णयाहता ॥ आदेहमात्कवित्ख्यातिस्ततःसं
पश्यतेमया ॥ ३७ ॥ उःखोदकैषुकामेषुजातनिर्वेदआत्मवान् ॥ अजितासितमेधमौगुरुमुनिसुपजवेत् ॥ ३८ ॥

कोहिनियमुपनिजसैमलीलातेगर्नु ॥ तसैमलीलातेगरिमुनिलेगर्नु ॥ ३९ ॥ हेउद्धवतेस्त्वनुनितार्इभेदकेहिछैन ॥ अ
गादिभेदथियोतापनिमेरोज्ञानहेनालेहराउदोभयो ॥ देषियाकोभेदजोछकसोगरिहराउलाभन्या ॥ देहद्वया
त्वाधितभयाकोपनिभेदजोछ ॥ कदचित्कैहेदेषिन्दुदेहहरायापदि ॥ भेदहरायाकोछंदोमंमामितिजाछ
॥ ४० ॥ ज्ञानिविरक्तसंन्यासिकाधर्मकनवतायारविषयमावैराग्यभयाको ॥ तत्त्वज्ञानाकनइछागर्नु ॥ सस्तो
मुनिकागर्नुकराकनभंछन् ॥ उःखठेरैभयाकाविषवैराग्यभयाको ॥ धैर्यभन्यामेरोधर्मकनजान्या ॥ सस्तोमु

॥ ३८ ॥
भिलेगुरुकानजीकमाजानु ॥ ३८ ॥

॥ राम ॥
॥ ८५ ॥

श्रद्धासंगगुरुकोनिंदानगरि भक्तिलेगुरुमा आदरपूर्वक विष्णुबुद्धिगरि जाहासम्पन्नजानिदैनेन ताहासम्पगुरु
काटहत्मारहनु ॥ ३९ ॥ हेउद्धवसुनकामक्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इछुकननजिति वेगगर्वाइन्द्रियको
सारथिवुद्धिभयाको ज्ञानवैराग्यलेहीनभयाको जोमुनिसन्यासहुन्छ ॥ ४० ॥ हृदयमारद्याकामकन देवताहेरु
कन जाइयात्योही धर्मनाशगर्नात्योही ॥ मनमालाग्याकाविषजस्काहरायाकाछैनन् ॥ त्योप्राणिजोछ योलोक प

तावत्परिवरेद्रक्तः श्रद्धावानतु मूयक ॥ यावदुह्यविजानीयान्मा मेव गुरुमादतः ॥ ४१ ॥ यस्तु संयतः
दुर्गः प्रचरेन्द्रियसारथि ॥ ज्ञानवैराग्यरहितः स्त्रिदरा मुपजीवति ॥ ४० ॥ सुरानात्मानमात्मस्थं निहुते मां
वैधर्महा ॥ अविषक कषायोस्मादमुष्माच्च विहियते ॥ ४१ ॥ भिक्षोर्धर्मः शमो हिंसा तप इत्याव नौकसः ॥ गृ
हिणो भूत रक्षो ज्ञादिजस्यार्पणं सेवनम् ॥ ४२ ॥ ब्रह्मचर्यं तपः शौचं संतोषो भूतसौ हृदम् ॥ गृहस्थस्याष्ट
तौ गतः सर्वेषाम दुष्पासनम् ॥ ४३ ॥ इति सांख्यसंघर्मेण भजेन्नित्यमनन्यभाक् ॥ सर्वभूतेषु मद्रावो मद्र

रलोक उवैलोक देषि भ्रष्ट हुन्छ ॥ ४१ ॥ संन्यासिको शांतिं अहिंसाकर्म कहिन्छ ॥ वागाप्रस्थको तपस्या यज्ञजोछ धर्म कहिं
छ ॥ गृहस्थिको धर्म प्राणिको रक्षा गर्नु यज्ञ गर्नु कहिन्छ ॥ ब्रह्मचारिको सेवा गर्नु कहिन्छ ॥ ४२ ॥ गृहस्थिको ब्रह्मचर्य क
हिन्छ ॥ तप भयो शौच भयो सन्तोष भयो सर्वे प्राणिको हित चिन्ता उनु भयो अतु काल मात्र स्त्रीसग जानु भयो ॥ सर्वे ज
नाको धर्म मेरो उपासना कहिन्छ ॥ ४३ ॥ एते प्रकार लोभ धर्म गर्नाले मेरो भजन गर्ना सर्वे प्राणिमा ॥ मेरो भावना ग
र्ना प्राणिजोछ चाडै मेरि भक्तिकन पाउंदछ ॥ ४४ ॥

॥ भा. स. ॥
॥ ८६ ॥

हे उद्धव वडो भक्तिगर्नाले सवै लोक को ईश्वर भयाका ॥ सवै सृष्टि स्थिति प्रलय को कारण भयाका ॥ सत्ता में ब्रह्म कनपा
उदछ ॥ ४५ ॥ ससै आकाधर्मगर्नाले शुद्ध मनसन भयाको ॥ मेरी गती कन जान्या ज्ञान विज्ञान ले पुक्त भयाको स
सो मुवि जो छ ॥ वाडै मलाई भेटा उदछ ॥ ४६ ॥ हे उद्धव पितृ लोक मा पुण्या उत्या वर्रा को आश्रम को धर्म सहि
हो ॥ ससै धर्म कन मलाई अर्पण गर्ना लाई गयो भया ॥ मोक्ष रूप फल पनि ससै धर्म को छ ॥ ४७ ॥ हे उद्धव ति

भक्तो उद्धव न पायि न्या सर्व लोक महेश्वरम् ॥ सर्वोत्पत्त्यप्ययं ब्रह्मकारणं मोपयातिस ॥ ४५ ॥ इति स्वधर्म निर्नि
क ससत्त्वो निर्जात मद्रुति ॥ ज्ञान विज्ञान संपन्नो न चिरात्समुपैति माम् ॥ ४६ ॥ वर्णाश्रमवर्ता धर्मस्य आचार
लक्षणाः ससवमद्रुति युतो निःश्रेयसकरः पर ॥ ४७ ॥ सतत्रेभिहित साधो भगवान्पृच्छति यच्च मार ॥ यथा स्वध
र्मसंयुक्तो भक्तो मांसमिदं परं ॥ ४८ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे स्कान्दोद्देश्यादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥
श्री भगवानुवाच ॥ यो विद्याश्रुतसंपन्न आत्मवान्नातु मानिक ॥ माया मात्र मिदं ज्ञात्वा ज्ञानं च मयि सन्पसेत् ॥

मिले वनाश्रम को धर्म मलाई शोधा भयाथो ॥ सो धर्म कन मैले वता जाजो न आकाधर्म कन गर्ना मेरो भक्त
प्राणि जो छ ॥ साक्षात्पर ब्रह्म कन पाउदछ ॥ भनिकु हन ले उद्धव कन वता भा को कथा कन ॥ शुक्र देव जो छ न
राजा परीक्षित कन वता उदा भया ॥ सो हि कथा सूत ले शो न कादि ज्ञा विहेरु कन वता उदा भया ॥ ४८ ॥ इ
ति श्री भागवते महापुराणे स्कान्दोद्देश्यादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ बाधित भयाको पनि देह जो

॥ राम ॥
॥ ८६ ॥

६॥ ब्रह्मसाक्षात्कारको अनुभवहुन ज्वालामय महाउदैन ॥ तस्य अर्थज्ञानाभ्यासले गरिमुक्तहुन्छ ॥ जस्का ब्रह्मसाक्षात्कारको अनुभव भै ॥ प्रपंच जगत हरार्इ रहेछ ॥ तस्वांग किज्ञानादि अभ्यासको पनि काम छैन भनि श्री भगवान् जो छुन् ॥ उद्धवसंग आज्ञा गर्नु लाग्यो ॥ हे उद्धव ॥ अनुभवहुन ज्वाल ॥ शास्त्र शुन्नाले युक्त भयाको ॥ आत्मतत्त्व कन जा ॥ न्या ॥ सुन्याका वेदले परमार्थ कन जान्याको ॥ रस्मा मुनिले यो दैत प्रपंच जो छु ॥ माया मात्र हो भनि प्रपंच हरार्इ दि ॥ न्या ॥ ज्ञान पनि माया मात्र रहेछ भनि प्रपंचलाई ठहराया प्राज्ञ ॥ मविलाई छोटि दिनु ॥ १ ॥ जस्कार रज्ञानको मइ

ज्ञानिन स्वहमेवेशः स्वार्थो हेतुश्च सम्मतः ॥ सर्गश्चैवापवर्गश्च नान्योर्थो महते प्रिय ॥ २ ॥ ज्ञान विज्ञान संसिद्धापदश्चैव विदुर्मम ॥ ज्ञानी प्रियतमो तो मे ज्ञानेनासौ विभर्ति माम् ॥ ३ ॥ तपस्वीर्थं जपोदानं पवित्राणीतराणि च ॥ नालं कुर्वन्ति तां शुद्धिया ज्ञानकलया कृता ॥ ४ ॥ तस्माज्ज्ञानेन सहित ज्ञात्वा स्वा

कछु ॥ ज्ञानिले इच्छा गरियाको फल रूप पनि छु ॥ जौ न कुरा गर्नाले इच्छा गरियाको फल मिल्छ ॥ सो पनि मछु ॥ स्वर्ग पनि मछु ॥ मोक्ष पनि मछु ॥ तस्कार रज्ञानो ज्ञानिका मदेषि दोस्त्रो पियारो कोहि छैन ॥ २ ॥ शास्त्रका अर्थको ॥ अनुभव पूर्वक ज्ञानले युक्त भयाका प्राणि हेरु जो छु ॥ मेरो श्रेष्ठ पदवी कन जान्दछु ॥ रस्कार रज्ञाने ज्ञानाले युक्त भयाको प्राणि जो छु ॥ मेरो पियारो छु ॥ ज्ञानले गरिम कन धादछु ॥ ३ ॥ तप भयो तीर्थ भयो ॥ दान भयो ॥ अरु जो कोहि पवित्र कुरा छु ॥ ज्ञानकी कलाले भयाकी थोरै शुद्धि वरोवर पनि गर्न सक्ने नम् ॥ ४ ॥

॥ भा. स. ॥

॥ ८७ ॥

तस्कारणा हे उद्धव ज्ञानहुन् ज्ञालसम्मजसो गरिहंछ ॥ मलाईजानी ॥ ज्ञानविज्ञानले सहित भयाकातिमिजोछौ ॥ मेरो
भजनगर ॥ अरुकरासवैछाड ॥ ५ ॥ ज्ञानविज्ञानरूपी यले गरि ॥ आफु विषे आत्मस्वरूप भयाका ॥ सवै यज्ञको पति ॥
भयामा ॥ मन पूजा गरिकन ॥ मुनि हेरु जो छुन् सिद्धिकन प्राप्नुहुदा भया ॥ ६ ॥ जौ न ज्ञानले सिद्धिकन हुदा भया
सो हि ज्ञानकन कहंछुन् ॥ हे उद्धव ॥ तिमिविषे ॥ आध्यात्मिक ॥ आधिदैविक ॥ आधिभौतिक ॥ योतीन् प्रकारको दे

त्मानमुद्धव ॥ ज्ञानविज्ञानसंपन्नो भजमां भक्तिभावित ॥ ५ ॥ ज्ञानविज्ञानयज्ञेन मामिष्टुत्मानमात्म
नि ॥ सर्वयज्ञपतिमावेसं सिद्धिमुनयो वगन् ॥ ६ ॥ त्वयुद्धवाश्रयतियस्त्रिविधो विकारो मायांतरा
पततिर्नाद्यपवर्गयो यत् ॥ जन्मादियोस्य यदमीतव तस्य किं सुराद्यंतयो यंदसतो स्मितदेवमध्ये ॥ ७ ॥

हादिछु ॥ डोरिमासपंदेपिंदा रुजिविचमा देषियाको माया मात्र हो ॥ जसो डोरिमा देषियाको सर्प जो छु ॥ डोरी भनि
विष्ठा पछिहरा छु ॥ डोरीमा अधिपनि सर्प थियेन ॥ पछिपनि रहदै न ॥ डोरिमा त्ररहंछु ॥ तसै देहादिगत्याको ग्रप
चपनि ॥ अधिपनि थियेन ॥ पछिपनि रहन्या छैन ॥ तस्कारणा अधिपनि पछिपनि रहन्या जो छु ॥ मध्ये कालमा
पनि ॥ सावो उमै लाई जानु ॥ यो देह का जन्म आदिगत्याका विकार हुन् ॥ तमाका हुन् ॥ केहि छैन न त स अर्थ हे
उद्धव तिमिजोछौ निर्विकार ब्रह्मको ॥ ७ ॥

॥ राम ॥

॥ ८७ ॥

भनि आज्ञागया भगवान्त्वेर उद्धव विंतिगर्गलाग्या ॥ हे कृष्ण वैराग्यज्ञानले सहित भयाको ॥ ब्रह्मादिदेवताले पतिषो
जियाको ॥ शुद्धज्ञानजसो गरिहंछ ॥ निश्चय गरि हे विसो मुर्ते ॥ हे विश्वेश्वर ॥ तपाजिको भक्तियोगकन आज्ञागर्नु ह
वस ॥ ८ ॥ हे ईश्वर ॥ आध्यात्मिक आधिभौतिक ॥ आधिदैविक ॥ सत्तातिनृतरहकातापले ॥ अतिभयानक भयाका
संसाररूपी मार्ग विषेतात्याको में जो छु ॥ अमृतकनवर्षा उन्मात पांजिका चरणाकमल युगलरूपी छाता देषि ॥

श्री उद्धव उवाच ॥ ज्ञानं विशुद्धं विपुलं यथैतद्वैराग्यविज्ञानयुतं पुराणा आख्या हि विश्वेश्वर विश्व
मूर्ते त्वद्रक्तियोगं च महद्दिग्गमम् ॥ ८ ॥ तापत्रयेणाभिहितस्य घोरे संतप्यमानस्य भवाध्वनीश ॥ प
श्यामि नाभ्युदयं तवाधिष्ठं द्वातपत्रादमृताभिर्वर्षात् ॥ ९ ॥ दृष्टं जनसंपतितं विलेप्तिं काला हि
नाशुद्रसुखोरुतर्षम् ॥ समुद्ररैर्नैकपयापवर्षैर्वचोभिरासिंचमहानुभाव ॥ १० ॥ श्री भगवानु
वाच ॥ इत्थमेतत्पुराणाभीष्मधमभृताम्बरम् ॥ अभातशत्रुः पप्रच्छ सर्वेषां नो नु शृणुतां ॥ ११ ॥

न दोसो सरगाको हि देषे दैन ॥ ८ ॥ यो संसाररूपी कुवा विषे पयाको कालरूपि सर्पले उरुपाको ॥ होरा संसारि सु
खविषे ॥ ७ ॥ हे त्मा भयाको ॥ नानातापले उठ दो सत्ताय स प्राणिकन ॥ हे कृष्ण करुणाले गरि मोक्षकन दिन्पा ॥ व
चनरूपी अमृतको वृष्टि गरि उद्धार गर ॥ १० ॥ भनि विंतिगया उद्धवले कृष्ण आज्ञागर्नलाग्या ॥ हे उद्धव पहिले
एसै प्रकारकन राजा युधिष्ठिरले भीष्मपीतामहकन ॥ हामि सबैले सुद्धाका समय मागया था

॥ भा. स. ॥
॥ ९८ ॥

महाभारतकोयुद्धजोद्ध। भैसक्याप्रान्त। इष्टमित्रबंधुवर्ग। सवैमारनालेगरि। मनमाडुःखभयाकाराजायुधिशिरले।
ठैरैकर्मकनसुन्यार। पद्धिवारमोक्षधर्मकनसोद्भाभया॥ १२॥ सोहिधर्मकन। भीष्मदेविसुन्याका। ज्ञानवैराग्यविज्ञानभः
किश्रद्धालेयुक्तभयाकाकन। तिमिलाईवताउंलासुनहेउद्धव॥ १३॥ ज्ञानभनिकसुताईभनु। सोकराकहंछन॥ प्रकृति
पुरुष। महत्तत्व। अहंकार। रूप। रस। गंध। स्पर्श। शब्द। श्रोत्र। तक्वक्षु। जिह्वा। घ्राण। वाक्। पाणि। पाद। पायु। उपस्थ। मन

निवृत्तेभारतेयुद्धेसुहृन्निधनविह्वल॥ श्रुत्वाधमान्बहून्पश्यान्मोक्षधर्मानपृच्छत॥ १२॥ तानहन्ते
भिधास्यामिदेवव्रतसुरवाहुतम्॥ ज्ञानवैराग्यविज्ञानश्रद्धाभक्त्युपहं हिताम्॥ १३॥ नवैकादश
पंचत्रीभावान्भूतेषुयेनवै॥ ईक्षेताथैकमप्युतज्ञानंममनिश्चितम्॥ १४॥ एतदेवहिविज्ञानंन
तथैकेनयेनयेत्॥ स्थित्युत्पत्त्यप्ययान्यस्येद्वावानां त्रिगुणात्मनाम्॥ १५॥ ॥ १५॥ ॥ ६॥

पृथिवी। अप। तेज। वायु। आकाश। सत्वगुणार्जोगुणात्मोगुणा॥ एति अष्टाईसतत्त्वकन॥ ब्रह्मादिस्थावरांतः
काकार्यविषेरह्याकाहन्॥ भनिजौनज्ञानलेदेष्टु॥ इनैअष्टाईशतत्त्वविषेरह्याका॥ एकैपरमात्मतत्त्वकनजौ
नज्ञानलेदेष्टुकार्यकारणात्मकजगत्कनदेष्टो॥ परकारणारूपैकमात्रदेष्टोम्॥ जौनज्ञानलेभिन्ननदे
ष्टोम्सोहिज्ञानकहिह्॥ १४॥ जौनज्ञानलेसकैपरमात्मातेगरि॥ सवैजगत्कोमृष्टिस्थितिप्रलयदुन्दुभनिदेष्टु
ह्॥ तसैकनविज्ञानभनु॥ १५॥

॥ राम ॥
॥ ९८ ॥

उत्पत्तिका समयमा दोस्त्रा कार्य भया विषे ॥ काररा रूपले मध्यमा जो रह मध्यमा जो रहंछ ॥ आश्रयरूपले कार्य दे
षि ॥ अर्को कार्य हुंदा मा जो संग जान्छु ॥ सबै कार्य को प्रलय भया मा ॥ जो बाँकि शेष रहंछ ॥ तत् भया को त्यहि हो भनि
जो वृत्तान ले देख्छु ॥ विज्ञान भनि तस्कन भन्नु ॥ १६ ॥ अवैराग्य कन भन्छु ॥ नेह माना सि कि चन यो श्रुति भयो ॥ य
दादि कार्य जो छु प्रत्यक्ष भयो ॥ क्षेत्र भया का शरीर मा वस्या का ॥ क्षेत्र मलाई जान भन्नु ॥ ए सो महा जन को प्रसिद्धि से

आदाव ते च मध्ये च सृज्यात् सृज्यं यदन्विषात् ॥ पुनस्तत्प्रतिसंक्रामेयद्विष्येत तदेव सत् ॥ १६ ॥ श्रु
तियुत्पक्षमेति ह्यमनमानमतुष्यम् ॥ प्रमारो घनवस्थानाद्विकल्पात्सविरज्यते ॥ १७ ॥ कर्मणां
परिणामित्वाद्यविरिञ्चादमंगलं ॥ विपश्चिन्तश्चरपश्येददृष्टमपि दृष्टवत् ॥ १८ ॥ भक्तियोगः पु
रैवोक्तः प्रीयमाणाय ते नय ॥ पुनश्च कथयिष्यामि मद्भक्तैकारणपरम् ॥ १९ ॥ श्रद्धामेव मृतकथा

ति ह्यनुभयो ॥ दृश्यदृशनाले जगत् कन रुठो ठहराउनु ॥ जसै सिपि मा बाँदिको बुद्धि रुयो हुन्छु भन्नु ॥ यो श्रुनु मान भयो ॥
एति चारै कुराले गरि जगत् कन रुठो ठहराई सबै मा सत्ता रूपले रक्षा का आत्मतत्त्व कन ॥ साँचो भनि देखि यो नाना भे
द प्रपंच कन रुठो देखि प्रपंच मा वैराग्य हुन्छ ॥ १७ ॥ यत्त गरि स्वर्गादि सुख मिल्छु भनि सुन्दामा ॥ कसो गरि वैरा
ग्य गर्ला भनौ लात सुन ॥ कर्म नाशिन्या हुनाले कर्मले भया को ॥ न देखि या को पनि ॥ बस लोक पर्यन्त को सुख जो छु ॥ देखि
या का सलोक का सुख रुनि दुःख छैन नाशिन्या छु भनि देख्छु ॥ जो जान्छा प्राणि जो छु वैराग्य गर्छु ॥ १८ ॥ अब हे उद्ध

॥ भा. स. ॥
॥ ९९ ॥

व। भक्तियोगजोह। पहिलेतिमिताईवनायाथ्या। फेरिपनिभक्तियोगमावरोपीतिगर्वाकारणाभयाकोससोभक्ति
योगकनभंहुसुन। हेउद्धवसेरोकीर्तनगर्नु। मेराअमृतस्वरूपकथाविष्येश्रद्धागर्नु। मेरोपूजामाचित्रताउ
तुनानापकारकोसोत्रलेमेरास्तुतिगर्नु॥ २० ॥ मेरासेवामाआदरगर्नु। सवैलेनमस्कारगर्नु। मेरोभन्दामेराभ
क्तकोपूजाअर्घ्यालोगर्नु। सवैप्राणिविषकलरह्याकाछन्भनिजानु॥ २१ ॥ मेरानिमित्तअंगकोवेष्टागर्नु। मेरा

यांराश्वन्मदनुकीर्तनम्॥ परिनिष्ठावपूजायांस्तुतिभिः स्तवनंमम॥ २० ॥ आदरःपरिचर्यायांसर्वाङ्गैरभि
वादनम्॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिकासर्वभूतेषुमन्मति॥ २१ ॥ मदर्थेअंगवेष्टावचसामङ्गुरोरगाम्॥ म
य्यर्पणां वमनसोसर्वकामविवर्जितम्॥ २२ ॥ मदर्थेथपरित्यागोभोगस्यचसुषम्यच॥ इष्टदत्तंहु
तंजप्तमदर्थेयद्युतंतपः॥ २३ ॥ एवंधर्मैमतुष्याराणामुद्धवात्मनिवेदिनाम्॥ मयिसंजायतेभक्तिः

गुराकीर्तनगर्नु। जन्तिगयोमैविषेअर्पणागर्नु। सर्वकामनाकोवर्जितग

र्नु॥ २२ ॥ मेरानिमित्त। मस्वकविरोधहन्त्या। भगतकोसुखकोत्यागगर्नु॥ यज्ञगर्नुदिनहोमगर्नु। जपगर्नु। त
पस्यागर्नु॥ जोकोहिबुतादिगयो। त्योसवैमेरानिमित्तगर्नु॥ २३ ॥ हेउद्धव। आत्मनिवेदनगर्नु। स्तौधर्मलेग
रिमनुष्यहेरुका। मैविषेभक्तिउत्पन्नहंछे॥ मविषेभक्तिउत्पन्नभयोप्राप्त॥ तेसुप्राणिकावाकिकार्यकेहिरहंदे

॥ २४ ॥
॥ राम ॥
॥ ९९ ॥

मईश्वरविषेअर्पणगरियाको सत्वगुणलेयुक्तभयाको शत्रुभयाकोचित्रजोछ॥ धर्मरेश्वर्यज्ञानवैराग्य-इसवै
 कुराकनपाउंदछ॥ २५॥ देहमा घरमा लगाईयाकोचित्रजोछ॥ इन्द्रियलेगरिताहोउदछ॥ निर्मलपनिहुदैन
 घटियावस्तुमापनि लाग्छ॥ एस्तोचित्रजोछ अधर्ममालाग्याकोभनिजान्नु॥ २६॥ मेरोभक्तिजसलेहंछ धर्म
 त्यहिहो॥ एकैआत्मादेष्टुजोछज्ञानकहिंछ॥ विषयभोगविषेसंगनगर्नुजोछ वैराग्यकहिंछ॥ अरिमादिमि

यदात्मन्यर्पितंचित्रं शत्रुं सत्तोपहृतम्॥ धर्मज्ञानं सर्वैराग्यमैश्वर्यं चापि पश्यते॥ २५॥ यदात्मन्य
 र्पितं तद्विकल्प इन्द्रियैः परिधावति॥ रजस्वले वा सन्निष्ठं चित्रं विद्वि विपर्ययम्॥ २६॥ धर्मो मद्भक्ति
 कृत्योक्तो ज्ञानचैकात्मदर्शनम्॥ गुणोच्च संगो वैराग्यमैश्वर्यं चारिमादयः॥ ३॥ उद्धववाच॥ यमः
 कितविधः प्रोक्तो यमो वारिकनिर्शनः॥ कः शमः कोदमः क्लृप्तकातितथाः क्षतिः प्रभो॥ २८॥ किं दा
 ने किं तपः शौर्यं किं सत्यमृतमुच्यते॥ कस्माग किं धनं वेश्मको यज्ञः काचदक्षिराणा॥ २९॥

द्विजोछन्॥ रेश्वर्यकहिछन्॥ २७॥ भनिक्लृप्तलेआज्ञागयार॥ उद्धवजोछन्वितिगर्नलाग्या॥ हेक्लृप्त यम
 जोछकतिप्रकारकोछ॥ नियमकतिप्रकारकोछ॥ शमभनिकस्कनभन्नुदमकउन्कहिंछतिक्षाभन्नुकसुला
 ईक्षतिकउन्हो॥ दानभनिकहिंछ॥ तपभनिकोन्हो॥ शौर्यभनिकोन्हो॥ सत्यभनिकोन्हो॥ अतुभनिकोन्कहिंछ
 त्यागभनिकोन्हो॥ धनभन्याकोकोन्हो॥ अतिवढीयाधनकस्कनभन्नु यज्ञभनिकस्कनभन्नु॥ दक्षिराणांभनिकस्कन

॥ भा. स. ॥
॥ १०० ॥

पुरुषको अतिवलियावलको नह ॥ भंगभयो ॥ लाभभयो कस्तन भनु ॥ विद्याभत्याको कौन हो ॥ द्वीभनिकस्तन भनु
अतिश्रेष्ठमलकस्तन भनु ॥ सुखभनिड ॥ स्वभनिकस्तन भनु ॥ ३० ॥ परिणतभनिकस्तन भनु ॥ मूर्खभनिक
स्तन भनु ॥ पथाभनिकस्तन भनु ॥ स्वर्गकउ नहो ॥ नरककउ नहो ॥ गृहकउ नहो ॥ ३१ ॥ धनिकउ नहो ॥ दरिद्र
कउ नहो ॥ कृपणभनिकस्तन भनु ॥ इश्वरकउ नहो ॥ हेकृष्णमैले विंतिगयाका प्रह्लादकउ नरकन आजागर ॥

पुंस ॥ किं सिद्धलक्ष्मी मत् भगोला भश्वकेशव ॥ काविद्या द्वी ॥ पराका श्री ॥ किं सुखं ड ॥ स्वमेव च ॥ ३० ॥
क ॥ परिणत ॥ कश्च मूर्ख ॥ क ॥ पथा ड ॥ पथश्च क ॥ क ॥ स्वर्गे नरक कश्चि को वंधरूत किं गृहम् ॥ ३१ ॥ क आ
ष ॥ को दरिद्रो वा कृपण ॥ क ॥ क इश्वर ॥ सताम्प्रह्लादम बूहिविपरीतांश्च मत्पते ॥ ३२ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ अहिंसा सत्यमस्तेयमसंगो द्वीरसंचय ॥ आस्तिक्यं ब्रह्मचर्यं च मौनस्थैर्यैश्च मा भयम् ॥ १
॥ ३३ ॥ शौचं जपस्तपो होमः श्रद्धातिथ्यं मदर्वनम् ॥ तीर्थं दानं परार्थं हातुं क्षिराचार्यसेवनम् ॥ ३४ ॥

३२ ॥ भनिउ द्रवले विंतिगरियाका कृष्णपनि आजागर्नलाग्णा ॥ हेउ द्रवसुन ॥ हिंसा नगर्नु ॥ मन्लेपति पराई ॥
काधननवोर्नु ॥ रुदोनवोर्नु ॥ संगनगर्नु ॥ अकार्यदेधि पररहेर्नु ॥ संगहनगर्नु ॥ इश्वरद्वभत्यामतिगर्नु ॥ ब
ह्मचर्यगर्नु ॥ मौनरहनु ॥ स्थिरहुनु ॥ सहनु ॥ भयनगर्नु ॥ ३३ ॥ जपगर्नु ॥ तपस्यागर्नु ॥ होमगर्नु ॥ श्रद्धागर्नु ॥ पाहु
नाको सन्मानगर्नु ॥ मेरो पूजागर्नु ॥ तीर्थ घुमनु ॥ पराईका उपकारनिमित्तवेशागर्नु ॥ संतोषगर्नु ॥ गुरुको सेवागर्नु

॥ राम ॥
॥ १०० ॥

सन्नियम नियम वारंवार कहिंछु ॥ प्रकृति मार्ग मा निवृत्ति मार्ग का पुरुष हेरु लेठ पास नागरिया का छंदा
जस लेजौ न काम नागन्यो काम नाका अनुसार ॥ कसै कन मोक्ष कसै कन वश उदय कन दिंछु ॥ ३५ ॥ बुद्धि में
विषेल गाउनु जो छु म कहिंछु ॥ इन्द्रिय हेरु कन षत्रि चिराषनु जो छु दम कहिंछु ॥ आश्रय को डख सदनु जो छु
तिक्षा कहिंछु ॥ जिहार लिंग लाई जितनु जो छु वैर्य कहिंछु ॥ ३६ ॥ प्राणि संग दोहन गर्नु जो छु मुखदान कहिं

सतेय मास नियमा उभयो द्वादश स्मृताः ॥ पुंसां मुपासिता स्नातयथा कामं दुहंति हि ॥ ३५ ॥
शमो मन्त्रिष्ठा बुद्धेर्दम इन्द्रियशंयम् ॥ तितिक्षा दुःखसमर्थो जिहो पस्थजयोश्च ति ॥ ३६ ॥
दराग्न्या सः परं दानकामत्यागस्तपः स्मृतः ॥ स्वभावविजयः शौर्यं सत्त्वं च शमदर्शनम् ॥ ३७ ॥
ऋतुतस्मृता वारणीक विभिः परिकीर्तिताः ॥ कर्मस्वसंगमः शौचत्यागः सत्यास उच्यते ॥ ३८ ॥
धर्म इष्टं धनं नृणां यत्तो ह भगवन्तमः ॥ दक्षिणा ज्ञान संदेशः प्राणायामः परं वलम् ॥ ३९ ॥

दुषय भोग को इछान गर्नु जो छु तप कहिंछु ॥ पूर्व वासना कन जितु जो छु शौर्य कं हिंछु ॥ ब्रह्म कन देषनु जो छु स
त्य कहिंछु ॥ ३७ ॥ पियारोपनि सांचोपनि वचन जो छु ज्ञान कहिंछु ॥ कर्म मा आसक्ति न गर्नु जो छु शौच कहिंछु सत्या
स जो छु त्याग कहिंछु ॥ ३८ ॥ मनुष्य अति वढिया धन जो छु धर्म कहिंछु ॥ यज्ञ भत्या को मै विष्णु कहिंछु ॥ ज्ञान को उप
देश गर्नु जो छु दक्षिणा कहिंछु ॥ प्राणायाम जाछु श्रवण वल कहिंछु ॥ ३९ ॥

॥ भा. सु. ॥
॥ १०१ ॥

मेरोसे श्वर्य जो छ भगभनिकहिं छ ॥ मेरो भक्तिगर्नु जो छ लाभकहिं छ ॥ आत्मा विषे देषिया का भेद को बांध जो छ विद्या कहिं छ
अकर्मनगर्नु जो छ ही कहिं छ ॥ ४० ॥ कोनै कर कोइ छानगर्नु शत्यादिगत्याका गुण हेरु जो छ नमरा न कहिं छ ॥ दुःख सु
ख को विचारै न राखु जो छ ॥ सुख कहिं छ ॥ विषय भोग कोइ छागर्नु जो छ ॥ दुःख कहिं छ ॥ बंध मोक्ष कन जा न्या परिह
त कहिं छ ॥ ४१ ॥ हेह मा घर मा अहंकार गर्ना ममता गर्ना जो छ मूर्ख कहिं छ ॥ निवृत्ति मार्ग जो छ ॥ पन्था भन्या को वा

भगो मेरो श्वरो भाषोला भोम इक्तिरुत्तम ॥ विद्या आत्मभिदावाधो जु गुप्ता ही रकर्म सु ॥ ४० ॥ श्रीगुणानैरपे
क्षाया सुख दुःख सुखात्यय ॥ दुःख काम सुखापेक्षा पणितौ बंध मोक्ष वित् ॥ ४१ ॥ मूर्खो देहाय हं बुद्धिप
थामन्निगमस्मृत ॥ उत्पथश्चित्तविक्षेपः स्वर्गः सत्त्वगुणोदय ॥ ४२ ॥ नरकस्तमुच्चाहो बंधुगुरुरहं सखे
॥ गृहं शरीरमानुष्यगुणा षोऽष्टा षडुच्यते ॥ ४३ ॥ दरिद्रो यस्तु संतुष्टः कृपणो योजितेन्द्रियः गुणैश्च स
क्लधीरीशो गुणसंगो विपर्यय ॥ ४४ ॥

दोकहिं छ ॥ प्रवृत्ति मार्ग जो छ उत्पथ भन्या को कुमार्ग कहिं छ सत्त्वगुण को वृत्ति जो छ स्वर्ग कहिं छ ॥ ४३ ॥ तमो गु
ण को वृत्ति जो छ नरक कहिं छ ॥ हे उद्धव ॥ मगुरु जो छ बंधु कहिं छ ॥ मनुष्य को शरीर जो छ ॥ घर कहिं छ ॥ दया धर्मादि
गुण ले युक्त हुनु जो छ ॥ आष्य कहिं छ ॥ ४३ ॥ असतोषि जो छ दरिद्र कहिं छ ॥ इन्द्रिय कन जित न सङ्गु जो छ ॥ कृपण

॥ राम ॥
॥ १०१ ॥

कहिंहुविषयमाआसक्तचित्तजस्काहेन। तपोईश्वरकहिंहु॥ विषयमासंगगर्नुजोहु॥ अनीश्वरकहिंहु॥ ४४॥ हेउद्धवति
मिलेगयाकाप्रलकोउत्तरजोहु॥ मैलेवढीयागरिउत्तराकनदिजो॥ छेरैवरांनकागर्नुपर्हु॥ गुणकोर। दोषकोलक्षणा
कनभन्दुसुन॥ योक्रोरोगुणहो॥ योक्रोरोदोषहोभनिदेषनुजोहु॥ दोषकहिंहु॥ गुणदोषकेहिनदेषनुजोहु॥ गुणकहिं
हुभनिकललेउद्धवकनआज्ञागया॥ सोहिकथाकन। श्रुकदेवलेराजापरीक्षित्कनआज्ञागया॥ सूत्रलेशोनकादिजो

स्तउद्धवतेप्रह्लाःसर्वसाधुनिरूपिता॥ किंवरितीतेनवहुनालक्षणागुणदोषयो॥ ४५॥ गुणदोषदृशिदोषो
गुणस्तुभववर्जित॥ ४६॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोसकादशस्कंधेस्कान्दविंशोऽध्यायः॥ १९॥ उद्ध
वउवाच॥ विधिश्चप्रतिषेधश्चनिगमेहीश्वरस्यते॥ अवेश्यतेरविन्दाक्षगुणदोषंचकर्मणाम्॥ १॥ व
रांश्रमविकल्पंचप्रतिलोमानुर्लाभजम्॥ द्रव्यदेशःवयःकालान्स्वर्गनरकमेवच॥ २॥ ॥ ७॥

धिहेरुकनआज्ञागर्दाभया॥ ४५॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोसकादशस्कंधेभाषाटीकायांस्कान्दविंशोऽध्या
यः॥ १९॥ अवउद्धवजोहनुविंतिगर्नालाग्या॥ हेकलविधिभयोनिषेभयो। तपोत्रिकोआज्ञास्वरूपभयाकावेदलेग
हु॥ घटियाकर्मरचढीयाकर्मको॥ पुणपापरूपफलकनपनिभन्दु॥ १॥ वरांकोआश्रमकोगुणदोषरूपभेदक
नपनिभन्दु॥ प्रतिलोमअतिलोमजातिकोगुणदोषजातिपनिभन्दु॥ कर्ममायोग्यभयाकाद्रव्यदेशकालभयक
नपनिभन्दु॥ स्वर्गनरकपनिहुंहु॥ २॥

॥ भा. स. ॥
॥ १०२ ॥

हेरुस्मृतस्कारगा। गुणकोरदोषको भेदकननमान्याविधिर। निषेधगर्भा। तपांत्रिको आत्मारूपयाको। कर्मकारावेद।
रूपवचनजोछ। कसोगरिचलछ। वेदरूपवचननभयाप्रान्त। मनुष्यहेरुको कल्पाराजोछ। कसोगरिहोला। ३॥ हेईश्व
रयोवेदजोछ। पितृदेवतामनुष्यहेरुको अतिश्रेष्ठभयाकोनेत्रछ। मोक्षविषे। स्वर्गविषे। योक्रोगया। योक्रोसिद्धिहु
छससकरालेगरिसिद्धिहुछभक्ताकरामाराछ॥ ४॥ गुणदोष। गुण। पापभन्नुसस्तो भेदबुद्धिजोछ। तपांत्रिका
वेदरूपीवाक्यलेगरिहुछ। आफैभयाकोहोईन॥ वेदलेगरिकोहिकामनिषेधहुनालेगर्देन॥ तस् अर्थउसैशास्त्र

गुणदोषभिदादृष्टिमंतरेणावचस्तव॥ निःश्रेयसंकथं नृणां निषेधविधिलक्षणा म॥ ३॥ पितृदेव
मनुष्याणां वेदश्चक्षुस्तवेश्वर॥ श्रेयस्तनुपलक्षर्थे साध्यसाधनयोरपि॥ ४॥ गुणदोषभिदादृ
ष्टिनिगमात्तेन हि स्वतः॥ निगमेनापवादश्चभिदाया इति मे भ्रमः॥ ५॥ श्रीभगवानुवाच॥ योगसू
योमया प्रोक्ता नृणां श्रेयोविधित्स्यात्॥ ज्ञानकर्मश्चभक्तिश्चनोपान्योसिता कुत्रचित्॥ ६॥

लेदेष्टायाका भेदकन। उद्दिशास्त्रजोछ। कसोगरिभेदकोनिवृत्तिगर्लाभनि। मेरामनमाभ्रांतिभैरहेछ। मटिदि
नुहवसभनिविंतिगया। उद्भवलेर। कस्मलेआत्तागर्नलागा॥ ५॥ हेउद्भव। सुन। मनुष्यहेरुको कल्पारावस्। भ
क्ताकाइछाले। ज्ञानयोग। कर्मयोग। इतिनयोगमैलेवतायाकाछन्॥ इतिनयोगदेधिन्कल्पाराको। दोश्राउपा
यकेहिछैन॥ ६॥

॥ राम ॥
॥ १०२ ॥

ससंसारविषे। कर्मविषे वैराग्यभयाका। कर्मसंन्यासकनगर्वाप्राणिताई। ज्ञानयोगले गरिसिद्धिहुंछु॥ कर्ममावैराग्य
नभयाकाकामलेयुक्तभयाकाप्राणिताई। कर्मयोगलेसिद्धिहुंछु॥ ७॥ मेराकथाविषेकोहिभाग्यकाउदयलेगरिश्र
द्धाभयाकोप्राणिजोछु॥ विषयमावैराग्यपनिगर्वा। अतिआसक्तपनिनभयाको॥ संज्ञाप्राणिताईभक्तियो
गलेसिद्धिहुंछु॥ ८॥ जाहासम्भवैराग्यहुंदैन। ताहासम्भकर्मगदैरहनु॥ अथवामेराकथासुन्दामाश्रद्धाउत्पन्न

निर्विस्मानांज्ञानयोगोन्मासिनामिहकर्मसु॥ तेथनिर्विस्मचित्तानांकर्मयोगस्तुकामिनाम्॥ ७॥
यदृह्यामत्कथादौजातःश्रद्धस्तुयःपुमान्॥ ननिर्विस्मोनातिशक्तोभक्तियोगोस्पसिद्धिदं॥ ८॥
तावत्कर्मानिकुर्वीतननिर्विघ्नतयावता॥ मत्कथाश्रवणादौवाश्रद्धायान्नवजायते॥ ९॥ स्व
धर्मस्थोयजन्यत्तैरनाशीकामउद्धव॥ नयातिस्वर्गनरकोयद्यत्पन्नसमाचरेत्॥ १०॥ अस्मि
न्लोकेवर्तमानःस्वधर्मस्थोनरःशुचिः॥ ज्ञानंविशुद्धमाप्नोतिमद्भीकवायदृह्या॥ ११॥

नहुन्ज्यालगदैरहनु॥ ९॥ हेउद्धवआक्राधर्ममारह्याकोफलकोआज्ञानगरि॥ यजलेगरिमेरोपूजागर्वाप्रा
णिजोछु॥ अरुघटियाकामगदैरहनुभन्या। स्वर्गमापनिनरकमापनिजादैरहनु॥ १०॥ पापलेहीनभयाको। शुद्धभ
याको। आक्राधर्ममारह्याको। एसलोकमारह्याप्राणिजोछु॥ विनायन्त्रालेगरिमविषेभक्तिकनपाउंद
छु॥ अतिशुद्धभयाकोज्ञानपनिपाउंदछु॥ ११॥ एसशरीरकनस्वर्गमावह्या। नरकमावह्याप्राणिहेरुजो
छु॥ शरीरकोकारणभयाका। ज्ञानभक्तिकोकारणहुनालेइछागछु॥ १२॥

॥ भा. २ ॥
॥ १०३ ॥

हे उद्धव! मनुष्यले स्वर्ग अति इच्छा कन पनि न गर्नु ॥ नारकी गतिको इच्छा पनि जसै गरिंदैन ॥ ए सदेह को इच्छा पनि न गर्नु ॥ देह मा भूहकार हुनाले ॥ सत् असत् जांदैन ॥ अथवा जौ न कर्म गर्नाले ॥ स्वर्ग मान र कमा जाछ ॥ उक्तो कर्म न गर्नु ॥ अति श्रेष्ठ हुनाले मनुष्यो निमित्तो स भनि इच्छा पनि रा गर्नु ॥ १३ ॥ हे उद्धव! मरणा धर्मि भया को पनि देह जो छ ॥ मोक्ष सिद्धि पनि दिन्छ भनि ॥ जान्नाले सावधान भै ॥ नमदै ए सदेह ले गरि ॥ मोक्ष का निमित्त यत्न गर्नु ॥ १४ ॥ यम राज रुजि निर्देयि भया का ॥ पुरुष हेरु ले काट्न लागि या का ॥ आफु गुड वनाई आश्रय गरि या का ॥ दक्ष कन भल्सी

स्वर्गिणा प्यन भिच्छति लोकं निरयिनस्तथा ॥ साधकं ज्ञान भक्ति भ्यां सुभयं तदसाधकम् ॥ १२ ॥ तरकः स्वर्गतिं कांछेन्नारंकी वा विवक्षरा ॥ ने संलोकं च कांक्षत देहावेशात्प्रमाद्यति ॥ १३ ॥ सतदिदं न्युरामृतो रभवाय घटे तस ॥ अथ मन्त्र इदं ज्ञात्वा मन्त्रं मप्यर्थ सिद्धिदम् ॥ १४ ॥ छिद्यमानं यमैरेतैः कृतनीडं वनस्यति म ॥ स्वर्गः स्वकेतमुत्सृज्य क्षमया तिष्ठति पट ॥ १५ ॥ अहोरात्रि शिद्यमानं बुद्ध्या युभयवेपथ ॥ मुक्तसंगः परं बुद्ध्या निरीह उ पशामति ॥ १६ ॥ नृदेह माय सुलभं स दुर्लभं स्रव सुकल्पं गुरु कर्माधार नम् ॥ मयानुकुले

न भैछोडि ॥ अरु ठाउ मा जान्ना पछि जो छ ॥ कत्पारा कन पाउं ॥ नन भस्वते रितं पुमान् भवाधिन तरे स आत्महा ॥ १७ ॥ दछ ॥ १५ ॥ अहोरात्र रूपी यम ले काटि दो आयु कन बुझि भय ले कं पदो ॥ संग छाग डि चेष्टा न गर्ना प्राणि जो छ ॥ शातिक न पाउ दछ ॥ सबै फल को को र रा भया को ॥ दुःख ले पाइ न सकु पनि ॥ सुख ले पाई या को ॥ गुरु रूपी मलहा ले सहित भया को ॥ अनुकूल भया का मकल रूप वा यु ले चला या को ॥ एतो मनुष्य रूप देह रूपी दुंगा कन पाइ कन ॥ जो प्राणि संसार रु

गीसमुद्र देषि पारु देन आत्महत्या गर्ना हो ॥ १७ ॥

॥ राम ॥
॥ १०३ ॥

विरक्तभयाका प्राणिको वैराग्यज्ञानभयाकर्मयोगकनभयार अववळीयागरिविरक्तभयाका प्राणिले ज्ञानयोगगर्नु
भंछन् ज्ञाननहुदै पहिलेकोहि कार्यकनछोडनुभनिकहंछन्॥ हेउद्धव कर्ममाडुःखदेखनालेविरक्तभयाको॥ इन्द्रियक
नजित्वा प्राणिले आक्रामनकनस्थिरगर्नु॥ अभ्यासलेगरि धरणागर्नु॥ १८॥ विषयमाघुम्दो स्थिरनभयाकामनक
नअल्सीनगर्नु॥ सुप्तो गरि आक्रावसमालैज्यानु॥ १९॥ इन्द्रियजित्वा प्राणिजित्वा सप्ता प्राणिले मनकी गतिकनन

यदारंभेषु निर्विस्मो विरक्त संयतेन्द्रिय॥ अभ्यासेनात्मनो गी धारयेदचलं मन॥ १८॥ धार्यमाणं मोयर्हि भाग्यदा
श्च स्वस्थितम्॥ अतन्द्रितो नुरोधेन मार्गेणात्मवशं नयेत्॥ १९॥ मनो गतिं न विसृजे जित प्राणो जितेन्द्रियः॥ स
त्वसंयत्नया बुध्या मन आत्मवसं नयेत्॥ २०॥ सचेवै परमो योगो मनसः संग्रहः स्मृतः॥ हृदयजत्वं विदुर्दत्तस्य
वार्थवतो मुहुः॥ २१॥ सांख्येन सर्व भावानां प्रतिलोमानुलोमतः॥ भवाप्ययावन्बुध्या येन नो यावत्प्रसीदति॥ २२॥

छोडनु॥ सात्विकबुद्धिले गरि आत्माकनलक्षगर्नु वसकनगर्नु॥ २०॥ जस्तो दाउना घोडाको वळीया गतिको इच्छागर्नु प्राणि
जोछ॥ डोरिले धैवि वसकनगर्नु॥ तसै मनकन धैवि धैव वसकनगर्नु जोछ॥ वरोठुलो योगकहिंछ॥ २१॥ तत्वहेरुको विषे
कले गरि महदादि देह पर्यंतका तत्वको प्रकृतादि क्रमले उच्यन्ति॥ पृथिव्यादी क्रमले संहारकन ध्यानगर्नु॥ मनप्रस
न्नहुन् ज्ञानसंम॥ २२॥ संसार देखताडुःखमान्या विरक्तभयाको गुरुले॥ उपदेशगर्नुका अर्थका विचारगर्नु॥ चिंताग

॥ भा. स. ॥
॥ १०४ ॥

रियाकावसुकावारचिन्तागर्नालेगरि॥ पुरुषकोमनजोहूँ देहका अभिमानकन छोड़दछ॥ २३॥ यमनियम आदिगत्याकायो
गकामार्गलेगरि॥ तत्वमसिवाकलेतत्वपदार्थको सोधनगरि॥ मेरो पूजा ध्यान हेरुले गरि॥ मनले परमात्माकन समझनु
अरु करान समझनु॥ २४॥ षवरनपाईकन योगीले कदाचित् घटिया कर्मकन गयो भन्या योगीले गरिते सपापकन उ
छाउंछु॥ पापखराउनगर्नाकन अरु करान गर्नु योगीले गर्नु॥ २५॥ प्रायश्चित्तनगरि योगीले गरि कसो गरि पापकन उ

निर्विस्मस्य विरक्तस्य पुरुषस्योक्तवेदिनः॥ मनस्यजतिदोरात्म्यं चिंतितस्यानुचिंतया॥ २३॥ यमादिभिर्योगपथै
रान्वीक्षिकाचविद्यया॥ ममावेषासनाभिर्वानान्यैर्योगं स्मरेन्मनः॥ २४॥ यदि कुर्यात्प्रमादेन योगी कर्मविगर्हि
तम्॥ योगेनैव दहेदं हो नान्यत्र कदाचन॥ २५॥ स्वेच्छेधिकारेयानिष्ठासगुणाः परिकीर्तितः॥ कर्मसांजात्यभु
क्षानामनेन नियमः कृतः॥ २६॥ गुणदोषविधानेन संगानां त्याजने ह्यया॥ जातश्रद्धामत्कथा मुनिर्विस्मः स

छाउनु भनौलात सुन॥ हे उद्धव आक्रा आक्रा अधिकार विषे यो निष्ठा छु॥ सोहि गुणकहिंछु दोस्तो कहिंदैन जस्कारण
विधिनिषेधले गरि॥ यो कुरो गुण छु यो कुरो दोष छु भनिदेखाउनाले॥ जन्मैका अशुद्ध कर्मको संग न गरनु भन्नाकाइका
ले गरिया गर्नु॥ अरु करान गर्नु भनिसंकोच गर्छु॥ २६॥ मेरो कथा विषेश्रद्धा भयाको अरु करामा मन न लगान्या भ
याको प्राणिजो छु॥ विषय हेरुहुः खरूप छु नुमनि जान्दछु तापनि॥ विषय भोगलाई छोडनाकन सक्ने ननु॥ ३॥

॥ राम ॥
॥ १०४ ॥

ताहा प्राज्ञ उस्ताले हे उद्धव विषय भोग कन गदो पनि ॥ विषय कन निन्दो गदो छन्दो ॥ भगवान् को भजन गर्ने ले मात्र त रुला भनि-
वडो निश्चय भया को छन्दो भक्तियोग ले गरि चार वार मेरो भजन गर्ना मुनिका हृदय विषे ॥ मंरुल आइ कन वस्या विषे मन मा
अपन्न गथा का पनि विषय जो छु सर्वै हरा उदछन् ॥ २९ ॥ हृदय रूपी ग्रंथि अहंकार जो छु भेद हुं छु ॥ अहंकार पूर्व भया का
सर्वै असंभावना विपरीत भावना आदि गत्या का सन्देह काटि छुन् ॥ संस्कार का कारण भया का फले भोग रिया का सर्वै क

वेद दुःखात्मका न्का मान्य रित्या गोप्य नीश्वर ॥ ततो भजेत मां प्रीतः श्रद्धालु ईड निश्चयः ॥ २८ ॥ जुष मारा श्रुतान्का मानुः खो
दर्को श्रु गर्हय म ॥ श्रोक्तेन भक्तियोगेन भजतो मां सकृन्मुने ॥ कामा हृदयान् शंति सर्वे मपि हृदि स्थिते ॥ २९ ॥ भिद्य
त हृदय ग्रंथि छिद्य त्रे सर्व संशया ॥ क्षीय त्रे वास्य कर्माणि मयि दृष्टे स्विलात्मनि ॥ ३० ॥ तस्मान्मद्वक्तियुक्तस्य
योगिने विसदात्मनः ॥ तत्तानं न च वैराग्यं प्रायः श्रेया भवेदिह ॥ ३१ ॥ यत्कर्म भियन्त पसा ज्ञानं वैराग्य तश्च य
त् ॥ योगेन दान धर्मैरा श्रेयो भिरितरे रपि ॥ ३२ ॥

विष ॥ ३० ॥ तस्कारण हे उद्धव मेरो भक्ति गर्ना योग ग
र्ना योग गर्ना मं विषे पन कन कन लगा उं न्या योगी का भक्तियोग दे चिन् ॥ दोषो मोक्ष कोट पास ना छैन ज्ञान वैराग्य
पनि उस्ता छैन न ॥ ३१ ॥ कर्म ले त पस्या ले ज्ञान वैराग्य ले योग गर्ना ले दान धर्म ले ॥ अरु जो को हि पुराण कर्म ले गरि जो
मिल्दछ ॥ त्यो सर्वै मेरो भक्तियोग गर्ना ले गरि ॥ भक्त जो छु सुरै ले गरि पाउ दछ ॥ ३२ ॥ भक्त जो छु भक्ति दे चि दो स्तो

॥ भा. २ ॥
॥ १०५ ॥

कुरोइछागर्देन ॥ गयो भन्या स्वर्ग मोक्ष मेरो वैकुण्ठ सवै पाउं दछ ॥ ३३ ॥ धैर्य गर्ना साधु भयाका सत्ता मेरा सकांति भक्त हेरु जो
छन् ॥ कौनै कुराकोइछागर्देन न मैले दिया का मोक्ष कन पनि लिदै नन् ॥ ३४ ॥ कौनै कुराकोइछान गर्नु जो छ अति श्रेष्ठ छ भ
निकहं छन् ॥ तस्कार रामेरो भक्ति जो छ फल को आसान गर्ना ॥ कौनै कुराकोइछान गर्ना लाई हुं छ ॥ ३५ ॥ ससै प्रकार ले
सिद्धि भयाका साधु स्वभाव भयाका समचित्त भयाका प्रकृति देषि पर भयाका ब्रह्म कन प्राप्ति भयाका सत्ता मेरा भक्त

स्वर्ग पवर्ग मद्दाम कथं विशदिवान्छति ॥ ३३ ॥ न कि वित्ता धवोधी सभक्ता ह्य को ति नो मम ॥ वांश्चुं त्यपि
मया दत्तं कैवल्य म पुनर्भवम् ॥ ३४ ॥ निरपेक्षं परं प्राहुनिः श्रेय समनल्पकम् ॥ तस्मान्निराशिषो भ
क्तिर्निरपेक्ष्य स्य त भवेत् ॥ ३५ ॥ न मय्येकान्त भक्तानां गुण दोषोद्भवा गुणाः ॥ साधूनां समचित्तानां
बुद्धेः परमये युषाम् ॥ ३६ ॥ एवं मे तान्मया दिष्टान्मुतिष्ठति मे पथः ॥ क्षेमं विन्दति मत्स्थानं यद्ब्रह्म प
रमं विदुः ॥ ३७ ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे स्कन्धे भगवत् उद्भव संवादे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

हेरुका गुण दोष ले भयाका गुण दोष जो छ नहुदै नन् ॥ ३६ ॥ हे उद्भव ससै प्रकार का मैले उपदेश ग्याका ॥ मुक्ति
का उपाय भयाका मार्ग मा जो रहे छन् ॥ जस कन पर ब्रह्म भनिकहं छन् स लोक त्याग कन दिया मेरा स्थान कन पा
उदछन् भनि कल ले उद्भव कन वताजा ॥ सुक देव ले राजा परीक्षित कन वता उदा भया ॥ सोहि कथा सुन ले शौनका
दिज पि हेरु कन वता उदा भया ॥ ३७ ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे स्कन्धे भाषाटीकायां विंशोऽध्यायः ॥

॥ राम ॥
॥ १०५ ॥
॥ २० ॥

श्रीभगवानुवाच॥गुरादोषकोव्यवस्थानिमित्तज्ञानयोगकर्मयोगभक्तियोगइतिनयोगवताया॥ज्ञानरभक्तिलेसिद्धभ-
याकाप्राणिकागुरादोषकेहिहैन॥सिद्धनभयाकासाधकप्राणिहेरुका॥पहिलेनिवृत्तिमार्गकाकर्ममालाग्याकाप्राणिहेरुका
सकासम्भ॥सत्त्वभुद्धिगर्वाहुनालेनित्यनैमित्तिककर्मजोछगुराछ॥नगर्नुजोछदोषछ॥प्रायश्चित्तजोछपापकोनाशगर्वाहु
नालेगुराछ॥शुद्धसत्त्वभयोकाज्ञानमालाग्याकाप्राणिहेरुकातज्ञानमाअभ्यासगर्नुसोहिगुराछ॥भक्तिमालाग्याकाप्राणिहेरु

श्रीभगवानुवाच॥यस्यज्ञानमन्यथोहिताभक्तिज्ञानभक्तियात्मकाम्॥क्षुद्रानृकामांश्चलैप्राणैर्जुषन्तःसंसरन्ति॥१॥
स्वेस्वेधिकारेयानिष्टासगुरापरिकीर्तितः॥विपर्ययस्तुदोषःस्यादुभयोरैषनिश्चयः॥२॥शुद्धशुद्धीविधीयेतस

कातश्रवणकीर्तनगर्नुजोछगुराछ॥ज्ञानमारभक्तिमाविरोधहुन्याकर्मजोछदोषछ॥अवसमयमासिद्धपनिहैनन्॥साधकप
निहैनन्काम्यकर्ममामात्रलाग्याकातेसाप्राणिलाईगुरादोषकोविचारकनगर्नीभयाकाभगवानुक्कलजोछन्॥अत्यन्तविष
यमामात्रभुत्वाकाप्राणिहेरुकोनिदागरिआज्ञागर्नुलाग्या॥हेउद्धवसुनजोविषयीप्राणिहेरुमैलेवतायाका॥ज्ञानयोगक
र्मयोगइतिनमार्गकनछोडिकन॥अतिछोटाविषयहेरुकोस्थिरनभयाकाप्राणिदेहइन्द्रियहेरुलेगारिसेवागर्दछन्॥तिप्रा
णिहेरुजोछन्सवैगुरादोषभाणिहुनाले॥नानायोनिविषेसंसारमापुमदैन्हछन्॥१॥तनैकर्मलेकमेकनदोषहुन्याकमे

॥ भा. स. ॥
॥ १०६ ॥

कनगुराहुन्या ॥ यो कुराक सो गरिहंछ भनौलात सुन ॥ हेउद्वव आक्रा आक्रा अधिकार विषेजो निष्ठाछ ॥ सो गुराकहिंछ ॥ आक्रा
अधिकार विषे विरोधहुन्या जो छ दोष कहिंछ ॥ गुरा दोष मारुहिनिश्चय छ ॥ २ ॥ हेउद्वव वरोवर भयाका वस्तु विषे पनि द्रव्यको
योग्य अयोग्य सन्देह ले गरि ॥ स्वभाव ले भयाका प्रवृत्तिको अभाव गर्ना निमित्त शुद्ध अशुद्ध ईदु इदु राविधान गरिन्छन् ॥ ग
र्तन गर्नु कुरा पनि विधान गरिन्छन् ॥ अर्थन अर्थ कुरा पनि विधान गरिन्छ ॥ ३ ॥ हेउद्वव अशुद्धि शुद्धि धर्मका निमित्त विधा
न गरिन्छ ॥ शुद्ध ले धर्म हुन्छ अशुद्ध ले अधर्म हुन्छ ॥ व्यवहारका निमित्त गुरा दोष विधान गरिन्छन् अशुद्ध भयाका पनि गुरा

मानषपि वस्तु ॥ द्रव्यस्य विविक्ति सार्थं गुरा दोषौ शुभाशुभौ ॥ ३ ॥ धर्मार्थं व्यवहारार्थं यात्रार्थमिति
वानघ ॥ दर्शितोयं मया चारो धर्म मुद्रहतां धुरम् ॥ ४ ॥ भूम्यश्मन्निताका सा भूतानां पंचधावत ॥ ५

दोष जो छन् राजा हेरुको व्यवहार देखनाले तीन योग्य छन् ॥ शुद्ध अशुद्ध जो छन् प्राणारक्षकानि निमित्त भयापनि आपत्ति विषे ॥
शरीर निर्वाह मात्र लिदामा पाप छैन ॥ अधिक लियो भयापाप छ ॥ सलो आचार जो छ मध्य हेरुको रूपलिकन ॥ मैले धर्म
रूपी भारि वोत्पा प्राणि हेरुला ईवता याको छ ॥ ४ ॥ वेद लेवता याका हुनाले अशुद्धि शुद्धिमा आग्रह नगर्नु भनिक हुन्छन् ॥
पृथिवि आपतेज वायु आकाश हेरु जो छन् ॥ प्राणि हेरुका कारण भयाका ॥ आवृत्त स्यावर पर्यन्तका शरीर कनवनाउ
मा भयाका ॥ सृष्टाकारण देह गरि वरोवर सवै वस्तु छन् ॥ आत्मा ले पुत्र हुनाले जीवले गरि पनि सवै वरावर छन् ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ राम ॥
॥ १०६ ॥

देहहेरुविषेचारवेदले वराश्रमआदिगत्याका भिन्नभिन्नरूपजोछन् कल्पनागरिछन्॥ प्राणिहेरुका प्रवृत्तिमार्गकोनिय
मः गर्नालेगरि॥ धर्मआदिगत्याका पुरुषार्थकोसिद्धिहवसुभन्नानिमित्त॥ ६॥ देशभयो कालभयो धान्यहेरुभया सन्नि
सवैको कर्मकोचगर्नानिमित्त गुणारदोषहेरुविधानगरिछन्॥ ७॥ कृष्णसारनभयाकोदेशअशुद्धहंछन्॥ उष्मापनि
वाह्यराकननमात्मादेशजोछ अतिअशुद्ध॥ कृष्णसारमृगछत्तपनिसत्पात्रछैनभयाअशुद्ध॥ सत्पुरुषनभ

आवस्यस्थावरादीनां शरीरा आत्मसंयुता॥ ५॥ वेदेन नामरूपाणि विमाणि समेष्वपि॥ धातु
षूद्रवकल्पान्नसतेषां खार्द्धसिद्धये॥ ६॥ देशकालादिभावानां वस्तूनां मम सत्तय॥ गुणारदो
षो विधीयेते नियमार्थं हि कर्मणाम्॥ ७॥ अकृष्णसारो देशानामवस्यरणोऽशुविभवेत्॥
कृष्णसारोऽप्यसौ वीरकी कंठो संकृते रिराम्॥ ८॥ कर्मणो गुणान्कालोऽव्ययः सतसव॥

याको मगधवंत कलिंगदेशजोछ अशु॥ मार्जननगरियाकोदेशजोछ अशुद्ध॥ उपरभूमिअशुद्ध॥ ८॥ द्रव्य
संपन्निलेगरिउसैपनिदिनकोपूर्वभागकालजोछ कर्मगर्नाकनयोग्य॥ तेसकालमागत्याको कर्मगुणारायक
छ॥ द्रव्यनहुनाले राजपभ्रष्टहुनाले गरिभयो॥ जस्कालमाकर्महुनसत्कै न त्यो कालअशुद्ध॥ सूतकलेगरिक
र्ममायोग्यनभयाको दशदिनसम्मकालजोछ त्योपनिअशुद्ध॥ ९॥ हेउद्रवद्रव्यकोशुद्धिजोछ जलादिद्रव्य
लेगरिहुन्छ॥ रगतलेमुहुदै नशुद्धहोकिअशुद्धहोभयासंदेहभयाविषे॥ शुद्धहोभनिवाह्यराकोवचनसुन्यापछि

॥ भा. स. ॥
॥ १०७ ॥

शुद्धहुंछ ॥ फेरि जल ले सेवन गर्ना ले शुद्धहुंछ ॥ फल हेरु गंध लिया पछि अशुद्धहुंछ ॥ काल माव स्याको मेघ को जल जो छ
शुद्ध छ ॥ तिन् दिन मात्र च्व शुद्ध छ ॥ अकाश माव स्याको न जा जल को शुद्धि दिन लेहुंछ ॥ वासि अन्न अशुद्ध छ ॥ वराणस हेरु
लेहो या काल ताउ को ज जो छ ॥ सानु तलाउ छ भन्या अशुद्धहुंछ ॥ हुलो तलाउ छ भन्या शुद्धहुंछ ॥ १० ॥ सूर्य ग्रहण ले गरि
अशुद्ध भयाको अन्न जो छ ॥ समर्थ लाई अशुद्ध छ ॥ असमर्थ लाई शुद्ध छ ॥ पुत्र को जन्म भया विषे दश दिन दधि पु
छो शुद्ध शुद्धि दश दिन भित्र शुद्ध अशुद्ध छ ॥ पुराना फाया कामे लाव स्रजो छ ॥ धनी लाई अशुद्ध छ ॥ दरिद्र

वा ॥ यतो निर्वृत्त ते कर्म स दोषो कर्मकः स्मृतः ॥ ९८ ॥ इव स्य शुद्ध शुद्धी च द्रव्येण वचनेन च ॥ सं
स्कारेण यकालेन महत्वायतयाथवा ॥ ९९ ॥ शक्ता शक्ताथवा बुद्ध्या समुद्ध्या च यदात्मने ॥
अशंकुर्वन्निहियथा देशवस्थानुशारतः ॥ १०० ॥

लाई शुद्धहुंछ ॥ इ द्रव्य वचन हेरु जो छ ॥ अशुद्ध हुनाले जो न पाप कन गर्छ ॥ त्यो पाप कन देश काल अवस्था का अ
नुसार ले गर्दछ ॥ जो हातों हा गर्दै नन् ॥ निर्भय देश मा गर्दछ ॥ चौर हाति बाघ भालु लाग्न्या जगा मा भन्या पाप गर्ना हु
दै नन् ॥ रोग न लाग्ना मा योवन अवस्था मा पाप गर्ना ल अवस्था भयो रस काल मा गर्दै नन् ॥ र सै कारणा धर्म शास्त्र
मा भयाको छ ॥ देश काल आश्रु अवस्था इव इव को प्रयोजन ॥ आश्रु उपपनि इत्यादि कुरा को विचार गरि शौच गर्नु

॥ राम ॥
॥ १०७ ॥
॥ १०८ ॥

जलादिद्रव्यलेगारिद्रव्यकोभुद्रिहंछुभन्यातस्मात्तवचनलेभुद्रिजोछुएकैछुद्रव्यलेगारिहन्वाभुद्रिजोछुअनेकभनिदेवाउछु
 नहेउद्रवधान्यकोभुद्रिजोछुवतासलेहंछु॥रथकाकाठकोरग्रहचमसआदिगन्धाकापात्रकाउद्रिजोछु॥मारोतातोपानि
 लेगारिहंछु॥हस्तिहाडकाभुद्रिजोछुकाललेहंछु॥भागाकोभुद्रिजोछुजललेहन्नुतेलघिउकोभुद्रिजोछुआगालेहंछुसु
 वर्गाहेरुकोभुद्रिजोछुआगालेहंछुछालाकोभुद्रिजोछुतेललेहंछु॥गल्लिकोहिलोघटइद्रहेरुकोभुद्रिजोछुकालले
 हंछु॥१२॥विद्याकोलेपभैअभुद्रभयाकापिह्नावस्त्रपात्रहेरुजोछुनताछुउषरानिलगाउनु॥अमिलोलगाउनु॥जल

धान्यदार्वस्थितं नारसतैजसचर्मराम्॥कालवास्यमिमृजोयैः पार्थिवानायुतांयुतैः॥१२॥अमेध्यलिप्ययेन
 गंधलेपव्यपोहति॥भजतेप्रकृतिंतस्यतहोचंतावदिष्यते॥१३॥स्नानदानंतपोवस्थावीर्यसंस्कारकर्मभिः॥मत्सु
 त्याचात्मनःशौचंभुद्रःकर्माचरेद्विजः॥१४॥मंत्रस्यचपरिज्ञानंकर्मभुद्रिर्मदपरां॥धर्मसम्पद्यतेषडभिरधर्म

इत्यातिलेगारिगंधलेपहरायापछि॥अधिजस्तोथियोतसैभयोभन्यातिवस्तुकोशौचत्पहिंछु॥१३॥स्नानदानतपस्या
 कौमारादिअवस्थाशक्तिव्रतबंधसंधोपासनदीक्षामेरोराम्जुनागर्नुइत्यादिकुरालेगारिआमुभुद्रिगारिकर्मगर्नु
 ॥१४॥वढीयागुरुकामुखदेविजस्ताकोतस्तोगारिजानुजोछुमंत्रकोभुद्रिकहिंछु॥कर्मगारिमईश्वरलाईअर्पणागर्नुजोछु
 कर्मभुद्रिकहिंछु॥देशकालद्रव्यकर्तामंत्रकर्मईछुकुराभुद्रभैगन्धाकाकर्मलधर्महंछु॥ईश्वरकुराअभुद्रभयाअधर्महंछु

॥ भा. स. ॥
॥ १०८ ॥

योगरादोषकोविभागगर्नुजोछ ॥ ससैहोभनिसक्रुछैनभनिकहंछन ॥ प्रातिग्रहलिनुजोछ आपत्तिकालमागुराछतापनिधि
दुहनाले ॥ आपत्तिनभयाकाकालमादोषछ ॥ पराईकोधर्मजोछ पराईलाइगुराछतापनिआफुलाईदोषछविरक्तिन
भयाकालेपरिवारकोत्यागगर्नुदोषछ तापनि विरक्तभयाकालाईविरक्तलेसंग्रहनगर्नुभन्नाविधिहुनालेदोषे
छ ॥ ससैप्रकारकोसकैवसुमा ॥ गुराकोरदोषकोनियमगर्नुशास्त्रजोछ ॥ जस्मागुरादोषवतानिछननकोभेदछे

कविदुगोपिदोषः स्यादोषोपिविधिनागुरा ॥ गुरादोषार्थनियमसुद्धिरामेववाधत ॥ १६ ॥ समानकर्माचरणां
पतितानानपातकम् ॥ औत्पत्तिकोगुराः संगोनसयानः पतत्यधः ॥ १७ ॥ पतोयतोनिवर्ततविमुच्येतततस्ततः ॥
सषधर्मोन्तराक्षेमः शोकमोहभयापहः ॥ १८ ॥ एवं व्यवसितं केचिदविज्ञाय बुद्धयः ॥ फलश्रुतिंकुसुमितांन

नभनिदेवाउंछ ॥ १६ ॥ सुरापानादिकर्मजोछ पतितनभयाकालाईपतितगर्नुहंछ ॥ तापनिपतितलाइगुरोछ सं
न्यासिलाईस्त्रीहेरुकोसंगगर्नुदोषछ ॥ तापनिगृहस्थिआगिहेरुलाईगुरोछ ॥ उधोसुत्याकोलोदतैन जसैतसैजा
नुभनिकहंछन ॥ १७ ॥ गुरादोषकोनियमगर्नुविधिशास्त्रले प्रवृत्तिमाचिन्ननफैलाउनुभनिप्रकृतिमार्गकास
कोवगरि ॥ निवृत्तिमार्गमाचिन्नलगाउभन्नातात्पर्यगर्नुभनिकहंछन हेउद्धवजौनकरादेपिचिन्ननिवृत्तिहुछताहाना
हादेषिमुक्तहुछ ॥ ससोयोधर्मजोछ ॥ मनुष्यकाशोकमोहभयकोनाशगरिकल्पारागगर्नुहंछ ॥ १८ ॥ १८ ॥

॥ राम ॥
॥ १०८ ॥

हेउद्धवः सलोवेदकोतात्पर्यार्थकननजान्याकुबुद्धिभयाका मीमांसकहेरुजोछन् सुन्दामामात्रामोलागन्याभया
की वेदवाणिकनः कर्मरूपफलवताउद्धेभंछन् ॥ वेदकनजान्याव्यास आदिगन्याकात्राधिहेरुत निवृत्तिमार्गमातात्पर्य
हवेदकोभनिकहंछन् ॥ २८ ॥ कस्तोतिकुबुद्धिभयाकाभन्या विषयभोगकोइछाठेरैभया कृपराभयाका लोभिवडाभ
याका ॥ फ्रमाफलकोबुद्धिभयाका कस्तोभन्यानिवृत्तिमार्गमालाग्नन्भनिकर्मगर्तुभन्या वेदकनप्रवृत्तिमार्गमातात्प
र्यह वेदकोभन्या अग्निकोहेमगरिसिद्धहन् ॥ कर्मविषेआग्रहहुनाले हीनभयाका ॥ धूममार्गमासमाप्तिभयाका ॥

वेदज्ञावदंतिहि ॥ २८ ॥ कामिनः कृपरागलुधाः पुष्पेषुफलवुद्धयः ॥ अग्निमुग्धाधूमतान्ताः खल्लोक
नविदंतिते ॥ ३० ॥ नतेमांमङ्ग जानन्तिहृदिस्थयइदंयत ॥ उवथशस्त्राह्यसुनृपोयथानीहारवक्षु
ष ॥ २९ ॥ तेमेमतमविज्ञायपरोक्ष्यविषयात्मका ॥ हिंसायांयंदिरागः स्याद्यज्ञेसवनचोदना ॥ २९ ॥

स्ताकुबुद्धिजोछन् आत्मतत्वकनजादैन ॥ ३० ॥ हेउद्धवः हृदयविषेवस्याकापनि मैकनजान्दैनन् ॥ अहंकारसमाहुं
छ उस्तामताईकिनजान्दैनन्जान्दछन्भन्यासुन ॥ योजगातजोनस्वरूपछजौसुदेपिउत्पन्नभैरहेछ जसुदेपिभिन्नछ
न उस्तापरमात्माकनजान्दैनन् जस्कारणकर्मदेपिदेपिदोषहैन ॥ ज्पाछकर्मैछभन्यन् ॥ अथवाकर्महिसंगदि
षेरउपायजस्का ॥ एस्कारणआक्रात्राणिताई तन्निगराउन्याभयाका सस्तात्राणिहेरुजोछन् ॥ जसैअंधकारलेआ

॥ भा. स. ॥
॥ १०८ ॥

खाकाकियाकाप्राणिहेरुजोछन् नजीकमारखाकावस्तुकनपनिदेष्टेननतसेमलाईजानैनन् ॥ २८ ॥ सप्तातिप्राणिजोछन्
बुद्धिभिनसक्रु मेरोमतकननजानि विषयमाचित्रकनलगाउन्माभयाकाछंदा ॥ हिंसाभाप्रोतिभयाकोभन्यायजमागने
भंछन् ॥ परंतुयत्तमापशुकाटनुभन्नाविधिकेहिछैन ॥ २९ ॥ हिंसामाविहारभयाका आक्रामासुखानाकासुखकाइछा
लेगरि यत्तमाकायाकापशूले मूर्खहेरुजोछम् ॥ पितृ भूतभूतपनिदेवताकोपूजागर्ह ॥ ३० ॥ छोटीबुद्धिभयाकोपनि

हिंसाविहाराखालधैः पशुभिः स्वसुखेच्छया ॥ यजंते देवतायज्ञैः पितृः भूतपतीन्वताः ॥ ३० ॥ स्वप्ने
पममसुलोकमसतंश्रवणाप्रियम् ॥ आशिखोहृदिसंकल्पेत्पजत्यर्थान्यथावशिक ॥ ३१ ॥
रजःसत्त्वतमोनिष्ठारजःसत्त्वतमोनुषः ॥ उपासत इन्द्रमुखादेवादीन्तथैवसाम् ॥ ३२ ॥

तिप्राणिजोछन्भनिकहन्छन् ॥ सुन्दिषेरमात्रासोमुनियाको सपनारुत्रिरुटोभयाको ॥ परलोककोसंकल्पगरि सस्
लोकमाआपुछेउकोधर्मकनचर्चगरि यत्तगर्नाप्राणिहेरुजोछन् ॥ जसैवनित्राजोछ नाधिनसक्रुसमुद्रनाधिक
नछैरैधनकमाउन्माकाइछाले घरकाधनकनछोइन्मा उतापनिपाउदैन् ॥ घरपनिरित्तोभैनाशिंछ तसैनाशिंछ ॥
३१ ॥ रजोगुणितमागुणिसत्त्वगुणिजोछन् रजःतम सत्त्वस्वभावभयाका इन्द्रादिदेवताहेरुकोउपासनागर्दछन्
हेउद्धवमेरोउपासनागर्दैन् ॥ इन्द्रादिदेवतापवितपात्रिकैभंशहुन्भन्याकिनतपात्रिकोउपासनाहुदैन्भन्यापनि

॥ राम ॥
॥ १०८ ॥

हुनत यो कुरा ससै हो ॥ ते पनि जसो तसो उपासना मेरो हुंदैन मेरा बुद्धि हुना का भयाले ॥ ३२ ॥ कसो आशा गर्छु न भ-
न्या ॥ ससलोक मायज्ञ गरि देवता को पूजा गरि स्वर्ग माजा उलार ॥ अपरा हेरु संग नाना विहार भोग गरौला ॥ भोग को अत्रा
मा फेरि महाकुल माज नमलि ॥ ससलोक मा गृह स्थि हुंला भनि ॥ ३३ ॥ ससो दुराशा गर्नाले चित्त चल भयाका ॥ अभि-
मान हुलो भयाका ॥ ठाडो खभाव भयाका ॥ ससो प्राणि हेरुला ई मेरो वात्ता पनि ॥ निको लागेन ॥ ३४ ॥ भनि ससै प्रका-
र सित ॥ प्रवृत्ति मार्ग को खरा न गरि ॥ वेद ले निवृत्ति मार्ग कहन्छु भनि भन्छु ॥ हेउ द्रव ॥ कर्म कारु ज्ञान कारा ॥ उपा

इहे देवता यज्ञै गत्वार स्याम हे दिवि ॥ तस्या त इह भूया सम महाशाला महाकुला ॥ ३३ ॥ एवं पुषित यावा वा-
व्याक्षिप्त मनसानुरागम् ॥ मानिनां वानि स्रक्षानां मद्यान्तापि न रोचते ॥ ३४ ॥ वेदा ब्रह्मात्मविषयास्तिका-
रा विषया इमे ॥ परोक्षवादाः ऋषयः परोक्षममच प्रियम् ॥ ३५ ॥ शब्द ब्रह्म सुदुर्बोधं प्रारोन्द्रियमनो

सना कारा इति नैकारा कावेद जो छुन ॥ आत्मा जो छु ॥ ब्रह्मै हो संसारी होई न भन्या ॥ ससो तात्पर्य अर्थ भयाका छु-
न ॥ ऋषि हेरु भया ॥ मंत्र हेरु भया ॥ परोक्ष मंत्र ब्रह्म कन भन्छु ॥ मन माता तत्पर्य अर्थ अर्को छु ॥ अर्कै अर्थ ले कहनु
जो छु ॥ परोक्षवाद कहि छु ॥ परोक्षवाद जो छु ॥ मेरा पियारो पनि छु ॥ ३५ ॥ वेद न जान्ना जे निमि आदि ग्याका ऋषि हे-
रु जो छु ॥ किन ति मि हेरु ले अर्थ ग्या रुत्रि वेद को अर्थ गर्दै न भनौला ॥ मेरो रुत्रि वेद को अर्थ को हि जानै न-
भनि कहन्छु ॥ हेउ द्रव ॥ शब्द रूपि ब्रह्मा जो छु ॥ सोख रूप ले पनि अर्थ ले जानि न सकुछ ॥ जानि न सकु पनि शब्द ब्र-

॥ भा.स. ॥
॥ ११० ॥

सजोछ। इलो रसानु इडईले गरिड ईप्रकारकोछ॥ तस्मात्सानुजोछ॥ स्वरूपपनिजानिनसकुछ भनिकहन्छन्॥ हेउद्धव
प्राण इन्द्रिय मन स्वरूपछ॥ तेस्मापहिले प्राणस्वरूप भयाको परानाउगयाकोशब्दब्रह्मछ॥ ताहोपछि दोस्रो मनस्वरूप
भयाको पश्यंतिनाउगयाकोशब्दब्रह्मछ॥ ताहोपछि तेस्रो इन्द्रियस्वरूप भयाको मध्यमानाउगयाकोशब्दब्रह्मजोछ
इतिनैकोस्वरूपजोछ॥ ससैहो भनिजानिसकुछैन॥ अर्थलेपनिजानिनसकु भनिकहन्छन्॥ हेउद्धव शब्दजोछ अथप
निजानिनसकुछ॥ जौनशब्दब्रह्माका अर्थमा मनपनि प्रवेशहुदै न पारगरिपनिदेशकाललेजस्कोसकुछैन समु

मयम्॥ अनन्तपारगभीरं दुर्विगाहं समुद्रवत्॥ ३८॥ मयोपवंहितं भस्मावस्थानान्नशक्तिना भूतेषु नादरू
पेण विशेषं रौप्यं विलक्ष्यते॥ ३९॥ यथोक्तानाभिहृदया हृद्गामूर्ध्वमते सुखात्॥ आकाशाद्योषवां प्राणो मनसा
श्च स्वरूपिणा॥ ४०॥

॥ चरुत्रिछपरा पश्यंति मध्यमा इति न कन योगी हेरु अंतर्दृष्टिले गरिजान्दछन् अरुजान्दैन
न॥ मनुष्य हेरु भयाजस्मा अक्षर सुनीछं ससोचौथो वैखरी स्वरूप कन बोल्दछं परंतु अर्थ कन तजान्दैन॥ ४१॥ अस्
जान्त्राजोगी हेरु अंतर्दृष्टिले जानियाका अतिसाना शब्दब्रह्मका स्वरूप कन कहिन्छं॥ हेउद्धव सुनन्त शक्ति भयाका ब्रह्म
रूप व्यापक भयाका अर्त्तर्यामि मैले अधिष्ठा भैरहियाको॥ ससो शब्द ब्रह्मजोछ सो कमलकातासानु तंतुरुत्रिगरि॥ सवै
प्राणि हेरु विषेनाद रूपले गरियो गी हेरु ले जानिन्छ॥ ४२॥ अबउ प्रात वैखरीनाउगयाका शब्दले गरि वडो इलो शब्द भ

॥ राम ॥
॥ ११० ॥

भाकावाशिाकोउत्पत्तिप्रकारकनकहंछन हेउद्धवसुनजसैमाकरोजोछ आकाहृदयदेविउठाई मुखधारलेगरिउरांतंतु
कनउगेतछ॥३८॥तसैप्राणिउपाधिभयाको हिरण्यगर्भरूपलेगरिवेदमूर्तिभयाको॥आफैभन्याअमृतस्वरूपभयाकोना
दजोछउपादानकारणभयाको भगवान्प्रभुजोछ॥कआदिभयाकामसम्मकाअक्षरजोछन स्पर्शकहिंछ॥तनैस्पर्शस्व
रूपीमनकनकारणगरिहृदयआकाशविषेरह्याका॥ॐकारदेविउठाईउरमा कराठआदिगन्याकास्थलमालायातेप्रक
टभयाका कदपिसम्मकास्पर्शभया स्वरअक्षरभया उष्माअक्षरभया अंतस्थअक्षरभया सन्निअक्षरलेशोभितभया

छन्दोमयोमृतमयः सहस्रपदं वीप्रभु॥ॐकाराद्यं जितस्पर्शसरोष्णातस्य भूषिताम्॥३९॥विविन्नभाषावितनांछ
न्दोभिश्चतुरुत्तरैः॥अनन्तपारावहतीं सृजत्याक्षिपते स्वयम्॥४०॥गायत्री उद्दिग्ध अनुष्टुप् बृहती पङ्क्तिरेव च॥त्रिष्टुप्
जगत्पतिछन्दो ह्यत्यथातिजगद्धिराद्॥४१॥किंविधन्ते किमाचष्टे किमनूय विकल्पयेत्॥इत्यस्याहृदयं लोके नान्यो

की॥३९॥छैरैमार्गभयाकीनानाप्रकारकावैदिक लौकिकवाशिाहेरुलेविस्तारभयाकी॥पहिलेकाछन्ददेविछोकाछन्दहेरुमा
चारअक्षरअर्घ्यालाभयाका॥४०॥गायत्री उद्दिग्ध अनुष्टुप् बृहती त्रिष्टुप् जगती इत्यादिगन्याकाछन्दहेरुले॥युक्तभ
याकी अनन्तपारभयाकी सस्त्रीबृहतीभन्याकी वडीवैखरीवाशिाकनमृष्टिगर्दछ आफैमहारकनपनिगर्दछ॥४१॥हे
उद्धव योवैषरीवाशिाजोछकर्मकाराविषे विधिवाक्यले कौन् अर्थकनविधानगर्द देवताकाराविषे मंत्रवाक्यले कौन्
अर्थकनप्रकाशगर्द॥ज्ञानकाराविषे कौन् अर्थकनलिकन॥निषेधकानिमित्तभेदकनगर्द भनि ससैहोभन्यावैखरी
वेदवाशिाकातात्पर्य॥अर्थकन मदेविदोस्त्रोकेहिजानैन॥४२॥उसोभन्यामेराउपरकरुणागरिजानुहन्नभन्याआ

॥ भा.स. ॥
॥ १११ ॥

ज्ञागरभन्या॥ श्रीकृष्णभगवान्जोछन् सुतभनिआज्ञागर्हन्॥ हेउद्धव॥ कर्मकारा॥ यत्तरूपमकनकहन्॥ देवताका-
रा॥ मा॥ इन्द्रआदिगन्याकादेवतास्वरूपभयाकामलाई भंछ॥ आकाशआदिभयाकोजोकोहिप्रपंचजगत्तछ॥ भगवान्
देखिउत्पन्नभयाकोहोभनि॥ प्रपंचकनदेखाई॥ फेरिप्रपंचजगत्कन॥ भगवत्स्वरूपैहोभंछ॥ तत्कारणसवैमैहं॥ सदे-
षिभिन्नकेहिछैनसवैवेदकोअर्थरसैहो॥ हेउद्धव॥ वेदजोछ॥ परमार्थवस्तुमंकनआश्रयगरियोनानाभेदकनमायामात्र
होभनि॥ मोहनानामिकिंचनइत्यादिगन्याकावेदलेप्रपंचनिषेधगरि॥ आफुवेदजोछ॥ चुपलागिरहेछभनिकृष्णलेउद्धव॥

मांविधत्तेविधत्तेमांविक्लृपायो ह्यहम्॥ एतावान्सहवेदार्थः शब्द आस्थाय मां भिदाम्॥ ४३॥ मायामात्रमरूपात्ते
प्रतिषिध्य प्रसीदति॥ ४४॥ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे स्कन्धे भगवदुद्धवसंवादे एकविंशोऽध्यायः ॥
॥ २१॥ श्रीउद्धवउवाच॥ कति तत्त्वानि विश्वेश संख्यातान् नृषिभिः प्रभो॥ न वै कादशपंचत्रीणां त्वत्त्वमिह शुभ्रमः ॥

कनवताउदाभया॥ सोहिकथाकनश्रुकदेवजोछन् राजापरीछित्कनवताउदाभया॥ सोहिसूतले शौनक आदिगन्या-
कात्राषिहेरुकनवताउदाभया॥ ४३॥ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे स्कन्धे भाषाटीकायां विंशोऽध्यायः ॥ २१॥
जाहासम्पकोग्रंथलेवेदकोतात्पर्यजोछ॥ प्रवृष्टिमार्गमाछैन॥ निवृत्तिमार्गमोक्षमातात्पर्यछभनिनिश्चयगन्या मोक्षमा-
तात्पर्यको॥ निश्चयगन्यामापनिरुगराछभनिदेखाईकन॥ कोन्साचोहोकोन्सुदोभनिउद्धवजोछन् विंतिगर्नलाग्पाहेप्र-
भो॥ हेकृष्णत्राषिहेरुलेकति तत्त्वछन्॥ कोहिभंछन्॥ तपात्रिलेभन्याअष्टादशतत्त्वछभनिआज्ञागर्नुहंछ ॥ १ ॥

॥ राम ॥
॥ १११ ॥

हामिलेसुसुं कोहिभन्नाछविसतत्वछन्भंछन्॥ कोहिपचिसतत्वछन्भंछन्॥ कोहिभंछन्साततत्वछन्कोहिभंछन्
नौतत्वछन्॥ कोहिभंछन्छवनत्वछन् कोहिभंछन्॥ कोहिभंछन्सघारतत्वछन्॥ २॥ कोहिभंछन्सत्रतत्वछन्को
हिभंछन्सोफतत्वछन् कोहिभंछन्तेहतत्वछन् कोहिभंछन्वौहतत्वछन् कोहिभंछन् तत्वकोनानासंख्याकनत्र
धिहेरुजोछन्जोन्प्रयोजनलेछन्॥ हेरुह्म त्योकरासवैहामिताई आज्ञागरभनिविंतिगयाउछवलेर॥ ३॥ भगवा
न् श्रीकृष्णजोछन् आज्ञागर्नलागा॥ हेउछवसुन मेरीमायालिकनकौनकरोहोईसत्तैनसवैकरोहंछ अंतर्भाव

केचित्पडिंशतिंष्ट्रादुरपरपंचविंशतिम्॥ सप्तैकेनवषट्केचित्त्वार्येकादशापरे॥ २॥ केचित्सप्तद
शष्टादुःषोडशैकेत्रयोदशः सतावत्त्वहिसंख्यानमृषयोयद्विवक्षया॥ गायंतिपृथगायुष्मन्निदंनोव
कुमहंसि॥ ३॥ श्रीभगवानुवाच॥ युक्तंचसंतिसर्वत्रभाषन्नेवास्मराणायथा॥ मायांमदीयामुक्त्वावद
ताकिन्नुदुर्घटम्॥ ४॥ नैतदैवयथात्थत्वंयदहंवष्मिन्नतथा॥ एवंविवदतांहेतुंशक्तयोमेदुरत्यया॥ ५॥

जोछजहाताहाताहातत्वहेरुकोहंछ॥ तस्कारणावास्तराहेरुजसोकहंछन् त्योकरायोगेछ॥ ४॥ सवैकरायोगेछभ
न्याकिनरुगराहंछ॥ तत्वकोघटिवटिसख्याजोछमायालेहंछभन्या कौनकारणालेतत्वहेरुकनठेरैकोहिभंछन्॥
कोहिथोरैभंछन्भनिकारणाउपर॥ रुगराकिनहंछभनौलातसुन॥ हेउछवतिमिजसोभंछोत्योकराहोईन॥ मजो
नकरोभंछु त्योकरोहोभनि ससैरुगराकोनिमित्रगर्नाग्राणिहेरुकानाघीनसकित्याभयाका मेरासत्वरजआदि
गयाका अंतकराभन्याका मनकाहृत्तिविशेषरूपलेपरिनामकनभयाकाशक्तिहेरुछन्॥ ५॥ जोन्सत्वादिगयाका

॥ भा. स. ॥
॥ ११२ ॥

मेराशक्तिहेरुकोक्षोभहनालेगरि॥ विवादगर्माहेरुकोविषयभयाकोभेदेजोछहदोभयो॥ शमदमभयाविषेत्पोभेदजो
छहराउंछ॥ भेदहरायाप्रान्त॥ गरापनिहंराउछ॥ ६॥ हेउछवउस्तत्वलेप्रवेशगर्नु॥ उस्माउश्नेप्रवेशगर्नु॥ ससैतत्वहे
रुकोप्रवेशहनाले॥ वोल्न्यामानिसकाइछालेगरि॥ तत्वहेरुविषे॥ पहिलेकोतत्वजोछ॥ कारणाकहिंछ॥ पछिभया
कोतत्वजोछकार्यहंछ॥ ससैप्रकारसितकार्यकारणाभावलेसंख्याहंछ॥ अथवापहिलेकोतत्वहेरुथोरै॥ पछिभ
याकातत्वहेरुछै॥ ससैप्रकारलेतत्वकोगरानाहंछ॥ ७॥ तत्वहेरुकोउस्माउस्कोप्रवेशकनदेखाउछन्॥ पहिले

यासां व्यतिकरादासीद्विकल्पोवदतां पदम्॥ आश्लेशमदमेप्येतिवादस्तदनुशाम्यति॥ ८॥ परस्परानुप्रवे
शान्नत्वानां पुरुषर्षभ॥ पौर्वापर्यप्रसंख्यानं यथावक्तुं विवक्षितम्॥ ९॥ एकमिस्मिन्नपिदृश्यतेप्रविश्यानी
तराणिच॥ पूर्वस्मिन्वापरस्मिन्नातन्वेतत्त्वानिसर्वशः॥ १०॥ पौर्वापर्यमतोमीषाप्रसंख्यानमभीप्सतांम्
यथाविविक्तं यद्वक्तुं गृहीमोयुक्तिसंभवात्॥ ११॥ अनाद्यविशायुक्तस्त्रापुरुषस्यात्मवेदनम्॥ स्वतो न संभ

काकारणास्वरूपभयाकातत्वविषे॥ उसैदेपिभयाकाकार्यतत्वहेरुजोछन्॥ मृत्त्रिकास्वरूपकारणाविषे॥ घटरूप
कार्यलेप्रवेशगर्नुअनि॥ भूक्ष्मरूपलेगरिप्रवेशगर्दछन्॥ कार्यतत्वविषेकारणातत्वहेरुजोछन्॥ घटकार्य
विषेमृत्त्रिकास्वरूपकारणलेप्रवेशगर्नुअनिप्रवेशगर्दछन्॥ ससैरीतिलेतत्वहेरुजोछन्॥ आकुआकुप्रवेश
गर्दछन्॥ १२॥ सस्कारणाहेउछवईतत्वहेरुकोकार्यकारणरूपवर्णनगर्नु॥ घटिवटिगरानागर्नुजोछ॥ वोल्न्या
वादिहेरुकावीचविषेजश्लेजसोवोल्नाकोइछागरिवोल्ना॥ त्योसवैयुक्तिलेगरिवोल्नाकोहो॥ निश्चयगरिहामिति

॥ राम ॥
॥ ११२ ॥

कार्यतत्त्व कारणातत्त्वको भिन्न अभिन्नको इहा गरिवो लनाले तत्त्व भा संख्या का भेद हुनु योग्य छ ॥ जीवर ईश्वर का भिन्न
भनिवो लन कसो गरि हुन्छ ॥ उसो भन्या छु वी सतत्त्व भन्या पक्षि प्रवृत्त होला भन्या सुन ॥ १० ॥ हे उद्धव ॥ अनादि अविद्या
ले युक्त भया का ॥ पुरुष का आत्म विषे एक ज्ञान जो छ ॥ आफै हुंदैन ॥ अर्काले गरि भन्या हुन्छ ॥ संस्कारा आफै तत्त्व क
न ज्ञान्या सर्वज्ञ भया को ज्ञान कन दिन्या ईश्वर जो छ ॥ जीव देखि भिन्न हुनु योग्य छ ॥ भन्या एस अभिप्राय ले छु वी सत

वा ॥ दम्पसत्त्व जो ज्ञान दो भवेत् ॥ १० ॥ पुरुष स्वर योर त्र न वै लक्ष्मण प म रा व पि ॥ तदव्य कल्प ना पार्था
ज्ञानं च प्रकृते गुणाः ॥ ११ ॥ प्रकृति गुणा सा म्यं वै प्रकृतेर्नात्मनो गुणाः ॥ सत्त्वं रजस्तम इति स्थित्युत्प
त्य तद्देतव ॥ १२ ॥ सत्त्वं ज्ञानं रजः कर्म तमो ज्ञान मि होच्यते ॥ ॥ ७ ॥

त्व छ न पची सतत्त्व छ न भन्या पक्ष जो छ ॥ कसो गरि हुन्छ भन्या सुन ॥ चिदंश स कै हुनाले पुरुष को र ईश्वर को भेद
जो छ ॥ थोरै पनिकल्प ना गर्तु जो छ व्यर्थ छ ॥ जीव ईश्वर जो छ न स कै छ न ॥ संस्कारा पची सतत्त्व छ न भन्या को अ
भिप्राय वुरु ॥ जीवर ईश्वर को भेद छैन त पनि ॥ ईश्वर का प्रसाद ले भित्ता का ज्ञान को भेद हुनाले ॥ इड ई पक्ष को घ
टना हुंदैन भनौ लात ॥ ज्ञान जो छ प्रकृति को गुणा हो ॥ उसो भन्या सत्त्व गुणा प्रवृत्ति हुनाले सत्त्व गुणा मा अन्न भव हु
नाले ॥ ज्ञान जो छ भिन्न न जानु ॥ ज्ञान जो छ जीव को धर्म हो ॥ कसो गरि प्रकृति को गुणा हो भनौ त सुन ॥ ११ ॥ ११ ॥

॥ भा. स. ॥
॥ ११३ ॥

गुणसाम्यजोह्। प्रकृतिकहिंछ। तस्कारणा। प्रकृतिविशेषस्वरूपभयाका। गुणहेरुजोह् न प्रकृतिकाहुन्। आ-
त्माकाकर्तृत्वधर्मनहुनाले। सृष्टिस्थितिप्रलयकाकारणा। गुणाको आधारनहुनाले। आत्माको होई नन्। १२॥ स-
त्वजोह्। सत्वरूपज्ञानहो प्रकृतिको गुणा होरुजो गुणाले हुन्या कर्मपनि। रजो गुणमा अन्नभावहुन्छ। तमो गुणा-
को। काम अज्ञानपनि। तमो गुणमा अन्नभावहुन्छ। तसर्थ भिन्नतत्त्वनजान्नु। इसैको प्रकृतिमा। अन्नभावहुन्छ।
कालर। स्वभाव। जोह् न। अधिकतत्त्वभया भनौलात सुन। कालभन्याको ईश्वरहो। स्वभावभन्याको महत्तत्त्वहो। त-

गुणाव्यतिकरः कालस्वभावः सूत्रमेव च॥ १४॥ पुरुषः प्रकृतिर्व्यक्तमहकारो न भोनिल॥ ज्योतिरावक्षतिरि-
तितत्त्वान्युक्तानिवेन च॥ १५॥ श्रोत्रत्वक्दर्शनं घ्राणाजिह्वेति ज्ञानशक्तयः॥ वाक्पारापुपस्थपायश्चिकर्माण-
गोभयं मन॥ १६॥ शब्दस्पर्शारसोगंधोरूपचेत्यथं जातयः गत्युत्पत्तिसर्गशिल्पानिकर्मा यतनसिद्धयः॥ १७॥

स अर्थः अधिकतत्त्वनजान्॥ १४॥ पुरुषमयाः प्रकृतिभया। महत्तत्त्वभया। अहंकारभया। पृथिवीभया। अपभया। वा-
युभया। आकाशभया। रूपभया। रसभया। गंधभया। स्पर्शभया। शब्दइति विषयभया। श्रोत्रभया। त्वक्भया। चक्षु-
भया। घ्राणभया। जिह्वाभया। ई पांचज्ञानेन्द्रियभया। वाक्। पाणि। उपस्थ। पायु। पाद। इ पांच कर्मेन्द्रियभया। दुवै इन्द्रि-
यस्वरूपभयाको मनभयो॥ १६॥ गति। वोलनु। विद्यादिको त्यागगर्न। कामगर्नु। सति कर्मेन्द्रियका फलहुन्। तस अ-

थं इलाई अधिक भया भनितत्त्व मानगन्नु॥ १७॥

॥ राम ॥
॥ ११३ ॥

समाप्रकारले अहाईस २८ वीस २६ पचिस २५ तत्त्व छन् भन्ना इति नै मत विधे तत्त्व सख्या का भेद कनतायार अवत्राषि
हेरुजौ नकार गाले भेद छन् ॥ जौ न कुरो उद्भव ले सो ध्या त्पो कुरो उत्तर गरित त्वमा मत का भेद कन वता उदं छन् ॥ स घा ५॥
११ इन्द्रिय पाच परसादि विषय मिलिकन ॥ सो १६ ईविकार कार्य भया पंच महाभूत महत्त्वः अहंकार ७ ईका
रणा भया इनैर्यरकारणा स्वरूप भया की प्रकृति जो छयो विश्व संसार का सृष्टिका आदि विषे सत्वादिगन्या का गुणाले
गरि ॥ सृष्टि गरि भाव लुका स्वरूप की अवस्था कनधारणा गर्छे ॥ परिनाम नहुन्ना निमित्त कारणा भया की पुरुष जो छ-

सर्गादौ प्रकृति र्द्वयस्य कार्यकारणरूपिणि ॥ सत्त्वादिभिर्गुणैर्धने पुरुषा व्यक्त ईक्ष्यते ॥ १८ ॥ व्यक्ताद
यो विकर्त्तारो धातवः पुरुषः क्षया ॥ लब्धवीर्याः सृजन्त्यगं संहता प्रकृतेर्वलात् ॥ १९ ॥ सप्तैव धा
तव इति तत्रार्थाः पंचरवादयः ॥ ज्ञानमात्पो भयाधारस्ततो देहेन्द्रियासवः ॥ २० ॥

हेरि रहन् ॥ तस्कारणा रू
पात्तर कन नहुन्ना पुरुष जो छ ॥ रूपान्तर हुन्ना प्रकृति देषि मित्र छ ॥ १८ ॥ तत्त्व ले वन्या का कार्य को तत्त्वै मा अन्तर्भाव हुंछ
भन्ना आश्रय ले भेद छन् ॥ हे उद्भव पुरुष ले हेरि दिना ले सामर्थ्य ले युक्त भया का रूपान्तर कन पाउंदा आ पु प्रकृति देषि उ
त्पन्न भया का ॥ महत्त्व अहंकार हेरुजो छन् मिलिकन प्रकृतिको आधार गरि कार्य कन वता उदं छन् ॥ १९ ॥ ए सौ आ पु
मत कन भन्ना र ॥ अरू का मत विधे पनि सामान्य रूप ले वता या का तत्त्व का घटना कन ॥ विमेष ले गरिता त्पर्य को वर्णा
न गरि देषा उदं छन् ॥ हे उद्भव प्रकृति महत्त्व अहंकार जो छन् ॥ काण रूप ल गरि पृथिवी आदि गन्या का पाच तत्त्व मा अ

॥ भा.स. ॥
॥ ११४ ॥

त्रर्भावहृदन् ॥ जीवश्चर ५ महाभूत ७ भया ॥ इनैसात तत्त्वदेवि भयाकादेह ॥ इन्द्रियप्राणि हेरुजोछन् ॥ कार्यरूपलेगरि कार
रणाविषेअन्नर्भावहृदन् ॥ तस्कारणातत्त्वजोछन् ७ छन् ॥ २० ॥ दतत्त्वछन् भन्यापक्षकोपनितात्पर्यवर्णान्गछन् ॥ पंच
महाभूतविषेमहाभूतदेविभयाकातत्त्वकोअन्नर्भावहृदन् ॥ तस्कारणा ५ महाभूतभया ॥ जीवकोईश्वरमाअन्नर्भावहृ
नालेईश्वरसकैहृद ॥ सस्माप्रकारलेछवतत्त्वहृदन् ॥ हेउछव ॥ ईश्वरजोछआफुदेविभया ५ तत्त्वलेयुक्तभैयोजगत
संसारकोसृष्टिगरिसंज्ञगतमाप्रवेशगछ ॥ २१ ॥ ४ तत्त्वछन् भन्यापक्षकोपनितात्पर्यसुन ॥ हेउछवआत्मादेवि

षडित्यत्रापिभूतानिपंचषष्टः परः पुमान् ॥ तैयुक्तआत्मसंभूतैस्तृष्टेदसमुपाविशत् ॥ २१ ॥ चत्वा
र्येवेतितत्रापितेजआयोन्नमात्मन ॥ जानानितैरितेजातजन्मावयविनः खलु ॥ २२ ॥ संख्याने
सप्तदशकेभूतमात्रैः न्द्रयाशिवा ॥ पंचेपंचैकमनसा आत्मासप्तदशस्मृतः ॥ २३ ॥

उत्पन्नभयाका ॥ पृथिवी ॥ अप ॥ तेज ॥ आत्मासमेत ॥ चारतत्त्वछन् ॥ इनैचारतत्त्वलेगरि ॥ कार्यकोरसाउत्पत्तिहृ
द ॥ २२ ॥ तत्त्वछन् ॥ भन्यापक्षकोतात्पर्यसुन ॥ हेउछव ५ महाभूतभया ५ रूपरसादिविषयभया ॥ मनस
मेत ५ इन्द्रियभया ॥ आत्माभयो ॥ सस्माप्रकारले ७ तत्त्वहृदन् ॥ २३ ॥ हेउछव ॥ संकल्पगर्भाआत्माकोमन ॥ तत्त्व
माअन्नर्भावहृद ॥ सस्माकारणाले ७ तत्त्वहृदन् ॥ भन्याकोतात्पर्यजानुपांचविषयकोपंचमहाभूतमाअन्नर्भाव
गरि ॥ पंचमहाभूतभयापंचइन्द्रियकोअन्नर्भावगरि ॥ पंचइन्द्रियभया ॥ मनभयो ॥ इन्द्रियकोअधिष्ठाताभयो ॥ आ

॥ राम ॥
॥ ११४ ॥

आभयोः ससैरितिले त्रयोदशतत्त्वहंछन् भनिजान ॥२४॥ पंचमहाभूतमा इन्द्रियभया मिलिकन दश १० भया ॥ जीवकोर-
मनको आत्मा मा अन्नभावगारि एक आत्मा भयो ॥ ससैरितिले सकादशतत्त्वहंछन् भन्या पक्षहंछ सवैविकारको अंतर्भा-
वजोछ ॥ अष्टप्रकृतिमा गरि पृथिवी अप्तेज वायु आकाश ई पांचभया ॥ महत्तत्त्व अहंकार प्रकृति इतीनभया पु-
रुषभयोः ससै नौतत्त्वहंछन् ॥२५॥ अवशुकदेवजोछन् ससै कुराकन राजा परीक्षितकन आज्ञा गर्छन् ॥ हे महाराज
परीक्षीत् त्रिपिहैरुलेगयाका नाना प्रकारका तत्त्वको भेदका वर्णान्कन कृष्णले उद्भवसंगगयाको हुनाले सवै न्या

तत्त्वः षोडश संख्याने आत्मैव मन उच्यते ॥ भूतेन्द्रियाणि यंचैव मन आत्मा त्रयोदश ॥२४॥ सकादश
त्वमात्मा सौ महाभूतेन्द्रियाणि च ॥ अष्टप्रकृतयश्चैव पुरुषश्च न वेत्यथ ॥२५॥ श्रीशुक उवाच ॥ इति
नाना प्रख्यातं तत्त्वानां सृष्टिभिः कृतम् ॥ सर्वं न्यायं युक्तिमत्वाद्दिदृषा किमशोभनम् ॥२६॥ उद्भव
उवाच ॥ प्रकृतिः पुरुषश्चोभौ यद्यप्यात्मविलक्षणौ ॥ अन्योन्यापाश्रयात्कृष्णदृश्यते न भिदातयो ॥

यथा म्रवातछ अन्त्यायछैन जान्या पंडीत हेरुलाई घरियान गरिसक्नु कुराके हिछैन सवैवछीयैहंछ ॥ अवउवाच उद्भव
जोछन् भगवान् कृष्णकन आत्मा मनमा भयाका संदेहकन विंतिगर्नलाग्या ॥२६॥ हे भगवान् हे कृष्ण प्रकृतिरपु-
रुमाजड स्वभावभयाकी प्रकृतिछ ॥ चैतन्य स्वभावभावयाको पुरुषछ ससै भिन्न स्वभावहुनाले भिन्नछन्तप-
नि भिन्नछन्तपनि भिन्नैरस्याकान् देषनाले तेष्टा प्रकृति पुरुषको भेदजोछ देषिन्दैन ॥३॥ हे कृष्ण आत्मा जोछ प्र-
कृतिको कार्यदेह विषे देषिछ ॥ प्रकृति जोछ आत्मा विषे देषिछ स्काररा प्रकृति पुरुषको भेदजोछ कसो गरि

॥ भा. स. ॥
॥ ११५ ॥

जानु ॥ सत्ता मेरा मन का वश संदेह कन युक्तिले युक्त भया का वठीया वचन ले गरि मेरि दिनु योग्य छ ॥ हे कृष्ण त पा-
त्रिका प्रसाद ले गरि जीव हे रुलाई जानु हंछ ॥ ज्ञान भ्रष्ट पनित पात्रिको शक्तिले गरि हंछ ॥ आनै प्रकाश आत्मा का क-
सो गरि ज्ञान भ्रष्ट होला ज्ञान दिनु ॥ ज्ञान को भ्रष्ट गनी मा प्रयोजन मलाई क्या छ ॥ भनु होला त सुन ॥ हे कृष्ण आत्मा भ-
या का त पात्रि हौ ॥ माया की गतिक न पनित पात्रि जानु हौ ॥ अरु जानै न भनि विंति गप्पा उद्धव लेर ॥ कृष्ण जी आ-
ज्ञा गर्न लाग्ना ॥ हे उद्धव प्रकृतिर पुरुष को अत्यंत भेदै छ ॥ कसो गरि भन्या सत्ता दिग गप्पा का गुणा का क्षोभ ले भया को ॥

प्रकृतौ लक्षते सात्मा प्रकृतिश्च तथात्मति ॥ एवं मे पुराणी काश्च महातं सशयं हृदि ॥ हेतुमर्हसि सर्वज्ञ व-
चो भिनय नैः पुनैः ॥ २५ ॥ त्वत्तो ज्ञानं हि जीवानां प्रमोघं मे त्रिशक्तिः ॥ त्वमेव सात्मा माया या गतिं वेत्थ न-
चापरः ॥ श्री भगवानुवाच ॥ प्रकृति पुरुषश्चेति विकल्पः पुरुष र्षभः ॥ स्रष्टवैकारिकः सर्गो गुणव्यति-
करात्मकः ॥ २६ ॥ म मां ग माया गुण मय्यनेकधा विकल्प बुद्धि च गुरोर्विधत्तैः ॥ वैकारिकस्त्रिविधो ध्या-
त्तमेक मय्याधिदैवमधिभूत मत्पत् ॥ २७ ॥ ॥ सृष्टि गरिया को प्रकृतिको र्य भया को देहादि संश्रुत जो छ ॥ विका-
र कन हंछ ॥ पुरुष जो छ ॥ विकारें छैन ॥ सस्कार गा प्रकृति पुरुष को भेदै छ ॥ भनि जानु ॥ २८ ॥ प्रकृति नाना प्रकार को छ ॥ पु-
रुष जो छ ॥ एकै छ ॥ सस्कार गा ले पनि भिदै छ ॥ व भनिक हंछ न ॥ हे उद्धव मेरी गुण मयी माया भन्या की प्रकृति जो छ ॥ ना-
ना तरह की छ ॥ छैरै छ ॥ गुण हेरु ले गरि भेद बुद्धि कन यनि गर्द छ ॥ प्रकृति जो छ ॥ अनेक विकार ले युक्त भया को पनि अ-
ध्यात्म अधिदैव अधिभूत ॥ इति न बुला मा ग ले गरि ॥ तिन प्रकार को छ ॥ भन्यार ॥ तनै तीन रूप कन ॥ आज्ञा गर्न लाग्ना

॥ राम ॥
॥ ११५ ॥

॥ २७ ॥

हेउद्यव. रक्तभन्याकोनेत्रजोछ अध्यात्मभनिकहिंछ॥ नेत्रलेदेविन्यारूपजोछ अधिभूतकहिंछ॥ नेत्रगोलकमावस्थाकोसूर्यकोअशभयाको अधिष्ठातादेवताजोछ अधिदैवभनिकहिंछ॥ अध्यात्म अधिभूत अधिदैव इतिनैजोछन्॥ तीन मासउदायनिभयो नभन्या आशुकार्यगर्नुसक्तै न॥ नेत्रलेरूपकोज्ञानहुंछ तस अर्थनेत्रछ भनिमानुपयो॥ नेत्र कोपनिरूपकोज्ञानगर्दा अधिष्ठातादेविनभै नहुनाले॥ नेत्रको अधिष्ठातादेवतासूर्यठहराइंछन् भनुपयो ता हाश्रान् नेत्रकारूपादिज्ञानमाप्रवृत्तिहुंछ प्रवृत्तिभयापक्षिरूपज्ञानहुंछ॥ ससैप्रकारले इतिनकरासिद्धहुंछन्॥ आकाशविषेमणले गरिरहन्नासूर्यत आफैसिद्धहुन्॥ हेउद्यव. जस्कारणा आत्माजोछ अध्यात्म अधिभूत अधिदैव इतिनैकोकारणा अशुछ॥ सकैछ भिन्नपनिछैन इतिनैदेविभन्याभिनेछ॥ आफैप्रकाशरूपहुनाले आ

दृश्यमार्कवपुरत्रं ध्वं परस्परं सिद्ध्यति यः स्वतः रेव॥ आत्माय देवा मपरो य आशुः स्वयानुभूत्याखिलं सिद्धसिद्धि॥ ३०॥ सवन्तगादिश्रवणादिचक्षुर्जिह्वादिनासादिवचित्रयुक्तम्॥ योसौगुणक्षोभकृतोविकार

कुआयस्माप्रकाशगर्न्यहेरूकोपनिप्रकाशगर्न्यछ॥ नेत्रमादेवियाको अध्यात्म अधिभूत अधिदैव इतिनभेद कन॥ अरुइन्द्रियविषेपनिदेवाउछन्॥ ३०॥ तत्त्वकइन्द्रियजोछ अध्यात्मकहिंछ स्पशंछ अधिभूतकहिंछ॥ वायु अधिष्ठाताजोछ अधिभूतवहिंछ दिशा अधिष्ठातादेवताजोछ अधिदैवकहिंछ जिह्वाजोछ अध्यात्मकहिंछ रस अधिभूतकहिंछ॥ वरूणाजोछ अधिष्ठातादेवताकहिंछ नाक अध्यात्मकहिंछ गंध अधिभूतकहिंछ अश्विनीकुमार अधिष्ठातादेवताजोछन्॥ चित्र अहंकारबुद्धि मनासि अन्नकरणा मा चित्र अध्यात्मकहिंछ चेतयितव्यवस्तु अधिभूतकहिंछ॥ वासुदेव अधिदैवकहिंछ मन अध्यात्मकहिंछ मंतव्यवस्तु अधिभूतकहिंछ चन्द्र अधिदैवक

॥ भा. ए. ॥
॥ ११६ ॥

हिंछः उद्धिभयात्मकहिंछः बोद्धव्यवस्तुअधिभूतकहिंछः वलाअधिदैवकहिंछः अहंकारअध्यात्मकहिंछः अहकर्तव्यजोछ
अधिभूतकहिंछः रुद्रअधिदैवकहिंछः इत्यवैकाशीछन् पुरुषविकारिछैनन् ॥ ससकृगलेपनिप्रकृतिदेविपुरुषजोछ
भिन्नैछभनिजान ॥ प्रकृतिदेविपुरुषजोछभिन्नरहेछसांचोहो ॥ परन्तुतिनप्रपंचदेविभिन्नछभनिकसोगरिजानुभन्या
अहंकारकानिवृत्तिलेगरिजानु ॥ अहंकारकानिवृत्तिकसोगरिहंछभन्या ॥ तिन्प्रकारभेदकोनिवृत्तिहनालेहंछभनिक
हनलागा ॥ हेउद्धवयोअहंकारजोछः प्रकृतिउपादानकारणभयाका ॥ गुणशोभकनगर्वापरमेश्वरनिमित्तकारण
भयाका ॥ अथवाकालरूपईश्वरकोकारणभयाका ॥ एतामहनत्वदेविउत्पन्नभयाकोविकारहो ॥ मोहस्वरूपभया

प्रधानमूलान्महतः प्रसूतः ॥ ३१ ॥ अहंविद्वन्मोहविकल्पहेतुवैकारिकस्नामसरेन्द्रियश्च ॥ आत्मापरिज्ञा

नमयोविवादोत्पत्तीतिनास्तिभिदार्थनिष्ठः ॥ ३२ ॥

सात्विकईतीनभेदलेगरिः तिन्प्रकारकोहोजान ॥ ३१ ॥ एताअहंकारजोछकसोगरिहराउंछभन्या ॥ ज्ञानकोप्रका
शहनालेगरिविलसितभयाका ॥ आत्मज्ञानलेगरिहराउंछभनिकहंछन् ॥ हेउद्धव ॥ आत्माजोछज्ञानस्वरूपछ अ
हंकारभयोयोविकल्पप्रपंचभयो ॥ कसोगरिमोहमयअज्ञानस्वरूपछ ॥ कसैलेसत्यस्वरूपछभनिराष्याकोछभणो
लातसुन ॥ सत्यसत्यछैनभनुकोहिभेदलेभयाकोविवादजोछ ॥ सोपतिआत्मालाईनजान्नालेभयाकोछ ॥ अथवाजो
कोहिविवादरुगराजोछ ॥ सवैभेदस्वरूपप्रपंचमाछ ॥ वस्तुमाहगराछैन ॥ अथवाअहंकारभयोविकल्पप्रपंचभ
योछदैछैन ॥ उसोभन्याअहंकारकोनिवृत्तिहवसभन्नानिमित्त यत्नकिनगर्तुभन्यासुन ॥ ३२ ॥ छ ॥

॥ राम ॥
॥ ११६ ॥

मदेषिवाहिह्रहन्मा मविषेचिन्नलगाउन्मा प्राणिहेरुका ॥ व्यर्थभयाकोपनिअहंकारजो छहराउदै ॥ परंतु निप्राणिहेरुजो
छन् ॥ अहंकारलेगयाकाकर्मलेगरि ॥ उच्चनीचभयाकानानादेहविषेघुम्दैरहंछन् ॥ ३३ ॥ भनिभगवान्कृष्णलेआज्ञाग
याउद्धवजोछन्विंतिगर्नलागा ॥ हेरुहन् ॥ हेप्रभो ॥ तपोत्रिविषेचिन्नलगाउन्मा प्राणिजोछन् ॥ आत्माअहंकारिकर्म
लेवद्धभयाकाछदा उच्चनीचसानाहुला ॥ जेसादेहकनलिंछन् ॥ छोडदछन् ॥ ३४ ॥ मनजित्त्वनसकन्पालेजानिनस
कन्पाकुराजोछ ॥ हेगोविन्दमलाईआज्ञागर ॥ ठेरैलोकसंसारमा ॥ मायालेमोहितभयाकाहुनाले ॥ योकराजान्याकोहि

वर्थोपिनैवोपरमेतपुंसांमन्नपरावन्नधियांस्वलोकात् ॥ ३३ ॥ श्रीउद्धवउवाच ॥ तन्नपरावन्नधियः
स्वकृतैःकर्मभिःप्रभो ॥ उच्चावचावयथादेहान्गृह्णतिविमृजंतिच ॥ ३४ ॥ तन्ममाख्याहिगोविन्दउ
र्विभावमनात्मभिः ॥ नह्येतस्यायशःसर्वेविद्यासंतिवंचिता ॥ ३५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मनःकर्ममयं
नृणामिन्द्रियैःपंचभिर्युतम् ॥ लोकाल्लोकंप्रयात्यन्यआत्मानदनुवर्तते ॥ ३६ ॥

छैनन् ॥ व्यापकआत्मालेसकदेहछोडिदोसादेहमाजानु ॥ अकर्ताआत्मालेकर्मगर्नु ॥ नित्यआत्माकोजन्महुंनु ॥ म
नु ॥ योकरोकसोगरिहंछभनिविंतिगयाउद्धवलेरुहन्आज्ञागर्नलागा ॥ ३५ ॥ हेउद्धव ॥ इन्द्रियलेयुक्तभयाकोमनु
ष्यहरुको ॥ नानाकर्मस्वरूपभयाकोमनजोछलिंगशरीरहो ॥ तेहिसकदेहछोडिदोसादेहमाजानु ॥ तेसालिं
गशरीरदेषिभिन्नभयाकोआत्माजोछ ॥ अहंकारगर्नलेतेसैकापछिजोछ ॥ ३६ ॥ ६ ॥

॥ भा. २ ॥
॥ १११ ॥

मनकापनि पहिलो देह छोडुन दोस्रो देह लिनु यो कुरो कसो गरि हुन्छ भन्ना सुन हे उद्धव कर्मका अधीन मार हुन्ना देखा का सुन्या
का वेदमावताया का विषय को ध्यान कन गर्ना ॥ ध्यान गरिया का वसुमा प्रकट हुन्ना ॥ सलो मन जो छ पहिले का विषयमा ॥
हराई जान्छ ॥ मन हराया प्राप्ति पहिले को यो हो पछि को यो हो भन्ना ॥ सलो पूर्व पर अनुसंधान पनि मन काना शिंछ ॥ ३७ ॥
ताहा प्राप्ति कसो हुन्छ भन्ना सुन ॥ कर्मले देखाई दिया का देवता मनुष्य पशु हेरु का देह विषे अत्यन्त आग्रह हुनाले आका
पहिले का देह कन ॥ फेरि मन जो छ समुद्र दैन सो हिन समुद्र न्या मन जो छ ॥ कर्मले देखाई दिया कान र क का या त ना गर्ना दे

धाय मनो नु विषयान् दृष्ट्वा चानु श्रुतानथ ॥ उद्यत्सीदत्कर्म तत्र स्मृतिस्तदनुशान्ति ॥ ३७ ॥ विषयाभिनिवे
शननात्मानं यत्स्मरेत्सुन ॥ जंतो वै कस्यचिद्धेतोर्मत्पुनरत्यंत विस्मृति ॥ ३८ ॥ जन्मत्वात्मतया युंसः सर्वभा
वेन भूरिद ॥ विषयस्वीकृतिं प्राहुयंथा स्वप्न मनोरथ ॥ ३९ ॥ स्वप्न मनोरथं चेत्थ चेत्थं प्राक्तनं न स्मरत्य
सौ ॥ तत्र पूर्वमिवात्मानमपूर्वं चानुपश्यति ॥ ४० ॥

देवादि देह विषे आग्रह हुनाले ॥ हर्ष तृष्णा का निमित्त पहिले का देह कन ॥ अत्यन्त न समुद्र ॥ अहंका निवृत्ति हुनु
जो छ ॥ सोहि देहाभिमानि जीव को मृत्यु कहिन्छ ॥ परं तु जीव को देह रुजि नाश छैन ॥ ३८ ॥ हे उद्धव आकुर देह को
अभेदले गरि देह मा महेरो भनि अभिमान गर्नु जो छ ॥ पुरुष को जन्म कहिन्छ देह का रुजि उत्पत्ति भन्ना पुरुष का छैन ॥
परं तु सपना रुजि मन सुवा रुजि मात्र छ ॥ ३९ ॥ सपना मन सुवा मा कसो हुन्छ भन्ना सुन ॥ सपना मा मन सुवा मा पहिले
को देहा दिवस कन समुद्र दैन ॥ पहिलो सिद्ध भया कापनि देह कन ॥ अहिले उत्पन्न भन्ना रुजि देख्छ ॥ ४० ॥

मा २

॥ राम ॥
॥ १११ ॥

इन्द्रियको मार्ग भया कामनका॥ अर्का देह का आयु हले भया को जौ न जन्म छ॥ तस्को अभिमान गर्नाले आत्मा विषे उन्नमः सधमनी
 चत्तः ई कुरा जो छन॥ रुटा भया का पनि देषिन्छन॥ एसा अभिमानी आत्मा जो छ वाहिदु भित्र का विषय का सुख कन देखत
 छ॥ जसो जीव जो छ सपना विषे रुटा देह कन वना उंद छ हे छ॥ एसे नाना रूप कन हुन्छ तसै जानु॥ अथवा मन ले गया
 का कुरा को अभिमान गर्नाले आत्मा विषे॥ जसै उष्ट छोरो जन्मा उन्मा वा बुजो छ॥ आफु सबै विषे वरा वर हं छन पनि पुत्र
 मेरो भन्ना अभिमान ले छोरा का शत्रु मित्र हेरु विषे शत्रु भाव मित्र भाव कन राख्छ॥ तसै अध्यात्म
 अधिभूत अधिदैव एसा योती न भेद जो छ देषिन्छ॥ ४१ ॥ एसा प्रकार ले लोक मा प्रसिद्ध भया का जन्म मृत्यु कन भन्ना र उ

इन्द्रियाय न स्पृष्टे दं त्रे विध्यं भाति वसुनि॥ वहिरंतर्भिदा हेतुर्जः सज्जन कथथा॥ ४१ ॥ नित्य दाह्य गभूतानि
 भवंति न भवंति च॥ कालेनालक्ष्य वेगेन सूक्ष्मत्वात् न दृश्यते॥ ४२ ॥ यथार्चिषां श्रोतसांच फलानां वा वन-
 स्पते॥ नथैव सर्व भूतानां वयावस्थादयः कृताः॥ ४३ ॥

॥ इव ले प्रह्वन गमा का अति सूक्ष्म भया का जन्म मृ-
 त्यु कन वैराग्य गराउना निमित्त भगवान् ले मृत्युर जन्म कन वता यार॥ देखिंदैन वेग जसो एसा काल ले गरि प्राणि हेरु
 का क्षण मा जन्म मृत्यु हुन्छ॥ परंतु काल को सूक्ष्म गति हुनाले साना जन्म मृत्यु कन अविदे कि पुरुष ले जान्न सकु छै
 न भनि आज्ञा गर्दा भया॥ सत्य रूप भया का पनि जन्म मृत्यु कन न जान्दा माकारण जो छ काल गति होला॥ परंतु साना ज-
 न्म मृत्यु का हा छन भनौला त मुन॥ ४२ ॥ ज्वाला को साजु बुला परिमाण ले गरि भयो॥ मदी का प्रवाह का शीघ्र मण्ड गति ले भ-
 यो॥ वृक्ष का फल का फल को हरियो पहिलो रातो इत्यादि रूप ले गरि भयो॥ जसै इन्का अवस्था भेद को मालु महुन्छ तसै
 सबै प्राणि हरु काल ले गरि वय का अवस्था गया का जान॥ ४३ ॥

॥ भा. १७ ॥
॥ ११८ ॥

क्षणाक्षणमाभिन्नहुंछ. अधिकोरहदैनभन्या. योउहीदीपकोज्वालाहो. योउहीनदीकोप्रवाहकोजलहो. योउहिपुरुषहोभ
न्याससोज्ञानजोछ. ॥ कसोगरिहुंछभन्या. ॥ अधिकोहिसमयमादेष्वाकासादृश्यलेगहुंछ. ॥ परंतुयोसोहिपुरुषहोभ
निबोलनकालान्तरमादेष्वाकालाईदेष्वाअधिदेष्वाकोहोभन्याबुद्धिगर्नुजोछअज्ञानिलाईहुंछ. ॥ ४४ ॥ देहकाक
र्मलेगरिनजन्मन्यापनिपुरुषजोछजन्मन्. ॥ नमर्न्यापनिपुरुषजोछमर्छभन्या. ॥ योकरोभ्रान्तिलेहुंछ. ॥ एतैपं

सोयंदीपोर्विषायद्वन्श्रोतसांतदिदंजलम्. ॥ सोयंप्रमानितिन्दृशांमृषागीर्धीर्मृषापुषाम्. ॥ ४४ ॥
मास्वल्पकर्मवीजेनजायतेसोप्ययंपुमान्. ॥ मृयतेवामरोधान्यायथाग्निदारुसंयुतः. ॥ ४५ ॥ निषेकग
गर्भजन्मानिबालकौमारयोवनम्. ॥ वयोमध्यंजरामृत्युरित्यवस्थाततोर्नवः. ॥ ४६ ॥ एतामनोरथमयीर्ह
न्यस्योच्चावचालन्. ॥ गुरासंगादुपादन्नेकचित्तकचिज्ज्ञहानिव. ॥ ४७ ॥

एतैपंचमहाभूतमागनियाकोपनिअग्निजोछ. ॥ दारुवाकोसंयोगवियोगहुदनाशियारुजिउत्पन्नभयारुजिदे
षिन्. ॥ तसैदेहकोसंयोगवियोगलेगरिमृत्युरजन्मजोछआत्माकादेषिंछ. ॥ स्वभावलेमृत्युपनि. जन्मपनिआ
त्माकाछैनन्भनिज्ञान. ॥ वयकाअवस्थाकनदेष्वाउंछन्. ॥ ४५ ॥ हेउद्धववीर्यरूपलेगर्भमाप्रवेशगर्नुभयो. ॥ ग
र्भमावृद्धिहुनभयो. जन्मनुभयो. ॥ बालअवस्था. कोमारअवस्था. जौवनअवस्थाभयो. ॥ मध्यमवयकोअवस्थामृत्युअव
स्थापनिनौअवस्थाजोछन्देहकाछन्. ॥ ४६ ॥

॥ राम ॥
॥ ११८ ॥

सानाठुलामनलेकल्पनागरियाकादेहकाश्रवस्थाहुन॥ ईश्रवस्थाकनप्रकृतिविवेकनहुनालेपरमेश्वरजोछलिन्छ॥ परंतु
कसोगरिछोडछभंभ्यासुन॥ ईनौअवस्थालेयुक्तभयाकादेहनदेष्टुमासाक्षिआत्माजोछ॥ ईनौअवस्थालेयुक्तहुदै नभ
न्याएसाविवेकेज्ञानलेगरिछोडदछ॥ ७॥ जन्मन्यामर्न्यावेलासामूर्च्छाहुनालेजन्म्याकोदेहदेष्टिदै न तसुअर्थ
आहुदेहजोछजन्म्याकोहोपछिमेर्न्याछभनिकसोगरिजालुभंभ्यासुन॥ आकावावुमयाकोदेष्टिदैहजोछमर्न्यारहेछ
भनिजानु॥ छोराजन्म्याकोदेष्टियोमेरोदेहपनिजन्म्याकोरहेछभनिजालु॥ जन्मन्यामर्न्यादेहकोसाक्षिआत्माजोछज

आत्मनःपितृपुत्राभ्यामनुमेयौभवाप्ययौ॥ नभवाप्ययवस्तूनामभिज्ञोऽद्यलक्षणाः॥ ४८॥ तरोर्वीज
विपाकाभ्यांयोविज्ञान्जन्मसंयमौ॥ तरोर्विलक्षणाद्रष्टारवंदयातमोःपृथक्॥ ४९॥ प्रकृतेरेव
मात्मानमविविधाबुद्धःप्रमान्॥ तत्वेनस्पर्शसंमूढसंसारप्रतिपद्यते॥ ५०॥

ननुमर्तुधर्मकननगरिपांडदै न॥ ४८॥ एसैकुराकनदृष्टान्तलेगरिप्रकाशगरिकहन्छ॥ विज्जरवीजपाकले
गरिभयाकाधान्यहेरुको॥ जन्मरमृत्युकनदेष्टाप्राणिजोछजसैधान्यहेरुदेष्टिभिन्नहुन्छ॥ तसैदेहकाश्रवस्था
कनदेष्टुमाआत्माजोछदेहदेष्टिभिन्नहुन्छ॥ ४९॥ हेउद्धव॥ एसाप्रकारलेप्रकृतिकाकार्यदेहादिहेरुदेष्टिआ
त्माभिन्नछभंभ्याविवेकनभयाकोमूर्खप्राणिजोछ॥ विषयविषेसत्यबुद्धिहुनालेमूढभयाकोछदोवारंवारसं
सारमाफिदैरहन्छमुक्तहुदै न॥ ५०॥ श्रीकृष्णायवासुदेवायनमः॥ छ ॥

॥ भा. ॥
॥ ११८ ॥

गुणकाभेदलेगरिः तिनप्रकारको संसार भोग हुन्छ भनि देखाउंछु ॥ सत्त्व गुणका कर्मले गरिः त्रिभिर्दुष्ट देवता हुन्छ र जो गु
णका कर्मले गरिः दैत्य हुन्छ मनुष्य हुन्छ ॥ तमो गुणका कर्मले गरिः भूत भयो पशु पंछि भयो ॥ सत्त्व प्रकारका कर्मले ग
रिः संसारमा सुख दुःख हुन्छ ॥ ५१ ॥ जसै नाच्चाको गायाको ॥ देखाया गीत जो छ ॥ उनैका जसो नाचनु गाउनु गर्दछ ॥
तसै चेतान भयाको पनि आत्मा जो छ ॥ बुद्धिकानाना कर्मकन देखाउंछु तसै होई जांछ ॥ ५२ ॥ जसो वायुले हल्लाका ज

सत्त्व संग दृष्टी देवान् र जसा सुरमा नुषान् ॥ तमसा भूत तिर्यक्त धामितो यातिकर्मभिः ॥ ५१ ॥ नृत्यतो गा
यतः पश्यन्त्यथैवानु करोति तान् ॥ एवं बुद्धिगुणान्यप्यननीहोप्यनु कार्यते ॥ ५२ ॥ यथा भसा प्रचलता
तरवोपि चलता इवः ॥ चक्षुषा भ्राम्यमानेन दृश्यते भ्रमतीव भूः ॥ ५३ ॥ यथा मनोरथधियो विषया नुभवो
मृषास्त्वदृष्टाश्च दामार्हतर्था संसार आत्मनः ॥ ५४ ॥ अर्थे ह्यविद्यमानेपि संसृतिर्न निवर्तते ॥ ध्या
यतो विषयानस्य स्वप्नेनार्था गम्यथा ॥ ५५ ॥ तस्यादुष्टवमाभुंक्ष्वविषयानसदिन्द्रियैः ॥ आत्मा ग्रह
णानिर्भातंतस्य वैकल्पित भ्रमम् ॥ ५६ ॥

लमा छाया पयाका पनि वृक्ष हेरु जो छुन्छ हल्ला रुजि देखि छुन्छ ॥ पित्तले गरिनेत्रमा गटालाग्नाको भया ॥ यथिवीप
निघुम्मा रुजि देखि छुन्छ ॥ मनले कल्पना गरियाका विषयको अनुभव जसै सुटो छ ॥ सपनाका विषय भोग जसै सुटो छ
हेउ छव ॥ आत्मा लाई संसार सुटो छ ॥ ५४ ॥ जसै सपनामा अनर्थ भयाको विषय भोग हुन्छ ॥ तसै विषयको ध्यान गर्ना
आत्माका वसु रूप छैन तपनि संसार जो छुन्छ निवृत्त हुंदैन ॥ ५५ ॥ तस्कारण हेउ छव ॥ घटिया इन्द्रियले गरि विषयको भोग
कनगर आत्मान चिहाले प्रकट भयाका भ्रान्ति स्वरूप भयाका यो भेद प्रपंच जगत् कन जान ॥ ५६ ॥

॥ राम ॥
॥ ११८ ॥

आईपयाकाडुःखः परसार्नाकोउधमपनिनगरि॥ परमेश्वरैमाचित्रलगाईरहुभनिआज्ञागईरहुउद्धव॥ उर्जनप्राणिहेरु
लेगालिगरीयाको॥ धिवाहातलगायाको॥ अपमानगरियाको॥ ठटागरियाको॥ निन्दागरियाकोजाउनागरियाको॥ छकिथुनि
याकोजीवीकादेपिछुटाइयाको॥ ५॥ थुकियाको॥ मुत्तिपाको॥ परमेश्वरकोभजनदेपिछुटाइयाको॥ वहुनैकष्टदशाक
नप्राप्तभयाकोपनि इसवैडुःखकनसहि॥ कल्याणकोकामहुनालेआफुउद्धारकनआफैलेगर्नु॥ कसैडुःखमापनि

क्षिप्रवमानितादसद्धिः प्रलब्धोऽसूयितोथवा॥ ताडितः सन्नितः सन्निरुद्धोवावृत्त्यावापरिहापितः॥ ५॥
निष्ठितोमुत्तितोवासैर्वहुधैवंप्रकंपितः॥ श्रेयस्कामः कुरुगतआत्मनात्मानुमुद्धरेत्॥ ५८॥ श्रीउद्धवउवा
च॥ यथैवमनुबुद्धेयंवदनोवदताम्वरः॥ सुद्रः सहमिममन्यआत्मन्यसदतिक्रमम्॥ ५९॥ विडुषाव
पिविश्वात्मन्यकृतिर्हिवलीयसि॥ ऋतेनचर्मनिरताच्छातासेचरणालयान्॥ ६०॥

इश्वरकोसमाधिजोछनूछोडनुभन्ना॥ एस्तोतात्यर्थकनबुरुभनिआज्ञागयाकसलेरउद्धवजोछनूविंतिगर्नला
गा॥ ५८॥ हेरुहभगवान् मजसोगरिवुरु॥ आफुभन्दाघटिहुंजनप्राणिहेरुलेगयाकोअपराधजोछ॥ सहिनस
कुहुंछ॥ लोकरोकसोगरिसहनुभनिमैमान्दछु॥ ५९॥ हेभगवान् तपाजिकाधर्ममारखाका॥ शान्तचित्तभया
कातपाजिकाचरकोशरणभयाका॥ एसाप्राणिहेरुकनछोडि॥ आफुस्वभावतलियोहुनालेवडाजायापरित
हेरुलेपनिसहिनसकुकराछ॥ कसोगरिहसनुभनिउद्धवलेरुछनूछेउविंतिगयाभनि॥ एसैकथाकनभुकदेव
लेराजापरीक्षितकनआज्ञागया॥ सोहिस्तलेशौनकादिअपिहरुकनवताउंदाभया॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥

॥ भा ॥
॥ १२० ॥

इति श्री भावने महापुराणे सकादशस्कंधे भाषाटीकायां विंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ दुर्जनलेग्न्याको अपराधजो छः वडा पणितले
पनि सहिन सनु छः ॥ स्काराण कृष्णजो छनः अवपुटोका चार अध्यायले गरिः सह्या उपाय कन आजागर्छन भनि भुक
देवजो छन राजा परीक्षित कन आजागर्छन लाणा ॥ हे महाराज परीक्षितः भागवत हेरुमा सुख्य भयाका दासाह वसमाशे
एभयाका उद्धवले प्रणगरिया का भगवान् कृष्णजो छनः ॥ सुनलाई योग्य छ पराक्रम जस्को ॥ एसा भयाका छ दाआ

इति श्री भागवते महापुराणे सकादशस्कंधे विंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ वादरायणिरुवाच ॥ सख्यमाशसित
उद्धवेन भागवतमुख्यनदशार्हभेरा ॥ सभाजयन्ते वचो मुकुन्दसमावभाषे श्रवणीयवीर्यः ॥ १ ॥
श्री भगवानुवाच ॥ बाहं स्पत्रसवैनात्र साधुर्वै दुर्जने रितैः ॥ उरुक्त्रैभिर्न मात्मानं यः समाधातुमीश्वरः
॥ २ ॥ न तथा तप्यते विद्वदुमान्वागौरममगैः ॥ यथानुदंति मर्मस्था ह्यसतां पुरुषेष्ववः ॥ ३ ॥ क
थयंति महत्पुण्यमिति हासमिहोद्धवः ॥ तमहं वर्णयिष्यामीनिबोधसु समाहितः ॥ ४ ॥

प्राचाकर भयाका उद्धवका वचन कन वळीया भनिस झाई आजागर्छन लाणा ॥ १ ॥ हे उद्धव ॥ दुर्जनले भयाका घटि
यावचन कन सहि ॥ एस्मन कन ठेकना मात्मा उना कन समर्थ भयाको उलोसाधुजो छ संसारविकोहि छैन ॥ २ ॥ हे
उद्धव जसो दुर्जन प्राणिका घटियावचन रूपी ॥ वाराले वेध्याको मनमाडुःख हुन्छ ॥ तसो दुःखजो छ वाराले छानि वे
ध्यामापनि हुदै ॥ ३ ॥ सहिन सनु भयापनि हे उद्धव मैले पछि कहन्याइ तिहासले गरि ॥ सवै कुरो सहन सकि

॥ रा ॥
॥ १२० ॥

न्या छ भनि ॥ क ह न जो छ न इ नि हा स क था क न आ ज्ञा ग र्ण ला ग्पा ॥ हे उ छ व स ह न स कि न्छ भ न्ना कुरा मा व डो पु रा प क न दि
इ नि हा स क न ति मि ला ई भं छु ॥ ए का ग्र चि त्र ग रि स्त र्ण ॥ ४ ॥ दु र्ज न हे रु ले डु ख ग स इ या का डु ख मा प नि धै र्य क न ग
न्या ॥ इ दु र्ज न प्रा णि हे रु म ला ई डु ख दि दै न न ॥ मे रा आ क्रे क र्म कौ फ ल हो भ नि स म् रु न्या ॥ अ काला ई दो स न ल ग
उ न्या स स्ता को सु न ॥ हे उ छ व प हिले न्यो भि क्षु जो छ व डो ध नी थि यो ॥ व डो डु ख सि त क मा या को ध न जो छ दै व स
ले ना शि न जा दा ॥ व डु ते स ता प ग रि वै रा ग्य भै सं न्या स लि भि क्षा नि मि त्र फि र्दा मा दु र्ज न हे रु ले सं ता प ग रा ई आ

के न चि द्वि क्षु रा गी तं प रि भू ते न दु र्ज नै ॥ स्म र ता धृ ति यु क्ते न वि पा क नि ज क र्म रा म् ॥ ५ ॥ अ वं ति
पु द्वि ज क श्चि दा सी दा द्य त मः श्रि या ॥ वा र्ता वृ त्तिः क द र्य सु का मी लु चो ति ले प टः ॥ ६ ॥ ज्ञा त यो ति
थ य स स्त वा द्म्रा त्रे रा पि ना चि ताः ॥ भू न्या व स थ आ त्मा पि का ले का मे र न र्चि तः ॥ ७ ॥ ६ ॥

नि द शा क न प्रा ण ग रि या को हो ॥ ५ ॥ न्यो भि क्षा का हा को हो भं न्या सु न हे उ छ व माल व दे श वि षे र क को हि त्रा स्त रा जो
छ व डो ध नि थि यो ये ति भ यो व्या पा र भ यो वृ त्ति ग रि र ह न्यो ॥ ध न स कि य ला भ न्ना नि मि त्र आ फ न वा न्या ध र्म क र्म
क न न ग न्या ॥ पु त्र स्त्री हे रु दा जु भा ई इ ष्ट मि त्र चा कर हे रु ला ई षा न ला उ न दि दै न थ्यो ॥ पी डा ग थ्यो व डो वि ष
यी लो भी लं प टी थि यो ॥ ६ ॥ स स्ता ते स त्रा स्त रा ले दा जु भा ई अ ति थि हे रु ला ई षा न दि न कौ न कुरा छ व च न प नि वो
ल् दै न थ्यो ॥ ध र्म क र्म ले ही न भ या का ते स्का य र वि षे दे व ता ले प नि छो डा ॥ आ क्रा दे ह क न प नि का ल का ल मा वि ष य भो ग ले

स न्तोष ग रा उ दै न थ्यो ॥ ७ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १२९ ॥

घटियाशीलभयाकातेसबालराकाउपर पुत्रस्त्रीचाकर छोडि दाजुभाईसवैजनाअंधाराभैद्रोहगर्नाकनलाणा पियारो
गर्नछोशासवैजनले ॥ ८ ॥ दानभोगनगरियाको थुप्रायाको धनमात्रभयाका योलोकपरलोकडुवैलोकदेषिभ्रष्टभ
याका ॥ धर्मकर्मलेहीनभयाकासलातेसबालराकाउपर पंचयत्तकादेवनाहेरुपनिजुद्धभया ॥ ९ ॥ पंचयत्तकादे
वताकोआदरनगर्नालेनाशियाकोछ ॥ थोरैपुण्यपनिजस्का सलातेसबालराका दिनदिनधनपनि ॥ नाशदशा
कनप्राप्तहुदोभयो ॥ षेतिगरि व्यपारगरि धनकमाउंदा दुःखमात्रढेरैपाउदोभयो ॥ सुखभन्याकोकेहिपाईयेन

उःशीलस्यकदर्यस्य दुःखनेपुत्रवांधवा ॥ दारादुहितरोभन्याविषस्मानाचरन्प्रियम् ॥ ८ ॥ यस्यैवय
क्षविन्नस्य व्युत्सोभयलोकतः ॥ धर्मकामविहीनस्य बहुधुः पंचभागिनः ॥ ९ ॥ तदवधानविस्त्रलपु
रापस्कभस्यभूरिदः ॥ अर्थोपगच्छन्निधनवह्नायासपरिश्रमः ॥ १० ॥ जातयोजयद्दुः किंचिक्किंचिदस्य
वउद्धवः ॥ दैवतः कालतः किंचिद्वह्वंधोर्नृपार्थिवात् ॥ ११ ॥ सएवंद्विनेनष्टधर्मकामविवर्जितः ॥ उ
पेक्षितश्चस्वजनैश्चिंतामापदुरत्ययाम् ॥ १२ ॥

॥ १० ॥ तेस्को धनकसोगरिनाशियो भन्याकेहिधनदा
जुभाईलेलिया ॥ केहिधनचौरलेचोरिलिया केहिधनदैववसलेचरवढि नाशियो ॥ काललेगरिथुप्राइराव्याको
धान्यहेरुकहिनाशि नाशियो ॥ केहिधनअरुमनुष्यहेरुलेलिया ॥ केहिधनराजालेहरिलिया ॥ ११ ॥ एतैप्रका
रलेधनसकियाप्राप्त धर्मकामनालेहीनभयाका ॥ आक्रास्त्रीपुत्रवंधुवर्ग दाजुभाई इष्ट मित्रकुटुंबहेरुलेछोडि
याकोसलातोबालराजोछ वडोचिन्ताकनगर्नलाग्यो ॥ १२ ॥

॥ राम ॥
॥ १२९ ॥

हेउद्धव-वडोचिन्नाकनगर्भा-धनलेहीनभयाका-ढेरैसंतापकनगर्भा-मनमाडु-खबुलोगर्भा-सुसुकारोहालया॥सस्तातेसवा
लगाकावैराग्यजोछुटुलोहोभयो॥१३॥वैराग्यभयाकोयोवालगजोछु॥कहिभन्नलाग्यो॥अहोकष्टशरीरकन-मैलेव्यर्थ
उखदिना धनकमाउं दीषेर-डु-खैमात्रभयोधनकमाईधनलेगरिधर्मकेहिभयेन॥विषयभोगपनिकेहिभयेन॥१४॥
ससैरहेछ-संसारमाघटियामानिसकोधनजोछुधर्मकार-सुखकानिमित्तनासिरहेनछ॥ससलोकमासंतापगर्ननि

तस्यैवंध्यायतोदीर्घनष्टरायस्तपस्विनः॥स्थितोवाष्पकंठस्यनिर्वदःसुमहानभूत्॥१३॥सचाहेदमहोक
ष्टं वृथात्मा मेनुतापितः॥नधर्मायनकामाययस्यार्थायास ईदृशः॥१४॥प्रायेणार्थाकदर्शानांतसुखायक
दाचन॥इहचात्मापतापायमृतस्यनरकायव॥१५॥यशोयशस्विनांशुद्धंभ्लाध्यायेगुणानांगुणाः॥लोभ-स्व
लोपितान्हंतिश्चित्रोरूपमिवेक्षितम्॥१६॥अर्थस्यसाधनेसिद्धउत्कर्षैरक्षरोव्यये॥नाशोयभोगआया
सस्त्रासचिन्नाभ्रमोन्तुणाम्॥१७॥

मित्ररहेछ॥मयापछिनरकमाजानानिमित्ररहेछ॥१५॥जसुगुणहेरूपनि-थोरैभोगगरिकुदृष्टिशरीरकोरूपनाशि
दामृजि॥नाशिदारलाछन्॥१६॥पहिलेधनकमाठदामाडु-खछ-धनकमायाप्राप्त-वडाउदिषेरडु-खछ॥धनको
षर्चदुदाउ-खछ-हराउदाविषेपनिडु-खछभोगगर्दासकियलाभनुडु-खछधनथान्दिषेरडु-खछ-नाशियला
भनिवडोत्रासछ॥धननष्टभयोभयाचिन्नविश्रीविक्षिप्तजस्तोहुछ॥इत्यादिकुराजोछन्-मनुष्यहेरुलाईधनकानिमि
त्रहुन्छन्॥१७॥चोरिगर्नु-हिंसागर्नु॥डुटोबोलु-दंभवृत्तिगर्नु-कामभयो-क्रोधभयो-गर्वभयो-मत्तडुनुभयो॥तेरो

॥ भा ॥
॥ १२२ ॥

मेरो भनि भेद गर्नु भयो वैर गर्नु भयो वैर गर्नु भयो अर्को को विश्वास न मान्नु भयो त्यो भन्दा मंथुलो भन्नु भयो सति नौ क
रा भयो ॥ स्त्री भया जुवा भयो मश पिडुनु भयो इति नृप सन हेरु भयो ॥ १८ ॥ स वैजमा इपं धु जो छन मनुष्य हेरु का
धन ले गरि भया का अनर्थ कहिं छन ॥ तस्कारा अर्थ नाउ गयो का अनर्थ कन ॥ कल्याण को इछा गर्ना ले दाढे छोडनु
॥ १९ ॥ धन जो छ वडो घटिया छ ॥ वीस कौडी का निमित्त पनि अत्यन्त मित्या का ॥ एकै भया का पनि दाजु भाई स्त्री छो
रा वाउ इष्ट मित्र इ स वैजना शत्रु होइ जा छन ॥ २० ॥ थोरै पनि धन को तल्वी चूप दा मन्च चल भया का अति

लेयं हिंसा नृतंदर्मः कामः क्रोधः स्मयो मदः ॥ भेदो वैरमविश्वासं संस्पृहा व्यसनानि च ॥ १८ ॥ एते पंच द
शानर्था अर्थ भूता मतान्तरा म ॥ तस्मादनर्थमर्थं खं श्रेयो धीं हरत रूपजे नृः ॥ १९ ॥ भिद्यंते भ्रातरौ दाराः
पितर सुहृदस्तथा ॥ सकांति ग्धा का किं शिना मयः सर्व रयः कृता ॥ २० ॥ अर्थे नात्पीपसा ह्येते संरक्षा
दीप्तमन्यवः ॥ त्यजन्त्या भुस्पर्धो घृति सहसोत्सृज्य सोहृदम् ॥ २१ ॥ लघ्वजन्ता मरार्थं मानुष्य तदि
जायताम् ॥ तदनादृत्य ये स्वार्थं प्रतियां त्यशु भांगतिम् ॥ २२ ॥

(कोधगर्वा भया का छदा ॥ मित्रता छोडि क
न आयस्मा वडो स्पृहा गर्ना भै ॥ मारा मार न गला गद छन ॥ २१ ॥ सम लोक मा धन मालु च भया का प्राणिका सले
प्रकार का अनर्थ छन ॥ पर लोक मा पनि तन लाई शन थै छ भनिक हं छन देवता हेरु ले पनि मनुष्य यो नि प्रार्थ
ना गरिया को ॥ सलो मनुष्य यो नि पाई कन दस्मा पनि श्रेष्ठ बाला गा को यो नि पाई कन ॥ स समनुष्य देह को आदर

॥ राम ॥
॥ १२२ ॥

गरिकन जो प्राणि हेरु आकुहित रुम्मा कुरोग दें नर नि प्राणि हेरु जो छन घटिया नर कादियो नि विषे जो छन ॥ २१ ॥ स्वर्ग मो
क्ष उवै कुरा को दार भया को सलो अति उत्तम मनुष्य यो नि पाई कन अनर्थ को कारण भया का धन विषे को न पुरुष जो छव
छ होला को हि हवै न ॥ २३ ॥ देवता त्रिषि पितृ भूत अरु जो को हि प्राणि ज्ञाति दाजु भाई इष्ट मित्र माठलि ससुरालि इ सब
कन न दिई ॥ आसु पति न पाई घर माथु प्याइ मात्र राख्य प्राणि जो छ नर कादियो नि विषे जो छ ॥ २४ ॥ व्यर्थ धन का
निमित्त अनेक व्यपार कन गन्या हित अहित न विद्या ॥ सलामे राधन बल वयस सवै गयो जो न धन ले गरि विवे कि हेरु जो

स्वर्ग पवर्ग यो दार प्राप्य लोक मिमं पुमान् ॥ इ विरो को नु स ज्ञेत मर्त्यो नर्थ स्प धाम निः ॥ २३ ॥ देवर्षि पितृ
भूतानि ज्ञातीन् वधूश्च भागिनः ॥ असं विभज्यं चात्मानं युक्ष विप्र पतपथ ॥ २४ ॥ व्यर्थ यार्थ हया विप्र
मन्त्र स्पवया बलम् ॥ कुशला येन सिद्धांति जरठ किनु साधये ॥ २५ ॥ कस्मात्सं क्लिश्यते विद्वान् व्यर्थ या
र्थ हया सहत ॥ कस्य चिन्मायया नून लोको पसु विमोहितः ॥ २६ ॥ किं धनैर्धन देवा किं कामैर्वा काम देरु
तः ॥ मृत्यु नाग्र स्पमानस्य कर्म भिर्वो त ज न दैः ॥ २७ ॥

(जो छन मुक्त हुं छन ॥ सवै व्यर्थ गया प्राप्ता ॥ अवस्था
जम बुढो कागरु ॥ २५ ॥ धन भया को घटियार हे छ भनि जान्या पनिका निमित्त वारं वार व्यर्थ धर्म का निमित्त अने गवा
पार गरि दुःख पाउ दोर हे छ ॥ कसे कि माया ले मोहित भया को लो कर हे छ ॥ तव ध को निमित्त दुःख पाउ दोर हे छ यो क
रो निश्चय छ ॥ २६ ॥ माया ले मोहित भया को होइन ॥ ठेरै धन भया भाग गरुला भनानि निमित्त दुःख पाउ दोर हे छ भया प
नितो कुरो पनिको हि छैन भनि भंछन ॥ धन ले धन दिन्या ले विषय भोग दिन्या ले जन्म दिन्या कर्म ले कागर्त छ ॥ जस्कार
रा प्राणि जो छ मृत्यु ले या सगरिया को छ ॥ २७ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १२३ ॥

अवसस्समयमा. रतिचिंतागरिविवेककनप्राप्तभयाकोत्पोभिक्षुजोछ ॥ प्रसन्नभैकेहिभन्दन ॥ सवैदेवतास्वरूपभयाका
भगवान्हरिजोछन्. मेराउपरसंतुष्टभयाछन्. यो कुरोनिश्चयछ ॥ जो भगवान्ले रसिदशाकनप्राप्तगराया. मलाइ
संसारदेविपारगराउया. वैराग्यपनिजसलैगराया ॥ २८ ॥ अवसलोवैराग्यलेयुक्तभयाकोमैंजोछु ॥ आऊहित
हुन्याधर्मकर्मविषेधवदरिभै. वांकिशेखरसाकाकाललेगरिआकादेहकनतपस्यालेगरिसुकाउंछु. अथवाज्ञान

नूनमेभगवांसुष्टः सर्वदेवमयोहरिः ॥ येननीतोदशामेतानिर्वेदः स्वात्मनः प्रवः ॥ २८ ॥ सोहंकाला
वशेषेणशेषयिष्येगमात्मनः ॥ अथसन्नोखिलस्वार्थेयदिस्मात्सिद्धआत्मनः ॥ २९ ॥ तत्रमामनु
मोदेरन्दैवास्त्रिभुवनेश्वराः ॥ मुहूर्तेनवल्लोकंखट्वांगः समसाधयत् ॥ ३० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ३१
त्यभिप्रेत्यमनसाद्यावन्तोद्विजसन्तमः ॥ उत्सृज्य हृदयग्रन्थीञ्छान्नोभिक्षुरभन्मुनिः ॥ ३१ ॥

लेगरिलयकनगराउंछु. आत्माकनआत्माविषे ॥ एसकुरामासवैदेवताहेरुजोछन्मेसउपरकरुणागरन् ॥ देवताहे
रुलेणागयापनिबुढोनं. थोरैकाललेकसोगरिसिद्धहुनसकलासभन्यापनि ॥ दुईघटिकावीचमा ॥ राजाखट्वांगले
वल्लोककनसिद्धगयाथा ॥ ३० ॥ मयनिकिनसकैनभनिमनमानिश्चयगरि ॥ हेउद्धव. त्योअवतिदेशकोडा
सराजोछ ॥ अहंकारममत्तारूपीग्रंथिकनकाटिशान्तभैभिक्षुहुदोभयो ॥ ३१ ॥ मनकनइन्द्रियकन. प्राणक
ननिरोधगरिष्टिथिवीमाघुम्ललाग्यो ॥ भिक्षाकानिमित्त. नगरमा. गाठमा. आशक्तिलेहीनभै. कसैकोसगनगरि

॥ राम ॥
॥ १२३ ॥

आशुश्रेष्ठानदेवार्धप्रवेशगर्दोभयो॥ ३२॥ मैलोभयाकातेसैअवधूतबुढाभिक्षुकनदेवि॥ टेरेडुर्जनहेरुजोथियानानाधि
ककारिकर्मलेगरिडुःखदिदाभया॥ ३३॥ कसोधिककारिकर्मगयाभया॥ कसैलेवांसकोडिउलिया॥ कसैलेकमण्डलु
लिया॥ कसैलेपिहलिया॥ जयमालाकण्ठाकसैलेलिया॥ फाद्याडुद्याकावस्त्रकसैच्याटिलिया॥ ३४॥ हेभगवन्लेउति
आवस्त्रभनिदेवार्ध॥ लिनलायाकावस्त्रकन॥ फेरिच्यातिलिदाभया॥ भिक्षामाणाकाअन्नकन॥ नदीकातीरविषेधानला॥

सवचारमहीमेतांसंयेतात्मोन्द्रियानिल॥ भिक्षार्थनगरग्रामानसंगोलक्षितोविशत्॥ ३१॥ तवैप्रव
यसंभिक्षुमवधूतमसज्जना॥ दृष्टापय्यभवनभद्रवाहीभिःपरिभूतिभिः॥ ३३॥ केचिच्चिवेणजग
हरेकेपात्रकमण्डलुम्॥ पीठचैकेक्षस्त्रचकंथावीराणिकेचनः॥ ३४॥ प्रदायचपुनस्त्रानिदडुर्शितो
न्यादडुर्मुने॥ अन्नचभक्षसम्पन्नंभुंजानस्वसरित्ते॥ ३५॥ सूत्रयन्तिचपापिष्ठाः॥ शीवत्यस्यचपुध्वेनि
॥ ३६॥ तर्जयन्त्यपरेवाभिलेनोयमितिवादिनः॥ वध्वन्तिरज्जातकेचिद्वध्वावधूमिति॥ ३७॥

गदाविषे॥ ३५॥ पापिडुर्जनहेरुलेअन्नमासुतिदिनलाग्णा॥ कोहिशिरमाथुकनलाग्णा॥ नवोलिरहदा॥ बोलभनिवो
लाउनलाग्णा॥ बोलेनभन्याताडुनागर्नलाग्णा॥ ३६॥ योचोरहोभनिवोल्न्याकोहिथिया॥ वचनलेतर्छाउनलाग्णा॥ को
हिडोरिलेवांधनलाग्णा॥ कोहिडुर्जनजोछन्॥ काटभनिभन्नलाग्णा॥ धर्मात्मारहेछभनिधानदिनन्भन्नानिमित्तछ
लगरिधानाकोउपायगर्नाधूर्तहोभनिनिन्दागरिकोहिडुर्जनहेरुवोलनलाग्णा॥ ३७॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १२४ ॥

पैसासकिनाले भाफा स्त्रीपुत्र अरु जो कोहिना तारहे रुले छोडियाको ॥ भिक्षादृष्टिले जिउनाको उपाय लिरायेछ ॥ अहो भाश्वर्य
देव २ वडो वलियो ॥ मानुष पर्वत रुजि धैर्य ले युक्त भैरहेछ भनिको हि भन्न लाग्ना ॥ ३८ ॥ नबोलिषान मिलछ भन्ना निश्चय
भयाको छंदो ॥ नबोलिकन वकुलार्जुन गिरि कार्य सिद्धि गर्छ भनिको हि भन्छन् ॥ कोहि ठट्टा गर्छन् कोहि अधो वायु क
न मुख मालगाई दिन्छन् ॥ ३९ ॥ वां धिनेल हालि रुले लषाना माहालदा भया भुया मैना रुजि गिरि वां धनु छोडनु गर्न ला
ग्ना ॥ हेउछु व सलै प्रकारका उर्जन हेरुले दियाका डः खको भयो ॥ देह मा भयाका ज्वरा दिउः खको भयो ॥ देवले पायाको

क्षिपन्त्येकः वज्रान्न स्रष्टु धर्म ध्वजः शटः ॥ क्षीरा विन्न इमां वृत्तिं मृही स्वजनो जितः ॥ अहो एष महासा
रोध तिमान् गिरिराडिवः ॥ ३८ ॥ मौनेन साधयत्पथं वकवत् दृढ निश्चयः ॥ इत्येकं विहसं सेनमैके दुर्वान् पतिव ॥ ३९ ॥
तं वं बंधु निरुरुधुर्यथा क्रीडनं कंदिजम् ॥ एवं स भौतिक दुःखं दैविकं दैहिकं च यत् ॥ ४० ॥ भोक्तव्यमात्मनो दि
ष्टं प्राप्नोति मनुष्यतः ॥ परिभूत इमां गाथां मगायत नराधमैः ॥ पातयद्भिस्त्वधर्मस्थो धृतिमास्थाय सात्विकी
म् ॥ ४१ ॥ द्विज उवाच ॥ नायं जनो मे सुख दुःख हेतुन देवतात्मा ग्रह कर्म कालाः ॥

चितोता तो सहनु दुःख भयो ॥ ईस वै दुःख कन मैले भवश्य भोग गर्नु पर्ना ॥ देवले पायाको दुःख भनि मान्दो भयो ॥ दुर्जन प्रा
णि हेरुले ॥ धर्म देष्टि गिराउन बो जियाको पनि ॥ आश्रु धर्म न छोडि ॥ सात्विकि धैर्य मारहि मन जिति ॥ यो पछि कहिन्ना
भिष्टु गीत भनिक हि याका गाथा कन भिक्षु जो छ ॥ कहन लाग्दो भयो ॥ ४१ ॥ यो अष्टादश श्लोकी गाथा कन भन्छ ॥ यो जन
जो छ ॥ मेरा सुख दुःख को करण छैन ॥ देवता पनि सुख दुःख का कारण छैन ॥ आत्मा पनि सुख दुःख को कारण छैन ॥ ग्रह हेरु

॥ राम ॥
॥ १२४ ॥

भयाः कर्मभया कालभयोऽस वै कुराजो छन्दः सुखदुःखकाकारणं छन्दः सुखदुःखकोकारणं जो छन्दः केवलमनभंनिकहंछन्दः ॥
जो मनले संसाररूपी चक्रमा घुमाउं दछ ॥ मनैले सुन्दर भन्ना सलो अर्थ भयाको ॥ मनसा हव पश्यति मनसा भृगोति न्यादिवे
दपनिछ ॥ तस्कारण सुखदुःखकोकारणं जो छन्दः मनछ ॥ ४२ ॥ यो मनले कसो गरि संसारमा घुमाउं दछ भन्ना सुन ॥ भनिआ
फै मनमा भन्छ ॥ हे मन अति वलियो भयाको यो मन जो छन्दः मनैछ ॥ सत्वरजतमो गुणका वृत्तिको सृष्टि गर्दछ ॥ ताहा प्रा
तिनै गुण देषि न ज्ञा गुण छन्दः तसै भिन्न भिन्न भयाका ॥ राजसः तामसः सात्विक स्वभावले गयाका कर्म हुन्छन् ॥ ताहा प्रा
नः ज्ञा कर्म हुन्छन् ॥ तसै कर्म अनुसारि देवताः मनुष्यः पशुपक्षिको यो निर्हुन्छ ॥ ४३ ॥ उसो भन्ना मनलाई संसार होला आत्मा

मनः परकारणमा मनैति संसारचक्रं परिवर्तयेद्यत् ॥ ४२ ॥ मनो गुणान्वै सृजते बलीयस्ततश्च कर्माणि विलक्षणा
नि ॥ शुक्लानि कृष्णान्यथ लोहितानि तेभ्यः सवर्णाः सृजन्ते भवन्ति ॥ ४३ ॥ अमीहमात्मा मनसा समीहता हीराम

लाइ हवैन भनि ॥ सलो शंका गरि भन्छन् ॥ हे मन आत्मा जो छन्दः चेष्टाले हीनछ ॥ सलो आत्मा कन अविद्या ॥ यो मत्स
ले गरि मनका सुखदुःख आदि गयाका धर्म कन लगाउनाले संसार हुन्छ ॥ स्वभावले हुदैन् ॥ तस्कारणले मनले हीन
भयाकाई श्वर कन संसार छन्दः ॥ मनले सहीत भयाका जीव कनछ ॥ नाना चेष्टा गर्ना मनले ॥ संगनियंता भै रयाको
पनि परमात्मा जो छन्दः ॥ मनका कार्यका संगले हीनछ ॥ तस्कारण विद्याशक्ति मुख्य भयाको परमात्मा छ ॥ मंजीवको नि
यंताछ ॥ ससै कारणा अखण्ड नले देख्छ ॥ परंतु मंजीव जो छ ॥ मलाई संसार देखाई दिन्ना सलो मन कन मरो भनि
लि सृष्टि गरियाका ॥ गुणका वृत्तिका कर्मले वद्ध भयाको छ ॥ अथवा गुणका संगरि विषयको सेवा गर्ना मजो छुव

॥ भा. ८ ॥
॥ १२५ ॥

मनकन जित्वा को छ भया. अरु कुरा सवै सार्थ कहं छन ॥ मन जित्वा को छैन भया ॥ अरु कुरा सवै व्यर्थ छन भनि देवा उं छन
दान भयो नित्य नै मित्रिक कर्म भया ॥ नियम भया ॥ यम भया ॥ शास्त्र सुनु भयो ॥ सका दशी आदि गया का व्रत भया ॥ अरु जो को
हि कर्म भया ॥ इस वै उपाय हेरु जो छन ॥ मन जित्वा को भया फल कन दिछन ॥ जित्वा को छैन भया व्यर्थ छन ॥ तस्कार राम न
कन जित्वा जो छ दुला योग भेनि कहि छ ॥ जानय निठुलो तहि कहि छ ॥ ४५ ॥ सस्कार राजस्का मन वज्रि विराष्या को छ अति
शान्त भया को छ ॥ ते लाले को न दाना दि कर्म कन गर्न पछ भन भनि ॥ भर्का लाई भन्दा रुजि आ फेलाई भन्दा भया ॥ अति च

खडिचे छे ॥ मनः स्वलिङ्गं परिश्रुत्य कामान्नुषन्निवद्धो गुणसंगतो सौ ॥ ४४ ॥ दानं स्वधर्मो नियमो यमश्च
तंच कर्माणि च सद्गुणानि ॥ सर्वे मनो निग्रह लक्षणान्नाः परो ह्ययोगो मनसः समाधिः ॥ ४५ ॥ समाहितं यस्य म
नः प्रशान्तं दानादिभिः किं वदतस्य कृत्यम् ॥ असंयत यस्य मनो विनम्य दानादिभिश्चेदपरकिमेभिः ॥ ४६ ॥
मनो वशे न्येह भवं स्मदेवामनश्च नान्यस्य वशं समेति ॥ भीष्मो हि देवः सहस्रसह्यान् युञ्जाद्वशं तं सहि देवदेव ॥

चल भया जस्को मन जित्वा को छैन ॥ ते लालाई दाना दि हेरु ले गरि ॥ कौन काम सिद्ध हुं छ ॥ कौनै काम सिद्ध हुदै न ॥ ४६ ॥
दाना दि कमी ले गरि ॥ अरु इन्द्रिय जित्वा जो जन छ भया पनि ॥ त्यो कुरो पनि व्यर्थ छ ॥ मन वश माछ भया ॥ अरु
इन्द्रिय जो छन ॥ वश मार हं छन मन जो छ ॥ अरु इन्द्रिय का वश माय दैन ॥ वडा वलिया मा थिको पनि वलियो भया को
योगी हेरु लाई पनि ॥ भय कन गर्ना सस्का मन कन ॥ जो प्राणि वश गर्ना कन सक छ ॥ जो प्राणि जो छ ॥ सवै इन्द्रिय कन जित्
वा कहि छ ॥ दोस्रो कहि नैन ॥ ४७ ॥

॥ रा. ८ ॥
॥ १२५ ॥

सहिनसकनाछन् रागादिवेगजस्का मर्मकनडुःखदिन्या ॥ एसाजितिनसकनामनरूपीशत्रुकन नजितिकन जोकोहिप्राणिहेरुजो
छन् ॥ अरुप्राणिहेरुसंग घटियाविरोधकनगछन् ॥ कसैकनमित्रभंछन् कनशत्रुभंछन् तिवडासुखहुन् ॥ ४८ ॥ मनलेकल्पनामा
त्रगरियाकासुखदेहकनमेरोभन्नाले ॥ पुत्रादिदेहकनपनिमेरोभनिममतागर्नाले ॥ अहंकारगर्नाले अंधबुद्धिभयाकामनुष्य
हेरुजोछन् ॥ योमदेषिभिन्नहोभन्याभानिलेगरि ॥ वडाडुःखलेपनिपारहोईनसकिन्या संसारविषेघुसुदैरहंछन् ॥ ४९ ॥ ए
साप्रकारलेसुखडुःखकोकारणजोछ मन्छभन्यार ॥ जनदेवताग्रहकर्मआदिगयाकाछओटाजोछन् सुखडुःखकाकारण

तडुर्जयंशत्रुमसखवेगमरुंतदतंनविजित्यकेचित् ॥ कुर्वन्त्यसद्विग्रहमत्रमर्त्येर्मित्राणपुदासीनरिपूनुविमूढा
॥ ४८ ॥ देहमनोमात्रमिमं गृहीत्वा ममाहमित्यन्वधियोमनुष्याः ॥ एषोहमन्योयमितिभ्रमेणदुरंतपारतमसि
भ्रमंति ॥ ४९ ॥ जनसुहेतुः सुखडुःखयोश्चेत्किमात्मनस्तत्रहिभौमयोरुत ॥ जिह्वाक्कचिद्वशतिस्वदद्भिस्तदे
दनायाकतमायकुप्येत ॥ ५० ॥

छैनन्भनिकहनलाग्नाहेमनयोमन्जोछ सोहिसुखडुःखकोकारणछभंछौभन्यासुखडुःखकोआधारभयाको कर्म
नहुनालेसुखडुःखगराउन्याक्रियाकोआश्रयभयाको कर्तानिहुनालेगयाकोसुखडुःखआत्मालाईकाछकेहिछैन ॥ जन
लेडुःखसुखदिन्छभंन्यापक्षविषेपनि ॥ मूर्तिलेहीनभयाका क्रियालेहीनभयाकाआत्माकाहननक्रियाकोकर्ताकर्मकेहि
नहुनाले ॥ आत्मालाईरहिछन् त्योसुखडुःखदेहविषेछभन्यापनिडुःखजोछ ॥ आत्मैविषेतभयोभन्याडुःखदिन्यारः डुःख
पाउन्याशरीरकोपरमात्मासकैहुनाले कसछेउरीसगर्नुभनिआफैदृष्टान्तलेभन्नलाग्ना ॥ हेमन कैलेआकैदातलेआ

॥ भा. ॥
॥ १२६ ॥

कैजिभ्रोहोकिछन्. त्यो जिभ्रामाउः खहुदा. कसछेउरीसगर्नु ॥ ५० ॥ उः खकोकारणादेवताछ भन्नापक्षमापनि. आत्मालाईके
हिछैन. त्यो देवतालेदियाकोउः खजोछ विकारकनहुन्यादेवतालाईछ. हातलेसुखमाठरायो. सुखलेहातमाठको भन्ना. त्यो
उः खजोछ. हातकार. सुखका अधिष्ठाताभयाका. अग्नीर. इन्द्रलाईछ. क्रियानुभयाका. अहंकारनभयाका आत्मालाईछैन
देवताहेरुभन्नासवैदेहमारुकेहुनाले. कोधगर्नाकोविषयकोहिछैन. आफैदेहविषे. आफैअंरालेलागामा. प्राणिलेक

उषस्पहेतुर्यदीदेवतासुकिमात्मनस्तत्रविकारयोस्तत् ॥ यदंगमंगेननिहंन्यतेक
चिक्रुधेतकस्मैपुरुषः स्वदेहे ॥ ५१ ॥ आत्मायदिस्थात्सुखदुःखहेतुः किमन्यतस्त
त्रनिजस्वभावः ॥ नह्यात्मनोऽन्यशदितत्सृष्टास्याकृष्टेतकस्मान्नसुखंनदुःखम् ॥ ५२ ॥

सगर्नु ॥ ५१ ॥ सुखदुःखकोकारणाआत्माछ भन्नापक्षमापनि. अरुदेविष्याछ केहिछैन. कस्काउपरिसगर्नु. त्योआकै
स्वभावहो. आत्मालाईसुखदुःखहुजोछ. अर्कादेविहुन्छ. किनअर्काकाउपरिसगर्नुभन्ना. आत्मादेविभिन्नकेहि
छैन. छ भन्नाकिनदेविदेन. देविष्याकोपनि. डोरिमासर्पदेविष्यारुजिभ्रांतिलेदेविष्याकोहो. तसुअर्थकसछेउरीस
गर्नु ॥ तस्कारणाआत्माकासुखदुःखकेहिछैन ॥ सुखदुःखकोकारणापनिकेहिछैन ॥ ५२ ॥

॥ राम ॥
॥ १२६ ॥

आदिनादिनवग्रहजोछनसुखडुःखकाकारणछन॥भन्यापक्षमापनिआत्मालाईकाछकेहिछैनजस्कारणादेहजन्मलयदे
विन्द॥१२॥मेषआदिगयाकाद्वादशराशिमारखाकाग्रहजोछनसुखडुःखकानिमित्तहुन्छन॥अर्कोपनिकुराछक्याभन्याअंत
तरिक्षमारखाकाग्रहलेग्रहकोपीडाहुन्छभनिजोतिषिभन्छन॥ग्रहमाभयाकोपीडांजोछ॥तैग्रहभयाकालग्रमाउत्पन्नभया
कोदेहकनहुन्छ॥जस्कारणादेहदेविग्रहदेविपुरुषजोछभिन्नैछ॥कसछैउकोधगर्त॥१३॥सुखडुःखदिनाकर्मछभन्याप
निआत्मालाईकाछकोहिछैन॥सुखकर्मैछैनकसोगरिकर्मजोछसुखडुःखमाकारणहोला॥जस्कारणाएकैवसुमाजउ

ग्रहानिमित्तसुखडुःखयोश्चेत्किमात्मनोजस्यजनस्यतेवै॥ग्रहैग्रहस्यैववदंतिपीडांकुद्धेतकस्मैपुरुषस्ततो
न्य॥१३॥कर्माहुहेःसुसुखडुःखयोर्वैकिमात्मनस्तद्विजडाजडत्वे॥देहस्तचित्पुरुषोयंसुवर्गाःकुद्धेतकस्मै
नहिकर्ममूलम्॥१४॥कालहुहेतुःसुखडुःखयोश्चेत्किमात्मनस्तत्रतदात्मकोसौ॥नाग्रेहितापोनहिमस्य
॥तस्याकुद्धेतकस्मैनपरस्यद्वंद्वं॥

जउभयाकाकर्महुन्छ॥देहजोछकार्यमाप्रवृत्तहुनसक्तैनरूपजोछभुञ्जतान
स्वरूपछ॥एस्कारणाकस्कोउपरकोधगर्त॥सुखसुखडुःखकोकारणभयाकोकर्मछैन॥१४॥सुखडुःखकोहेतुजो
छ॥कालछभन्यापक्षमापनिआत्मालाईकाछकेहिछैन॥जस्कारणाआत्माकोअंशस्वरूपकालछआकाअंशस्वरूप
लाईआफुदेविपीडाहुदैन॥भन्याकुरामादृष्टान्नगरिभन्छन॥आगाकातापकातापकोनाशजोछआगालेहुदैनहिउका
चिसालेहिउकोअंशस्वरूपभयाकाउसाराकाविनुकोनाशगर्दैन॥तलैकसछैउरीसगर्तकालभन्याकोब्रह्मस्वरूपैहो
उसोभन्यातस्कासुखडुःखकेहिछैन॥१५॥

॥ भा ॥
॥ १३७ ॥

सत्ता प्रकारले जन आत्मा यह काल आदि गया काई छ जो छन ॥ सुख दुःख का कारण छन न भन्यार ॥ कैसे ले डः ख सुख को कार
रा जो छ ई छ देषि अकै के हि छ भन्या को हो ॥ तो कुरा पनिके हि छैन भनिक कहन लाग्य छैन भनिक कहन लाग्य ॥ पर भन्या पनिक पर भ
या का पर मात्मा लाई सुख दुःख दि संवंध जो क से संग के हि काल विषे हं छ ॥ त तो आत्मा का छैन छ भन्या पनिक अहंकार नि
मित्त हं छ ॥ परंतु सिद्धान्त ले गरि छैन भनि ॥ सत्ता वरु न्या प्राणि जो छ प्राणि देषि भयमान छैन ॥ ५६ ॥ मपनि पहिले का
वडा अपि हेरु ले गया का ॥ भगवान् चर रा कमल का से वाले गरि भया का ॥ स से प न्या का ॥ निर्विकल्प समाधिक न लिउं ला

न के न चित्ता पिक थं वना स्य द्द को परागः परतः परस्य ॥ यथा ह मः संसृति रूपिणः स्या देवं प्रबुद्धो न विभेति
भूतैः ॥ ५६ ॥ सतां समास्थाय परात्मनि द्या मध्या सिता पूर्वत मेर्महर्षिभिः ॥ अहं तारिष्यामि दुर्गत पारं त मे
सुकुंदाधिनिषेव यैव ॥ ५७ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ निर्विद्य नष्ट विगो गत क्लमः प्रवृज्य गाः पर्यटमान इत्थ
म् ॥ निराकृतो सद्गिरयिः स्वधर्मादकं पितो मुमु निराह गाथा म् ॥ ५८ ॥ सुख दुःख प्रदो नान्यः पुरुष स्यात्मा
विभ्रमः ॥ मित्रो दासी न रिपवः संसारस्तमसः कृतः ॥ ५९ ॥

॥ सुख दुःख ले पनित रिन सत्ता संसार कनत
संला भनि वासना ले निश्चय कन गया ॥ ५७ ॥ हे उद्धव भनिक कहन जो छन आता ग छन ॥ तो बाल रा जो छ सत्ता प्रकार सित
प्रवना शिना ले वैराग्य वारि संन्यास लिष्ट धि वी मा छु मो छंदो ॥ दुर्जन ले वहु तै डः ख दिया को पनि ॥ आत्मा धर्म कन न छो
डि भिक्षु जो छ ॥ स से गीता कन पाउ दो भयो ॥ ५८ ॥ पुरुष का सुख दुःख दि न्या अर्को छैन ॥ आत्मे मन को भ्राति मात्र छ मित्र
शत्रु उदासी न भनु भयो ॥ स सुख श्व संसार भयो ॥ सबै अज्ञान ले मात्र छ सांचो छैन ॥ ५९ ॥

॥ राम ॥
॥ १३७ ॥

तस्कारणहेउद्धवसवप्रकारलेगरि.मेंविषेनिर्विकल्पसमाधिलाग्नकीबुद्धिलेगरि.मनकनजितिरहोभन्यायोगभन्याकोरुत्रिहो
॥६९॥हेउद्धव.मनकनजितनसकन्यालेपनि.सकाग्रचित्रगरि.भिक्षुलेगाईयाका.ससैभिक्षुगीताकन.धारणगर्भ.सुलु.सुना
उनुगेर्याप्राणिपनि.सुखदुःखादिलेगरि.घोरभवसागरकनपाउदैभनि.कर्मलेउद्धवकनआज्ञागर्भभया.॥६९॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेभाषाटीकायात्रयोविंशोऽध्यायः.॥२३॥अवभगवानुजोछन्.द्वितीयपरमात्मा
देविमायालेगरि.प्रकृतिपुरुषकाद्वारालेगरि.यासवैदेतप्रपंचजोछउत्पन्नहुंछ.फेरितेसैपरमात्माविषेलीनहुं

तस्मात्सर्वात्मनातातनिगृह्णाणमनो धिया.मर्यादेसितथायुक्तस्त्वावाचयोगसंयतः.॥६०॥यस्मांभि
क्षुरागीतां ब्रह्मनिष्ठां समाहितः.धारयन्मुखावयन्मूलावन्दन् नैवाभिभूयते.॥६१॥इतिश्रीभागवतेम
हापुराणेएकादशस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः.॥२३॥श्रीभगवानुवाच.अथतेसंप्रवक्ष्यामि सांख्यं पूर्ववि
निश्चितम्.यदिज्ञायपुमानसद्योजह्याद्वैकल्यिकं भ्रमम्.॥१॥

छ.फेरितेसैपरमात्माविषेलीनहुंछभनि.सलोमनमाविचारराष्याप्राणिका.योदेतप्रपंचकोभ्रान्तिजोछ.नि
वृत्तहुंछभनिकनसौख्यकनआज्ञागर्भलाग्या.अवउपान्तहेउद्धव.निमिलाईपहिलेका.कपिलादिगयाकासिद्ध
हेरुलेनिश्चयगरिकन.कहियाकासांख्यज्ञानकनवताउला.जौनसांख्यज्ञानजानिकन.उसैक्षरामा.पुरुषजोछ
मेभेदगरिभयाकासुखदुःखआदिगयाकाभ्रान्तिकनछोउद्दछ.॥१॥

॥ भा. ए. ॥
॥ १२८ ॥

हे उद्धव पहिले प्रलय काल का समय विषे. यो सवै देखा देषि न्या प्रपंच जगत् जो छ. भेद ले हीन भै सकै वल विषे लीन भया को धि
यो. सत्य युग मापनि सत्ते थियो अरु काल मापनि. जै ले विवेक ले युक्त भया का प्राणि हुं छन. तै ले पनि भेद ले हीन भया को सकै
वल मात्र देषिं छ. २ ॥ हे उद्धव सत्य स्वरूप भया को. मन को वच को गोचर न भया को. केवल भेद ले हीन भया को. सत्तो तो व
ह जो छ. माया को फल रूप भया को. दृश्य प्रकाश स्वरूप ले गरि. अथवा माया का विलास रूप ले गरि. दुई रूप कन दु दो भयो
ति दुई रूप का बीच विषे. जगत् को कारण स्वरूप भया की. प्रकृति जो छ. सक रूप कहिं छे. ज्ञान जो छ. दो सो रूप कहिं छ. सो हि पु

आसी ज्ञान मथो अर्थ सक मेवा विकल्पितम्. यदा विवेक निपुणा आदौ कृत युगे इ युगे. २ ॥ तन्माया फल रूपे
रा केवल निर्विकल्पितम्. वाङ्मनो गोचर सत्यं द्विधा समभवद्ब्रह्म. ३ ॥ तयोरेक तरो ह्यर्थ प्रकृतिः सो भया
त्तिका ज्ञान त्वन्यतमो भावः पुरुषः सो भिधीयते. ४ ॥ तमोरजः सत्वमिति प्रकृतेरभवत्तु गुणाः. मया प्रक्षोभ्य
माणा या पुरुषा नुमते न च. ५ ॥ तेभ्यः समभवत्सूत्रं महान् सूत्रेण संयुतः. ततो विकुर्वतो जातो यो हंकारो
॥ विमोहन ॥ ६ ॥

रुष हो. ४ ॥ परमेश्वर लेशो भगरिया की पुरुष ले हेरी या को. सत्ति प्रकृति देषि. सत्वर जतम.
इति न गुण जो छन प्रकट हु दा भया. ५ ॥ तनै गुण देषि क्रिया शक्तिले युक्त भया को सूत्र जो छ. पहिले विकार हु दो भ
यो. ताहा प्रात ज्ञान शक्तिले युक्त भया को महत्तत्त्व हु दो भयो. महत्तत्त्व जो छ. सो हि पहिले विकार हो. दो सो विकार हो भ
नि किन भंछो भन्या. तो महत्तत्त्व जो छ ज्ञान शक्ति क्रिया शक्ति ई दुई शक्ति भया को हुनाले. सूत्र ले सहित भया को सकै त
त्व हो. परंतु ज्ञान र. क्रिया ई दुई भिन्न हुनाले. सूत्र र महत्तत्त्व. दुइ तत्व भया की हो. परंतु महत्तत्त्व मा सूत्र को अन्त भाव ग
रि सकै महत्तत्त्व जानु. सूत्र लाई थपि दुई तत्व न जानु. ६ ॥

॥ राम ॥
॥ १२८ ॥

विकारकनहुनातेसैमहत्तदेविनीवकनभ्रात्रिगर्भाहंकारजोछुत्पन्नहुदोभयो॥रूपरसादितन्मात्राभया॥इन्द्रियकाअधि
ष्टातादेवताभया॥इसवैकोकारणभयाको॥चित्स्वरूपभयाकोजीवकोउपाधिभयाको॥सात्विकराजसतामस॥सस्ताईती
नप्रकारकोअहंकारजोछुत्पन्नहुदोभया॥७॥हेउद्धवतामसअहंकारकीद्वारगरिशब्दादितन्मात्रादेवि॥पृथिवी
आग्नेजवायुआकाशइपंचमहाभूतउत्पन्नहुदाभया॥राजसअहंकारदेवि॥दशइन्द्रियहुदाभया॥सात्विकअ

वैकारिकलैजसश्चतामसश्चहंविदत्॥तन्मात्रेन्द्रियमनसांकारांचिदचिन्मयः॥७॥अर्थसन्मा
त्रिकाज्ज्ञेतामसादिन्द्रियाणिच॥तैजसाद्धेवताआसनेकादशचवैकृतात्॥८॥मयासंवोदिताभावाः
सर्वेसंहृत्यकारिणः॥अणुमुत्पादयामासुर्ममायतनमुन्नमम्॥९॥तस्मिन्हंसमभवमरोऽसलि
लसंस्थितौ॥ममनाभ्यामभूत्यप्रविश्याख्यतत्रचात्मभू॥१०॥

हंकारदेवि॥इन्द्रियकाअधिष्टाताभयाकादिशा॥वायुसूर्यवरूणाअश्विनीकुमारअग्निइन्द्रउपेन्द्रमित्रब्रह्माचन्द्र
मा॥सतिस्यारदेवताहुदाभया॥मनपनिहुदोभयो॥हेउद्धवमैलेसृष्टिगर्भकनलगाईयाका॥महाभूतआदिगयाका
इसवैरुद्राभै॥वैराजपुरुषकोअंतयाकामेरोअतिउन्नमआश्रमभयाकोअणुकनउत्पन्नगर्दाभया॥९॥तोअ
णुजोछजलविषेरह्याविषे॥नारायणस्वरूपभयाकोमजोछु॥तेसैअणुमावस्याकोधिजा॥सस्तामेरानाभिदेवि
सवैलोककोकारणभयाकोकमलजोछुहुदोभयो॥तेसैकलविषेचारमुखभयाकाब्रह्माहुदा॥रजोगुणालेउक्त

॥ भा. प. ॥
॥ १२८ ॥

भयाकातिवृत्ताजोछन् ॥ मेरा रूपाले आकाशतपस्याकावलले गरिलोकपालदवताले सहित भयाका भूलोककनभयो ॥ अंतरिक्ष
लोककनभयो ॥ महज्जन आदिगया कालोकले सहित भयाका स्वर्गलोककनभयो ॥ सत्सै ईति नृप्रकारको लोक हेरुको सृष्टि
कनगर्दाभया ॥ ११ ॥ स्वर्गलोकजोछ देवताको वरुणा जगाहु दो भयो ॥ अंतरिक्षलोकजोछ भूत हेरुको वरुणा जगाहु दो
भयो ॥ भूलोकजोछ मनुष्य आदिगया का प्राणि हेरुको वरुणा जगाहु दो भयो ॥ महज्जन आदिगया कालोकजोछन् सि

सोसृजन्नपसायुक्ते रजसामदनुग्रहात् ॥ लोकान् सपालान् विश्वात्मा भूभुवः स्वरिति त्रिधाः ॥ ११ ॥
देवानामोकभासीत्सु भूतानां च भुवः पदम् ॥ मर्त्यादीनां च भूलोकः सिद्धानां त्रितयात्परम् ॥ १२ ॥
अधोसुराणां नागानां भूमौ रोको सृजत्प्रभुः ॥ त्रिलोकां गतयः सर्वा कर्मणा त्रिगुणात्मनाम् ॥ १३ ॥
योगस्य तपसश्चैव नान्यस्य गतयो मलाः ॥ महर्जनस्तपः सत्यं भक्तियोगस्य मङ्गतिः ॥ १४ ॥
मया कालात्मना धात्रा कर्म युक्तमिदं जगत् ॥ गुणप्रवाहयतस्मिन्नुन्मज्जति निमज्जति ॥ १५ ॥

छ हेरुका वरुणाहु दाभया ॥ १२ ॥ भूमिदेवि उधोका अतलादिलोकजोछन् ॥ असुर हेरु नाग हेरु लाई वरुणा निमित्त वरुणा
ले सृष्टि गया ॥ पाताल आदि गया कालोकले सहित भयाका तिन लोक विषे ॥ सात्विक राजस ताजस इति नै गुणाका
सवै कर्मको गति छ ॥ १३ ॥ योगको तपस्याको संन्यासको अति निर्मल गति जो छ महर्जन तप सत्य आदि गया कालो
क सम्पुष्ट भनियोगको वैकुण्ठ लोक गति छ ॥ १४ ॥ मेरा भक्तियोगले भयाको वैकुण्ठ रूप गति देवि भिन्न रूगति

॥ राम ॥
॥ १२८ ॥

सर्वैचंचलछन्मनिवैराग्यहवसुभन्नानिमित्तकेहंछन्। कर्मकोफलदिग्गकालदिग्गकालशक्तिभयाकापरमेश्वरलेआ
आफ्राआफ्राकर्मलेयुक्तभयाकोयोजगत्तजोछ॥ गुणाकोप्रवाहभयाकासुसंसारविषे॥ सत्यलोकसम्मकाउत्तमगति
कनपाउदछ॥ स्थावरादिनीचजोनिकनपनियाउंदछ॥ १५॥ सांनुदुलोदुबुलोमोरोइत्यादिजन्निपदार्थछ॥ त्सोसर्वे
प्रकृतिपुरुषलेयुक्तभयाकोछ॥ १६॥ जौनकार्यकोजोआदिकारणछ॥ लयपनिजस्यहुंछ॥ मध्यमअवस्थापनिजो
छ॥ सत्त्वगुणहिहोअर्कोहोईन॥ उसोभन्नारुदाकार्यकोसृष्टिकिनगयाकोहोभन्ना॥ जसैसुवर्गाकाकडाकुरालन

अराउहृत्कशस्थूलोयोयोभावःप्रसिध्यति॥ सर्वोद्यभयंसंयुक्तःप्रकृत्यापुरुषेणच॥ १६॥
यस्तुयस्यादिरतश्चसर्वैमध्यंचतस्यतत्॥ विकारोव्यवहारार्थोयथातैजसवार्थिवा॥ १७॥
यदुपादायपूर्वस्तुभावेविकुरुतेपरम्॥ आदिरंतोयदायस्यतत्सत्यमभिधीयतेः॥ १८॥
मकृतिर्ह्यसोपादानमाधारःपुरुषःपरः॥ सतोभिव्यञ्जकःकालोब्रह्मतत्रियंत्वहम्॥ १९॥

थमाटाकागायोभुङ्कोभनिव्यवहारगरियाकारुदाछन्॥ सुवर्गाभयोसाचोछन्तसैब्रह्मजोछ॥ योसर्वैजगत्
रुदोछभनिजानुपरन्तुव्यवहारनिमित्तमात्रछ॥ १७॥ जौनवस्तुकनकारणरूपलेलिकन॥ आफ्रकारणभयाको
महत्तत्वजोछ॥ अहंकारादिकार्यकोसृष्टिगर्छ॥ जसैमाटाकोपिराटजोछ॥ माटोकारणालिकन॥ आफ्रकारण
भैघटरूपकार्यकनवनाउंछ॥ जौनकार्यकोआदि॥ अंतपनिजोछ॥ त्योहिसोचोभनिकहिंछ॥ १८॥ कारण
स्वरूपभयाकाप्रकृतिपुरुषकालईभिन्नहुनाले॥ कसोगरिअद्वितीयब्रह्मसिद्धहुंछभन्नाछुन॥ हेउद्धवयो

॥ भा. ८ ॥
॥ १३० ॥

कार्यकी उपादानकारण भयाकी जो प्रकृति छ ॥ ते सै प्रकृति को आधार भया को जो पुरुष छ ॥ गुण को भगनाले जगत्को प्र-
काशगर्भ जो काल छ ॥ इति नै जो छन ॥ सै ब्रह्म ॥ प्रकृति जो छ मेरी शक्ति हो ॥ पुरुष काल भन्या मेरा अवस्था हुन ॥ एस
कारण भिन्न होई नन न भेद ॥ १८ ॥ ए सै प्रकार ले ॥ ति नै काल मा सके स्वरूप रहना ल ब्रह्म हो ॥ सां चो भनिक हनानि
मिन्न ॥ सृष्टि को कारण हुनाले ब्रह्म कन सां चो भन्या ॥ मध्यमावस्थामा पनि सा चो ब्रह्म हो भनि देवाई ॥ अंत्यमा सवे
को संहार हुदा मा पनिरहना ब्रह्म छ भनि ॥ सा चो देवा उना निमिन्न ॥ प्रवाह स्वरूप भया की स्थिति को अवधिकन क
ह छन ॥ हे उद्धव सुन ॥ जीव का भोग निमिन्न जाहा सम्म स्थिति रह छ ॥ ताहा सम्म परमेश्वर ल जाहां सम्म हे रिदिं

सर्ग प्रवर्तते तावत्पौर्वापर्येन मित्यशः ॥ महातु गुण विसर्गाथ स्थित्यंतो यावदीक्षणम् ॥ २० ॥
विराडमया सा शमानो लोक कल्प विकल्पक ॥ पंचत्वाय विशेषाय कल्पते भुवनैः सह ॥ २१ ॥
अत्रे प्रलीयते मर्त्यमन्त्रं धाना मलीयते ॥ धाना भूमौ प्रलीयते मूर्तिगंधे प्रलीयते ॥ २२ ॥

छन ॥ तां हों असम्म वीचमान दुटिकन ॥ पितृ पुत्रा रूप ले गरि ॥ दुलो भया को सृष्टि जो छ ॥ प्रवृत्त हुं छ ॥ २० ॥ एसा प्रका-
र ले सृष्टि कन भन्या ॥ प्रलय कन भ छन ॥ हे उद्धव ॥ काल स्वरूप भया का मै ले व्याप्ति गरिया कालो कका ॥ दिन दिन
नाना तरह की सृष्टि प्रलय कल्प ना गरिं छन ॥ जस्मा ए सो ब्रह्माण जो छ ॥ सो पनि चो ध भुवन ले सहित भौ ॥ पंच
महाभूत को एक रूप भया को छंदो ॥ पंच महाभूत छुटिनाले ना कन प्राप्ति हुं छ ॥ भनि प्रलय को प्रकार कहन लाग्या
॥ २१ ॥ हे उद्धव ॥ अन्न ले वद्या को शरीर जो छ ॥ शयन वर्ष सम्म जल दृष्टि न हुनाले ॥ अन्न स किया विषे ॥ अन्नै माली

॥ राम ॥
॥ १३० ॥

नहुंछ। अन्न जो छ जीवमात्र शेष रखा काधानामालीनहुंछ॥ धान जो छ नृ पृथिवीमालीनहुंछ नृ छयाकाउम्रदेन नृ॥ पृ
थिवी जो छ आकाशगंधगुणामालीनहुंछ॥ गंध जो छ जलै मालीनहुंछ जल जो छ आकुगुणारसमालीनहुंछ ज्योतिमा
रस जो छ लीनहुंछ ज्योछ रूपमालीनहुंछ॥ २३॥ रूप जो छ वायुमालीनहुंछ वायु जो छ स्पर्शमालीनहुंछ स्पर्श
जो छ आकाशमालीनहुंछ॥ तामस अहंकार ले या सगरिन्द्रो आकाश जो छ शब्दमालीनहुंछ॥ एते प्रकार ले ता

अमु प्रलीयते गंधमापश्चस्वगुणोरसे॥ लीयते ज्योतिषिरसो ज्योतीरूपे प्रलीयते॥ २३ ॥
रूपं वायौ सव स्पर्शं लीयते सोपि चामरे॥ अस्वरशब्दतन्मात्रे इन्द्रियाणि स्वयोन्यिषु॥ २४ ॥
योन्यि वैकारिके सोम्य लीयते मनसीश्वरे॥ शब्दो भूतादिर्मयेति भूतादिर्महती प्रभु॥ २५ ॥
सलीयते महान् स्वेषु गुणावन्नमः॥ तेव क्ते सं प्रलीयते तत्काले लीयते व्यय॥ २६ ॥

मस अहंकार्य को शब्द सम्प्रकाश लय कनक नभ न्यार॥ राजस अहंकार का कार्य का लय कनक नलाग्या॥ २४ ॥
इन्द्रिय हेरु को लीन जो छ आक्रे अष्टिष्ठाता देवता माहुंछ॥ तात्पर्य भन्या राजस अहंकार मालीनहुंछ॥ इ
न्द्रिय को भनि जान देवता को मन मालीनहुंछ॥ देवता ले सहित भया को मन जो छ सात्विक अहंकार मालीन
हुंछ॥ २५ ॥ अवतामस अहंकार को कार्य भया का शब्द कालय कनक हुंछ नृ हेउ छव शब्द जो छ तामस अहंकार मा
लीनहुंछ॥ सात्विक राजस तामस तिनै प्रकार को अहंकार जो छ महतत्व मालीनहुंछ॥ २६ ॥

॥ भा० ॥
॥ १३१ ॥

महत्तत्त्वजोछ आकुकाराभयाका गुणविषेलीनहुंछ ॥ गुणजोछ प्रकृतिमालीनहुंछन ॥ प्रकृतिजोछ कालमालीनहुं
छ ॥ कालजोछ मायाको प्रवृत्तिगर्णा ॥ अथवाज्ञानस्वरूपभयाका ॥ एतासवैकनजियाउन्ना ॥ महापुरुष जीवमालीनहुं
छ ॥ महापुरुषजीवजोछ जन्मनहुन्ना ॥ मन्त्रात्माविषेलीनहुंछ ॥ विश्वसंसारजसदेखिउत्पन्नहुंछ ॥ जस्मालीनहुंछ ॥ उ
पाधिलेहीनभयाकोआत्माजोछ ॥ अरुठाउंमालीनहुंदैन ॥ आफैआत्मस्वरूपमारयाकोपरिपुर्णसत्तरूपलेरहछ

कालोमायामयेनीवेजीवआत्मनिमयजे ॥ आत्माकेवलआत्मस्थोविकल्पायायलक्षणाः ॥ २३ ॥
कालोमायामन्वीक्षमास्यकथं वैकल्पिकोभ्रमः ॥ मनसोहृदि तिष्ठेत्तयोन्मीवाकोदयेनम ॥ २४ ॥ ए
वसांख्यविधिः प्रोक्तः संशयगृथिभेदन ॥ प्रतिलोमाउलोमाभ्यां परावरदृशामया ॥ २५ ॥
इति श्रीभागवते महापुराणे सादृशकादशस्कंधे भगवदुद्धवसंवादे चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॐ

एताविचारगर्णा पुरुषका मनमा भेदले गरिभ्रांतिजोछ ॥ कसो गरिहोलाभयाको ॥ पनिहृदयमा जलैसूर्यउदाया
पछि ॥ आकाशमा अंधकाररहदैन ॥ तलैकसो गरिरहला ॥ २६ ॥ सृष्टिसंहारकाक्रमले गरि ॥ मैरेसंदेहरूपीग्रंथिको
भेदनगर्णा ॥ एतायोसांख्यविधिजोछ ॥ वताजाभनिउद्धवकन ॥ श्रीकृष्णले ॥ आतागर्दाभया ॥ सोहिकथाकनभुकदेव
ले ॥ राजापरीक्षितकनवताउदाभया ॥ सूतलेसौनकअपिहेरुकनकहदाभयाः ॥ २७ ॥ इति श्रीभागवते महापुरा
णे सादृशकादशस्कंधे भाषाटीकायां चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

॥ राम ॥
॥ १३१ ॥

अवभगवान्कृष्णजोछन्प्रकृतिपुरुषकोविवेकज्ञानभयाकाप्राणिकापनि॥जाहासम्प्रयत्नलेगरिगुणाकाप्रवृत्तिकोज
यहुदैन्॥ताहासम्प्रसुरकुःखआदिगयाकाछन्दहराउदैन्म॥तस्मिन्निमित्ततिनगुणजित्नाकाउपायकनकहनाकन
गुणाकाप्रवृत्तिस्वभावकनकहंछन्॥हेउद्धव॥भिन्नभिन्नभयाकासत्त्वआदिगयाकागुणाकावीचविषेजौनरु
गालेजसोप्राणिहुंछ॥त्योकरासवैविस्तारसंगमकहंछुसुन॥१॥भनिसत्त्वकावृत्तिकनकहनलाग्वा॥शमभन्या
कोइन्द्रियजित्नुमनजित्नुसहनुविवेकगर्नुआक्राधर्ममारहनुसत्यमारहनुदयागर्नु॥अधिपछिकोमनमाभ

श्रीभगवानुवाच॥गुणानामसमिश्रीणांपुमान्येनयथाभवेत्॥तन्मेपुरुषवर्येदमुपधारयशंशतः
॥१॥शमोदमल्लितिक्षेक्षाःतपःसत्यंदयास्मृतिः॥तुष्टिरुत्यागोस्पृहाश्रद्धाहृदयादिसनिवृत्तिः॥२॥
कामर्इहामदस्तृष्णास्तंभआशीर्भिदासुखम्॥मदोत्तोहोयशःप्रीतिर्हास्यवीर्यवल्लोचनम्॥३॥को
धोलोभोनृतहिंसायाद्वादंभःक्लमःकलिःशोकमोहोविषादात्तीर्निद्रासाभिरनुयम्॥४॥

नुसंधानराशु॥जतिमित्योउत्तिमासन्तोषगर्नुदानगर्नुविषयमावैराग्यगर्नुश्रद्धागर्नुघटियाकर्मनगर्नुव्ययुशील
हुनुसवैमासोमेरहनुनम्ररहनुआफेमाप्रीतिगर्नु॥२॥रजोगुणाकावृत्तिकनलाग्वाकामव्यापारगर्नुतृष्णाठाशे
हुनुधनमिलसुभनिदेवताकोप्रार्थनागर्नुतेरोमेरोभेदगर्नुविषयभोगीहुनुमत्ततालेयुद्धमाआग्रहगर्नुगुफाप्री
तिस्तुतिहास्यप्रभाववललेउयमगर्नु॥३॥तमोगुणाकावृत्तिकनभंछन्॥कोधलोभरुदोगर्नुहिंसागर्नुमागनुद
म्भगर्नुश्रमगर्नुकलहगर्नुशोकगर्नुमोहगर्नुपीडातिद्राधनमिलसुभनिदुलोआशागर्नुदुर्मानुजहुताहुनु॥४॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १३२ ॥

सत्व. रज. तमो गुण काई वृत्ति हुन. क्रमैले मैले वता जा ॥ अवउ प्राप्ति. हेउ दुव. मिसिया को गुण कारति कन सुन. मंशान छुं मका
मिछु को धिछु भनु जो छ. मिसिया का वृत्ति कहिं छ. मन ले रूप रसादि विषय ले. इन्द्रिय ले. प्राण ले गरि भया को व्यवहार जो छ.
मिसिया का गुण को वृत्ति कहिं छ ॥ ६ ॥ धर्म विषे अर्थ विषे काम विषे. जैले पुरुष जो छला गछ. तैले मिसिया को गुण
कार्य जानु ॥ रसु गाले पुरुष को श्रद्धा. प्रीति धन हुं छ. भरु कराले हुं दैन ॥ ७ ॥ काम्य कर्म मा चित्त लगाउ न्या. गृहाश्रम मा

सत्व स्य रज सश्चैतात्मसश्चानुपूर्वशः ॥ वृत्तयो वर्णित प्रायाः सन्निपातमथो शृणु ॥ ५ ॥ सन्निपात
स्त्वहमिति ममेत्युद्धवयापतिः ॥ व्यवहारः सन्निपात्रो मनोमात्रेन्द्रियासुभिः ॥ ६ ॥ धर्मे चार्थे च कामे
च यदासौ परित्यजतः ॥ गुणानां सन्निकर्षो यश्च द्वारति धनावहः ॥ ७ ॥ प्रवृत्तिलक्षणे निष्ठापमा
यद्दिगृहाश्रमे ॥ स्वधर्मे चानुतिष्ठत गुणानां समितिर्हि सा ॥ ८ ॥ पुरुषं सत्वसंयुक्तमनुमीयाच्छ
मादिभिः ॥ कामादिमारजोयुक्तं क्रोधाद्यैस्तमसायुतम् ॥ ९ ॥ यदा भजति भां भक्त्या निरपेक्षेः स्वकर्म
॥ भिः ॥ तं सत्वकृतिविद्यात्पुरुषं स्त्रीयमेव च ॥ १० ॥

रहा को. आकाधर्म को अनुष्ठान कन गन्या जैले हुं छ. तै
ले पेनि मिसिया का गुण को वृत्ति भनि जानु ॥ ८ ॥ शमदमले युक्त छ भन्या. पुरुष कन सत्व गुण ले युक्त भया को भ
नि जानु ॥ कामादिले युक्त छ भन्या प्राणिकन. रजो गुण ले युक्त छ भनि जानु ॥ क्रोध ले युक्त छ भन्या. तमो गुण ले युक्त भया
को प्राणिरहे छ भनि जानु ॥ ९ ॥ फल को आसान गरि आका कर्म ले गरि भक्तिले सिभै. पुरुष भयो. मेरो भजन गछ न भन्या सत्व

गुण को प्रकृति भया को भनि जानु ॥ १० ॥

॥ १३२ ॥

जैहै फल को भासा गरि आका कर्म ले परो पूजा गछ ॥ तपो प्राणि जो छ रजोगुण को प्रकृति भया को भनि जानु ॥ भर्का को हिंसा
को संकल्प गरि जो मेरो पूजा गछ तपो प्राणि तमो गुण को प्रकृति भया को रहे छ भनि जानु ॥ ११ ॥ जीव को रत मो को न गुण ले
गरि भद छ र ॥ सेवा गर्ना जीव सेवा गरि न्याति मि ॥ यो कुरा कसो गरि हुं छ भन्ना सुन ॥ जीव को उपाधि भया का चित्त मा प्र
काश भया का सत्व रज तम ई गुण हेरु जो छ न जीव का हुन मेरा होई न न ॥ जो न गुण ले गरि देह हेरु मा आशक्ति गर्ना
प्राणि हेरु जो छ ॥ संसार मा वद्ध हुं छ ॥ १२ ॥ रजोगुण तमो गुण कन जिति ॥ सत्व गुण जो छ ठै रै भै रहं छ ॥ तपो प्राणि

यदा आशिष आसा स्पमां यजेत स्व कर्मभिः ॥ तं रजः प्रकृति विद्या द्विंसां माशा स्यताम सम ॥ ११ ॥ सत्व
रज तम इति गुणा जीव स्य नैव मे ॥ चित्त जो ये सुभूतानां सज्जमानो निवध्यते ॥ १२ ॥ यदेतरो जयेत सत्व
भास्वरं विशदं शिवम् ॥ तदा सुखेन पुज्येत धर्मज्ञानादिभिः पुमान् ॥ १३ ॥ यदा जयेत मः सत्त्वं रजः
संगं भिदावलम् ॥ तदा दुःखेन पुज्येत कर्मणा यशसा श्रिया ॥ १४ ॥ यदा जयेदजः सत्त्वं तमो मूलं लयं
जडम् ॥ पुज्येत शोक मोहाभ्यां निद्रया हि सयाशया ॥ १५ ॥

॥ तपो प्राणि जो छ धर्मज्ञान सुख ले गरि युक्त
हुं छ ॥ १३ ॥ संग को हेतु भया को भेद को हेतु भया को प्रकृति स्वभाव भया को रजोगुण जो छ तमो गुण सत्व गुण कन
न जैहै जित्छ ॥ तपो प्राणि जो छ दुःख ले कर्म ले यश ले ऐश्वर्य ले युक्त हुं छ ॥ १४ ॥ विवेक न भया का तमो गुण ले ज
व सत्व गुण रजोगुण कन जित्छ ॥ तपो प्राणि जो छ शोक मोह निद्रा हिंसा आशा आलस्य ले गरि युक्त हुं छ ॥ १५ ॥

॥ भा. ॥
॥ १३३ ॥

जस्कोचित्रनिर्मलछः इन्द्रियपनिशांतछन् देहमाभयछैन ॥ मनलेसंगकसैकोगदै नभया ॥ मलाइचिन्हास्थानभयाको स
त्वगुणावद्याकोहोभनिजान ॥ हेउछव ॥ १६ ॥ कर्मलेगरिविकारकनजोपाउछ ॥ मनमासंतापजोगछ ॥ बुद्धिइन्द्रियहे
रुजस्काशान्नछैनन् ॥ कर्मैन्द्रियहेरूपनिजस्कास्वस्थछैनन् ॥ जस्कोमनचंचलछ ॥ सन्निकुराजोछन् ॥ हेउछव
रजोगुणावद्यामाहुंछन्भनिजान् ॥ १७ ॥ सीदायमानहुदोचेतषजिचिराश्रनसक्ताचित्रजोछलीनहुंछ ॥ संक
ल्पगर्भामनपनिलीनहुंछ ॥ अज्ञानहुंछ ॥ विविस्मातहुंछभया ॥ तमोगुणावद्याकोभनिजान ॥ १८ ॥ सत्वगुणाव

यदाचित्रप्रसीदेतइन्द्रियाणांचनिर्वृतिः ॥ देहेभयंमनोसंगंतसत्त्वंविद्धिमत्पदम् ॥ १६ ॥ विकुर्वन्कि
ययाचाधिरनिर्वृतिश्चचेतसाम् ॥ गात्रास्वास्थ्यंमनोभ्रांतरजस्तैर्निशामय ॥ १७ ॥ सीदत्तचित्रं विली
येतचेतसोग्रहणोक्षमम् ॥ मनोनष्टंमनोऽलानिस्तमस्तदुपधारयः ॥ १८ ॥ सधमानेगुरोसत्वेदेवानांव
लमेधते ॥ असुराणावरजसितमस्पृश्वरक्षसाम् ॥ १९ ॥ सत्वाज्जागरांविशाद्रजसास्वप्नमादिशन्
॥ प्रस्थापतमसाजन्तोऽमुरीयत्रिषुसंततम् ॥ २० ॥ उपर्युपरिगच्छंतिसत्त्वनब्राह्मणाजनाः ॥ तससाधो
धआसुराद्रजसान्नरचारिणः ॥ २१ ॥

॥ ब्रामादेवताहेरुकोवलवढधछ ॥ रजोगुणावद्यामादैत्यको
वलवढधछ ॥ तमोगुणावद्यामाराक्षसकोवलवढधछ ॥ १९ ॥ सत्वगुणालेजोछरजोगुणालेसपनाहुछ ॥ तमोगुणा
लेसुतिरहंछ ॥ प्राणिकाचौथाअवस्थाकोजोवलुछ ॥ योजाग्रतस्वप्नसुषुप्तिनिनैअवस्थामाछभनिजानिश्चयछ ॥ २० ॥
वेदार्थकोअवस्थानगर्भब्राह्मणहेरुजोछन् ॥ सत्वगुणालेगरिउभोउभोकालोकमाजाछन् ॥ तमोगुणालेगरिउधोउधो
कालोकमाजाछन् ॥ रजोगुणालेगरिमनुष्यभैभूलोकमारहंछन् ॥ २१ ॥

॥ राम ॥
॥ १३३ ॥

सत्त्वगुणवद्वामामर्त्या स्वर्गजांछन् रजोगुणवद्वामामर्त्या नरलोकमारहंछन् तमोगुणवद्वामामर्त्या नरकमाजांछन् स
वैगुणालेहीनभयाकामेरोभजनगर्दामर्त्या मैविषे आउंदछन् ॥ २१ ॥ परमेश्वरप्रसन्नहउन् भन्ना निमित्त फलको आ
ज्ञानगरिगयाको नित्यनै मित्रिक कर्मजोछ सात्विक कर्म कहिंछ फलको संकल्प गरिगयाको राजस कर्म कहिंछ
हिंसा ठेरै भयाको कर्मजोछ तामस कर्म कहिंछ ॥ २२ ॥ आत्मविषयक ज्ञान जोछ सात्विक ज्ञान कहिंछ देहादि वि
षयक ज्ञान जोछ राजस ज्ञान कहिंछ बालकको लाराका ज्ञान जोछ तामस ज्ञान कहिंछ परमेश्वरविषयक

सत्त्वप्रलीनाः स्वर्गान्तिनरलोकं रजोलयाः तमोलयास्तु निरयंयांति मामेव निर्गुणाः ॥ २१ ॥ मदर्पणां नि
फलं वा सात्विकं निजकर्म तन् राजसंफलसंकल्पं हि साध्यादितामसम् ॥ २२ ॥ कैवल्यं सात्विकज्ञा
नं रजोवैकल्पिकतु यत् प्राकृततामसं ज्ञानं मन्त्रिष्टं निर्गुणं स्मृतम् ॥ २३ ॥ वनतु सात्विको वासाया
मो राजस उच्यते तामसयुतसदनमन्त्रिकेतनु निर्गुणम् ॥ २४ ॥ सात्विककारको संगीरागांधो राज
संस्मृते तामसः स्मृतिविभ्रेष्टो निर्गुणो मया श्रयः ॥ २५ ॥

॥ ज्ञानजोछ निर्गुणज्ञान कहिंछ ॥ २४ ॥

वनमावासगर्नुजोछ सात्विकवास कहिंछ गाउंमावासगर्नुजोछ राजसेवास कहिंछ जुवासेलयाठाउंमावास
गर्नुजोछ तामसवास कहिंछ देवालयमावासगर्नुजोछ निर्गुणवास कहिंछ ॥ २५ ॥ आसक्तनभैकार्यगर्नाकर्ताजो
छ सात्विककर्ता कहिंछ वेडो आसक्त भैवडो आग्रहले कार्यगर्नाकर्ताजोछ राजसकर्ता कहिंछ पूर्वपरकोषव
रनराधिकार्यगर्नाकर्ताजोछ तामसकर्ता कहिंछ मेरोशरणमात्रगरिकार्यगर्नाकर्ताजोछ निर्गुण कहिंछ ॥ २६ ॥

आत्मज्ञानविषयक श्रद्धा जो छः सोत्तिकी श्रद्धा कहिंछः कर्मविषे श्रद्धा जो छः राजसी श्रद्धा कहिंछे अधर्मविषे श्रद्धा जो छः ताम
सी श्रद्धा कहिंछे मेरो सेवाविषे श्रद्धा जो छः निर्गुण श्रद्धा कहिंछे ॥ २७ ॥ पाईक नहीत रुपा पवित्र भयाको उः खन गरिमि
त्पाको आहार जो छः सात्विक आहार कहिंछः जिभाले निको मानियाको पियो आमिलो न निजुं आहार जो छः राजस आहा
र कहिंछः पाईक न उः खदिन्या ग्लानिगरा उन्ना अशुद्ध भयाको आहार जो छः तामस आहार कहिंछः ॥ २८ ॥ आत्मा देवि
भयाको सुख जो छः सात्विक सुख कहिंछः विषय देवि भयाको सुख जो छः राजस सुख कहिंछः मोहले दैन्यले गरिभ
याको सुख जो छः तामस सुख कहिंछः मेरो शरणागतीले भयाको सुख जो छः निर्गुण सुख कहिंछः ॥ २९ ॥ पाईक न

सात्विक ध्यात्मिकी श्रद्धा कर्म श्रद्धा तु राजसी ॥ तामस्य धर्मया श्रद्धा मत्सेवायां तु निर्गुणाः ॥ २७ ॥ पथ्यं पू
तमनाय स्रमाहार्यस्य त्विकं स्मृतम् ॥ राजसं चेन्द्रियप्रेष्ट तामसं चार्तिदा शुचिः ॥ २८ ॥ सात्विक सुखमा
त्मोत्थं विषयोत्थं तु राजसम् ॥ तामसं मोहदैत्योत्थं निर्गुणं मदपाश्रयम् ॥ २९ ॥ द्रव्यं देशः फलं कालो
ज्ञानं कर्म च कारवः ॥ श्रद्धा वस्था कृतिर्निष्ठा त्रैगुण्यं सर्वस्व हि ॥ ३० ॥

हिन रुपा अति पवित्र वस्तु जो छः द्रव्य कहिंछः वन माभयो गाउ माभयो देश कहिंछः सात्विक सुख भन्तु राजस सु
ख भन्तु फल कहिंछः जौ न काल माभनिले गरिभ जद छ भन्तु जो छः काल कहिंछः तालालाई सात्विक ज्ञान भन्तु भनि
याको ज्ञान कहिंछः भगवान् प्रसन्न रहनु भनि गरियाको कर्म कहिंछः आसक्त न भै कार्य गर्ना कर्ता जो छ भन्तु
भनियाको ज्ञान कहिंछः यो ॥ आत्मज्ञान विषे श्रद्धा जो छः सात्विक श्रद्धा कहिंछः भन्तु भयो सत्त्व गुणाले जागरण हुंछ भन्तु
भयो सात्विक स्वभाव भयाका उभोजा न्छ भन्तु भयो सत्त्व गुणाले जागरण हुंछ भयो हे उद्वद इत्यादियो सबै

॥ ३० ॥
यवहार जो छः निर्गुणाले शुक्ल छः ॥ ३० ॥

हेउद्धव. एतिमात्रतिनगुणालेयुक्तछन्भनिनवरु॥ परंतुजतिपुरुषछन्. अरुदेवियाकासुनियाका उद्धिमाचिताइयाका.
तिसवैसत्व. रज. तम. ईतिनगुणालेयुक्तछन्भनिजान॥ ३१ ॥ इनैगुणाकाकर्मलेगरि. पुरुषकानानाप्रकारकोसंसारहुं
छ हेउद्धव. जोनजीवलेईतिनगुणाकनजित्वाकोछ॥ ३२ ॥ त्योजीवजोछभक्तियोगलेगरि. मेरोशरणागर्नाभयाकोछ
दे. मोक्षपाउनालाईजोग्यहुंछ. तंस्कारणाहेउद्धवज्ञानभयो. विवेकभयो. योउवैकरालेसहितभयाको॥ एतोयो

सर्वेगुणामयाभावाः पुरुषाव्यक्तधिरिताः॥ दृष्टंश्रुतमनुधातं बुद्ध्यावापुरुषर्षभः॥ ३१ ॥ एताः सं
सृतयः पुंसोऽपुण कर्मनिबंधनाः॥ येनेमेनिर्जिताः सौम्यगुणाजीवेनचिन्तजा॥ ३२ ॥ भक्तियोगेनम
त्रिष्टोमज्ञावायप्रपद्यते॥ तस्माद्देहमिमंलब्धजानविज्ञानम्भवः॥ ३३ ॥ गुणसंगंवितिर्भूयसामाजं
नुविचक्षराः॥ निःसंगोमांभजेद्विद्यांनप्रमत्तो जितेन्द्रियः॥ ३४ ॥ रत्नसमश्चभिजयेत्सत्त्वंसंसेवयानु
नि॥ सत्त्वंचाभिजयेत्सत्त्वनैरपेक्षेरासांतधीः॥ ३५ ॥ संपद्यतेगुणोमुक्तो जीवजीवो विहायमान्॥ जी
वो जीवेन निःसुक्तो गरीश्वशयसम्भवैमयेव वराणां पूर्णो न वहिर्मान्नरश्चरेत्॥ ३६ ॥ छ ॥

मनुष्यदेहकनपार्शकन॥ गुणकोसंगछोडियाकाकन. जान्वापंडितहेरुलेमेरोभजनगर्नु॥ ३३ ॥ हेउद्धवअश्य
इन्द्रियकनेजितिसावधानमै. सगकसैकोनगरिजान्वालेमेरोभक्तिगर्नु॥ ३४ ॥ सुनिलेसत्वगुणकोसेवागर्नालेगरि
रजोगुणातमोगुणाकनजितु. कोनैकराकोआशानगर्नाभै. शान्तचिन्तगरि. सत्वगुणाकनजितु॥ ३५ ॥ छ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १३५ ॥

गुणलेहीनभयाकोजीवजोछ.लिंगशरीरकनछोडिमलाईपांडुदछ.गुणलेहीनभयाकोलिंगशरीरलेहीनभयाकोजीव
जोछमंवल्लेपरिपूर्णभयाकोछंदो.विषयभोगपनिकेहिगदैन.गयाकोविषयभोगपनिसमृद्धदैनभनिकुल्लेउद्ध
वकनआज्ञागर्दाभयासोहिकथाकनसूकदेवलेराजापरीक्षितकनवताउदाभया.सोहिसूतपोरागिकले.शौनका
दिगयाकाअभिहेरुकहंदाभया.३८. ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोष्कादशस्कंधेभाषायांपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥
अवभगवानश्रीकृष्णजोछन्.कसेकोसंगनगरि.मेरोभजनगर्नालाई.उष्टसंगलेनाशगर्छभनिकहनानिमित्त.३९

इतिश्रीभागवतेमहापुराणोष्कादशस्कंधेभगवदुद्धवसंवादेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ श्रीभगवानुवाच
महेश्वरामिमंकायलक्ष्मामधर्ममास्थित.आनन्दपरमात्मानमात्मस्थसमुपैतिमाम्.१. ॥ गुणम
याजीवयोन्नाविमुक्तोज्ञाननिष्ठया. ॥ गुरोषुमात्रेषुदृश्यमानेष्ववस्तुतः.२. ॥

लेपूर्वाराजाकाकथाउद्धवकनकहनलाज्ञाहेउद्धव.मेरोस्वरूपकनचिह्ना.सत्तोमनुष्यदेहपाईकन.मुक्तिदि
न्याभैराधर्मविषेरह्याकोमनुष्यजोछ.आकैशरीरविषेनियताभैरह्याका.परमानन्दस्वरूपकनपाउछ.१. ॥ गुण
स्वरूपभयाकाजीधकोउपाधिभयाका.लिंगशरीरमुक्तभयाकोप्राणिजोछ.देहआदिगयाकागुणविषेरह्याको
पनिज्ञाननिष्ठलेअवस्तुतिभनिविहियाका.देखिन्छन्पनिमायामात्रहुन्भनि.निश्चयगरियाका.सत्तादेहादि
गुणलेगरिपुरुषजोछसंगकनपाउदैन.२. ॥ ॥ श्रीरामचन्द्रायनमः ॥

॥ राम ॥
॥ १३५ ॥

हेउद्धव जात्रालेलिंगकौर उदरकोतृप्रगर्नालाईलाग्याका ॥ एला उर्जनहेरुकोसंगकैहेपनिनगर्नु उर्जनहेरुकोसंगगर्ना
जोछ ॥ अधाकापछिलाग्या अंधोनाशिदारुजिनाशिन्छ ॥ ३ ॥ उर्जनहेरुकोसंगगर्नाशिन्छ भन्नाकरामा इतिहास
कनकहन्छन् ॥ हेउद्धव वडोजसभयाकाचक्रवर्ति सेलपूरवानामाराजजोछन् ॥ अगाडिउर्वशीकाविरहलेगरिमोहकन
गदी ॥ पछिवाट कुरुक्षेत्रविषेउर्वशीसंगभेटगरि ॥ गंधर्वलेदियाकाअभिलेगरि देवताकोयज्ञहोमगरि फेरीउर्वशीकालो

वर्तमानोपिनपुमान्युज्यतेवलुभिर्गुरौः ॥ संगंनकुर्यादशनां शिष्टोदरतृपांक्तचित् ॥ ३ ॥ तस्यानुगम
संधेपतयंधानुगोयथा ॥ सेलः सत्राडिमांगाथामगायतवृहद्युवाः ॥ उर्वशीविरहानुद्यन्निर्विस्मः स्वक
संयमे ॥ ४ ॥ तत्कात्मानं ब्रजंतीतानग्रउन्मन्नवन्तृपः विलपन्नचगाजायेघोरेतिष्ठेतिविक्रवः ॥ ५ ॥ का
मामतृप्रोत्तुषन्क्षुल्लकान्वर्ययामिनीः ॥ नवेहयांतीर्नायातिरुर्वशाकृष्णचेतनः ॥ ६ ॥

ककनपाई ॥ शोकमेटियाविषे वैराग्यकनपायाकाछंदा ॥ योपछिकहिन्याकथाकनकहनलाग्या ॥ ४ ॥ पहिलेकामो
हकीभवस्थानभन्छन् ॥ मलाईछाँडिकनजोदि ॥ तेसुर्वशीकापछिमग्रभैउन्मन्नरैगरि ॥ छोडिगैभन्नानिमित्तकां
तस्वभावगरिराजजोछन् ॥ हेजाये हेघोरवस कताजोछेसभनिविलापगदैजांदाभया ॥ ५ ॥ उर्वशीसंगविषयभो
गगर्दातृप्रनभयाका ॥ उर्वशीलेषजिविलियाकोचित्तभयाका ॥ एलाराजालेवर्षभन्नाढेरैविन्या परंतुगयाकाभाउ
न्यारात्रिकनथाहापाँउंदाभयनन् ॥ एलाराजजोछन् गंधर्वलोकमागै ॥ ढेरैकालसंसुउर्वशीसंगवरगरिपछिवाटवै
राग्यगरि केहिभन्नाकनलाग्या ॥ ६ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १३६ ॥

विषयभोगमाउवाकोचित्रभयाका ॥ उर्वशीलेगलामापक्रियाका ॥ मेरामोहकाविलारकनदेव ॥ अहोआश्चर्यछ ॥ जस्कारणआ
युकाखराभयाका ॥ इंदिरात्रिकनमैलेचिर्सा ॥ ७ ॥ एसउर्वशीकावशयेयाकामैले ॥ ठेरैवर्षकाठेरैदिनविन्नमानहुदामा
पनि ॥ सूर्यउदायाको ॥ थाहापाइन ॥ एतिदिनविन्याभनि ॥ योषवरपनिपाईन ॥ ८ ॥ आश्चर्यदेव ॥ मेरोआत्माविषेमोहछ
जोनमोहलेगरि ॥ राजाहेरुमाअतिश्रेष्ठभयाको ॥ चक्रवर्तिराजाभनिकहियाकोरुसादेहजोछ ॥ स्त्रीहेरुकोकीडामृग
रुजिगरिश्रधीनमाराध्या ॥ ९ ॥ सवैराज्यलेसहितभयाका ॥ रुसामलाईतृशा ॥ रुजिगरिजान्याउर्वशीका ॥ पछिमने

रेलउवाच ॥ अहोमेमोहविलार ॥ कामकसमलचेतस ॥ देवागृहीतकण्ठस्मनायुखराइमेस्मृता ॥ ७ ॥
नाहंवेदाभिनिर्मुक्तः ॥ सूर्योवाप्तुदितोमया ॥ सुषितोवर्षयूगानोवताहानिगतान्युत ॥ ८ ॥ आत्मसंमो
होयेनात्मायोषितांकृतः ॥ कीडामृगश्चक्रवर्तीनरदेवशिरवामशिः ॥ ९ ॥ सपरिछदमात्मानंहित्वा
नृणामिवेश्वरम् ॥ यातीस्त्रियंचान्वगमनग्रउन्मत्तवउदम् ॥ १० ॥ कुतस्तस्यानुभावः ॥ स्यान्नेजइशित्व
मेववा ॥ योन्वगच्छस्त्रियंयातीखरवत्पादताडितः ॥ ११ ॥ किंविधयाकितपसाकिंत्यागेनश्रुतेनवा ॥ किं
विविक्रेणमौनेनस्त्रीभिर्यस्यमनोहतम् ॥ १२ ॥

उन्मत्तरुजिगरिजोंदोभजा ॥ १० ॥ प्रभावभयो ॥ प्रतापभयो ॥ स्वामित्वभयो ॥ एतिकुरामेराकनगया ॥ गदाहिलेपछा
डिमारियाकोगदाहा ॥ रुजियछिजादोभयोभंदा ॥ ११ ॥ जौनपुरुषकोमन ॥ स्त्रीहेरुलेहरिलियाकोछ ॥ उसलाईविधा
लेनपले ॥ सन्यासलिनाले ॥ सास्त्रसुन्नाले ॥ एकान्तमारहनाले ॥ मौनरहनाले ॥ केहिहुंदोरहेनछ ॥ इसवैकराव्यर्थरखाका

॥ राप ॥
॥ १३६ ॥
छ ॥ १२ ॥

पश्चात्तापगरीआकैनिन्दागर्नलाग्या॥जौनआफुहितकराकननचिह्या॥जाच्याहुभनिअभिमानगर्न्या॥एतामूर्खमंकन
धिकारछ॥जौनमजोछुचक्रवर्तीराजाभैपनि॥स्त्रीहेरुलेगोरु॥जिगदाहा॥जिजितिजा॥१३॥ठेरैवर्षसम्मउर्वशी
काआठकोअमृतकोसेवागर्न्या॥मेराधिउकाआहुनीले॥अग्रिजिगरिकामदेवजोछुटप्रहुदोभयेन॥१४॥आत्मा
रामभगवान्देविदोश्रोप्राणिजोछु॥स्त्रीलेहरिलियाकाचित्रकन॥स्त्रीदेविछुदाईल्याउनालाईसमर्थकस्कोहोला
कोहिहवैन॥१५॥तेसुउर्वशीलेहेराजन॥हामिस्त्रीहेरुछेउकोप्रीतिजोछु॥सवैरहंदैन॥कोहिदिनसम्ममात्ररहंछु

स्वार्थस्पाकोविदंधिड्मांमूर्खपरितमानिनम॥योहमीश्वरतांप्राप्यस्त्रीभिर्गोरखवर्जितः॥१३॥सेव
तोवर्षयूगान्मेउर्वसाअरावम्॥नतृप्यत्यात्मभूःकामोवहिराहुतिभिर्यथा॥१४॥पुश्चल्यायहतेचि
त्रंकोन्वन्मोचिनुप्रभुः॥आत्मारामेश्वरमृतेभगवंतमधोक्षजम्॥१५॥बोधितस्यापिदेव्यामेसू
क्तवाक्यचतुर्मतेः॥मनोगतोमाहामोहोनापयात्यजितान्मन॥१६॥किमेतयानोपकृतंरज्जावास
र्पचेतसः॥रज्जुस्वरूपाविदुषोयोहंयदजितेन्द्रिय॥१७॥

(तस्कारणमविषेमोहनगरभनिसत्यव
चनवोलिवुगाइयाकापनि॥उर्मतिभयाकामनकनजितननसन्ध्यामेरोमोहगयेन॥उर्वशीमालगीरहदोभयो
१६॥उर्वशीमाचिन्नलगाउन्ना॥मेरैअपराधछु॥उर्वशीकोअपराधछैनभनिभन्नलाग्या॥स्त्रीमालुबभयाका॥वडालपट
भयाका॥हाम्रोसुउर्वशीलेकोनअपराधगरी॥कोनैअपराधगर्न्याकोछैन॥जसैडोरिकोस्वरूपचिह्याप्राणिको॥डोरीदेवि
डोरीमासर्पकोकल्पनागरी॥दरमान्याकोअपराधडोरिलेगदैन॥तसैइन्द्रियनजित्याभयाका॥मेरैअपराधछु॥उर्वशीको
अपराधछैन॥१७॥

॥ भा. २ ॥
॥ १३७ ॥

सौगंधिभयोः प्रेम आदिगया का गुण ले गरि ॥ मोह गरा उना मा कारण भया की उर्वशी छ भया पनि ॥ गुण हे रूप नि आ फुले कल्प
नागया का मात्र हन ॥ उर्वशी मा गुण छैन न भनिक हन ला ग्या ॥ अति मैलो भया को मल मूत्रा दिले गरि ॥ अति दुर्गभिस्व
रूप भया को भ भुद्ध भया को स्तो देह जो छ का हा छ ॥ फुल का रुजि सुगंधि सु कुमार गुण हे रुका हा छ न ॥ अज्ञान ले
गरि न भया का गुण को वरान् मात्र स्त्री हेरु विषे ॥ कामि पुरुष हेरु लग गया को हो ॥ १८ ॥ यो देह मा मेरो भनि ममता
गर्नु पनि कल्पना मात्र भनिक हिं छन ॥ यो देह जो छ कि वा बुझा मा को हो ॥ किस्वा मि को हो ॥ कि आगा को हो अथवा

कायं मलीमसः कायो दौर्गंध्या यात्मको भवि ॥ क गुणाः सौमनस्या या खधा सो विद्यया कृतः ॥ १८ ॥
पित्रोः किं स्वनुभार्यायाः स्वामिनो ग्रेः स्वगृध्रयोः ॥ किमात्मनः किं सुहृदामितीयो नावसीयते ॥ १९ ॥
तस्मिन्कलेवरे मेधे तु छ निष्टे विषज्जते ॥ अहो सुभद्रं सुनसस्मितं च मुखं स्त्रिया ॥ २० ॥
त्वङ्मास रुधिरस्नायु मेदो मज्जा स्थि सं हितो ॥ विरामूत्र पूये रमतां किमीराणां कियदंतरम् ॥ २१ ॥

कुकुर गृध्र को हो देह ले गया का कर्म भाग गर्ना ॥ कि आत्मा को हो ॥ कि इष्ट मित्र को हो ॥ स्तो सवै को साजा भया का देह
कन ॥ मेरो भन्या प्राणि मूर्ख हो ॥ १८ ॥ अंत्य काल मा किरा विद्या भस्म हुन्या अय वित्र भया का ॥ स्नाते स्त्री विषे अ
हो आश्चर्य ॥ अत्यंत वठिया रात्रो मा कथोरै हा स्था को मुख पनि रात्रो भनि ॥ वरान् गर्नु पनि धिक्छ ॥ २० ॥ छाला
मा सु रगत न सा वा सो हाड को थुप्रो भया का स्त्री हेरु का देह विषे रमाउ न्या प्राणि को र ॥ विद्या मूत्र पिय मार मा डन्या
किरा हेरु को भेद के हिं छैन ॥ २१ ॥

॥ राम ॥
॥ १३७ ॥

जस्कारणअतिघटियास्त्रीहेरुछन्॥ तस्कारणभोगविलासगर्नुतकौनकुरा॥ स्त्रीहेरुलाईर॥ स्त्रीहेरुकोसंगगर्न्याघाणिलार्
 हेनीकोसंगपनिनगर्नु॥ विषयकोर॥ इन्द्रियकोसंगहुनालेमनुजोछ॥ चंचलहुन्छ॥ अरुप्रकारलेहुदैन्॥ तसअर्थस्त्री
 हेरुलाईनहेर्नु॥ नदेष्पाका॥ नमुन्याकावस्तुमा॥ मनचंचलहुदैन्॥ इन्द्रियहेरुकनषत्रिचिराषन्याघाणिकोमनजो
 छ॥ निश्चलभैशान्तहुन्छ॥ तस्कारणस्त्रीहेरुविषेस्त्रीहेरुकोसंगगर्न्याविषे॥ इन्द्रियहेरुलेसंगनगर्नु॥ परिःत
 हेरुकापनिइन्द्रियहेरुमाविश्वासछैन॥ हामिहेरुजस्माकोकौनगरानाछभनि॥ राजासेलपूरवालेभन्याभनि॥

अथापिनोपसज्जेतस्त्रीषुस्त्रैरोषुचार्थवित्॥ विषयेन्द्रियसंयोगान्मनःक्षुभ्यतिनान्यदा॥ २२॥
 अदृष्टादश्रुताज्ञावान्नभावउपजायते॥ असंप्रयुंजतः प्राणाश्चात्म्यतिस्तिमितंमन॥ २३॥ तस्मात्संगो
 नकर्त्तव्यः स्त्रीषुस्त्रैरोषुचेन्द्रियैः॥ विदुषोवाप्यविस्रयद्वर्गः किमुमादृशाम्॥ २४॥ श्रीभगवानुवाच॥
 एवंप्रगायन्त्यदेवदेवः सउर्वशीलोकमलोकमथोविहाय॥ आत्मानमात्मन्यवगम्यमावैउपार
 मज्ज्ञानविधूतमोह॥ २५॥ ततोऽसंगमुत्सृज्येतवद्विमान्॥ सन्नरुतस्यछिंदन्निमनोव्यासंगमु

कृष्णजोछन्॥ उद्धवकनकहनलाग्या॥ २४॥ हेउद्धव॥ एस्तैप्रकारलेवैराग्यलेगरिवोल्न्याराजाजोछन्॥ उर्वशी
 लोककनछोडि॥ आफैआत्माविषे॥ आत्माकनबुझि॥ ज्ञानलेहरायाकोछ॥ मोहजस्कारसाराजाजोछन्॥ वडाशा
 नकन॥ कहंदाभया॥ २५॥ तस्कारण॥ हेउद्धव॥ दुर्जनकोसंगछोडिजान्याघाणिले॥ सन्नजनकोसंगगर्नु॥ संतजन
 हेरुजोछन्॥ वढीयाउपदेशलेगरिस्ममनकायापारकनकाटिदिन्छन्॥ २६॥

॥ भा ८ ॥
॥ १३८ ॥

तीर्थदेवताकोसंगभंडापनि सत्संगवढीयाछ भन्नलाग्वा ॥ संतजनजोछन् कलाहुंछन् भन्ना ॥ कोनैकुराकोइछागर्देनन्
शान्तहुंछन् ॥ समदर्शितहुंछन् समताअहंकारसुखदुःखकेहिनभयाकाहुंछन् ॥ कसैकोसंगहगर्देनन् ॥ ३७ ॥ हेउद्धव
तिसंतजनहेरुविषे वारंवारमेराकथाहुंछन् ॥ तिकथासुन्याहेरुकापायकाटिंछन् ॥ ३८ ॥ तिमैराकथाकोवडोआ
दरगरिजोसुन्दछन् ॥ गाउंदछन् सुन्दाहर्षगछन् ॥ श्रद्धागछन् ॥ एतिकुरालेमलाईपाउंछन् भनितान्पर्यरा

सत्तोपेक्षामच्चिन्ताः प्रशान्ताः समदर्शिनः ॥ निर्ममानिरहंकारागनिर्द्वन्द्वानिष्परिग्रहा ॥ ३७ ॥ तेषु नित्यं म
हाभागमहाभागेषु मत्कथाः ॥ संभवन्निहितान्तरां जुषतां प्रयुनत्यद्यम् ॥ ३८ ॥ ताये शृण्वन्ति गायन्ति ह्य
नुमोदन्ति चाहताः ॥ षट्पराः श्रद्धा नान्नाश्रभक्तिं विंदन्ति ते मयि ॥ ३९ ॥ भक्तिलब्धवतः साधोः किमन्य
दवसिष्यते ॥ मयानन्तगुणो ब्रह्मरूपानन्दानुभवात्मनि ॥ ४० ॥ यथोपश्रयमानस्य भगवतं विभाव
सूम् ॥ शीतं भयं तमोऽप्येति साधूश्च सेवतस्तथा ॥ ४१ ॥ निमज्जो मज्जतां घोरे भवाद्यौ परमाय राम ॥

सत्तो ब्रह्मविदः शान्तो नैदृढे वा पुमज्जताम् ॥ ४२ ॥

राष्ट्रछन्नेस्ताप्राणिमंविषेभक्तिकनपाउंदछन् ॥ ४३ ॥ जौनप्राणिलेभक्तिकनपायाकोछ ॥ मअनन्तगुणब्रह्मा
विषेभन्ना तत्कावांकीकेहिरहदैन् ॥ ४० ॥ हेउद्धव जसैअत्रिकोताप तापन्यालाई शीतकोभयहराउछ ॥ तसैसा
धुकोसेवागर्वाका अज्ञानहराउछ ॥ ४१ ॥ जसैसमुद्रमाउवाकोप्राणिकोउंगाजोछ आधारछ ॥ तसैडरलाग्दा
भवसंसाररूपिसमुद्रविषेडुवन्नाप्राणिकाब्रह्मकनजान्ना सन्तजनहेरुजोछन् आधारछन् ॥ ४२ ॥

॥ राम ॥
॥ १३८ ॥

जसै प्राणिको जीवन अन्न छ. नसै दुःखीको शरणा जो छ. मछु मनुष्य हेरु कामरी कन परलोक मामिल न्याधन जो छ. जसै तसै
संसार माडुर मांन्या प्राणिको शरणा मंछु ॥ ३ ॥ सन्न जन जो छन. सगुण निर्गुण ब्रह्म विषय कज्ञान रूपी चक्षु. देह कन दिन्छु
न सूर्य जो छन. वडिया गरि उदा माया कापनि. वाहि हू छन. उस्मापनि सके छन. तस अर्थ हे उद्धव. देवता भया कापनि वा
धव भया कापनि. सन्न जन हुन. आत्मा भया कापनि. सन्न जन हुन. सन्न जन जो छन सोहि महुं ॥ ३४ ॥ हे उद्धव. ससै प्र
कार ले राजा पुरुष वा जो छन. उर्वशी के विषे. वैराग्य गरि. सत्संग हुना ले सवै संग को त्याग गरि आफै मा आनन्द गर्ना

अन्नं हि प्राणिनां प्राणा आर्त्तानां शरणां त्वहम्. धर्मो विन्नं नृणां प्रेत्य सन्नोर्वायि भ्यतोरणम् ॥ ३३ ॥ संतो
दिशंति चक्षुं विवहिरकः समुत्थितः देवता बांधवाः सन्न आत्मा ह मेव च ॥ ३४ ॥ वैतस्य न सतो प्येव सु
र्वशालो कनिस्पृहः सुक्तसंगो मही मता मात्मारामश्च चारह ॥ ३५ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे स
कादशस्कंधे पुरुषार्थ गीतनाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ उद्धव उवाच ॥ क्रिया योग समाचक्ष्व भवदा
राधनं प्रभो ॥ यस्मान्त्वां यो यथार्चति सान्त्वताः सान्त्वतर्षभ ॥ १ ॥

भै. पृथिवी माजना मन लाग्यो उतै घुमला ग्या भनि. एक था कन उद्धव छे उरु ह्म ले आजागर्दा भया ॥ सोहि कथा
कन भुक देव ले राजा परीक्षित कन आजाग्या सोहि सूत ले शौनक अघि हेरु कन कहंदा भया ॥ ३५ ॥ इति श्री भा
गवते महापुराणे सकादशस्कंधे षड्विंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ एति कुरा सुनि उद्धव जो छन. रागा दिले आकुल चित्त भया
का प्राणिको संग न गर्नु. भंजु कुरा गा हो देवि. विषय माला ग्या कालाई पनि कृष्ण को पूजा जो छ. कल्याण कन दिना
छ भनि समुद्र पूजा का प्रकार कन विंति गर्न लाग्या ॥ हे भगवान् हे कृष्ण. जो नकार रा ले तया निका भक्त हेरु तपा

॥ भा ८ ॥
॥ १३९ ॥

त्रिको पूजा गर्हन् न लो ग रि गर्हन् न जौ न पूजा गर्ना ले त पात्रिको आराधना हुं छ ॥ ए लो क्रिया योग जो छ हे प्रभो मलाई आजागर
जो त पात्रिको पूजा जो छ मनुष्य हेरु को कल्याण कन गर्ना छ भनि वारं वार नारद भया ॥ भगवान् व्यास भया बृहस्पति
ई स वै मुनि हेरु भन्द छन् ॥ २ ॥ हे कृष्ण त पात्रिले उपदेश गरिया का पूजा कारकन ॥ भगवान् ब्रह्माले भृगु आदि
या का आक्रा छोरा हेरु लाई कहंदा भया थां ॥ भगवान् श्री सदाशिव ले पति पार्वती कन कल्या थां ॥ ३ ॥ यो त पात्री
को पूजा जो छ स वै वर्ण लाई स वै आश्रम लाई योग्य छ ॥ कल्याण कुरामा उत्तम पति छ ॥ स्त्री भूद्र हेरु ले पति पूजा

एतद्वदन्ति मुनयो मुद्रार्ति श्रेयसं नृणाम् ॥ नारदो भगवान् व्यास आचार्योऽपि रसः सुतः ॥ २ ॥ निःसृत
ते मुस्ता भोजाश्च दाह भगवान् ज ॥ पुत्रेभ्यो भृगु मुखेभ्यो देवैश्च भगवान् भवः ॥ ३ ॥ एतद्वै सर्ववर्णा
नामाश्रमाणां च सम्मतम् ॥ श्रेयसा मुत्र मम न्ये स्त्री न्भूद्राणां च मानदः ॥ ४ ॥ एतत्कमलपत्राक्ष
कर्मवधविमोचनम् ॥ भक्त्या ब्रूहि विश्वेश्वरेश्वर ॥ ५ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ न ह्यत्र पारस्य कर्मका
ण्डस्य चोद्धवः ॥ संक्षिप्तं वर्णयिष्यामि यथा वदनु पूर्वसः ॥ ६ ॥

॥ गनार्कन योग्य छ ॥ ४ ॥ हे कमल
पत्राक्ष हे कृष्ण यो त पात्रिको पूजा जो छ कर्मका वंध कन काटि दिना छ ॥ तस अर्थ हे विश्वेश्वर का पति ईश्व
र भया का भगवान् त पात्रि विषे श्री ति गर्ना म भक्त लाई पूजा को विधि आजागर भनि विंति गरिया का भगवा
न् कृष्ण जो छ न आजागर्न लाग्ना ॥ ५ ॥ हे उद्धव मेरो पूजा विधिको अंत छैन ॥ तस्कारण थोरै प्रकार ले गरि क्रमै
संग जला को त लो गरि वर्णन कन गरु लाएका चित्र गरि सुन ॥ ६ ॥ वैदिक भयो तात्रिक भयो ॥ निश्रमभ्या को अष्टा

॥ राम ॥
॥ १३९ ॥

क्षरादिभयोः सप्तै प्रकारलेतिन प्रकारको मेरो पूजा छ ईतिन प्रकार पूजा विधिविधे आफुलाई जौ न माइ छा भयो उ सै पू-
जा विधिले गरि मेरो पूजा गर्नु ७ ॥ गर्भ समेत ८ ॥ ११ ॥ १२ ॥ वर्ष मा वासरा क्षत्रिय वैश्यले सप्तै आका अधिकारले गरि
॥ व्रत बंधन गरि द्विज तत्व कन पुरुष लेज सो गरि भक्ति श्रद्धाले गरि पूजा गर्छ हे उद्धव त्यो कुरा सवै विस्तार गरि सुन
॥ ८ ॥ हे उद्धव प्रतिमा विधे स्थंडिल विधे अग्नि विधे सूर्य विधे हृदय विधे वासरा विधे एति वस्तु मा भक्ति गरि कप
टन गरि पूजा का सरजामले आफु गुरु भया कामेरो पूजा विधि गर्नु ९ ॥ मल मूत्रादि त्याग गरि दति वन लिपहि

वैदिक स्वात्रिको मिश्र इति मे त्रिविधो मखः ॥ त्रयाणामीप्सिते नैव विधिना मांसमर्चयत् ॥ ७ ॥ यदा स्व
निगमेनोक्तं द्विज त्वं प्राप्य पुरुषः ॥ यथा भजेत मां भक्त्या श्रद्धया तन्निबोध मे ॥ ८ ॥ अवायां स्थण्डिले
नो वासूर्ये वा सुहृदि द्विजे वरा भक्तियुक्तो चेत्स्व गुरुं माममायया ॥ ९ ॥ पूर्वस्नान प्रकुर्वीत धौत
दत्तो गभुक्षये ॥ उभयैरपि वस्नानमन्त्रैश्च हृणादिना ॥ १० ॥ संध्या पारवा दिकर्माणि वेदेनाचोदितानि
मे पूजानैः कल्पयेत्सम्यक् संकल्पः कर्म पावनीम् ॥ ११ ॥ शैलीदारु मयी लोही लेपा लेख्या च शैकती
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्ट विधा स्मृता ॥ १२ ॥

(ले अगं शुद्धिकानिमित्तं वैदिकता त्रिकमन्त्रले मा
द्योगो वरलगाई स्नान गर्नु १० ॥ वेद लेवता या का संधो पासना दिकर्म ले सहित गरि वढिया गरि परमेश्वर वि
धे चित्त लगाई कर्म वासना को नाश कन गर्ना सप्तो पूजा गर्नु ११ ॥ प्रतिमा विधे पूजा गर्नु भन्नु भयो ति प्रतिमा को नहुन्
भन्ना सुन प्रतिमा हेरु वना उंछु शिला को प्रतिमा भयो काठ को प्रतिमा भयो सुवर्ण आदि ग्या का धातु को प्रतिमा भयो मा
यका प्रतिमा भयो चन्दन को प्रतिमा भयो बालुवा को प्रतिमा भयो मनोमयी प्रतिमा भयो मणिको प्रतिमा भयो सप्तै रिति

ले आठ प्रकारको मेरा प्रतिमा छ १२ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १४० ॥

हेउद्धव. साक्षात् भगवानले. वनायाका प्रतिमा जो छन. चलर. अचल. उद्धवकारका छन. हेउद्धव. जौन. अचल भयाका स्थि
र प्रतिमा छन. तनको पूजा गर्दा विषे. विसर्जनर. आवाहन गर्नु पर्दैन ॥ १३ ॥ जौन अस्थिर चल प्रतिमा छन तनको पूजा ग
र्दा विषे. शालिग्राममा भन्या आवाहन विसर्जन गर्नु. बालुवाका प्रतिमामा भन्या आवाहन विसर्जन गर्नु. माटाका प्र
तिमा. चन्दनका प्रतिमामा भन्या स्नान गराउनु लेष्वाका प्रतिमामा पनि स्नान गराउनु. मार्जन मात्र गर्नु. अरु प्रतिमा
मा भन्या स्नान गराउनु ॥ १४ ॥ वढीया गरि सिद्ध गरियाका पूजाका द्रव्यले गरि. प्रतिमा हेरु विषे. फलको कामना गरि

चलाचलेति द्विविधा प्रतिमा जीवमन्दिरम्. उद्धासावाहनेन सः स्थिराया मुद्धवाचने ॥ १३ ॥ अस्थिरास्यां वि
कल्पः स्यात् स्थिरि तु भवेद्द्वयम्. स्वयनं च विलेप्यायामन्यत्र परिमाजनम् ॥ १४ ॥ द्रव्ये प्रसिद्धैर्महागः
प्रतिमादिष्वमायिनः. भक्तस्य च यथा लब्धे हृदि भावेन चैव हिः ॥ १५ ॥ स्नानालंकरणेष्टमर्चयामेव
तूद्धवः. स्थिरि तु तत्र विन्यासो बह्वावाज्यपुते हविः ॥ १६ ॥ सूर्ये चाभ्यर्हणश्चैव सलिलादिभिः. श्रद्ध

॥ यो यद्दत्तं प्रेष्टुं भक्तेन समवाय्यं हि ॥ १७ ॥

पूजागर्वा मेरा भक्तले. जति मिल्यो सो हि सराजामले पूजा गर्नु
जौन कुरो मिल्पाको छैन. उद्धव सुको भावना मात्र गरि पूजा गर्नु. अथवा मनै मा पूजागर्वा भक्तले. मनै मा कल्पना गरि
याका वस्तुले. मानसिक पूजा गर्नु अनगर्नु ॥ १५ ॥ हेउद्धव. प्रतिमा विषे स्नान गराउनु. गहना पै हाउनु. अतिवढिया
छ. स्थिरि तु लविषे. तिष्ठानमा. मुख्य अंग विषे. देवता हेरुको. तनै तनै मंत्रले स्थापन गरि पूजा गर्नु. अग्नी विषे धि
उको धारा पाउ. धिउले मुद्धियाका चरुले होम गर्नु. सहि पूजा छ ॥ १६ ॥ सूर्य मामेरो पूजा जो छ. उपस्थान गर्नु अर्घ
गर्नु रहन्छ. जल मामेरो पूजा जो छ. जलादिले तर्पण गर्नाले हुन्छ. कौनै गान पनि पूजा गर्दा विषे. भक्तले श्रद्धाले गरि

॥ राम ॥
॥ १४० ॥

जललेगरिजलमात्रचहायाकोपनि मलाईसन्तोषकनगर्ह ॥ १७ ॥ अभक्तलेढेरैचहायाकोपनिमलाईसन्तोषगराउदैन ॥ अथा
लेगरिजलमात्रपनिपियारोहुन्छ ॥ चन्दन फल धूप दीप नैवैशादिचहायोभन्यापियारोहुन्छ भनिकागर्नुपर्छ ॥ १८ ॥ शु
द्धभैसवैपूजाकोसराजामजोरि पूर्वतिरकुशासन ओछ्यायि पूर्वमुखगरि अथवाउत्तरमुखगरिवसिपूजागर्नु स्थि
रप्रतिमामाभन्यासमुखगरिवसिपूजागर्नु ॥ १९ ॥ पूजागर्दापहिलेगुरुकोनमस्कारगरि ॥ आक्रा विषेन्यासगरि मू
लमंत्रकोन्यासगरियाकी मेरीप्रतिमाविषे ॥ अघिचहायाकोनिर्मलहेरुकनपरसारिशुद्धगर्नु ॥ जलभरिभयाकोकल

सूर्यपभक्तोपहतंनमेतोपायकल्पते ॥ गन्धोधूपःसूमनसोदीपोनाशचकिंपुन ॥ १८ ॥ शुचिःसंभृतस
भारप्राग्दभैःकल्पितासनः ॥ आसीनःप्रागुदग्वार्वेदार्चायांत्वथसमुस्वः ॥ १९ ॥ कृतन्यासःकृतंन्यासां
मदार्चाप्राणिनामृजेत् ॥ कलशंप्रोक्षणीयंचयथावदुपसाधयेत् ॥ २० ॥ तगद्भिर्देवयजनंनन्द्वारापा
त्मानमेवच ॥ प्रोक्षपात्राणित्रीणपद्भिस्तैस्तैद्रव्यश्वसाधयेत् ॥ २१ ॥ पाशार्चाचमनीयार्थंत्रीणिपात्राणि
देशिकः ॥ हृदाशीष्माथशिश्रयागायत्राचामिमंत्रयेत् ॥ २२ ॥

॥ शःप्रोक्षणागर्नानिमित्तजलपात्र
ईसवैवलुकन चन्दन पुष्पहालि जलाकोतसो गरिसंस्कारकनगर्नु ॥ २० ॥ प्रोक्षणीपात्रकाजललेपूजागर्न्याहाउ
माछर्नु पूजाकासराजामकन जललेसेचनगर्नु आफुकनपनिसेचनगर्नु पादप्रक्षालनकानिमित्त कलशका
जललेभरिगयाकातिनपात्रकन प्रोक्षणीकाजललेसेचनगर्नु पादप्रक्षालनकानिमित्त कलशकाजललेभरिगया
कातिनपात्रनाउनु ॥ २१ ॥ तनैतीनपात्रकन हृदयादिमंत्रलेगायत्रीपनि अभिमंत्रणागर्नु ॥ ताराप्राग्देवताजोछ को

॥ भा. ८ ॥
॥ १४१ ॥

सुमारस्याकावायुलेखकाउनु आधारमारस्याकाअग्निलेउठाउनु फेरिनिधारमारस्याकाचन्द्रमणालरूपीअमृतलेउलाईअमृत
तत्त्वरूपभयाविषे ॥ तेसादेहमाहृदयरूपीकमलमारस्याकी ॥ अतीश्रेष्ठभयाकीअतीसानीनारायणाकीमूर्तिकनध्यानग
र्ज ॥ कस्मिन्मूर्तिभयाप्रणवकाअकारउकारमकारविष्णुनादईपाचअंशछनु ॥ तस्मानादकाअन्यभागमासिद्धलेध्या
नगरियाकी ॥ २२ ॥ आत्माभावलेध्यानगरियाकीयोजीवकलानारायणामूर्तिलेदीपकाप्रभावले ॥ घरकनजालोगरि
व्याघ्रगयाहृत्ति ॥ देहकनयाघ्रगयाविषेयहिलेदेहेविषेमानसिपूजाकासराजामलेपूजागरि ॥ नारायणामूर्तिस्वरू

पिरोउवायग्निसंभुद्धेत्यप्रस्थापरांमम ॥ अरादीजीवकलांध्यायेन्नादानेसिद्धभाविताम् ॥ २२ ॥
तयात्मभूतयापिरोव्याप्तेसंपूज्यतन्मयः ॥ आवाहार्चादिभुस्याप्यन्यथांगमांप्रपूजयेत् ॥ २३ ॥ याद्यो
पस्पर्शाहंणादीनुपचारान्युकल्पयेत् ॥ धर्मादिभिश्चनवभिःकल्पयित्वासनंमम ॥ २४ ॥ यममष्टद
लंतत्रकर्णिकाकेसरोज्ज्वलम् ॥ उभाभ्यांवेदतत्राभ्यांमंस्तंभयसिद्धये ॥ २५ ॥ छ ॥

यभैः प्रतिमाविषे आवाहनगरि ॥ स्थापनमुद्राले स्थापनगरिचंगयासगरि ॥ धर्मज्ञानवैराग्यस्थैर्यईचारक
नपलंकापाउवनाउनु ॥ मध्यभागमाविमलाउत्कर्षणोइत्यादिनोशक्तिलेयथायोग्यआसनकल्पनागरि ॥ २४ ॥
तेसैमाकर्णिकाकेसरलेउज्ज्वलभयाको ॥ अष्टदलभयाकापद्मकोकल्पनागरि ॥ वेदमंत्रलेत्रचमत्रलेगरि ॥ मला
इपाथार्घआचमनइत्यादिकुरागरि ॥ भुक्तिमुक्तिहवसभन्यालेमेरोपूजागर्ज ॥ २५ ॥ श्रीकृष्णायवासुदेवायनमः

॥ राम ॥
॥ १४१ ॥

पूजागर्दविषे सुदर्शनचक्र पांश्च जन्म शंख गदा खड्ग बाण धनु हलो मुशल कौमुभमणि माला भृगुलाभ्युन ईसवै
कापूजागर्तु ॥ २६ ॥ नन्द सुनन्द गरुड प्रचरा चरा महावल कुमुद केदेक्षरा ॥ २७ ॥ उर्गा विनायक व्यासविष्णुकोन गु
रु देवता हेरु ईसवै जना आक्रास्थान मा मेरा सन्मुख मा वसिरखा का हेरु कन जल सेवन पाद्य अर्घ्य इत्यादि ले गरि
पूजागर्तु ॥ २८ ॥ आक्रासे श्रव्य का श्रुनु सार ले गरि चन्दन उशीर कर्पूर कुंकुम अग रुले वासित गरि मंत्र पट्टि ज
ले स्नान गराउनु ॥ २९ ॥ वेद मा भन्या सुवर्ण धर्म परि वेद वेन मः इत्यादि सुवर्ण धर्मा दिवा कले जितं ने पुण्ड

सुदर्शनं पांच जन्म गदा जन्म गदा शीषु धनु हलान् मुशलं कौमुभं मालां श्रीवत्सवा प्रपूजयेत् ॥ २६ ॥
नन्द सुनन्दं गरुडं प्रचरां चरा मेव च महावलं वल चैव कुमुदेक्षरा म् ॥ २७ ॥ उर्गा विनायकं व्यासं
विष्णुक्तेनं गुरु मसुरान् स्वेस्वे स्थाने त्वभिमुखान् पूजयेत् सोक्षरादिभिः ॥ २८ ॥ चन्द तोशी करपू
र कुंकुमागरु वासितैः सलिलैः स्नापयेत् मात्रैः नित्यदा विभवैस्तनी ॥ २९ ॥ स्वर्ण धर्मा नुवा केन महा
पुरुष विद्या पौरुषणा पिसूक्तेन सामनी राजनादिभिः ॥ ३० ॥ वस्त्रोपवीताभरणापत्रस्रगाधल
पनैः अलंकुर्वीत स प्रेम मङ्गलौ मायथो वितम् ॥ ३१ ॥ पाद्यमाचमनीयं च गंधं सुमनसोक्षताम् ॥ धूप
॥ दीपो महार्घ्याणि दद्यान्मे श्रद्धया च ॥ ३२ ॥

रीकाक्ष इत्यादि महापुरुष विद्याले सहस्रशीर्षा सहस्राक्ष
इत्यादि सूक्तले इन्दुनराने मधिता हवन्त इत्यादि सामले ग्यगरि मेरान्याले गरि पूजागर्तु वस्त्र यत्नोपवीत आभू
षणापत्र माला चन्दन लंगाई दिनाले गरि वडा प्रेम संग यथा योग्य गरि मेरा भक्तले मला इअलंकार गरि दिनु ॥ ३१ ॥
हेउद्धव मेरो पूजागर्तु मेरा भक्त जन प्राणिले पाद्य भयो आचमन भयो गंध भयो फल भयो अक्षता भयो वडा सुग

धिपुष्प माला भयो धूप दीप नैव यश्च श्रद्धा पूर्वक ले गरि
मला इच हाउनु ॥ ३२ ॥

॥ भा.रु. ॥
॥ १४२ ॥

गुडभयो. पायसभयो. द्युभयो. रोटिभयो. मालपूवाभयो. लडुभयो. गुरुंकारोटीभयो. स्नानानावांजनहेस. सामर्थ्यहुन्या
लेचहाउनु. तेललगाईदिउ. मर्दनगर्नु. सेनादेखाउनु. दतिवनलियाउनु. पंचामृतलेस्नानगराउनु. हव्यभोज्यनैवेश
लगाउनु. गीतगाउनु. नाचनु. इत्यादिउत्सवजोछुन्. सोरुंकादशीआदिगयाकापर्वकालविषेगर्नु. सामर्थ्यहु
न्यालेदिनदिनगर्नु. ॥ ३३ ॥ शास्त्रमावतायाकाविधानलेगरि. मेषलागर्नु. योनि. वेदिकालेसहितगरिकु राउवना

गुडपायससर्पिषिशकुल्यापूपमोदकान्. संयावदधिसूयांश्चनैवेशंसतिकल्पयेत्. ॥ ३३ ॥ अभ्य
यंगोन्मर्दमादर्शदत्तधावाभिषेचनम्. ॥ अन्नाद्यंगीतनृत्यानिपर्वणिस्परुतान्वहम्. ॥ ३४ ॥ विधिना
विहितेकुरोमेखलागर्नुवेदिभिः. ॥ अग्निमाधायपरितः समूहेत्यागिनोदितम्. ॥ ३५ ॥ परिसिर्ष्याथ
पर्युक्षेदत्वाय-यथाविधिः. ॥ प्रोक्षिणामाद्यद्रव्याणिप्रोक्ष्याग्नौभावयेत्तमाम्. ॥ ३६ ॥ तप्तजाम्बून
दप्रखंशखचक्रगदाभुजैः. ॥ लसच्चतुर्भुजंशान्तं पथकिंजल्कवाससम्. ॥ ३७ ॥ स्फुरत्किरीटकटके
कटिसूत्रवरांगदम्. ॥ श्रीवत्सवक्षसभ्राजकौस्तुभंवनमालिनम्. ॥ ३८ ॥

ई. वस्पाकोआगोरुकठाउमाल्याउनु. ॥ ३४ ॥ कुशलेचारैतरफ. परिसररागर्नु. जललेचारैतरफ. सेचनगर्नु. प्रो
क्षणीपात्रकाजलले. ॥ होमकासवैसराजामकन. सेचनगर्नु. अग्निविषेमेराधानगर्नु. ॥ ३५ ॥ कलास्वरूपकोधा
नगर्नु. भन्या. ॥ ततायाकासुवर्गाज्जिकांतिभयाकाशखचक्र. गदापद्मलिनाले. अतिशोभितभयाका. पीताम्बरपैद्या
काशान्नस्वरूपभयाका. ॥ जगज्जगर्ग्या. मक्रगटवल्यकटिसूत्र. वाजवन्दपैहनाले. शोभायमानभयाका. कौस्तुभनामो

म. शि. वनमालालगायाका. ॥ ३८ ॥
॥ राम. ॥
॥ १४२ ॥

भृगुलान्छनलेयुक्तभयाकारसोमेरोअग्निमाध्यानगरि.सुक्काकासमिधा.पिठमावोभि.अग्निमाहोमगरि.आधाराज्य
भागहोमगरि.घिउमासुद्धियाकाचरुकोहोमजोछ॥अष्टाक्षरीमूलमंत्रलेगरिसहस्रशीर्वाइत्यादि.सोहकाढिलेहो
मगर्जु.धर्मादिहेरुकोपनिनाममन्त्रलेहोमगर्जु॥ताहापछिजान्त्रालेखिष्टकृतहोगर्जुर॥३८॥अग्निमावस्याको
मेरोपूजागरि.नमस्कारगरि॥भगवान्का.नन्द.सुनन्द.आदिगयाका.पार्षदहेरुकोआठेदिशामावलिदि.पूजा
गर्जु.ताहांपछिपूजास्थानमाआई॥देवताकाअघितिरवसि.ब्रह्मस्वरूपनारायणकनसमृद्धि॥जत्रिसकोमूल

धायन्नभ्यक्ष्यदारुणिहविषाभिघृतानिच॥प्रास्याज्यभागावाशारौदत्वाचाज्यप्लुतंहविः॥३९॥जुहु
यान्मूलमन्त्रेणपोडशावावडानताषमादिभ्योयथान्यार्यमंत्रैःखिष्टकृतंबुधः॥४०॥अभ्यर्वाथ
नमस्कृत्यपार्षदेभ्योवलिहरेत्॥मूलमन्त्रजपेदुल्लसन्नारायणात्मकम्॥४१॥दत्वाचमनसु
क्षेपंविश्वक्सेनायकल्पयत्॥सुखवाससुरभिमतताम्रलायमथार्हयेत्॥४२॥

मन्त्रकनजपु॥४०॥अवभगवान्लेभोजनगरिसक्याभनिबुद्धिआचमनकनदि॥शेखजोछ.विश्वक्सेन
देवतालाईदिनु॥विश्वक्सेनदेवतासंगभातामागि.पछिवाटआफुलेपनिघाउ॥सुगंधिलेयुक्तभयाका.पानक
न.सुखवासनकानिमित्तदिनु.फेरिपुष्पान्नलिलेगरि.भगवान्कोपूजागर्जु.मेराजोकोहिकर्मकन.गाउनु.
नाचनु.इत्यादिकुरागर्जुमेराकथासुनाउनुसुन्न.डुईघरिमनमाव्ययताछोडिभगवान्माचित्रदिईरहनु॥४१

॥ भा. ८ ॥
॥ १४३ ॥

सानाभयाकाअतिदुलाभयाका.पराणामालेपिगयाकालोत्रभयो॥आफैलेवनायाकोसोत्रभयो॥सैसोत्रलेसुतिगरिहेभा
वन्हेपरमेश्वर॥मंविषेतंपात्रिप्रसन्नहुनुहवस्भनि॥दराउरुत्रिपर्सिनमस्कारगर्नुपराणमगर्नु॥४३॥कस्तोगेरि
नमस्कारगर्नुभन्या॥मेरापाउविषेशिरकनराधि॥डुईवाहुलेपाउमासमाति॥अथवाआफ्नापीठभागमाअपरा
धिप्राणिकाहात॥वाध्याउरुत्रिगरि॥डुईहातकनवांधि॥हेईश्वरतपांजिकाचराणामाशरणापयाकोछु॥मृत्युग्रहरूपी
समुद्रकनदेविभयकनदेवि॥भयकनमान्दछ॥सलोडु॥खकासागरमापयाकामलाईरक्षागर्नुहवस्भनिनम

उपगायनृगानृत्पनृकर्मन्यभिनयन्मन॥मत्कथाश्रावयन्शृण्वन्सुहृर्नेक्षणीकोभवेत्॥४३॥
सर्वैरुच्चाववैःसोत्रैःपौराणैःप्राक्तनैरपि॥सुत्वाप्रसीदभगवन्नितिवन्देतदराउवत्॥४३॥शिरोम
त्पादयोःकृत्वावाहुभ्यांचपरस्परम्॥प्रपन्नपाहिमामीशभीतंमृत्युग्रहारांवात्॥४४॥इतिशेषाम
यादत्तांशिरस्याधायसादरम्॥उद्धासयेचेडुद्धासांज्योतिषितत्पुनः॥४५॥अर्चादिषुयदायत्रश्र
द्धामातत्रचाचयेत्॥सर्वभूतेशात्मनिचससर्वात्माहमवस्थित॥४६॥

स्कारगर्नु॥४॥हेउद्धव॥ससैप्रार्थनालेगरि॥मेलेदिंयाकानिर्माल्यकोध्यानगरिवदाआदरसंगशिरमाधा
रणागरि॥प्रतिमाविषेन्यासगरियाकाज्योतिस्वरूप॥कनहृदयकमलमारखाकाज्योतिविषेमिलाउनुकस्तैप्र
कारलेविसर्जनगर्नु॥४५॥हेउद्धवमेराप्रतिमाहेरुविषेजैलेजोनप्रतिमामापूजागर्नुकोश्रद्धाभयो॥उसैमा
मेरापूजागर्नु॥योमुखप्रतिमा॥योअमुखभक्तुकिहिन॥किनभन्यासवैप्राणिविषेयनि॥सवैकोअन्नर्यामिम
रखाकोछुनसअर्थजोनप्रतिमामाईछाभयोउसैमापूजागर्नु॥४६॥

॥ राम ॥
॥ १४३ ॥

हेउद्धव। ससैक्रियायोगकामार्गले वैदिकरुतंत्रकामंत्रलेजोनपुरुषजोछ मेरोपूजागर्छ न्योपुरुषजोछ ससलोकमा परलो
कमा। आपुलेइछागरियाकिसिद्धिकन मंदे विषाउदछ ॥ ४७ ॥ हेउद्धव मेरोपूजागर्न्या भक्तले मेरा मूर्तिकन स्थापना
गरिवलियो रामो मंदिरकन वनाउनु फलको वगैचापनि वनाउनु सकादशी आदिगयाकामहापर्वविषेउत्सवचलसभना
निमित्त दिगादिन पूजायात्राचलसभनानिमित्त पेतभयोदोगान्भयो गाउभयाइत्यादिसवैकरागुठराषनु एतिकुराग

एवंक्रियायोगपथैः पुमान्वैदिकतात्रिकैः भर्तृभयतः सिद्धिमन्त्रो विदत्तभीषिताम् ॥ ४७ ॥ मदर्चा
संप्रतिस्थाप्य मंदिरं कारयेदृच्छम् ॥ उष्णोद्यानानिरम्य निपूजायात्रोत्सवाश्रितान् ॥ ४८ ॥ पूजादीनां प्रवा
हार्थं महापर्वणपथान्वहम् ॥ क्षेत्रापरापुरग्रामान्दत्तामत्सार्थितामियात् ॥ ४९ ॥ प्रतिष्ठया सार्वभौमं
समना भुवणत्रयम् ॥ पूजादिनावल्लोकं त्रिभिर्मत्साम्पनामियात् ॥ ५० ॥ मामेवनेरपेक्ष्येण भक्ति
योगन विन्दति ॥ भक्तियोगं सलभते एवं ये तमाम् ॥ ५१ ॥

न्याजोछ मेरा वरोवर सश्वर्यकन पाउंदछ ॥ ४८ ॥ हेउद्धव मेरा मूर्तिको स्थापना गर्न्या प्राणिजोछ चक्रवर्ती
राजाहुंछ देवालय वनाउन्या प्राणिजोछ निभुवणको भक्षिपतिहुंछ पूजादिमात्र गर्न्याजोछ बल्ललोकमा
जांछ स्थापना गर्न्या देवालय वनाउन्या पूजा गर्न्या इतिनैकरागर्न्याजोछ मेरो वरोवरहुंछ ॥ ५० ॥ हेउद्धव निस्का
मनाले भक्तियोगकन गर्न्याजोछ मकन गर्न्याजोछ मकन पाउंदछ जो मैले वतायाका प्रकारले पूजा गर्छ न्यो
जोछ ससो भक्तियोगकन पाउंदछ ॥ ५१ ॥

॥ भा. ॥
॥ १४४ ॥

देवनालाई राधाका कागुठ कन. आ फुले दिया का. बालराका वृत्तिकन जान्या प्राणि हरि लिख. सो प्राणि जो छ. विष्णु वा न्या
किरो भै दशकोटि वर्ष समर रहन्छ. ॥ ५२ ॥ परमुख भै हर्नालाई जो फल मिल्छ. सो हि फल जो छ. हर्ना का संगला गि युक्ति
देखाई हर्ना कनस जिलो गरि दिनालाई भयो हरनगर भनी लगाउनालाई भयो. हर्ना हरनगराउना इस वैजनाला
इ. वृत्ति हर्ना. वटिया गया भन्नालाई भयो. इस वैजनालाई कर्मका भनि हुनाले मिल्दछ. हरनगर्दा मा ठेरै सा
रथ्यां जिगयाको भया. ठेरै घटिया फल मिल्छ थोरै सारथ्यां जिगयाको भया थोरै मिल्दछ. भनि उद्धव कन.

यः स्वदत्तापरैर्दत्तां हरेत् सुरविप्रयोः ॥ वृत्तिं सजायते विदुः सुवर्षाणाममुतायुतम् ॥ ५२ ॥
कर्तुं श्वसारथे हेतोरुत्तमो दितरं वद ॥ कर्मणां भाषितं प्रेम्भूय सितफलम् ॥ ५३ ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे स्कन्धादशस्कन्धे सप्तविंशतितमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
परस्वभावकर्माणि न प्रसंसेन गहं यत् ॥ विश्वमेकात्मकं पश्यन् प्रकृत्या पुरुषेण च ॥ १ ॥

रुद्रले आज्ञा गर्दा भया. सोहि कथा कनराजा परीक्षितलाई भुकदेवले आज्ञा गया. सोहि सूतलेशौनक.
आदिगयाका अविहेरु कनराजा गर्दा भया. ॥ ५३ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे भागवते महापुराणे स्कन्धाद
शस्कन्धे भाषायां सप्तविंशोऽध्यायः ॥ ७ ॥ अब भगवान् रुद्रले जो छन्. वडा विस्तार संग अधिवतायाका ज्ञान योग क
न थोरै संक्षेपले गरि बताउन लाग्यो. हे उद्धव. भर्का का शान्त उग्र कर्मको सुतिपनि न गर्नु. निन्दापनि न गर्नु प्र
कृति पुरुषले वनाका विश्व संसार कन. एकै स्वरूप कन देख्नु. ॥ १ ॥

॥ राम ॥
॥ १४४ ॥

हे उद्धव पराई कान्त शान्त उग्र कर्म कन जो प्राणि निन्दा गर्ह स्तुतिकन गर्ह तो प्राणि जो छु ॥ उद्धो भया का दैत प्रपंच को भा
ग्रह पूर्वक आसक्त हुनाले ॥ शान्त स्वरूप भया का आक्राहित वस्तु देवि वा डै भ्रष्ट हुन्छ ॥ २ ॥ भ्रष्ट हुन्छ भया का कुरा कन द
शान्त ले गरि दया उंद छन ॥ हे उद्धव राज अहंकार को कार्य भया का इन्द्रिय गरा हेर जो छन ॥ निद्राले गरि हराया विषे
देह मार खा को जीव जो छ ॥ केवल मन मात्र ले सपना रूप भया की माया कन पा उंद छ ॥ तो मन पनि लीन भया विषे न
छ चित्र न भै जीव जो छ ॥ मृत्यु कन पा उंद छ ॥ अथवा मृत्यु वरोवर भया की सुषुप्ति अवस्था कन पा उंद छ ॥ जसै तसै
भिन्न नाना वस्तु कन देख्ना ॥ दैत प्रपंच मा आसक्त भया को विक्षिप्त स्वभा कन पा उंद छ ॥ ३ ॥ दैत प्रपंच सवै उग्र

पर स्वभाव कर्माणि यः प्रशंसति निन्दति ॥ स आसु भ्रष्ट ते स्थान्तरा दशदमिति वेशतः ॥ २ ॥ तैजसानि
द्रयापने पिरा स्थोन चेतन ॥ माया प्राप्ति मृत्यु वा तद्वन्नाना थं ह क प्रभान् ॥ ३ ॥ किं भद्रं किमभद्रं वा
दैतः स्यादस्तुनः कियत् ॥ वाचो दितं तदन्तं मनसा ध्यानमेव च ॥ ४ ॥ छाया प्रत्याख्या भासा ह्यसंतो यथ
कारिणः ॥ एवं देहादयो भावा यच्छा मृत्यु तो भयम् ॥ ५ ॥

हुनाले ॥ स्तुति निन्दा गरा को विषय
पनि केहि छैन भनि आज्ञा गर्न लाग्ना ॥ हे उद्धव वस्तु स्वरूप न भया का ए स दैत प्रपंच विषे कल्याण को कुरो क्या छ ॥
अकल्याण को कुरो क्या छ ॥ केहि छैन ॥ वचन ले वो लिया को नेत्र ले देविया को मन ले चिन्ता गरिया को यो जो कोहि छ स
वैजु रो छ ॥ तसर्थ का स्तुति निन्दा गर्नु पर्छ ॥ ४ ॥ उसो भया देह पनि असत्पर हे छ ते स देह विषे भय किन हुन्छ भया सुन
प्रति विंव भयो ॥ प्रति ध्वनि भयो ॥ मिष माचो दिवु छि गर्नु भयो ॥ ॥ जसै न भया का पनिको हि अर्थ कन गर्ना हुन्छन ॥ तसै अस
त् भया का पनिको देहादि जो छन ॥ मृत्यु न हुनाले भय कन दिन्छन ॥ अथवा जे हे संमल यहु दैनन ॥ ताहा पर्यन्त भयक

॥भा.८॥

॥१४५॥

नदिच्छन्। सृष्टिकनवताउत्पावेदहेरुले। दैतप्रपंचहेरुकनवताउनाले॥ कसोगरिअसत्पछप्रपंचभनौलातसुनहेउछव
॥५॥ आत्माजोछ सोहियोविश्वसंसाररूपलेसृष्टिगरिन्छ॥ आफैप्रभुजोछसृष्टिगछ॥ आफैआत्माजोछपालिन्छपा
ल्छ॥ आफैसंहारकनगदछ॥ आफैविश्वात्माईश्वरजोछसंहारकनहुन्छ॥ ६॥ तसअर्थहेउछवआत्मादेविभर्को
वस्तुकेहिपनिस्त्रिस्त्रिरूपलेदेवाउदैनसवैआत्मैछ॥ अध्यात्मअधिभूतअधिदैवयोतिनप्रकारकोदैतप्रपंचजो

आत्मैवतदिदंविश्वंसृज्यतेसृजतिप्रभुः॥ त्रायतेत्रातिविश्वात्माह्रियतेहरतीश्वरः॥ ६॥ तस्मा
त्मनोऽन्यस्मादन्योभावोऽनिरूपितः॥ निरूपितेयंनिविधानिर्मलाभातिरात्मनि॥ ७॥ इदंगुराम
यंविद्धि त्रिविधंमाययाकृतम्॥ एतद्विद्यान्मदुदितंज्ञानविज्ञाननैपुनत॥ ८॥ ननीन्दतिन
चसौतिलोकेचरतिस्सूर्यवत्॥ प्रक्षेपानुमानेननिगमेनात्मसंविदा॥ ९॥ ॥ ॥

छआत्माविषेदेष्टिन्छसोपनिर्मूलछकेहिछैन॥ १०॥ साक्षादेष्टिन्छकसोगरिदैतप्रपंचनिर्मूलछभन्यासुन
हेउछवमायालेगरिवन्याको॥ अध्यात्मअधिभूतअधिदैवयोतिनप्रकारकोयोप्रपंचजोछ॥ सवैगुरास्व
रूपछभनिजान॥ अध्यात्मादिप्रपंचलाईजसलेहुदोदेष्टुछयोज्ञानकहिन्छवस्तुसाचोछभनिजसलेदेष्टु
छयोविज्ञानकहिन्छ॥ एसाज्ञानविज्ञानकाभैवतायाकानिश्चियंकनजोप्राप्तिजान्दछ॥ तोप्राप्तिजोछ॥ नाहा
ताहासूर्यरुजिवरोवररखाकोलोकसंसारविषेनिन्दापनिलुतिपनिकेहिगदैँन॥ ११॥ प्रत्यक्षलेअनुमान

॥राम॥

॥१४५॥

प्रत्यक्षले भुमानले. आत्माका भुनवले शास्त्रका भुनवले. शास्त्रका भुनवले गरि. आदिर भुनभया को यो दै
त प्रपंच जो छ. तो सवै छुटो भनि जानि. संग कसै को न गरि लोक मा फिर्नु ॥ ८ ॥ भव उद्धव जो छ. भगवान् रुद्र ले
सो भोजा गया को सुनि विनिक न गर्न लाग्ना ॥ हे भगवान् हे रुद्र आत्माका भुनवले गरियो सवै दृश्य प्रपंच जो
छ ॥ असत् छ भनि आजा गर्नु हुं छ भन्ना आत्मा जो छ. स्वप्रकाश छ. देहादि दैत प्रपंच जो छ जड छ भुवा हिमा हो
ते सो भन्ना आत्मा मा जड संसार को भाव हुन्ना होईन ॥ तस अर्थ देख्ना आत्मा छ. दृश्य देवि न्मा जड देहादि प्रपंच छ

आयेन वद सज्जात्मानिः संगो विचरे दिहः ॥ ९ ॥ श्री उद्धव उवाच ॥ नैवात्मनो न देहस्य संसृ
तिर्दृष्टु दृश्योः ॥ अनात्मस्य दृशोरीश कश्यप स्यादुपलभ्यते ॥ १० ॥ आत्मा व्ययोगाः शुद्ध
स्वयं ज्योतिरमावृतः ॥ अग्निवद्दारुवदविच्छेदः कस्येह संसृतिः ॥ ११ ॥

इ दुवै को संसार होईन होईन भन्ना देखिन्छ. कसो गरियो संसार हो भनि शंका गरि ॥ उद्धव जो छ. न सो हि देषा उं छ
न हे रुद्र ॥ १० ॥ आत्मा जो छ. नाशन हुन्ना छ. गुण लेहीन छ. रागादिले हीन हुना ले शुद्ध छ. आफै प्रकाश स्वरूप छ
छा किया को कसै ले छैन. देहादि प्रपंच दैत जो छ. जड छ ॥ जसै दारु वा विषेर रक्षा को अग्नि जो छ. दारु वा विषे भिच रूप
ले देखि नैन. तपनि दारु वा जो छ. अग्निले प्रकाश छ. अग्नि जो छ. प्रकाश क छ. तसै देह मा भिन्न भै आत्मा देखि नैन.
तपनि देह जो छ. प्रकाश छ ॥ आत्मा जो छ. आफै प्रकाश छ. देख्ना साक्षिरूप छ ॥ तस अर्थ हे रुद्र. कस्को संसार हो. उ
इ को संसार जो छ. घटना होई सक्नेन ॥ ११ ॥

॥ भा. ८ ॥
॥ १४६ ॥

भनिदिनिगयाउद्धवलेर भगवान् कृष्णजोछुन आतागर्नलाग्णा हेउद्धवजाहासम्मदेह इन्द्रिय प्राणले आत्माकासंव
बंधहुंछतांहांसम्मसंसारजोछ ॥ कसोपनिदेधिच्छ ॥ कसैकोसंगनहुन्या आत्माका कसो गरिदेहादिसंगपनिदेधिच्छ
तत्त्व रूपलेभन्यादेधिदैन ॥ १२ ॥ कुटोदेहदेहकोसंसारप्रकाशको कारणा अज्ञान कसो गरिहोलाभन्या सुन ॥ हेउद्ध
व जसैविषयकोध्यानगर्नापुरुषकन ॥ सपेनाविषे कुटोभयाकोपनि अनर्थ आइलाग्यछ ॥ तसैअर्थभूयभया
कोपनिसंसारजोछ निवृत्तिहुदैन ॥ १२ ॥ जसोनिदायाकाप्राणिलाईसपनाजोछ वहुनैअनर्थकनगर्दछ सोहि

श्रीभगवानुवाच ॥ यावदेहेन्द्रिय प्राणौरात्मनः सन्निकर्षणम् ॥ संसारफलवांसाषदयार्थोष्यविवेकि
नः ॥ १२ ॥ अर्थेह्यविद्यमानेपिसंस्तुतिर्ननिवर्तते ॥ ध्यायतोविषयो नस्यस्वप्नेनर्थागमोयथा ॥ १३ ॥ यथा
ह्यप्रतिबुद्धस्यप्रस्थापोवत्तुनर्थभृत् ॥ सख्यप्रतिबुद्धस्यनवैमोहायकल्पते ॥ १४ ॥ शोकहर्षभयत्तो
धलोभमोहास्मृदयः ॥ अहंकारस्यदृश्यजन्ममृत्युश्च नात्मनः ॥ १५ ॥ देहेन्द्रियप्राणमनोभिमानोजीवो
न्नरात्मागुणकर्ममूर्तिः ॥ सूत्रं महानित्यरूपधेवगीतः संसारआधावतिकालततन्त्रः ॥ १६ ॥

अनर्थकनगर्नासपनाजोछ सुतिउद्याकाप्राणिलाईमोहगर्नाकनसकैन ॥ १४ ॥ हेउद्धव शोकभया मोहभयो
हर्षभयो भयभयो क्रोधभयो लोभभयो इच्छाभयोजन्मभयो मर्तुइत्यादिकुरासवैअहंकारकादेधिच्छने आत्मा
कोछैनन्तसर्थ अहंकारको देहादिमासंवंधहुनालेसंसारदेधिच्छ भनिबुझ ॥ १५ ॥ अहंकारकोसंसारहोभन्यासु
क्तिपनिअहंकारकोहोला उसोभयासुक्तिविषेअहंकारजोछ वाकिरहलाभनिभन्छोभन्यासुन देहइन्द्रिय प्राणवि
षेछ अभिमानजस्का गुणकर्म छ मूर्तिजस्कारूपतो आत्माजोछ सोहिदेहइन्द्रियप्राण मनलेधाकीयाकोजीवभनिक

॥ राम ॥
॥ १४६ ॥

हियाको छंदो **सूत्र** महत्त्व अहंकार भनि **ए** लै छैरै उपाधिले कहियाको संसार विषे **परमेश्वर** का अधीन मार जाहाता
 हाधा उंदछ मुक्तिमा अहंकार रहला भन्या दोस छैन **१६** **ए** ला प्रकार लेहंकार ले गरि **आत्मा** लाई बंधन छ भन्यार
 अवस्स समयमा **आत्मा** लाई चंन गर्ना अहंकार जो छ **ज्ञान** ले गरि निवृत्ति भया **प्राप्त** मुक्ति भया हुं छ भनि **भगवा**
 न श्री कृष्ण जो छ न कहन लाग्ना **हे** उद्धव वल्लु रूप ले भन्या **मूल** भूय भयाको अज्ञान ले भन्या **छैरै** नाना रूप ले प्र
 काश भयाको **अथवा** इन्द्र जालि विशावरोवर भयाको **मन** वचन प्राण शरीर कर्म रूप ले देषियाको पनि स
 वैरु दो भनि बुझि **अथवा** मन वचन प्राण शरीर मा गरियाका अहंकार कन उरुको उपासना गर्नाले ती बोधार

असूल मेत दृढ रूप मनो वच प्राण शरीर कर्म **ज्ञान** सिनो पास नया व छित्वा नचा मुनि गी विव
 र्ण्य तृष्टः **१७** **ज्ञानं** विवेको निगमस्तपश्च प्राक्षत्य मै तिल्य मथा नु मनम् **आश्रय** नयोर स्पये
 देवलं कालश्च हेतुश्च तदेव मध्ये **१८**

(भयाका ज्ञान रूपी खड्ग ले छिनि **सवै** तृष्णा छोडि

मुनि जो छ यथि वीमा फीद छ **१७** **अहंकार** कन जस ले काट छ **यो** ज्ञान कौन हो भन्या ज्ञान कन भछ सुन
 हे उद्धव वेद आपु अत्रु भव उपदेश अनुमान इत्यादिकु गले गरि **आदि** र अन्नमा जगत् का जो न रहंछ मध्य
 मा पनि ते सै लाई छ भनि जानु **जगत्** छैन भनि जानु **जगत्** का प्रकाश गर्ना कारणा जो हो **नै** आदि अन्न मध्य मा छ
 भनि जानु **तस** अर्थ जगत् को कारणा वल्लु प्रकाश गर्ना पनि वल्लु **तस्कार** रा जगत् कन वल्लु स्वरूप जानु व
 ल्लु देषि भिन्न न जानु **ए** तिकु रा जो न विवेक ले हुं छ सो हि ज्ञान कहिं छ **१८**

॥ भा. स. ॥
॥ १४ ॥

विश्वसंसारमाभिन्नानाव्यवहारहुंनुपनिकेहिछैन॥ कारणरूपलेजगतजोछ वस्तरूपेछ भनिदृष्टान्तदिकहन्छ
न॥ हेउछवजसैकुण्डलरूपलेवन्माकोसुवर्णजोछ॥ कुण्डलनवन्दैजोथियोकुण्डलेकोनाशभयापनिजोरहन्छ
॥ कुण्डलकटक नठुभनिमध्यकालमा॥ नानाव्यवहारलेवोलियाकोपनि त्योसुवर्णहो॥ तसैविश्वसंसारको
कारणरूपमैहुं॥ मदेखिभिन्नानाव्यवहारलेवोलियाकोजगतपनिभन्नुहोईन॥ १८॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति
इतिनश्रवस्थाहुन्मामनभयो॥ इतिनैश्रवस्थाकोकारणभयाको सत्त्व रज तमोगुणभया अध्यात्मअधि
भूतअधिदैवइतिन॥ गुणकाकार्यभया सत्तोयोतीनप्रकारकोजगतजोछ॥ जोनपरमात्माकेप्रकाशभया

तथाहिरण्यसुकृतंपुरस्तात्पश्चाच्चसर्वस्यहिरण्यस्य॥ तदेवमध्यव्यवहार्यमारांनानापदेशै
रहमस्यतद्वत्॥ १९॥ विज्ञानमेतच्चियवस्थमंगुणान्नयंकार्यकर्तृ॥ समन्वयेनव्यतिरेकतश्च
येनैवतुर्येणतदेवसत्यम्॥ २०॥ नयत्पुरस्तादप्यन्नपश्चान्मध्येचतत्रव्यवदेशमात्रम्॥ भूतप्र
मिद्वचपरेणयद्यत्तदेवतत्स्यादितिमेमनीषा॥ २१॥

॥ कोछ समाधिमा सवैहरायामाजोरहं
छ सोहिसत्यछ अरुसवैजुदोछ॥ २०॥ अधिपनिजोथियेन पछिपनिजोरहन्नाछैन मध्यकालमापनित्योके
हिमाचोहोईन॥ इन्द्रजालिजसोव्यवहारमात्रहो॥ हेउछव जोजोनकारणादेखिउत्पन्नहुन्छ जोनकारणलेप्रका
सपनिहुन्छ॥ त्योजोछकारणस्वरूपैहुन्छ कारणादेखिभिन्नहुदैन भन्ना सत्तोमेरोसिद्धान्तछ जसैमाटोकारणभ
याका वन्माकाभांडा भिन्नभिन्ननाउवोलिन्छन्॥ सवैयोजगतवस्त्रहो भन्नावेदलेपनिजगत्कन वस्त्रदेखिभिन्न

॥ २१ ॥
छमदेन वस्त्ररूपैहो भन्छ॥ २१ ॥

॥ राम ॥
॥ १४ ॥

हेउछवयोमहत्तवअहंकारआदिगयाकोविकारसमुदायजोछ॥ पहिलेधियेनतपनि रजोगुणालेगरि वल्लकोका
र्यभयाकोछदोप्रकाशहुंछ॥ वल्लजोछ सोतआफैसिद्धछकसैकोकार्यछैनआफैप्रकाशछ॥ कसैलेप्रकाशग
रियाकोपनिछैन॥ स्फारणा हेउछवइन्द्रियभया रूप रसगंधस्पर्शशब्दभया॥ मनभयोइन्द्रियकाअधिष्ठातादे
वताभया पंचमहाभूतभया योसवैनानाचित्रजोछवल्लैहो॥ वेदभयोप्रतक्षभयोअनुमानभयोउपदेशभ
यो॥ एतिकुगलेप्रकाशभयाविवेककाहेतुलेगरि॥ देहादि विषेभयाकाआत्मबुद्धिकनहरगरि॥ अतिकुशल

अविद्यमानोप्यवभासतेयो वैकारिकोराजससर्गएषः॥ बल्लस्वयंज्योतिरतोविकारचिकारचित्र
म्॥ २२॥ एवंस्फुटं बल्लविवेकहेतु परापवादेनविशारदेनछित्वात्मसन्देहसुपारमेतस्वानन्दतु
ष्टैखिलकामकेभ्यः॥ २३॥ नात्मावपःपार्थिवमिच्छियाणिदेवाद्यसुर्वायुजलंहुताशः॥ मनोन्नमा
त्रंविषनाचसत्त्वमहंकृतिरप्यतिथिरर्थसाम्पम्॥ २४॥

भयाकागुरुकाउपदेशलेगरि॥ आत्माविषेभयाकासोहोकिउसोहोभन्यासदेहकवच्छिनि॥ आकैआनन्दमा
संतुष्टभै सवैइन्द्रियकाविषयदेविफन्दकरहिकसैकोसंगनगर्नु॥ २२॥ एथिवीकोविकारुहुनालेदेहजो
छआत्माहोइन॥ अन्नकाआधारमारखाकाहुनालेइन्द्रियइन्द्रियकाअधिष्ठातादेवता प्राण बुद्धि मन चित्र
अहंकार इसवैआत्माहोइनन्॥ एथिवी अयु तेज वायु आकाश रूप रस गंध स्पर्श शब्द प्रकृति॥ इसवैज
उहुनालेआत्माहोइनन्॥ २४॥ भनिरस्ताविवेकज्ञानलेयुक्तभयाका युक्तउरुषकाइन्द्रियहेतुलेगरि॥ उ

॥भा.८॥
॥१४८॥

भनिरस्ता विवेकज्ञानले युक्त भयाका ॥ मुक्त पुरुष का इन्द्रिय हेरु ले गरि ॥ गुरा को दोष के हि छैन भनिक हंछु न
हे ॥ उद्धव ॥ जसै रस्ता उति तुल्य म्या मे घ जोरु ॥ आकाश मा छंद मा पनि ॥ न छंद मा पनि सूर्य लाई ॥ गुरा दोष के
हि छैन तसै मेरो स्वरूप जो छ विवेक ले गरि ॥ चिन्हा प्राणि लाई ॥ गुरा स्वरूप भयाका जो हातां हां जान न दिया
का इन्द्रिय ले गरि ॥ कौन गुरा छ को नै छैन दोष पनि त समा छैन दोष पनि त समा छैन ॥ २५ ॥ हे उद्धव ॥ ज
सै वायु ॥ अग्नि जल ॥ पृथिवी ॥ इन्का उज ॥ पोलु ॥ भिजा उज ॥ धूलो ॥ हुनु ॥ इत्यादि गुरा ले ॥ आउ न्या ॥ जान्या ॥ अतु

समाहितै कः करौ गुणात्मभिः गुरो भवे ननु विविक्त धाम ॥ दिक्षे यन्मगोरुत किं नु ह्यशौ
घनैरुपैतैर्विगतैः रवैः किम् ॥ २५ ॥ यथानभो वायु नला सुभू रोगं तागतै श्वं च गुरो न संज्ज्ञ
ते ॥ तथा क्षरं सत्वरजस्तमो मलै रजतैः संसृजि हेतुभिः परम् ॥ २६ ॥ तथापि संगः परिवर्ज
नीयो गुरो युमायारचितेषु तावत् ॥ भक्तियोगेन दृढेन यावद्वजो निरस्येत मनः कथय ॥ ३॥

कालका ॥ शीउ ॥ उद्धव ॥ गुरा ले गरि ॥ आकाश जो छव द्रु द्रु दैन ॥ तसै संसार का हेतु भयाका सत्त्व गुरा रजो गुरा का
मैला ले गरि ॥ अहंकार देवि पर रक्षा को साक्षा ब्रह्म जो छव द्रु द्रु दैन ॥ २६ ॥ मुक्त पुरुष रुजि बढिया ज्ञान भया
का पुरुष मुक्त रुजि मन पयाका ॥ आचर रा कन न गर्नु भनिक हंछु न ॥ हे उद्धव ॥ तै पनि जाहा सम्म वलियो भया
का म विषे गया का भक्तियोग ले गरि ॥ मन को मयल भया को राग जो छ हरा उं दैन ॥ ताहा सम्म ॥ माया ले प्रकाश भ
या की विषय विषे संग न गर्नु ॥ ३॥

॥राम॥
॥१४८॥

जसैव ठिया गरि औषध गरि छुटाया को मनुष्य हेरु को रोग जो छु फेरि फेरि उत्पन्न भै पीडा दिन्छ तसै उद्या का छैन न राग ले ग
या का कर्म जस विषे ससै कारण पुत्रादि हेरु विषे आसक्त भै लाणा का मन जो छु वठिया सान भया का योगी कन भ्रष्ट गर्छ २८
विषय को संग भयो भया योगी जा छु भ्रष्ट होई जा छु भन छौ भया किन योग गर्नु भनौ लात सुन हेउ छु व वठिया स
न न भया का जो गी हेरु छन देवता हेरु ले पठाया का मनुष्य स्वरूप भया का विघ्न हेरु ले विघ्न पनि प्राप्त हुन्छन नियो गी हेरु
जो छन जन्मान्तर को अभ्यास ले गरि फेरि पनियोग गर्ना कन लाग्दछन कर्म विस्तार माला दैन न तसर्थ विघ्न होला भनि
योग गर्ना कन न छोडनु विचै मा विघ्न भै गया त पनि अर्का जन्म मा योग गर्ना लाई सजिलो हुन्छ २९ वडा जान्या ला

यथा मयो माधु चिकित्सितो नृणां पुनः पुनः संतुदति प्ररोहम् एवं मनोपक्व कषाय कर्म कुयोगिर्न विध्य
तिसर्व संगम् २८ कयोगिनो ये विहतां तरायैर्मनुष्य भूतैस्त्रिदशोपसृष्टैः तेषां क्तनाभ्यास वलेन भूयो
पुंजं नियोगं ननु चम् २९ करोति कर्म क्रिया ते च जन्तुः केनाप्यसौ बोधित आनिपातात् न तत्र विद्वान्प्रह
तो स्थितोपि निवृत्त तृप्तः स्वसुखा नुभूत्या ३० ॥

ई पनिकर्म छुटनु गा हो छु कर्म छुटान न भया फेरि पनिसंसार हुन्छ भया हेउ छु व सुन जान्या न भया को प्राणि
को देह जो छु सोहि भोजनादिकर्म कन गर्छ हर्ष विस्मात रक्षा विकार कन पनि हुन्छ तेस भोजनादिकर्म ले गरि प
ष्टि कन पों उदछ जान्या प्राणि जो छु सोत देह न ठल न ज्वाल सम्म को हि संस्कार ले कर्म माल गाइया को छु दो दे
ह विषे रक्षा को पनि आत्मा का सुख का अनु भव ले युक्त भया को हुना ले अरु तृप्तान भया को अहंकार हुना ले
कर्म ले गरि हर्ष विस्मात इत्यादि गत्या का विकार ले गरि फेरि संसारि हुं दैन ३० ॥

॥ भा. ए. ॥
॥ १४८ ॥

देहले गया का कर्मले गरि. हर्ष विस्मात. एसा विकार कन पार कन पाउ दैन भन्नु कौन कुरो छ. आत्मज्ञानि जो छ देह कन
पनि देष्ट दैन भनिक हंछन. हे उद्धव. उद्या को वस्था को हि डो. सुत्पा को. घान लागा को. पि सा पग दो. स्वभाव ले गरि भया
का अरु जो को हि कर्म कन गदो पनि. एसा देह कन आत्मज्ञानी जो छ जा नैन विर्सि हाल छ. ॥ ३१ ॥ कसै ज्ञानी का पनि इ
न्द्रिय छ न भया. देष्ट न जानु क सो गरि हंछ मछोत. हे उद्धव. सुन. ई घटिया इन्द्रिय हेरु का विषय कन देष्ट छ तप
नि नाना दुनाले सपना मृत्ति दुटो छ भनि. अनुमान ले ठहराई आत्मा देखि भिन्न जो को हि विषय छ. तस् कन जान्या जो
छ. वस्तु हो भनि देष्ट नैन. जसै सुनि उद्या को प्राणि जो छ. सुत्पा मा देष्टा का सपना कन मन ले विर्सि कोरु दैन. तपनि

तिष्ठंत मासीन सुत व्रजंतं शयान सुक्षंत मदन मत्तम्. स्वभाव मन्थ कि मपी ह मान मात्मान मात्मस्थ मति
न वेद. ॥ ३१ ॥ यदि स्म पश्यत्यसमिन्द्रियार्थं नाना नुमानेन विरुद्ध मन्थत्. न मन्यते वस्तु तया मनीषि स्वाप्न
यथोत्थायति रोदधानम्. ॥ ३२ ॥ पूर्व गृहीतं गुण कर्म चित्र मज्ञान मात्मन्य विविक्त मंग. निवर्त्तते तस्य
नरीक्षयैव निरुह्यते नापि विस्मय आत्मा. ॥ ३३ ॥

सुत्पा वस्थालिन्मा आत्मा लाई जसै कदा का धान जो छ न चावल रूप विकार कन हंछन. तसै सुक्त रूप विकार जो छ कि
नहु दैन भछोत सुन. हे उद्धव पहिले वध अवस्था मा गुण ले कर्म ले गरि. नाना भया को. अज्ञान को कार्य भया कार्य
भया को देहेन्द्रिय हेरु जो छ. विवेक नहुनाले आत्म बुद्धि ले गरि लिया को. फेरि सुक्त अवस्था मा ज्ञान ले गरि निव
नहुं छ. आत्मा भया को ने रूप नि लिजि दैन. छोड दाप नि छोडि जि दैन. मुक्ति जो छ. क्रिया ले गरि उत्पन्न भया को भया.
आत्मा लाई विकार रूपा को. मुक्तिको अवस्तु लाई वस्तु हो भनि मान्या. एसा ज्ञान को मान निवृत्ति स्वरूप हुनाले बंध मोक्ष

॥ राम ॥
॥ १४८ ॥

ले आत्मा लाई छुन सक्ने नरु ॥ तस्कार राविकार जो छु आत्मा का छैन ॥ ३३ ॥ ससै कुरा कन दृष्टान्त ले गरि कहन लाग्ना ॥ हे उ
द्धव जसै सूर्य को उदयं हुनु जो छु ॥ मनुष्य काने त्रकाने त्रका अंधकार कन छुटाउं दछ ॥ पहिले रक्षा को घट आदि गेया
का पदार्थ कन वनाउदै न ॥ ससै मेरि आत्म विद्या जो छु ॥ पुरुष का बुद्धि का अज्ञान रूपी अहंकार के न नाश गरि दिछे
परंतु आत्मा लाई वनाउ दिन ॥ आत्मा जो छु आफै सिद्ध छु ॥ ३४ ॥ आत्मा विषय विकार छैन भन्ना थ्या सो हि देखाउन लाग्ना
हे उद्धव यो आत्मा जो छु ॥ आफै प्रकाश छु ॥ जन्म पनि न भया को छु ॥ प्रमाण पनि गरि न सकु छु ॥ वडो अनुभाव ले यु
क्त भया को छु ॥ सवै अनुभव स्वरूप छु सकै छु ॥ वेद ले पनि जान्या को छैन ॥ जौ न परमा ले लगाइ या का वचन प्राणा ॥ इन्द्रिय हे

यथा हि भानो रदयो नृचक्षुषा तमो निहं न्यान्न तु स द्विधत्ते ॥ एवं समीक्षानि गुणा सती मे ह्मन्ना त्म मिश्र पुरुषस्य
बुद्धेः ॥ ३४ ॥ एषः स्वयं ज्योतिरजो प्रमेयो महानुभूतिः सकलानुभूतिः ॥ एको द्वितीयो वचसां विरामे धेने धि
ता वाग सवश्वरत्ति ॥ ३५ ॥ एतावानात्मसंमो होय द्विकल्प लुके वले ॥ आत्मा नृते स्वमात्मानमवले वो नयस्य हि
यन्नामा कृतिभिर्ग्राह्यं च वर्णमवाधितम् ॥

॥ रुजो छु न आकु आकु कार्य कन गर्छु न ॥ ससो अर्थ गर्दा मा
जन्मो भन्नु वडु छु भन्नु वडो भन्नु क्षीण भै गलो भन्नु ॥ मया भन्नु इत्यादि छु विकार ले आत्मा जो छु ॥ हीन रहे छु भनि जा
न वल जो छु ॥ सके अद्वितीय छु निवृत्ता उनानि मित्र ॥ यो भेद प्रपंच कन वलु होई न भनिक कहन लाग्ना ॥ हे उद्धव सुन ॥ के
वल अद्वितीय भया कामे दले हीन भया का आत्मा विषय ॥ जो भेद प्रपंच छु ॥ त्यो सवै मन को भ्रान्ति मात्र हो ॥ तस्कार रा आ
त्मान भै ससं भेद प्रपंच को आश्रय के ही छैन ॥ जसै सिपिन भया का बाँदिको भ्रान्ति हुंदैन तसै जान ॥ ३६ ॥ को हि प्राणि
जो छु न साक्षात् देखा को जगत् जो छु ॥ सत्ये छु उदो छैन भनि भन्छु न ॥ तत्कामत कन खराउ न गरि कहन लाग्ना ॥ हे उद्धव सुन

न. नामरूपले सहित भयाको ॥ पंचमहाभूतस्वरूप भयाको दैत प्रयंच जो छ. सयै छ. उटो छ. नभ निहामि पणित छ. उभन्या भ
 भिमान भयाको हेरुको वात हो ॥ जगत्कन उटो भन्या. वेदको पनि यज्ञ हेरुमा चित्रलगान् सग्वचन्दनवनितादिभोगमा मात्र
 नलागन् ॥ भन्ना निमित्त मात्र हो ॥ उटो छ. भन्ना तात्पर्य हो इति भन्ना ॥ एतौ वात पनि ठिक हो इति भनि देखाउन लाग्ना ॥ डोरिमा
 सर्प देवि दाऊ जिउरो पनि देविन्छ ॥ देविया कालाई उटोक सो गरि भन्ना कुरो जो छ ॥ तिअभिमानि हेरुको हो उटो छ ॥ स
 वैदेह हेरुले जगत्कन उटो हो भनि देखाउनाले ॥ सत्य हो भनि जगत्कन नजान ॥ ३७ ॥ एतौ प्रकार संगज्ञान योग कनवता
 यार अवउ प्राज्ञज्ञान योगमा लाग्ना का प्राणिका विचमा ॥ आइपन्नाका विघ्नको निवारण कन आज्ञागर्न लाग्ना हे उद्धव

वार्थेनाप्येथवा दोयं द्वयं पणितमानिनाः ॥ ३७ ॥ योगिनां पक्षयोगिस्वयुजतः कायउत्थितैः ॥ उपसर्गै
 विहन्ते तत्रायं विहितो विधिः ॥ ३८ ॥ योगधारणायाको श्रिदासनैर्धारणान्वितैः ॥ तयो मंत्रौषधैः काश्चि
 उपसर्गान्निर्दिहते ॥ ३९ ॥ काश्चिन्ममानुधानेनामसंकीर्तनादिभिः ॥ योगेश्वराजुह्वनावाहनादभुमलाञ्छ

सुन ॥ पकान भयाको योगिका देहमा उत्पन्न भयाका. रोगादि उपद्रवरूप विघ्न आईलाग्यो भन्ना. तस्मा रोग जान्ना उपा
 य एतौ गर्नु ॥ ३६ ॥ कलौ भन्ना हे उद्धव सुन ॥ चन्द्रसूर्यको धारणा गर्नु रूपी योग गर्नाले ॥ संताप असन् रूपी विघ्नको
 नाश गर्नु ॥ वायुको धारणा रूपी योग गर्नाले. येन रोग रूपी विघ्नको नाश गर्नु पापभयो ग्रहभयो. सर्पभयो ॥ इत्यादिले ग
 याको रोग रूपी विघ्न कन तपस्याले. मंत्रले ॥ औषधले गरि नाश गर्नु ॥ ३८ ॥ मेरो ध्यान गर्नाले. कामादि गन्नाका विघ्न
 को नाश गर्नु ॥ वज्रयोगेश्वरको सेवा गर्नाले. दमयो मानभयो. इत्यादि विघ्नको नाश गर्नु ॥ ४० ॥ ६ ॥

हेउछव देहवलियो रहस्य भन्नानि मित्रकोहि इकरागछन ॥ त्योकेहि वडिया होई नकोहि पुरुष हेरु जो छन ॥ ईउपाय भयो
अरु उपाय भयाई सवै उपाय ले गरि देह कन ॥ रोग हेरु ले रहित गरि तारुण्य अवस्था कन स्थिर गरि ॥ पराई को देह मा प्रवेश
गर्नु ॥ इत्यादि कुरा मित्र हवस्य भन्नानि मित्र योग कन गर्दछन ॥ ज्ञान कानि मित्र गर्दै नन ॥ ४१ ॥ हेउछव जान्नाले दरग
नाला इत्यो कुरो योग होई न ॥ वक्षका फल रुजिना शिन्ना देह कानि मित्र ॥ चन्द्र सूर्य वायु हेरु को धारणा गर्दि वेर को
प्रयास गर्नु पनियथै छ ॥ समाधिको अंग हुनाले प्राणायामादियोग गर्दा विषे बुढाजि रोग हराउनाले देह वलि
यो हु छ ॥ देह वलियो भयो भनि समाधि छोडि ॥ देह विषे आसक्ति नगर्नु भनि कहन लाग्ना ॥ हेउछव बारंवार योग ग

केचि देह मिमंभीराः सुकल्पवयसि स्थिरम् ॥ विधाय विविधोपायैरथ युजंति सिद्धमे ॥ ४१ ॥ नहिन कुश
लाहृत्य तदाया सोह्य पार्थकः ॥ अत्र वत्सा छरीरस्य फलस्येव वनस्पते ॥ ४२ ॥ योगनिषेवतो नित्यं कायश्चेत्
कल्पतामियाम् ॥ तच्छ्रद्धा नमति मान् योगसुखं ज्यमत्यर ॥ ४३ ॥ योगचर्यामिमांयोगी विचरन्मदपाश्र
यः ॥ नात्तगयैर्विहस्येत निस्पृहः स्वसुखानुभूः ॥ ४४ ॥

(र्या प्राणि को देह जो छ ॥ वलियो भयो भन्ना प
नि मेरो भन्ना पनि आश्रय गर्ना जान्ना प्राणिले ॥ योग कन छोडि कन देह मा विश्वास गर्नु देह जो छ ॥ अवशपना शि
न्छ ॥ ४३ ॥ योग गर्ना पुरुषले विघ्नको निवारण भन्ना परन्तु मेरो मात्र शरण भया का योगीलाई विघ्नको शं कै छैन
भनिकन लाग्ना ॥ हेउछव मेरो शरण गरि ॥ एस योग चर्या कन गयोगीलाई ॥ कौनै कुराको इच्छा नगर्ना हुनाले ॥ आ
त्म सुख विषे अनुभव हुनाले ॥ कौनै विघ्नले पनि विघ्न हुदै नभनिकनले ॥ उछव कन आज्ञा गर्दा भया ॥ भुकदैवले रा
जा परीक्षित कन वनाउंदा भया ॥ सूतनामा पौराणिकले ॥ शौनकादि अविहेरु कन वनाउंदा भया ॥ ४४ ॥ ७ ॥

॥ भा. ए. ॥
॥ १५१ ॥

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे भाषाटीकायां अष्टाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २८ ॥ अकउषान्न. एस्योगचर्याकन. गाहोर
हे छभनिमान्याउद्धवजोछन्. ज्ञानयोगगर्दाविषेसजिलोउपायकनआज्ञागरभनिविंतिगर्दछन्. हेभगवन्. हेकृष्ण. मनक
नवसगर्नाकननसकन्मलाई. योयोगचर्याजोछ. वडाडु. खलेपनिगरिनसकनरहेछभनि. ममान्दछ. तसअर्थ. हेअयुत
जसोगरिहुंछपुरुषजोछ. ज्ञानयोगविषेसिद्धहुंछ. एलोवठियासुखेलेज्ञानयोगहुन्याउपायकन. मलाईआज्ञागर ॥ १
हेरैयोगिहेरुजोछन्. हेपुराणीकाक्ष. मनकननिग्रहगर्नाकनलाग्पाका. परंतुमननिग्रहनहुनालेडा. खितभयाकाछंदा.
सीयमानहुन्छन् ॥ २ ॥ एलैकारणहेअरविन्दलोचन मनकोनिग्रहगर्दीमाथाकाकोसंसारमासारवस्तुकनचिह्या

इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे अष्टाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सुउच्छरा
मिमांसये योगचर्यामनात्मनः ॥ यथाजसापुमान्निहोन्नमेव ह्यंजसायुतः ॥ १ ॥ प्रायशः पुराणीकाक्षयुंज
तोयोगिनोमनः ॥ विषीदन्त्यसमाधान्मनोनिग्रहकर्षिताः ॥ २ ॥ अथात आनन्दउद्यपदासुजं हंसाः श्रये
रन्तरविन्दलोचन ॥ सुखं तु योगेश्वरकर्मयोगभिस्त्वन्मायया मीदिह तान मामि ॥ ३ ॥

भयाकाविवेकिहेरुजोछन्आनन्दकनदिन्या. एस्तानपात्रिकाचरणाकोसुखलेगरिआश्रयगर्दछन्. जोतपात्रिकी
मायालेनाशियाकायोगकर्मलेगरि. अभिमानगर्णाभयाका. तपात्रिकोसंवागर्देनन्. तिनाशिंछन्. हेयोगेश्वर. अथ
वातपात्रिकाभक्तहेरु. तपात्रिकीमायालेनाशियाकाछैनन्. जस्कारणयोगकाकर्मलेगरिअभिमानगर्णाहुदैनन्
अरुजोकोहिपुरुषहेरुत. तपात्रिमायालेमा- - - छंदा. हामिकममाकुशलछोभन्दा. केवलअभिमात्रभरिया
कासुक्तहुदैनन् ॥ ३ ॥

॥ राम ॥
॥ १५१ ॥

अवउद्धवजोछन्विनिगर्दछन्हेभगवन्हेकस्मत्तपात्रिकाभक्तहेरुतपात्रिकाप्रसादलेकतार्थहुंछन्भन्याकुरामाआ
श्रय्यकेहिछैनहेसवैकाबंधुभयाकाभगवान्तपात्रिकोचरणकमलकोमात्रशरणगर्गभयाकासत्तो नन्दनामागोपभ
यागोपिनिहेरुभयावलिप्रहादआदिगयाकाभक्तहेरुविषेअधीनभैकनजोतपात्रिरहनुभयोससकुरामाआश्र
य्यकेहिछैनजोतपात्रिलेगर्मचन्द्रकोमूर्त्तिलिकनवानरहेरुसंगपनिप्रीतिलेगरिमित्रतागर्नुभयोथोप्रीतिले
होईनकार्यसिद्धगर्नालाईमित्रतागराउत्थाभनुहुंछतपनित्योकरापनिकेहिछैनकिनभन्यावत्सादिदेवताका
शिरमकुटलेनमस्कारगरियाकाछन्पादपीठजनकासत्तापुरुषार्थीतपात्रिकोवानरहेरुलेकोनकार्यसिद्धहुन्या
थियोरकार्यकानिमित्तमित्रतागर्नुहुंथोतसर्थवानरसंगमित्रतागर्नुजोछप्रीतिलेमात्रहोकार्यकानिमित्त

किंचित्रमनुततवैशेषहोषबंधोदाशेषनयशरणीषुयदात्मसात्वतसात्वतयोऽरोचयन्सहसृगैः॥
स्वयमीश्वराणांश्रीमत्किरीटपीडितपादपीठः॥४॥तंत्वाखिलात्मदयितेश्वरमाश्रितानामुसर्वार्थ
दंस्वकृतविद्धिस्तृजेतकोनुकोवामजोतकिमपिविस्मृतयेनुभूत्यैकिंवाभवेन्नतवपादरजोतुषान्न॥५॥

होईनसत्तीदीनबंधुतपात्रिहुनुहुंछतकोनैकुरातपात्रिविषेआश्रय्यछैनन्॥४॥हेउद्धवसत्तादीनबंधुतपात्रिला
उछोडिकनजान्याप्राणीजोछभरुकोकस्कोआश्रयगर्नाकसैकोगरेनभनिविनिगर्नाकनउद्धवभन्नलाहेभगवन्हे
कस्मत्सवैजगत्कोचैतन्यकनकनगर्गपियाकाईश्वरभयाकाआश्रयगर्नालाईसवैपदार्थकनदिन्याभयाकासत्ता
तपात्रिकोवलिप्रहादहेरुविषेतपात्रिलगयाकाउपकारकनजान्याजोछअथवाआफैमाअन्नर्यामिरूपलेगयाका
उपकारकनचिह्नाजोछकोभजन्गरेनसवैभजन्गर्नन्हेभगवन्अरुकुराकनततपात्रिलेदियाकापनिस्वर्गादि

॥ भा. ॥
॥ १५२ ॥

पदार्थकनको भजनगर्ला ॥ जौन भजनगर्नाले तपाजिका चरणाकर्मलकाधूलाको ॥ सेवागर्नाहामिलाई चरणाकर्मलकनवि
प्राईदिन्छ ॥ इन्द्रियको भोगनिमित्तमात्रुंछ ॥ अथवा तपाजि देवि भिन्न भेयाका भक्तदेवता हेरूकन धर्मज्ञान हवसभन्ना
निमित्तको भजनगर्ला ॥ अथवा अरू देवताको मोक्ष हवसभन्ना निमित्त ॥ तपाजिकनछोडिको भजनगर्लाको हिगरेन ॥ हे
भगवन् ति मिलाईछोडि भर्काको भजनको गर्ला भन्नु कुरा क्याछ ॥ तपाजिले गयाका उपकारको प्रत्युपकार पनि तपा
जिविषे आत्मनिवेदन गरिमात्रुंछ ॥ भक्तकुराले छैन भनि उद्धवले विंतिगर्न लाग्ना ॥ हे श्वर हे कृष्ण तपाजिका उ
पकारका प्रत्युपकार कन ॥ तपाजिले गयाको उपकार सम्झि ॥ वडो हर्षगर्ना भयाका ब्रह्मजान्या भयाका पनि ॥ व

नैवोपयंत्यपचितिकवयस्तवेशब्रह्मायुषापिकृतमुद्धमुदःस्मरन्तः ॥ यो नर्वहिस्रनुभृतामभुभंविधु
न्वन्नाचार्यचैत्यवपुषास्वगतिं व्यनक्ति ॥ ६ ॥ भुक्तदेव उवाच ॥ इमुद्धवेनात्यन्तुरक्तचेतसा यद्योजग
त्कीडनकः स्वशक्तिभिः ॥ गृहीतमूर्तित्रय ईश्वरेश्वरो जगदसप्रेममनोहरस्मितः ॥ ७ ॥

स्वाका आयुसम्मजिया पनि गर्न सकन्या छैनन् कस्तो तपाजि भयावाहि ह भयागुरू रूपले गरि भिन्न भन्ना भन्तया
मिरूपले गरि ॥ प्राणि हेरूका अशुभवासना कन ॥ आक्रै गतिकन दिन्ना ॥ सेस्ता तपाजिका उपकारका प्रत्युपकार कन
को गरि सकला ॥ को हि गर्न सकेन भनि उद्धवले विंति गया भनि ॥ सले कुरा कन भुक्तदेव जो छन्द ॥ राजापरिक्षित्कन आ
ज्ञा गर्न लाग्ना ॥ ६ ॥ हे महाराज परीक्षीत सुन ॥ वडो प्रेमी उद्धवले एस्तो विंति गरियाका ॥ जगत्माखेलगर्ना भयाका स
त्वगुण तमो गुणले गरि ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर इति नमूर्तिलिन्ना भयाका ॥ ईश्वरको पनि ईश्वर भयाका मन कन हर्षा
थोरै हसिलो मुख भयाका ॥ एस्ता भगवान् श्री कृष्ण जो छन्द ॥ वडा प्रीति संग आज्ञा गर्न लाग्ना ॥ ७ ॥ ६

॥ राम ॥
॥ १५२ ॥

हेउद्धवसुन सुखस्वरूपभयाकामेराधर्मकनवताउंछु॥ जौनमेराधर्मकन श्रद्धाले गरिगर्ना प्राणिजोछु॥ अरु कसैलेजिति
नसकतासंसारकनजितछु॥ ८॥ भवआकाधर्मकन कहनलाग्या॥ हेउद्धवसुनमविषे मनचिन्तकोअर्पण गरिमेराधर्मवि
छ आत्माकोर मनकोप्रीतिजस्का॥ एस्तोभैवेगनगरि मकनसमहि मलाईप्रसन्नगराउनानिमित्त सवैकर्मकनगर्नु
वडासाधु मेराभक्तहेरुले॥ आश्रयगरियाकापुण्यदेशको आश्रयगर्नु॥ देवता दैत्य मनुष्य हेरुमायोमेरोभक्तहे

श्रीभगवानुवाच॥ हंतवर्णयिष्यामिममधर्मानुमंगलान्॥ याच्छुद्धयाचरन्मर्तोमृत्युंजयति दुर्जयम्॥ ८॥
कुर्यात्सर्वाणिकर्मणिमदर्थसमभक्तैस्मरन्॥ मर्यापितमनश्चित्तोमद्धधान्मनोरति॥ ९॥ देशानुगणान्
श्रयेत्तमद्भक्तैः साधुभिश्चितान् देवासुरमनुष्येषु मद्भक्ताचरितानि च॥ १०॥ पृथक्सन्नेरावामह्यपर्व
यात्रामहोत्सवान्॥ कारयन्तीतनृत्यायै महाराज विभूतिभिः॥ ११॥ मामेव सर्वभूतेषु वहिर्बन्तरयावृत्त
म्॥ इक्षोतात्मनि चात्मानं यथास्वममलाशयः॥ ११॥

रुछन् तन् आचरणगयाकाकर्मका आचरणकनगर्नु॥ ८॥ हेउद्धव भिन्नभिन्नभै अथवाठेरैजना एकजगा
मावसि॥ गाउनु नाचनु वजाउनु छत्र चामर एस्तो महाराजाकारे श्रव्यले गरि एकादशी आदि गयाकापर्ववि
षे यात्रा महोत्सवकनगराउनु मलाई॥ १०॥ हेउद्धव सवैप्राणि विषे वाहिहूभिन्नरक्षाका॥ आफुविषेपनि
रक्षाका॥ आकाश ऊर्जियाप्रभयाकामश्चरलाई देयुनु॥ ११॥ हेउद्धव मेरोभावनाले गरि सवैप्राणि हेरुक
कनेमान्या॥ केवलज्ञानको मात्र आश्रयभयाको॥ बाल्मण विषे ब्रह्मस्व हरणगर्ना चोरविषे बाल्मण हेरुलाई

॥ भा. ए. ॥
॥ १५३ ॥

दिनादाता प्राणिविषे. सूर्यविषे. फिलिंगाविषे. शान्तविषे. कठोरउयाविषे. इसवैमावरोवरवुद्धिभयाकोजोछपणितक
हिन्दू ॥ १२ ॥ हेउद्धवजोकोहिप्राणिमासाक्षात्. मईश्वरकोबारवार. भावनाराषण्याप्राणिका. चांडैस्पृष्टानिन्दानिर
स्कार. इसवैअहंकारलेसहितभयाकानाशिन्दू ॥ १४ ॥ हेउद्धव. अन्नर्यामिईश्वरकोसवैप्राणिमादृष्टिगरिहा
सन्नासंगिहेरुकनपनिछोडि. देहकोलज्जाछोडिकुकर. चरागल. गाई. गदाहाइसवैलाइनमस्कारगर्ज ॥ १५ ॥ हेउद्ध

इतिसर्वाणिभूतानिमद्भावेनमहाद्युते. सभाजयन्मन्यमानोज्ञानंकेवलमाश्रितः ॥ १२ ॥ ब्रह्मरोपुल्कसे
लेनेब्रह्मणपकेस्फुल्लिगके. अक्रुरेक्रुरकेचैवसमदृक्परातीतोमतः ॥ १३ ॥ नरेवभीक्षांमद्भावंभुजो
भावयतोविराट्. स्पृष्टासूयातिरस्काराः साहंकारावियतिहि ॥ १४ ॥ विस्मज्यस्मयमानान्त्वान्दशवी
डांचदैहिकीम्. प्रणमेद्धराडवद्भूमावाश्चचरागलगोखरम् ॥ १५ ॥ यावत्सर्वेषुभूतेषुमद्भावो नोपजा
यते. तावदेवसुपासीतवाङ्मनःकायवृत्तिभिः ॥ १६ ॥ सर्वब्रह्मात्मकं तस्यविशयात्ममनीषया. प
रिपश्यन्नुपरमेत्सर्वतोमुक्तरोशयः ॥ १७ ॥ अयं हि सर्वकल्याणासधीचोमतोमम. मद्भावसर्वभूतेषु
॥ मनोवाक्कायवृत्तिभिः ॥ १८ ॥

व. जाहासम्मसवैप्राणिविषे. मईश्वरकोभावनाडुदैरा. तांहासम्ममनवचन. देहकावृत्तिलेगरिस्मोउपासनागर्ज ॥ १६ ॥ सवैवल्लुमा. ईश्वरभृष्टिगर्नलेभयाकीविशालेगरि. स्मोउपा
सनागर्नपुरुषकासवैजगत्जेछ. ब्रह्मरूपहोइजांछसवैसदैहलेहीनभै. जाहाताहाब्रह्मकनदेष्टोछहो. स
कलक्रियादेपिनिवृत्तहुउ. हेउद्धव. मनवचनदेपिनिवृत्तहुउ. हेउद्धव. मनवचनदेहकावृत्तिलेगरिसवैवि

॥ राम ॥
॥ १५३ ॥

घेमईश्वरकोभावनागर्जुजोछः। सवैउपायमाअतिवठियाकल्याणरूपउपाय॥ सहिछहेउद्धवः कामनागरिगर्दविषे॥ थोरैप
 निघटियाभैनाशकनहुदैनजस्कारणामईश्वरलेवतायाकोयोधर्महो॥ मनुष्यहेरुलेहोईन॥ १९॥ मेरोधर्मकोनाश
 छैनभनिकाभन्नुपर्दछ॥ परमात्मा मईश्वरविषेजसै॥ भयशोक॥ पलीभनिभागगर्जु॥ कराउनुवर्थछ॥ तसैवर्थ
 भयाकोपनिजोधर्मविषेप्रयासछ॥ जोपनिनिस्कासनालेगरिअर्पणगयाकोछभयाधर्महुन्छ॥ २०॥ स्कार

नखंगोपक्रमेधंसोमद्धर्मस्योद्धवागवपि॥ मयावसितः सम्यक्निगुणात्वादनाशिषः॥ १९॥
 योयोमपिपरेधर्मः कल्पतेनिष्फलायचेत्॥ तदायासोनिवथस्याद्गयादेरिवसन्नम॥ २०॥ स
 षाबुद्धिमतांबुद्धिर्मनीषाचमनीषिणाम्॥ यत्सत्यमनृतेनेहमर्त्येनाप्नोतिमामृतम्॥ २१॥
 रुषतेभिहितः कृत्वाब्रह्मवादस्यसंग्रहः॥ समासवामविधिनादेवानामपिदुर्गमः॥ २२॥
 अभीक्षांशस्तेगदितसानविस्पष्टयुक्तिमत्॥ एतद्विज्ञायमुचेत्तपुरुषोनष्टसंशयः॥ २३॥

रामेरोभजनगर्जुजोछमोहिविवेककोफलछभनिकहनलागा॥ हेउद्धवः बुद्धिमानकोबुद्धिपनिमेरोभजन
 गर्जुहो॥ चतुरहेरुकोचतुराशपनिमेरोभजनगर्जुहो॥ जोभजनगर्जुलेउपेभयाकोपनि॥ मनुष्यदेहले॥ सत्यस्वरूप
 अमृतस्वरूपभयाकामंकनपाउदछ॥ २१॥ हेउद्धवः देवताहेरुलेपनिनसकिन्नाभयाको॥ सजोयोब्रह्मविचारको
 संग्रहजोछ॥ सवैमैलेकतैविस्तरकतैसंक्षेपलेगरितिमिलाइवतामैंजा॥ २२॥ हेउद्धवः प्रकटगरि॥ नानायुक्तिले
 बुझाईज्ञानजोछ॥ वारंवारमैलेतिमिलाइवतामैंजा॥ जोतिमिलाइवतामैंजाकोज्ञानकनजानीसन्देहलेहीनभयाको

पुरुषजोछः मुक्तहोईजान्छ॥ २३॥

॥ भा. ए. ॥
॥ १५४ ॥

॥ २३ ॥ मैले वताया का ज्ञान कन जान्या सुक्त हंछ भनिका भनु पद ॥ परं तु ससु ज्ञान कथा कन समुद्र न्या कीर्तन गन्या पद्या
सुन्या ॥ एसा प्राणिला इपनि ॥ मुक्ति स्वरूप फल हंछ भनिक हन लाणा ॥ हे उद्धव ति मिले गया का प्रह्न को उत्तर कन
मैले गया का ॥ एसा कथा कन जो न प्राणिले धारण कन गर्दा तो प्राणि जो छ ॥ वेद माप निरह्या का सनातन परं वल्ल क
न पाउं दछ ॥ २४ ॥ हे उद्धव ससु ज्ञान कन वठिया गरि मेरा भक्त हरु लाई ॥ जो न प्राणिक हंछ न ॥ ते सव सज्ञान क

सुविविक्त तव प्रह्न मये तदपि धारयेत् ॥ सनातन वल्ल गुह्य परं वल्लाधिगच्छति ॥ २४ ॥ यस्तन्
मम भक्तेषु संप्रदया सुप्रकलम् ॥ तस्याहं वल्लदाय स्पृहदा स्यात्मानमात्मना ॥ २५ ॥ यस्तत्समधी
यीतं पवित्रं परमं श्रुति ॥ स पूयेताहर हर्मज्ञान दीपेन दर्शयत् ॥ २६ ॥ यस्तच्छुद्धयानित्यमध्यश्रु
गुयान्नरः ॥ मयि भक्तिं पराकुर्वन् कर्मभिर्न गवधते ॥ २७ ॥ अप्युद्धव त्वया वल्ल सखे स सुपधारितम्
अपिते विगतो मोहः शोकश्च सौमनोभवः ॥ २८ ॥

नदिन्या प्राणिलाई में आपै साक्षात् आत्मा कन दिन्दु ॥ २५ ॥ मैले ति मिलाई वताया को अति पवित्र भयाको आ
फलाइ अर्का लाई ॥ शुद्ध गन्या भयाको ॥ एसा ससु कथा कन ज्ञान रूपी दीप ले गरि ॥ मकन देवा उदै गरि दिन दिन जो प्रा
णिय हंछ ॥ तो प्राणि शुद्ध होइ जाछ ॥ २६ ॥ ससु ज्ञान कथा कन सावधान भै श्रद्धा गरि ॥ मई श्रवर विषै ॥ वडो भक्ति
गरि जो मनुष्य सुन्द छ ॥ तो मनुष्य जो छ कर्म लेवां धिदै न ॥ २७ ॥ एति सुना उदापनि उद्धव कन भये न छ भन्या ॥
फेरी उपदेश गरुं ला भन्या निमित्र ॥ करुणा पूर्वक आज्ञा गर्न लाणा हे उद्धव हे सखे ॥ मैले वताया का वल्ल ज्ञान को

॥ राम ॥
॥ १५४ ॥

तिमिलेधारणागयो मोहपनिनिम्राहगयो ॥ मनदेविभयाकोशोकपनिनिम्रागयो ॥ २८ ॥ अवउप्रान्नहेउद्धवदांभिक
लाईनामिकलाई ॥ ठाटलाई धूर्तलाई सुन्नाकोइछानगर्नालाई अनुभक्तलाई नीतिनभयाकालाई योजानकन
तिमिलेनदिनु ॥ २९ ॥ एतिदोषलेहीनभयाकाई बाल्मराकनमान्यालाई पियारालाई साधुलाई शुद्धभयाका
लाई भक्तिगछौ भन्नाशुद्ध स्त्रीहेरुलाई पनि ॥ समज्ञानकनवताउनु ॥ ३० ॥ हेउद्धव योजानजान्नाप्रान्न जान्नाको

नैतत्वयादामिकायनास्तियशठायच ॥ अशुश्रुषोरभक्तायडुर्विनीतायडुर्विनीताम् ॥ २९ ॥ ए
नैर्दोषैर्विहीनायब्रह्मणायप्रियायच ॥ साधवेभुचयेवूयात्तभक्तिसाछुद्रयोषिताम् ॥ ३० ॥ नैत
द्विज्ञायजिज्ञासोर्ज्ञानव्यमवशिष्यते ॥ पीत्वापीयूषममृतं पातव्यं नावशिष्यते ॥ ३१ ॥ ज्ञानेकर्म
योगेचवार्त्तायोदराधाराणे ॥ यावानर्थो नृणां ताततावां सोहंचतुर्विध ॥ ३२ ॥ मर्त्योयदात्मक
समस्तकर्मानिवेदितात्माविचिकीर्षितोमे ॥ तदा मृतत्वं प्रतिपश्य मामोभयात्मभूयायच कल्पते वै ॥

इछागर्नालाई वाकिजानुरोकेहिरहदै न ॥ जलैअमृतकनपियायछि पिठ्याकुरोवांकि केहिरहदै न तलै
योजानछ ॥ ३१ ॥ हेउद्धवज्ञानविषेकर्मविषे योगविषे पतीविषे राजननीतिविषे ॥ मनुष्यहेरुकाधर्मअर्थ
काम मोक्षइचारैपदार्थविषेमरहाकोछु ॥ इचारैपदार्थमैहु ॥ ३२ ॥ सबैकर्मकोत्पागगरिदासंभावलेगरिआ
त्माकनपनि मलाई अर्पणगर्नाप्राणिजैहुहुछ ॥ तैलेत्पोप्राणिजोछ ॥ मैलेसबैमाश्रेष्ठगर्नालाई योग्यहुन्छ ॥
ताहोप्रान्नमोक्षकनहुदोप्राणिजोछ ॥ मेरोवरैवरैश्वर्यपाउनालाई योग्यहुन्छ ॥ ३३ ॥

॥ भा. ॥
॥ १५५ ॥

एसैकथाकनभुकदेवजोछन् राजापरीक्षितकनआज्ञागर्नलाग्णा ॥ हेमहाराजपरीक्षित ॥ एसैप्रकारसंभगवान्क
हललेआज्ञागरिदेवायाकोछ ॥ योगमार्गजसुलाई ॥ एसाउद्धवजोछेन् ॥ हातजोरि ॥ वडाप्रेमलेसुटुमागाढोपया
का ॥ आखादेपिआसुधाराकनवहांउदा ॥ भगवान्कावचनसुनि ॥ केहिपनिबोलनसक्ताभयानन ॥ ३४ ॥ हेराज
न्हेपरीक्षित ॥ वडाप्रेमलेअतिचञ्चलभैघुमदाचित्रकन ॥ धैर्यलेचिरगरिकन ॥ आफुलाईमधंनपरहाखु
भनिमान्दाउद्धवजोछन् ॥ हातजोरिशिरले ॥ भगवान्काचरणाकमलकननमस्कारगरि ॥ कोहिर्विंतिगर्नलाग्णा

भुकदेवउवाच ॥ सरवमादर्शितयोगमार्गस्तदोन्नमश्लोकवचोनिशम्प ॥ वडान्जलि ॥ प्रीत्युपरुद्धक
रोठानकिंचिहृचेश्रपरिपुताक्ष ॥ ३५ ॥ धियभ्याचेनंप्रगायाविद्युर्गाधैर्यगाराजन्वदुमयमानः ॥ क =
तान्जलि ॥ प्रायउप्रवीरंशीहनास्मृशन् ॥ ३५ ॥ श्रीउद्धवउवाच ॥ विद्रावितोमोहमया ॥
श्वकारोयआश्रितोमेतवसन्निधानात् ॥ विभाषयो ॥ किन्तुसमीपगम्यशीतंतमोभीःप्रभवंत्यजाया ॥ ३६ ॥
प्रत्यर्थितोमेभवतानुकंपिना ॥ भृत्यायविज्ञानमयःप्रदिप ॥ हित्वाकृतज्ञस्तवपादमूलकोत्पत्तमीयाछरणा ॥

३५ ॥ हेभगवन्हेकृष्णअधिदेविमेरामनमारणाको ॥ मोहरूपीअधरजोछ ॥ निम्नानजीकमारहदैमाहराउदो
भयोजसैअग्निकानजीकमारहन्याप्राणिलाईशीतकोरअंधकारभयहुदैन् ॥ ३६ ॥ तसैहेभगवन्हेकृष्णपा
निधानभयाकातिमिले ॥ चाकरभयाकामलाई ॥ ज्ञानरूपीदीपकनदेवाउनुभयो ॥ तपानिलेगयाकोरसोकरु
णाचिह्नाजोछ ॥ तत्राचरणाकमलकनछोडिअरुकोशरणाकोगर्लाकोहिगरैन् ॥ ३७ ॥

॥ राम ॥
॥ १५५ ॥

सृष्टिको वृद्धिगर्भनिमित्तः दासाहं वशी वृद्धिवंशी अंधक वशी सात्वतवंशी हेरु विषे ॥ आक्रे माया ले विज्ञा रागरिया को
अतिवलियो भया को स्नेह रूपी डोरी जो छे ॥ सोपनि आत्मतत्त्वज्ञान रूपी खड्ग ले गरिका टि दिनु भयो ॥ ३८ ॥ हे महायोगी
नूत पात्रिका चरण कमल मा मेरो नमस्कार छे ॥ शरण मा पया काम लाई शिक्षा गर्नु हवस् ॥ जो न शिक्षा ले गरि न
पात्रिका चरण कमल मा वारंवार श्री तिलाग सुउल्लो शिक्षा गर्नु हवस् ॥ भनि उद्धव ले विनिगयार ॥ भगवानु जो
छन् आज्ञा गर्न लाग्ना ॥ ३९ ॥ हे उद्धव ति मि मित्रे छौ ॥ तैपनि लोक शिक्षा निमित्त सत्तिका रागर ॥ कौन कराम

हक सांश्च मे सुहृदि स्थः स्नेह पाशो हं वृद्ध भ्रुक सात्वतेषु ॥ प्रसारितः सृष्टि वि वृद्धये त्वया स्वमायया
ह्यात्म सुबोध हेति ना ॥ ३८ ॥ नमस्तु ते महायोगी नूत पत्रमनुशा धिमाम् ॥ यथा त्वच्चरणं भोजे रतिः
स्नादन पायिनी ॥ ३९ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ गच्छोद्धव मया दिष्टो वदया ख्यं ममाश्र ॥ तत्र मत्पादती
र्थे देस्नानोपस्य शीनैः भुविः ॥ ४० ॥ ईक्ष्याल कनद्याया विधृता शेष कल्मषः ॥ वसानो वत्कलाभ्यंग
वन्धु कसुख निस्पृहः ॥ ४१ ॥ तिति क्षुब्धं च मात्राणां मुशीलः संयतेन्द्रियः ॥ शान्त समाहित धिया रा

न्या सुन ॥ तिमि जो छौ ॥ मेरा आज्ञा ले गरि वंदरी नाउ गय को मेरा आश्रम छे ॥ ते सै ॥ न विज्ञान विज्ञान सयुतः ॥
वदरिका श्रम मा जाउ ॥ ताहा अलक नंदाना मा गंगा जी का जल मा स्नान भोव मन गर्ना ले भुद्ध भया का अलक
नन्दा का दर्शन ले ॥ सवै पाप काटिया का तिमि जो छौ ॥ सुख को इछा छोडि वन का फल मूल घाई ॥ हे उद्धव रुष
को वो कापै हि रुहु ॥ ४१ ॥ चिसो ता तो सहिशील धारी भै ॥ इन्द्रिय जिति शान्त भै सावधान बुधिले विज्ञान ले युक्त

॥ भा. ॥
॥ १५६ ॥

हे उद्धवतिमिले मदेषि सिकाका-ज्ञानकनविचार पूर्वकभावनागरि ॥ मईश्वरविषे चित्रलगाई मेराधर्ममारहर सा
त्विकराजस-तामसइति नैगनिकनगाधि ॥ तांहीं प्रान्न-साक्षात्तमपरमात्माविषे आई युगौल ॥ ४३ ॥ अवसमैक
थाकनभुकदेव आज्ञागर्नलागा ॥ हे महाराज परीक्षित सुन ॥ हे उद्धव-वदरीकाश्रमविषे जाउ भनि ॥ श्रीकृष्णले
आज्ञागरियाका उद्धवले कृष्णको प्रदक्षिणा गरि ॥ शिरमापाउ कनराधि-परिआसुकाधाराकनवहाउदै सुख

मन्त्रोउ शिषितयने विविक्रमसुभावयत ॥ मय्यावेशितवाचिनो मद्धर्मनिरतो भव ॥ ४३ ॥ अतिव
ज्यगती स्निस्त्री मामेष्यति ततः परम् ॥ ४३ ॥ श्रीभुकउवाच ॥ सखमुक्तो हरिमेधसोद्धवप्रदक्षि
णान्नं परिश्रित्य पादयोः ॥ शिरोनिधाय श्रकलाभिराई धीर्न्यधि च ददं द्वयरोप्य पक्रम ॥ ४४ ॥ स
इसत्यजस्नेहवियोगकातरोनशकुं वलं परिहातुमातुर ॥ कछें ययौ मूर्द्धनिर्भर्तृपाउके विभ्र
न्नमस्कृत्य ययौ पुनः पुनः ॥ ४५ ॥ ततस्तमंतर्हृदिसंविदेष्य-गतो महाभाग वनो विशालाम् ॥

उः खलेहीनभयाकापनि उद्धवजो छन ॥ गमनगरिकनजात्यासमयविषे-रुणाकनलागा ॥ ४४ ॥ हे महारा
ज परीक्षित-वडाउः खलेपनि छोडिन सकनु प्रीतिको-विछोडदेविकातर्भयाका ॥ भगवान् कृष्णकनछोडि
जानाकननसकन्याभयाका उद्धवजो छन ॥ फेरीफेरिनमस्कारगरि ॥ भगवान् काकपाले गरिदियाका-कंठपा
उकन शिरमाधारणा गरि ॥ वडाकससंगविदाभैजांदाभया ॥ ४५ ॥ हे महाराज परीक्षित सुन ॥ वदरीकाश्रम

॥ राम ॥
॥ १५६ ॥

विषेजोंदविषेकृष्णसंगछुटिईजानाकननसकन्याउद्धवजोछन॥सवैयादवहेरूपभासक्षत्रमायात्रागरिजा
छन॥गरेभनिसुनिसुलोसुलोभगवानकापछिनै॥प्रभासक्षेत्रमासंहारकनभयाका॥सवैयादवकुलकनदे
षि॥एकान्तमाभगवानकनवस्याकादेषि॥उसैजगामा॥मैत्रयत्राविसंगभेटगरि॥फेरिपनि॥भगवानलेउपदे
शगरियाकातत्त्वकनविचारगरि॥मैत्रेयत्राविलेआज्ञागरियाकाउद्धवजोछन॥वदरीयाकाश्रमविषेजोंद
भया॥ताहाप्राप्तभगवानकृष्णकनमनमाली॥वदरीयाश्रमविषेयाका॥वडाभक्तभयाकाउद्धवजोछन॥
कृष्णलेउपदेशगरियाकातपस्याकन॥वढियातरहसितगरि॥हरिकीगतिकनजोंदाभया॥४६॥हेमहा

यथोपदिष्टांजगदेकवधुनाःतपःसमाध्यायहरेरगाकृतिम्॥४६॥यस्तदा नन्दसमुद्रसंघ
तं॥ज्ञानामृतंज्ञानामृतभागवतायभाषितम्॥कृष्णेनयोगेश्वरसेवितांघ्रिणासदुद्धयासेवज
गद्विसुचेते॥४७॥भवभयमयहृतंज्ञानसारं॥निगमकडुजपहेभृंगवद्वेदसारम्॥अमृतमु
दधितश्चापापयेद्भृत्यवर्गा॥न्युरुषत्रयमायविष्णुसंज्ञंनतोस्मि॥४८॥

राजपरीक्षित॥भक्तिमार्गविषेरूपभयाको॥योगेश्वरहेरुलेपनिसेवागरियाकाछनचरणकमलज
स्का॥एताकृष्णले॥आक्राभक्तउद्धवकनवतायाको॥ज्ञानरूपीअमृतकोथोरैपनिजोमनुष्यसेवागछंनो
मुक्तहुन्छभनुकोनकुराछ॥कृष्णकोसंगगनैलेपनिजगत्जोछमुक्तहोइजोछ॥४९॥अवभक्तदेवजोछन
जगत्कागुरुभयाकाकृष्णकननमस्कारगछन॥जोनकृष्णलेसंसारकोभयर॥जरारोगादिनिमित्तकोभयइ
डवैभयाकोनाशगर्ननिमित्त॥भवरातेफूलकोसारभयाकारसकनमात्रलिजाऊजिगरि॥वेदकोसारभागव

॥ भा. ८ ॥
॥ १५७ ॥

नभयाको. ज्ञानविज्ञानरूपभयाको ॥ भतिश्रेष्ठभयाको ज्ञानरूपी अमृतकनवेददेपिहिकि ॥ समुद्रदेपि अमृतक
नहिकि. एतेउवै अमृतकन. आक्राभक्तहेरुकनपिजाउंदाभया ॥ एतापुरुषमाश्रेष्ठभयाका. विष्णुआशपुरुषक
नमजोछु ॥ नमस्कारगर्हुभनि. भुकदेवलेनेमस्कारगयाभनि ॥ स्तननामापौराणिकले. नैमिषारणपवनमाशोनक
दिगयाकाअपिहेरुकन. वताउंदाभया ॥ ४८ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोत्कादशस्कंधेभाषाटीकायांभगवउ
द्धवसंवादेवदरीकाश्रमप्रवेशकथननामसकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ताहापछिस्तननामापौराणिकजोछुन.

इतिश्रीभागवतेमहापुराणोत्कादशस्कंधेभगवउद्धवसंवादे. वदरीकाश्रमप्रवेशकथननामैको
नत्रिंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ राजोवाच ॥ ततोमहाभागवतेउद्धवेनिर्गमेवनम् ॥ दारवत्पाकिमकरोत्
भगवान्भूतभावनः ॥ १ ॥ ब्रह्मशापोयसंस्तुतेऽब्रह्मलेयादवर्षवः ॥ प्रेयसीसर्वनैत्राणातनुसक
थमत्यजेत् ॥ २ ॥ प्रत्याक्रुधुनयनमवलायत्रलश्रनशोकः ॥ कर्णाविष्टंनसरतितनायसनामा
॥ ललश्रम् ॥

आज्ञागर्नलाग्नाहेशोनकादिअपिहो. अवज्ञापरीक्षितजोछुन. भुकदेवयोगेश्वरछेउकेहिद्विंतिगर्न
लाग्ना. हेभुकदेवहेयोगीश्वर. तिभगवान्काभक्तउद्धवजोछुनवदरीकाश्रमविषेगयाप्रान्त. सर्वेप्राणि
कनवताउन्माभगवान्कह्यलेपनि ॥ दारकाविषेकोनलीलाकनगर्दाभया ॥ १ ॥ ब्रह्मशाहेरुकोसरायआ
यादवकुलमापयाविषे ॥ यउकुलमाश्रेष्ठभयाकाकह्यले ॥ सर्वेइन्द्रियकोपियारोभयाकोमूर्तिकन.
कसोगरिछाउंदाभया ॥ १ ॥ हेभुकदेव. कसोमूर्तिहोभया. जोनमूर्तिमालाग्नाकानेत्रकनस्त्रीहेरुजोधि

॥ राम ॥
॥ १५७ ॥

या भर्ता ठाउ मालै ज्ञान सत्ते नथ्यां ॥ कसे लेव रान गदा कर्ण दार लेष वेश गरि ॥ संत जन का मन रूपि भिजा मालै धिया रुजि भया
का मूर्ति जो छ तन का मन देखि निस्क दे नथ्यो ॥ जौ न भगवान् का मूर्ति को शोभा जो छ ॥ वर्ण नृगर्भ कवि हेरु का वडा हर्ष कन ग
गर्द थ्यो ॥ जौ न मूर्ति को कीर्त वग र्मालाई पूज्य स्वरूप कन पनि गर्द थ्यो ॥ युद्ध मा अर्जुन का रथ विषे सारथि भैरव का ॥ जौ न
भगवान् का मूर्ति को न देखि प्राण छोड्या हेरु जो धिया ॥ सोहि भगवान् का स्वरूप कन पां उंदा भया ॥ उला भगवान् ले भा
का मूर्ति कन कसो गरि छोड्या भया ॥ भनि राजा ले प्रह्न कन गमार ॥ भुक देव जो छ नृ आज्ञा गर्न लाग्या ॥ ३ ॥ हे महारा

य छी वाचां जनयति रतिं किनु मानं कवीनां दृष्ट्वा जिह्वा जिह्मो र्यधिरथ गतं यच्च तत्ताम्यसी युः ॥ ३ ॥ न
धिरुवाच ॥ दिवि भुव्यं तरिक्षे च महोत्पाता न समुथितान् ॥ दृष्ट्वा सीनां सुधर्मा यारुह्यः प्राह य इति दम् ॥ ४ ॥
श्री भगवानुवाच ॥ एते शोभ महोत्पाता द्वा र्वत्पाय मकतवः ॥ सुहृत्तमपि न स्थेय मंत्र नो यडु पुंगवा ॥ ५ ॥
स्त्रियो बालाश्च वृद्धाश्च शंखो द्धारं व्रजन्ति ॥ वयं प्रभा संयास्यामो यत्र प्राची सरस्वती ॥ ६ ॥

जपरी क्षित् दार का विषे माथि आकाश मा अन्न रिक्ष मा पृथिवी मा उत्पन्न भया का ॥ भू कं पादि उत्पात कन देखि
सुधर्मा नामा सभा विषे वस्या का ॥ यडु वं सि हेरु कन रुह्य जो छ नृ केहि आज्ञा गर्न लाग्या ॥ ४ ॥ हे यडु वं शि हो ए स्
दार का विषे मृत्यु को सूचन गर्मा ॥ एला भयान क वडा उत्पात रुन लाग्या ॥ तस्कारण उई धरिय नि ए स् दार का वि
षे हा मि हेरु गन वसो ॥ ५ ॥ स्त्री बालक वृद्धा हेरु जो छ नृ ॥ ए स् दार का देखि शंखो द्धार भया का जगा मा जाउ नृ
हा मि हेरु भया यश्चि मवाहिनी सरस्वति नदी जाहा छ नृ ॥ ते सै प्रभा सना मा क्षे त्र मा जाउ र ॥ ६ ॥

ते सै क्षेत्रमास्त्रानगरिभुद्धभैः उपवासगरि सावधानभैः स्नानलेपनइत्यादिपूजाको सराजामेले गरि देवताको पूजा गरौंला ॥ ७ ॥
 ब्राह्मणको पूजा गरौंला पूजा गरियाका ब्राह्मण हेरुले स्वल्पयन गरियाका होमि हेरुपनि ॥ गार्हभूमि सुवर्ण वस्त्र हाति घोडा
 रथ घर हेरु कन ॥ ब्राह्मण हेरु लाई दिउंलारे ॥ ८ ॥ हे यादव हो घटिया भरिष्टको नाश गर्ना उपाय जो छु एहि छु उजम मंग
 ल पनि छु देवताको ब्राह्मणको गार्हका पूजा गर्नुपनि ॥ प्राणि हेरुको देवलोकमा ऐश्वर्य पूर्वक उत्पन्निगराउनामाका

तत्राभिषिच्य मुचय उपोष्य सुसमाहिताः ॥ देवताः पूजयिष्यामः स्वपनालेपनार्हणैः ॥ ९ ॥ ब्राह्मणां लुमहा
 भागान् कृतस्वल्पयणा वयम् ॥ गोभूहिरण्यवासां सिर्गजाश्वरंथवेश्पभिः ॥ १० ॥ विधिरेष ह्यरिष्टघ्नो मंग
 लायनमुत्तमम् ॥ देवद्विजगवां पूजाभूतेषु परमोद्भवः ॥ ११ ॥ इति सर्वसमाकर्णय दुवद्वामधुद्विषः ॥
 तथेति नौ भिरुन्नीर्य प्रभासप्रययूरथैः ॥ १२ ॥ तस्मिन् भगवानादिष्टयदुदेवेन यादवा चक्रः परम
 याभक्त्या सर्वश्रेयोपहं हितम् ॥ १३ ॥ ततस्तस्मिन् महापानं ययुर्मेरयकंधुः ॥ दिष्टविभ्रंशितधियो यदु

रणा छ ॥ १४ ॥ तस्य अर्थ प्रभास क्षेत्रमाजो उं भनि भन्ना कृष्णका वचनमुनि ॥ यादव हेरुले ॥ वैश्वंस्पते मतिः ॥
 पनि वढीया भनी जाहाज वाट समुद्र नरि ॥ रथमाचहि प्रभास क्षेत्रमाजो दाभया ॥ १५ ॥ ते सप्रभास क्षेत्रविषेय
 उदेव कृष्णले आज्ञा गरियाका यादव हेरु जो छु ॥ वडा भक्तिले गरि सकल कल्याणाले युक्त भयाका कर्मकनग
 दाभया ॥ १६ ॥ जाहा प्रान ते सै क्षेत्रविषे देवले भ्रष्ट बुद्धि गरि दियाका यादव हेरु जो थिया ॥ जो नवलुपिया प्रान्त
 ति भ्रष्ट हुंछ ॥ एसा वढीया रसभयाका मदिरा कनपि उदाभया ॥ १७ ॥ ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ १८ ॥

त्योमहापानगर्नालेमन्त्रभयाका गर्वलेयुक्तवित्रभयाका॥ कृष्णकीमायालेमूढबुद्धिभयाका॥ सस्त्रायादववीरहेरुकाव
शेकलहजोछुडुदोभयो॥ १३॥ तेसैरुगराविषेकोधलेयुक्तभयाका॥ शस्त्रास्त्रहातमातियाकोसवेयादवहेरुजोधि
याधनुलेतरवारलेभालागदानोमरतोमरत्राष्टिआदिनानाशस्त्रलेहानाहानगरि॥ युद्धगर्नाकनलाग्या॥ १४॥ स
नाउतिहीलदापताकाभयाकारथमा॥ हातिमाघोडाभागडाहामाउंठमागोरुमाभैसिमा मनुष्यमाचट्टिगया

महापानाभिमत्तानांवीराणां दृष्ट्वेनसाम्॥ कृष्णमायाविमूढानांसद्यर्षःसुमहानभूत्॥ १३॥ युयुधुःक्रोधसंर
ब्विलायामाततायिनः॥ धनुर्भिरसिभिर्भक्षैर्गदाभिसोमरर्षिभिः॥ १४॥ पतत्पताकैरथकुंजरादिभिःखरोष्ट्रगो
भिर्महिषीनरैरपि॥ मिथःसमेत्याश्वतरैःसुडुर्मदान्यहन्वरैर्दद्विरिवद्विपावने॥ १५॥ युयुम्नसाम्नौयुधिरूढ
मत्सरावक्रूरभोजावनिरूसात्यकी॥ सुभद्रसंशामजितौसुदारुरौःगत्रासुरथौसमीघतः॥ १६॥ अन्येचये

का॥ मन्त्रभयाकावनविषेदंतारहातिलयारुजिगरि॥ जोडिजोडिमियुद्धगर्नलाग्या॥ १५॥ तेस्युद्धमायुयुम्नको
रशाम्बको॥ अक्रूरकोरभोजकोअनिरुद्धकोरसात्यकीको॥ सुभद्रकोरसंशामजितको॥ सुदारुराकोरगदको
सुमित्रकोरसुरथको॥ सस्त्राढेरैयुद्धगर्नाहेरुडुईडुईजोडिभैवशक्रोधसंग॥ युद्धगर्नाकनभिडिदाभया॥ १६॥
निशठनामाउल्मुकनामासहास्रजित्शतजित्॥ भानुमुखभयाकामदलेअवाभयाका॥ कृष्णलेअत्यन्तमो

॥ भा.स. ॥
॥ १५८ ॥

हितरियाका ॥ ईअरुयादवहेरुयनिल इनाकनलाग्या ॥ ७ ॥ दाशाहंवंशी वृद्धिवशी अंधकवंशी भोजवशी सात्वतवं
शी मधुवशी विसर्जनवंशी कुक्कुरवंशी ॥ अरुमाथुरदेश शूरसेनदेश अर्बुददेश मारुदनाहेरुभया ॥ ईसवैजो
दिभैमित्रताछेडिहानाहानगरिलइनलाग्या ॥ १८ ॥ वावुहेरुसंगछोरातइनलाग्या ॥ दाजुहेरुसंगभाइलइनला
ग्या ॥ भानिजहेरुमासासंगतइनलाग्या ॥ छोरिकाछोराहेरुसंग भतिजाहेरुकाकासंग ॥ मित्रहेरु मित्रसंग सु

वैनिशठोल्मुकादयः सहस्रजिह्वातभानुमुखा ॥ अन्योन्यमासायमदांधकारिताजपुर्मुकुन्देनविमोहिताभशम् ॥
॥ ७ ॥ दाशाहं वृद्धयन्धकभोजसात्वतामध्वर्बुदामाथुरशूरसेना ॥ विसर्जनाः कुक्कुराः कुतयश्च मिथस्तनस्तेथविसृ
ज्यसौ हृदम् ॥ १८ ॥ पुत्राअयुधन्पितृभिर्भ्रातृभिश्च सस्त्रीयदोहित्रपितृव्यमातुलैः ॥ मित्राणि मित्रैः सुहृदः सुहृ
दिर्ज्ञातैस्तुहन्ज्ञातयस्वमूढा ॥ १९ ॥ शरेषुहीयमानेषु भज्यमानेषु धन्वसु ॥ शस्त्रेषु क्षीयमानेषु सुष्टिभिर्जह्नु

हन्हेरुसुहृत्संग ज्ञातिहेरु ज्ञानिसंगमूढ भैहानगर्नलाग्या ॥ १९ ॥ हेमहाराजसमैयुद्धविषे वारासकियाविषे धन
षभाविषे शस्त्रास्त्रसवैक्षीराभयाविषे ॥ मुष्टिलेगारि योद्धाहेरुलेपटेराभन्याकाशरकनउषेलिलिदाभया ॥
मुठिमालियाकापटेराशरपनिवज्रजसाभयाका फलामकादरावनीगया ॥ तनैदराउलेहानाहानगर्नलाग्या ॥ कृष्ण
लेयुद्धनगरभनिछेकियापनि यादवहेरुजोथिया कृष्णलाईपनिहानलाग्या ॥ २० ॥ मायालेमोहितभयाकायादव

॥ राम ॥
॥ १५८ ॥

हेरुजोथिया॥वलभद्रकनपनिशत्रुठहराई॥मार्नकोनिश्चयवुद्धिगरि॥नानाशस्त्रीस्त्रकनहातमालि॥भिडिदा
भया॥हेमहाराजपरीक्षित॥हेराजन॥२२॥तांहाघ्रातकृष्णवनभद्रपनिअतिक्लृप्तभै॥पटेराकामुठिरूपी
लोहकादराकनउठाई॥फिरिफिरियुद्धविषेहान्नताग्या॥२३॥ब्राह्मणाकोसरापपयाका॥कृष्णकीमाया॥

तावजुकल्पास्यभवन्परिष्ठासुष्टिनाभृता॥जड्वर्द्धिषसेकृष्णेनवार्यमाराणाश्चतचते॥२५॥प्रत्यनी
कमन्यमानावलभद्रचमोहिता॥हेतुकृतधियाराजन्नानास्त्रैराततायिनः॥२६॥अथतावतिसंक्र
ष्टावुद्धम्यकुरुनन्दन॥सरकामुष्टिपरिष्ठाचरंतोजघतुर्पुष्टि॥२७॥ब्रह्मशापोपसूयानांकृष्ण
मायावृतात्मनाम्॥स्पृष्टाक्रोधःक्षयनिर्मेवैरावोन्निर्यथावनम्॥२८॥एवमेषुप्रकृतेषुसेषुके

लेछाकियाकायादवकुलकन॥स्पृष्टानिमित्तकाक्रोधल॥जसैवांसुघसिदाउत्पन्नभयाकाआगालेवांस
कानकोक्षेपनगंदहू॥तसैनाशकनगर्दभयो॥२९॥एसैप्रकारलेहेमहाराजपरिक्षितमारामारगरि
सवैयोदवकुलकोनाशभयाघ्रात॥महाभारतकायुद्धविषेठेरैपृथिवीकोभारकनहया॥वाकिशेषरह्या
कोछपन्नकोथि॥यादवहेरुलेगरिभयाकोपृथिवीकोभारथियो॥सोपृथिवीकोभारपनिआजकादिनमाहे

॥ भा. स. ॥
॥ १६० ॥

रत्नभयोभनिभगवान् श्रीकृष्णलेमाझाभया ॥ २५ ॥ हे महाराज परिक्षित वलभद्रपनि समुद्रकातीरविषेवसि परमा-
त्मा पुरुषको ध्यानयोगकनगरि ॥ सस आत्माकन परमात्माविषेमिलाई ॥ मनुष्यका देहकन छोडदाभया ॥ २६ ॥ वल
वद्रले देह छोड्याका देषिकन ॥ कृष्णपनि पृथिवीमासानापि प्लवका गाछुमनिवसि ॥ चुपलागि योगध्यानमा लाग्या

शवः ॥ अवतारितो भुवो भार इति मेनेव शेषितः ॥ २५ ॥ रामः समुद्रलाया योगमास्थाय पौरुषम् ॥ रामः
समुद्रवेलाया योगमास्थाय पौरुषम् ॥ तत्पाजलीकमानुष्यसंयोज्यात्मानमात्मनि ॥ २६ ॥ रामनि
र्यागामालोकभगवान् देवकीसुतः ॥ निषसादधरोपस्थेनूत्नीमासाद्यपि प्लवम् ॥ ३ ॥ विभ्रवतु
भुर्जरूपं भ्राजि ह्युग्रभयास्वया ॥ दिशो विनिमिराः कुर्वन्निधूमश्च पावकः ॥ २८ ॥ श्रीवत्सो कंघन
श्यामं नम्रहातुकवर्चसा ॥ कौशेयाम्बरयुग्मेन परिवीत सुमंगलम् ॥ २९ ॥ २९ ॥ ६ ॥

॥ ३ ॥ तेस्कालमाकसोमूर्त्तिलियाको थियोभन्या ॥ हे महाराज परीक्षित सुन जगजगगर्दोवारवाहुले युक्तभयाको मू-
र्त्तिकाका तिले गरि दिशाकन उज्यालोगर्दो ॥ धुबाले हीनभयाको अग्निजसो शोभायमानभयाको ॥ २८ ॥ छातिमावामा
वर्त्तगारि घुम्माका भृगुलाज्जुनले युक्तभयाको ॥ मेघमूर्त्तिश्यामसुन्दरवर्णाभयाको ॥ पीताम्बरपैद्याको अतिमंग
लभयाको ॥ २९ ॥

॥ राम ॥
॥ १६० ॥

थोरैहासनाले भतिराभाभयासुखकमललेयुक्तभयाको॥ कालाकेशलेशोभायमानभयाको॥ कमलयत्ररुत्रिकोसर्वन्याका
राम्रानेत्रभयाको॥ चमकभयाको माछोका आकारभयाका कुण्डलेलेयुक्तभयाको॥ ३०॥ करधनिपैछाको जनैलगाया
को शिरमामकुटपैछाको हातमावडा वाजवदलायाको॥ गलामा हारलगायाको पाउमानेवरलगायाको॥ अंगुलामा
अंगुठीलगायाको गलामाको सुभमगिलेविराजितभयाको॥ ३१॥ वनमालालेवेदियाका अंगभयाको मूर्तिधीरीभया

सुन्दरस्मितवक्त्राङ्गनीलकुंतलमणितं॥ पुराणरीकाभिरामाक्षस्फुरन्मकरकुण्डलम्॥ ३० ॥
कटिसूत्रवस्त्रसूत्रकिरीटकटकांगदै॥ हारनूपुरमुद्राभिः कौसुभेणविराजितम्॥ ३१ ॥
वनमालापरीतांगमूर्तिमद्भिर्निजायुधैः॥ कृत्यारौदक्षिणोपादमासीनं पंकजारुणम्॥ ३२ ॥
मुशलावशेकायः खण्डकृतेषुर्लब्धकोजः॥ रम्यगास्याकारतच्चरां विव्याधमृगशंकया॥ ३३ ॥

काशखचक्रगदापद्मलेचारैतिरवसियाका॥ दाहिनातिमाविषेतालुकमरुत्रिभयाका॥ देव्यापाडकनउभोच
हाईउपपुडिलगाईवस्याका॥ ३२॥ सस्ताभगवानदेवि मुशलकुटिशेषरखाका लोहकारवणलेवाराको अय
भागकनवनाउन्या॥ जरानामावाधाले मृगका मुखजसोभयाका कृष्णकापाडकन मृगकाशकाले गरिवेडो
भयो॥ ३३॥ पछिवाटवारवाहुलेयुक्तभयाका पुरुषकनदेवि॥ अपराधगयाभनिउराईकृष्णकापाडमाशिरा

॥ भा. स. ॥

॥ १६१ ॥

धियस्सुदोभयो ॥ ३४ ॥ हे कृष्णमपापीलेन जोनीकन अपराधगयाक्षमागर्नुहवस् ॥ ३५ ॥ जो प्राणिहेरुतपात्रिको मनमा
समरुनाराषुछन् उस्ता प्राणिका अज्ञानको नाश हुछ भनि जान्या हेरु भन्दछन् ॥ उस्ता विष्णु तपात्रिका उपर अप
राध मैले गयो हे प्रभो ॥ ३६ ॥ तस्कारण है वैकुण्ठ नाथ मँ पापिव्याधा न चाडै काटि दिनु हवस् ॥ वशका उपर फेरि
सस्तो अपराधन गरु ॥ ३७ ॥ ब्राह्मणको सराप पया का थियो र ॥ सस्तो कुरा मलाइ भयो तेरो अपराध छैन भन्नुहुं

वर्तुर्भुजं पुरुषं दृष्ट्वा स - कृतकित्विष ॥ भीतः पपात शिरसा पादयोरसुरद्विषः ॥ ३४ ॥ अज्ञानता कृतमिदं पा
पेन मसूदन ॥ शतमहसि पाप - स्योन्नमश्लाकमेनय ॥ ३५ ॥ यस्यानुस्मरणं नृणां मज्जानयान्ननाशनम्
वदति तस्य ते विष्णो मया साधुकृतप्रभो ॥ ३६ ॥ तन्मा भुजवहिकुण्डपापमानमृगतच्चकम् ॥ यथा पुन
रहं त्वेव न कुर्यादतिक्रमम् ॥ ३७ ॥ यस्यात्मयोगरचितनविदुर्विरच्योरुद्रामयोऽस्य तनयाः पतयौ गिरां

छतपणिसुन ॥ हे परमेश्वर जो तपात्रीकी मायाले रचित भयाका वस्तुकन पनि ॥ ब्रह्माका छोरा रुद्र आदिगया
का अरु जो कोहि वेदकन जान्या अघि हेरु पनि जानै नन् ॥ तपात्रिकी मायाले जा कियो कोः दृष्टि भयाका पापयो
निमाज न्याका हा मि व्याधा हेरु जो छौ ब्राह्मणका सराप ले गरि सस्तो कुरा भयो भनि वर्णन गर्नु सक्ने नौ आ फ
ल गयाका अपराध मात्र जान्दछौ तस अर्थ चाडै मलाइ काटि दिनु हवस् भनि जरना मा व्याधाले भगवान् रु

॥ राम ॥

॥ १६१ ॥

हकाचरणमाश्रयार्थनागयोर॥ भगवान्कृजोछन् आज्ञागर्नलाग्णा॥ ३८॥ हेजरानामाव्याधा अपराधगणो भनि तंडरन
मानउठिजा॥ शुद्धसत्वस्वरूपभयाकोमूत्रिकनलुकाई॥ नानारेलगर्नलाईलियाकोदेहहो॥ ससदेहकनछोडनाकोमे
रैकामनाथियो तैलेवाराहामिस वठियागरिस तेरोअपराधछैन अवतंमेरोआज्ञालेगरी॥ वडापुराणात्माहेरुलेजा
न्यास्वर्गमाजा॥ ३९॥ भनिभगवान् लेसस्तोआज्ञागरियाकोजरानामाव्याधापनि॥ कृष्णकनतिन्फेराप्रदक्षिणाग

ये॥ त्वन्माययापिहिदृष्टयस्तदंजः किंतस्यतेवयमसङ्गतयोगरागीम॥ ३८॥ श्रीभगवानुवाच॥ भाभैर्जरे
त्वमुत्तिष्ठकामसंषक्तोहिमे॥ यादित्वमदनुज्ञातः स्वर्गसुकृतिनांपदम्॥ ३९॥ इत्यादिष्टोभगवताकृ
त्सेनेछाशरीरिणा॥ त्रिःपरिक्रम्यतंनत्वाविमानेनदिवंययौ॥ ४०॥ दारुकः कृष्णपदवीमन्विच्छन्नाधि
गम्यताम्॥ वायुतुलशीकोमोदमाध्यायामिसुरवययौ॥ ४१॥ तंतत्रतिगुप्सुभिरायुधैर्हतस्यश्वन्थम्

रिनमस्कारगरि॥ विमानमाचट्टि स्वर्गमाजांदोभयो॥ ४०॥ कृष्णकोदारुकनामासारथिपनि कृष्णलाईनदेवना
ले कृष्णकनषोर्जदोतुलशीपत्रकासुगंधललेयुक्तभयाकोवायुजोछ॥ जतादेपिआउथ्योगंधसुंगिउतैतिरजा
दोभयो॥ ४१॥ तांदाप्रान्तवठियाकात्रिभयाका शरवचक्रगयाका आका आयुधलेयुक्तभयाका॥ पलकागाछ
मनिवस्याकाभगवान्कनदेपि॥ वडोप्रमकनगर्नभयाको दारुकनामा भगवान्कोसारथिजोछ॥ रथदेओ

॥ भा. ॥

॥ १६२ ॥

हिं आरवादरिवांसुवहाउदैपाउमापदीभयो ॥ ४२ ॥ हे प्रभो हे कृष्ण तपात्रिकोचरगाकमलकननदेष्ट्या मेरा
अंधाराभयाकानेत्रपनितासिया दिशापनिजान्दिन शान्तिपनिमलाईहैन ॥ जलैरात्रिविवेचन्द्रमाअष्टायावि
षेदेष्टिनैन तलैमलाईभयो ॥ ४३ ॥ सस्ताकुरोदारुकसारथिलेविंतिगदीविषे ॥ घोडालेसहितभयाको गरुडले
चिह्नितभयाकोरथजोछ ॥ दारुकलेदेष्टैमा आकाशमाजोदोभयो ॥ ४४ ॥ दिव्यभयाकोचक्र आदिगयाकाक

लेकृतनंपतिम् ॥ स्नेहः पुतात्मानिपपादयोरथादवपुत्पसवाष्यलोचन ॥ ४५ ॥ अपस्यतस्तेचरणाभ्युज
प्रभोटुष्टिः प्रनष्टातमसिप्रविष्टा ॥ दिशोनजानेनलभेचशान्तिं यथानिशायामुडुपेप्रनष्टे ॥ ४६ ॥
तिब्रुवतिवैसूतेरथोगरुडलाञ्छन ॥ खमुत्पपातराजेन्द्रसाश्वध्वजउदीक्षतः ॥ ४७ ॥ तमन्वगच्छदिव्यानिवि
सुप्रहरणानिव ॥ तेमातिविस्मितात्मानेमाहजनादर्नः ॥ ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ गच्छारवतीसूतज्ञा
तिनांनिधनंमिथ ॥ संकर्षणास्यनिर्यराबंधुभ्योऽहिमदशाम् ॥ ४९ ॥ दारकायाचनस्थेयभवद्भिश्चस्ववं

ह्मकाशस्त्रास्त्रहेरुपनि तेसैरथकापछिजादाभया ॥ तेसोदेष्टिआर्यकनमान्यादारुककन कृष्णजोछन् आजा
गर्नलाग्वा ॥ ४५ ॥ हेदारुकसारथिदारकासातिभिजाउ आपस्माज्ञानिहेरुगरागरिमारामारगारि ॥ सवैयादेहेरु
मन्याभनिसुनाउ ॥ योगमार्गलेगरिवलभद्रलेदेहछोयाभनिसुनाउ ॥ मेरोसलोदशाभैरहेछभनिबंधुहेरुला
ईसुनाउ ॥ ४६ ॥ मकृष्मलेछायाप्राज्ञदारकाकनसमुद्रलेडुवाउन्पाछ ॥ तस्कारादारकाविषेनवसु ॥ सवैबंधुव
र्गलेसहितभैपरसर्तु ॥ ४७ ॥

॥ राम ॥

॥ १६२ ॥

आक्राआक्रायरिवारतिकन हावावावामहतारिहेरूपविभरुजोकोहिमरारानिहेरूपनि अर्जुनलेरक्षागरियाका इ
न्द्रप्रस्थमाजाउनुभन्याभनि हेदारुकसुनाइदिनु ॥४८॥ हेदारुकतिमिजोछोत्तानिभै कोनैकराकोइछानगरिमे
राधर्ममारहि ॥ योसवैमेरीमायाकोरचनावुहि व्यर्थशोकनगरि शांतिकनघ्राप्तहोई ॥४९॥ हेमहाराजपरीक्षि
त् कृष्णलेसो आज्ञागरियाकादारुकलेपनि ॥ अदक्षिरागारिपाउमाशिराधि फेरिफेरिनमस्कारगरि म

धुभिः ॥ मयात्यक्तायडुपुरीसमुद्रः स्नावयिष्यति ॥ ५० ॥ स्वस्वपरियहंसर्वे आदायपितसैवनः ॥ अर्जुनेनाविताः
सर्वे इन्द्रप्रस्थंगमिष्यथ ॥ ५१ ॥ तनुमध्वर्ममास्थायज्ञाननिष्ठउपैक्षक ॥ मम्याचारचनामेतां विज्ञायोपस
मं व्रज ॥ ५२ ॥ श्रीभुकउवाच इत्युक्तं संपरिक्रम्य नमस्कृत्य पुनः पुनः ॥ तत्पादोशील्यपाधायडुर्मनाः प्रययौ
पुरीम् ॥ ५० ॥ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे सकादशस्कंधे मौशल्ले कुलक्षयत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३० ॥ भू
कदेवउवाच ॥ अथ तत्रागमब्रह्माभवान्पावसमभव महेन्द्रप्रसुरवादेवामुनयः सप्रजेश्वरा ॥ १ ॥

नकनअध्यारोगरि दारकाविषेजांदोभयोभनि समकथाकनसूतलेशोनकादिहेरुकनकहंदाभया ॥ ५०
इति श्रीभगवते महापुराणे सकादशस्कंधे भाषायां मौशल्ले त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३० ॥ तांहांघ्रात्त हेमहाराज
परीक्षित जौनठांउमाभगवान्थिया तेसैठांउमा ब्रह्मा आया पार्वतीलेसहितभयाकाशिवआया ॥ इन्द्रआ
दिगन्याकादेवताहेरुआया सनकादिगन्याकात्रिभिहेरुआया ॥ मरीचिआदिगन्याकाप्रजेश्वरहेरुआया

॥ भा. स. ॥

॥ १६३ ॥

पितरहेरुसिद्धगंधर्वहेरुविद्याधरहेरुमहोरगहेरुचारणागराहेरु॥ यक्षरक्षहेरु किनरहेरु किन्नरहेरु किन्नरहेरु
अप्सरारहेरु॥ गरुडलोकमारुहन्नापक्षिहेरु अथवा मैत्रेयआदिगन्याकावाहाराहेरुआया॥ २॥ ईसवैजनाभगवान्
ले॥ आकाशवैकुण्ठमागयाकोहेर्नाकोकोममनाभयाका॥ वडोडत्कराठभयाकाकृष्णकाजन्मकर्मकनगाडन्यासुति
गन्याभयाकाआयाकाआया॥ ३॥ विमानमाचढिभक्तिलेगरिपुलकीवृष्टिकनठेरैगर्दआया॥ ४॥ कृष्णलेब्रह्मा

पितरासिद्धमधर्वाविद्याधरमहोरगा॥ चरणायक्षरक्षांसिकिन्नराप्सरसोद्विजाः॥ २॥ इन्द्रकामामगवतोवि
रारांपरमोत्सुकाः गायत्रश्चगुणांतश्चः शौरेः कर्माराजन्मच॥ ३॥ वदपुःधष्यवर्षारिाविमातापतिभिर्न
भ॥ कुर्वन्तः सकलंराजन्भक्त्यापरमायायुताः॥ ४॥ कृष्णः पितामहवीक्ष्यविभूतीरात्मनोविभ्रासंयोज्यात्म
निचात्मनंपद्मपत्रेन्यमीलयत्॥ ५॥ लोकाभिरामांस्वतनुंधारणाध्यानमंगलम्॥ योगधारणायामेया
दग्धाधामाविशत्त्वकम्॥ ६॥ दिविदुडुभयोनेडुयेतुःसुमनसश्चखात्॥ सत्यंधर्मोद्धतिर्भूभेःकीर्तिः

कनइन्द्रादिदेवताहेरुकनदेविपरमात्माविषेआत्माकनमिलाई॥ कमलपत्ररुत्रिभयाकानेत्रकनचिम्बल
दाभया॥ ५॥ लोकमाअतिसुन्दरभयाकाधारणाध्यानगर्वाहरुलाई॥ मंगलकनदिखा॥ सत्तादेहकनअभिसंव
धयोगधारणालेगरिनडछाईकन॥ आकाशवैकुण्ठधामविषेप्रवेशगर्दाभया॥ ६॥ तैसेसमयमाआकाशदेविपु
लकोवृष्टिहुदोभयो॥ स्वर्गमाभेरीवाजनलाग्णाहेमहाराजपरोक्षित॥ पृथिवीदेविसत्पधर्मधैर्यकीर्तिश्रीः

॥ राम ॥

॥ १६३ ॥

पनिभगवान्कापछिजादाभया॥७॥ कृष्णकतागयाभनिशंकागर्वा॥ ब्रह्मादिगयाकादेवताहेरुजोथियावैकुराठमाजोदा
जस्कोगरिससैहोभनिसकनुछैन॥ एसाकृष्णकनकतैदेष्टाभयाकातैदेष्टाननरआश्चर्यकनप्राप्तहुदाभया॥८॥ जसै
आकाशविषेविजुलीकोगतिजोछ॥ मेघमण्डलकनछोडिकनजोदो॥ मनुष्यलेदेष्टेननसैपृथिवीमण्डलकनछोडिजा
न्याकृष्णकन॥ देवताहेरुलेदेष्टाभयानन॥ कृष्णकानजीकमारहेरुलेमात्रदेष्टा॥ अरुदेवतालेदेष्टेनन॥९॥ ब्रह्मरु
द्रादिगयाकादेवताहेरुले॥ कृष्णकीयोगगतीकनदेष्टार॥ आश्चर्यनमान्दा॥ तेसैयोगगतिकन॥ वहुनैधन्यभनिव

श्रीश्वानुतंयपु॥१०॥ देवादयोब्रह्मसुरव्यानिविशंतंस्वधामनि॥ अविज्ञातगतिंकृष्णंदृष्टुश्चातिविस्मिता॥११॥ सो
दामिन्यायथाकाशेहितायांत्याभ्रमण्डलम्॥ गतिर्नलक्ष्यतेमर्त्येसथाकृष्णस्यदेवतैः॥१२॥ ब्रह्मरुद्रादयस्तेनुद
ष्ट्यायोगगतिंहरे॥ विस्मितास्माप्रशंसंतःस्वस्वलोकंययुस्तदा॥१३॥ राजन्यरस्यतनुभृज्जननाप्ययेहा॥ मायाविडे
वनमवैहियथानटस्य॥ सृष्ट्वात्मनेदमनुविश्वविहृत्यचांते॥ संहृत्यचात्ममहिमोपरतः॥ सआसे॥१४॥ मर्त्येन

रणंगदैआक्राआक्रालोकमाजादाभया॥१५॥ हेमहाराजपरीक्षित॥ परमात्मा॥ सवैकाकारगाभयाकाभगवान्॥ कोया
दवकलविषेप्रकटहुनु॥ फेरिदविजानु॥ एसाचेष्टाजोछुमायालेदेष्टासिधिगयाकोमात्रहोभनिजान॥ जसैनाचन्याजो
छु॥ आक्रास्वरूपकनछोडि॥ अरुनानारूपकनलिच्छु॥ तसैजान॥१६॥ जोभगवान्लेसंसारकन॥ आक्षेपलेसृष्टिगरिउसै
माप्रवेशगरि॥ काहिदिनसम्मविहारगरि॥ अत्रकालमासंहारगरि॥ आहुमहिमानछोडिरहेन्या॥ एसापरमेश्वरहुन
ससैकृष्णवतारविषपनियमलोकमापुष्पाका॥ गुरुकाछोराकन॥ यमलोकदेष्टिलेया॥ हेमहाराजपरीक्षित॥ उत्तरातस्मिन्माता

॥ भा. स. ॥
॥ १६४ ॥

कागर्भमा ब्रह्मास्त्रले उठदा ॥ तमोपनिब्रह्मास्त्रपरसारिरक्षागया ॥ सस्ताकरागको देषिपनि साक्षात्परमात्माहुन भनि
जान ॥ सस्ताकरामनुष्यले होइ सकेन न ॥ १२ ॥ हे महाराज परीक्षित अतककापनि अंतक भयाका ॥ सस्ताश्रीरूद्रकनपनि
वाणासुरसग्रामविषे जसले जित्या ॥ देहसमेत व्याधाकन स्वर्गमाजले पुण्याया ॥ सस्ताभगवान् जो छुन आकादेह
कारक्षागर्नाकन समर्थ थियानन् भन्नको सकछ ॥ सकलजगतको सृष्टिस्थितिप्रलयगर्दाविषे मुख्यकारा
भयाका ॥ सवैशक्तिकनधारणागर्ना सस्ताआफुभै सवैयादवको संहारगरि आफुवाकि रहनाको इच्छाग्याननम

योगुरुसुतेयमलोकनीते त्वंचानयछरदः परमास्त्रदधम् ॥ त्रिपंतकांतकमपीशमसावतीशः किं स्वावने
स्वरनयन्मृगयुसदेहम् ॥ १२ ॥ तथाप्यशेषस्थितिसंभवाप्यये च नन्यहेतुर्यदशेषशक्तिष्टक ॥ नैछन्त्रो
तवपुरत्रशेषितं ॥ मर्त्येन किं स्वमतिवदर्शयम् ॥ १३ ॥ यस्तो प्रातरुत्थाय कृष्णस्य पदवी पराम् ॥ प्रयतः
कीर्तयेद्भक्त्या तामेवाप्रोत्पनुत्तमाम् ॥ दारुको छारकामेत्यवसुदेवो यसेनयो ॥ १५ ॥

नुष्यदेहले कार्यकेहि छैन भनि आत्मजानी हेरुलाई दिव्यगतिकनलिउन् भनि देषाई भगवान् जो छुन जांदा भया
॥ १३ ॥ सस्ताप्रकारकी कृष्णकी गतिकन व्याहान उठि ॥ एकाग्रचित्तगरि भक्तिले जो प्राणिकीर्तन गर्छ ॥ त्यो प्राणिकी जो छ
कृष्णकी गतीकन पाउदछ ॥ अवउप्रातर्हे महाराज सुन ॥ कृष्णदेषिविदाभै गयाको दारुकनामा सारथिपनि छारका
मापुगिवसुदेवउयसेनका पाउमापरि ॥ पाउकन आपुसुले रुलाई कृष्णका विरहले डुःखित भै ॥ सवैयादव हेरुको
मृत्युभयाका समाचारकन कह्यो भयो ॥ १६ ॥

॥ राम ॥
॥ १६४ ॥

त्यो कुरो सुनि विस्मात चित्र भया का शोक ले मूर्छा कन भया का ॥ कृष्ण का विरह ले आकुल व्याकुल भया का ॥ एसा प्राणि जो
छन् ॥ वडाल या त्रिसित जा हाल डि मया का थिया ॥ उसै ठां ड मानि धार पिट्ठै आउं दा भया ॥ हे महाराज वसुदेव की रोहि
णी हे रूपति ॥ छोरा कृष्ण बल देव कन देषि शोक ले पीडा कन मानि मूर्छा कन पया ॥ कृष्ण विरह ले आतुर भै ते सै ज
गा मा प्राण कन छोड् दा भया ॥ १८ ॥ स्त्रि हे रू जो थिया आक्रा आक्रा पति हे रू क अंगालो हालि सला मा च ह्या ॥ बल भ
इकारानि हे रूपनि बल भइ का देह कन अंगालो हालि ॥ अग्नि मा प्रवेश कन गर्दा भयो ॥ २० ॥ वसुदेव का देह कन अं

पनि त्वाच्चरणा वस्त्रैर्यपि चत्कृष्ण विद्युत ॥ कथयामास निधनं हृत्प्रीतिं कृत्स्न शो नृपः ॥ १६ ॥ तदुत्तो द्विष्ट हृदया
जनाः शोक मूर्तिताः ॥ तत्र स्मरिता जगुः कृष्ण विश्लेष विरुला ॥ १७ ॥ व्यवशः शीरने यत्र ताः न यो घृत आननम्
देव की रोहिणी चैव वसुदेव स्नथा सुतौ ॥ १८ ॥ कृष्ण रामा वपश्यंतः शोकात्त्रा विजहुः स्मृतिम् ॥ त्राणां च विजहस्तत्र
भगवद्विरहातुरा ॥ १९ ॥ उपगूह्य पतीं स्नां स्नान् चिता मारु रूहुः स्त्रिय ॥ राम पत्न्य सुत देह मुपगूह्याग्निमा वि

गालो हालि देव की हे रूपनि सला मा च ह्या ॥ कृष्ण का बहारि हे रूपनि प्रद्युम्न का देह कन अंगालो हालि सति भया कृ
ष्ण का रू किमणी आदि गन्या कारानि हे रूपनि ॥ अग्नि मा प्रवेश कन गर्दा भया ॥ २१ ॥ अति पियारा सखा भया का कृ
ष्ण का अर्जु छन् ॥ विरह ले आकुल भया का छंदा योग माया ले छां किया को मूढ लोक जो छ ॥ न जन्म न्या नाशन हुन्या
एसा मन कन जानै न ॥ सवै को मप्रकाश छै न भनि कृष्ण ले भया का वाक् कन समुहि ॥ आक्र कन शान्त गरि बुज्जा

॥ भा. २॥

॥ १६५ ॥

उदाभयार ॥ तोंहोंमयाका प्राणिहेरुकादशपिराडोदकादिक्रियाकन ॥ जसाकोतसोगरि ॥ क्रमैसंग अर्जुननेगराया ॥ २३ ॥
कृष्णलेखायाकाधारकाकन ॥ तसैक्षरामासमुद्रले ॥ हेमहाराजपरीक्षित ॥ कृष्णकाहवेलीकनमात्रछोडिदुवादोभयो ॥
२४ ॥ जौनूहवेलीविषेभगवान्मधुसूदनजोछुन ॥ समरुन्पाकापापहररागर्वाभया ॥ सवैमंगलकापनिमंगलभ-
याकावारवारवस्याकाछुन ॥ २५ ॥ तोंहोंकाखीहेरुवालकहेरु ॥ वृद्धहेरुमरि ॥ वागिरस्याकाकनलिअजुनजोछुन ॥ यु

शान् ॥ २० ॥ वसुदेवपत्न्यमज्ञात्रपुंशुमादीनूहरेः सुषा ॥ कृष्णपत्न्योविशन्नशिरुक्किरणयास्तदात्मिका ॥ २१ ॥
अर्जुनः प्रयत्नः सरा ॥ जस्यविरहातुर ॥ आत्मानसावयामासकृष्णगर्तैः स दुक्तिभिः ॥ २२ ॥ बंधनानष्टगो-
त्राणामर्जुनः सापराधिकम् ॥ हतानांकारयामासयथावदनुपूर्वशः ॥ २३ ॥ द्वारकादूरिणात्यक्तांसमुद्रोस्नाव-
यक्षणात् ॥ वज्रयित्वा महाराज श्रीमद्भागवतालयम् ॥ २४ ॥ नित्यं संविहितस्तत्र भगवान्मधुसूदनः स्मृ-
त् ॥ त्वाशेषशुभहं सर्वमगलमगलम् ॥ २५ ॥

धिष्ठिरकोराजधानीश्च प्रस्थमाप्रवेशरि ॥ मारिकनवाकिशेषर-
त्याका वज्रनामायादवकनमथुराकाराजधानिमारान्पाभिषेककनगर्दाभया ॥ हेमहाराज आक्रामाडलिकुलया-
दवकोसंहारभयाकोकुरा ॥ अर्जुनवाटसुनिनेम्रापितामहयुहयुधिष्ठिरराजालेपनि ॥ तिमिकनवंशकोधारणा-
गर्वा राजधानीमारान्भाभैरहन्पावनाई ॥ सवैजनाभाईहेरुसमेतभैराजायुधिष्ठिरजोछुन ॥ महाप्रस्थानकन-
जोदाभया ॥ २५ ॥

॥ राम ॥
॥ १६५ ॥

॥ भा. स. ॥
॥ १६६ ॥

हेमहाराजपरीक्षितसुन॥ देवताकापनिदेवताभयाकाविष्णुकाजन्मकर्मकन॥ जौनप्राणिश्रद्धालेगारि कीर्तनकनगर्दछ
त्योप्राणिजोछसवैपापलेमुक्तहुछ॥ २८॥ हेमहाराजसंज्ञेप्रकारलेगारिभगवान्हरिकाकल्याणकनदिन्याअतीराप्ताभवता

स्त्रीवालवृद्धानादायहतशेषांधनंजय॥ इन्द्रप्रस्थसमावेशपदव्रतत्राभ्यषेवयत्॥ २६॥ श्रुत्वासुहृद्वं
श्रुत्वासुहृद्वंराजवर्जुः॥ तपितमहा॥ तानुवंशधरंकृत्वाजगुःसर्वमहापथम्॥ २७॥ यसत्तर्देवदेवस्य॥
विष्णोकर्माणिजन्मन॥ दीनयेदुद्धयामर्त्येसर्वपापैःयमुच्यते॥ २८॥ इत्यंहरिभगवतोरुचिरावतार
वीर्याशिवालचरिः॥ शान्तमानि॥ अन्यत्रचेहचश्रुत्वातानिगृह्णान्मनुष्यो॥ भक्तिपरायरमहंसगैतौलभे
त्॥ २९॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोसकादशस्कंधेपारमहंस्यसंहितायांसंस्कृतत्रिशतमोऽध्यायः॥ ३१॥

रत्नीलाकन॥ बालचरित्रकनपनि॥ सुमठाउंमा सुन्याकाकन॥ जोमनुष्यगाउंदछवठिदिमति॥ कनपरमहंसहेरुकाग
रिभयाकाभगवान्विषेपांडदछ॥ २९॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणोसकादशस्कंधेखकतटीकाभाषायासकत्रि

शोधायः॥ ३१॥

॥ राम ॥
॥ १६६ ॥





